जैन-ज्योति

ऐतिहासिक व्यक्तिकोश

प्रथम खण्ड (अ-अं)

इतिहास-मनीषी
डा० ज्योति प्रसाद जैन
विद्यावारिधि

प्रकाशक :
ज्ञानदीप प्रकाशन
ज्योति निकुञ्ज, चारबाग,
लखनऊ-१९ (उ० प्र०)
१९८८ ई०

पुस्तक का नाम
जैन-ज्योति
ऐतिहासिक व्यक्तिकोश
प्रथम खण्ड (अ-अं)

लेखक :
इतिहास-मनीषी
डा० ज्योति प्रसाद जैन
एम.ए., एल-एल. बी , पी-एच. डी.
विद्यावारिधि

प्रकाशक :
ज्ञानदीप प्रकाशन,
ज्योति निकुंज,
चारबाग, लखनऊ-२२६ ०१९

प्रथमावृत्ति :
वीर शासन जयन्ती,
श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, वि. सं. २०४५
महावीर निर्वाण संवत् २५१४
३० जुलाई, १९८८ ई०

मूल्य :
पचास रुपये

मुद्रक :
रत्न-ज्योति प्रेस,
चारबाग, लखनऊ-१९

ग्रन्थ परिचय

ऐतिहासिक काल में एक ही नाम के अनेक विशिष्ट व्यक्ति हुये हैं और नाम साम्य के आधार पर कई व्यक्तियों को एक ही मान लेने की भ्रान्ति प्रायः होती है। इससे ऐतिहासिक घटनाओं का समाकलन भ्रमपूर्ण हो जाता है। किसी ऐतिहासिक व्यक्ति का व्यक्तित्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है और कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध में इस प्रकार का भ्रम हो जाने से इतिहास का ढाँचा दोषपूर्ण हो जाता है।

विद्वान लेखक ने जो इतिहास के स्रोतों के सम्यक् अध्ययन के प्रति प्रतिबद्ध थे, प्रस्तुत कोश का प्रणयन अब से ५० वर्ष पूर्व प्रारम्भ कर दिया था और इसको प्रकाश्य रूप में २ वर्ष पूर्व ग्रथित किया था।

अकारादि क्रम से (अ से ज्ञ तक) ग्रथित प्रस्तुत कोश में विगत २,५०० वर्ष में हुये जैन आचार्यों, प्रभावक सन्तों, साध्वी आर्यिकाओं, साहित्यकारों, कलाकारों, धर्म एवं संस्कृति के पोषक राजपुरुषों और अन्य उल्लेखनीय पुरुषों एवं महिलाओं का संक्षिप्त प्रामाणिक परिचय ससंदर्भ संकलित किया गया है। परिशिष्ट में अधुना-दिवगत उल्लेखनीय व्यक्तियों का भी समावेश किया गया है।

यह कोश विद्वानों और शोधार्थियों के लिये तो अत्यन्त उपयोगी है ही, सामान्य जिज्ञासु पाठकों के लिये भी यह ज्ञान का अनुपम भण्डार है। इसके माध्यम से इतिहास के स्रोतों के प्रति जिज्ञासा जागृत भी होगी और उसकी तुष्टि भी होगी।

लेखक परिचय

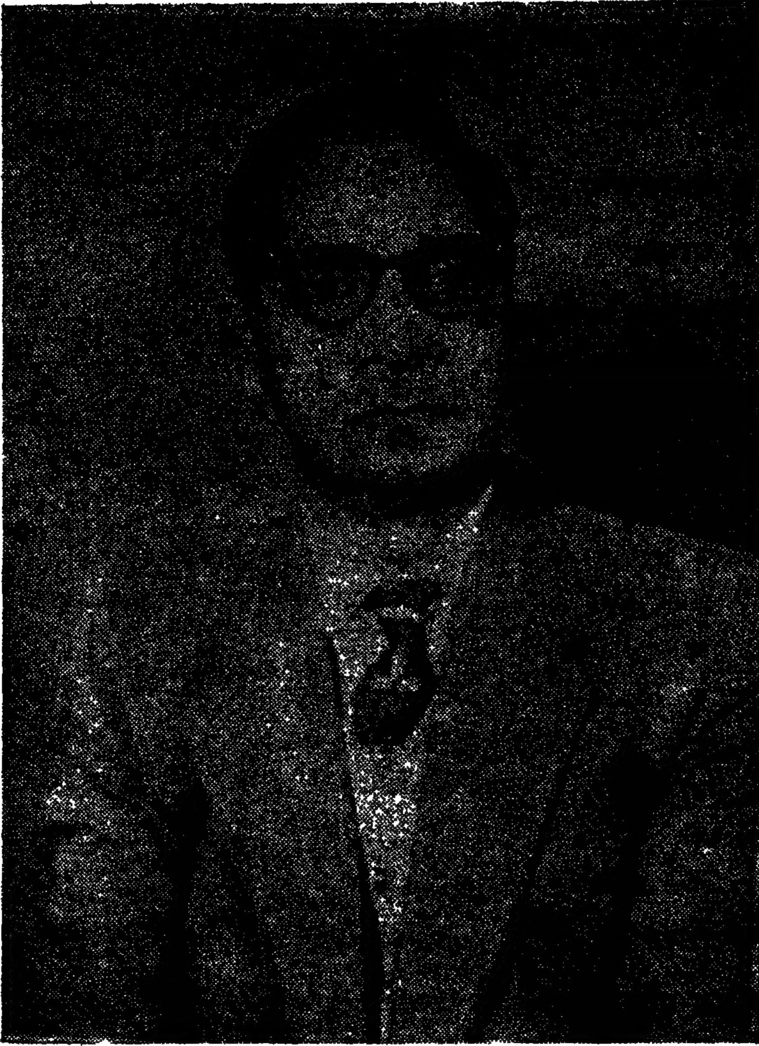
इस कोश के विद्वान लेखक डा० ज्योति प्रसाद जैन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति तथा इतिहास के जैन स्रोतों और जैन विद्या के विभिन्न अंगों (धर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति, कला और पुरातत्व) के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्धन्य अधिकारी विद्वान थे। सन् १९३२ से वह निरन्तर शोध-खोज में स्वान्तः सुखाय लगे रहे। इतिहास के जैन स्रोतों पर उनका अकेला प्रामाणिक ग्रन्थ है।

विशेष रूप से उल्लेखनीय कृतियां :

भारतीय इतिहास : एक दृष्टि
प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलायें
तीर्थंकरों का सर्वोदय मार्ग
आदितीर्थ अयोध्या
हस्तिनापुर

Jainism, the Oldest Living Religion
Religion And Culture of the Jains
The Jaina Sources of the History of Ancient India

डा० जैन इतिहास के स्रोतों के विशिष्ट अध्येता के रूप में और एक गहन वस्तुपरक एवं चिन्तनशील मनीषी के रूप में इतिहास के सभी अध्येताओं के लिये प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।



इतिहास-मनीषी

डा० ज्योति प्रसाद जैन

जन्म ६-२-१९१२ महाप्रयाण ११-६-१९८८

卐 विषयक्रम 卐

प्रकाशकीय

आज यह कृति वर्तमान और भावी शोधार्थियों के हाथों इस रूप में प्रस्तुत करते समय हमारे मन में दुःख और सुख की मिलीजुली अनुभूति है। दुःख इस बात का है कि अपनी साधिक ५० वर्ष की साहित्य-शोध-साधना के इस प्रसाद को इस रूप में देखने के लिये इसका निर्माता आज नहीं है। क्रूर काल ने उन्हें हमसे छीन लिया है। अपने महाप्रयाण से चन्द दिनों पूर्व जब उन्होंने इसका आमुख पूर्ण किया तो उन्हें भी यह विश्वास नहीं था कि वह इतनी जल्दी हमसे विमुख हो जायेंगे। उनकी इच्छा इस कृति को वीर शासन जयन्ती तक प्रकाशित कर देने की थी। वह इसका परिशिष्ट तैयार कर रहे थे। सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि हम उनके द्वारा कागज की चिटों पर छोड़े गये संकेत सूत्रों के आधार पर अधूरा परिशिष्ट पूरा कर सकने में और यह पुस्तक उनकी अभीप्सित तिथि तक प्रस्तुत करने में यत्किंचित सफल हो सके हैं।

'ऐतिहासिक व्यक्तिकोश' का यह मात्र प्रथम खण्ड है। शोधार्थियों के लिए इसकी क्या आवश्यकता, उपयोगिता और महत्व है इस सम्बन्ध में रचनाकार पिताश्री 'इतिहास-मनीषी' 'विद्यावारिधि' डा० ज्योति प्रसाद जैन जी ने अपने आमुख में प्रकाश डाला है। सामान्य पाठकों के लिये भी यह एक महत्वपूर्ण ज्ञान भण्डार है। आशा और विश्वास है कि प्रबुद्ध जन इससे लाभान्वित होंगे और हमें डाक्टर साहब के इस महाग्रन्थ को आगे शनैः शनैः खण्डों में प्रकाशित करने के लिये प्रेरित करेंगे।

इस ग्रन्थ को इस तत्परता से प्रकाश में लाने का पूरा श्रेय रत्न-ज्योति प्रेस के अधिष्ठाता श्री नलिन कान्त जैन को है। चि० संदीप कान्त और चि० अंशु जैन 'अमर' की प्रेरणा भी इसमें सहायक रही है।

पर्याप्त सावधानी बरतने पर भी यदि मुद्रण आदि में कोई त्रुटि रह गई हो उसके लिये हम क्षमार्थी हैं।

वीर शासन जयन्ती
१० जुलाई, १९८८ ई०

शशि कान्त
रमाकान्त जैन

आमुख

'जैन-ज्योति : ऐतिहासिक व्यक्तिकोश' का प्रस्तुत प्रथम खण्ड अपने पाठकों को भेंट करते हुए हमें अतीव प्रसन्नता है। अकारादि क्रम से ग्रथित इस कोश में विगत २५०० वर्ष (ईसापूर्व ६०० से सन् १९०० ई० पर्यन्त) में हुए जैनाचार्यों, प्रभावक मुनिराजों, साध्वी आर्यिकाओं, उदासीन श्रावक-श्राविकाओं, साहित्यकारों, कलाकारों, धर्म एवं संस्कृति के पोषक राजा-महाराजाओं, रानी-महारानियों, राजकुमार-राजकुमारियों, अन्य राजपुरुषों, सामन्त-सरदारों, धर्मवीरों, कर्मवीरों, युद्धवीरों, श्रेष्ठियों एवं श्रेष्ठिपत्नियों, अन्य उल्लेखनीय श्रावक-श्राविकाओं, सांस्कृतिक-सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आदि किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त करने वाले प्रमुख पुरुषों एवं महिलाओं, आदि का संक्षिप्त, यथासंभव प्रामाणिक, परिचय ससंदर्भ संकलित किया गया है। महावीर-पूर्व काल के पौराणिक युग से केवल त्रिषष्ठि-शलाका पुरुषों तथा स्वतन्त्रता-सेनानियों आदि ऐसे अति प्रसिद्ध स्त्री पुरुषों का ही चयन किया गया है जो जन-मानस में प्रायः ऐतिहासिक जैसा ही स्थान बनाये हुए हैं। परिशिष्ट में वर्तमान युग २०वीं शती ई० में अधुना दिवंगत उल्लेखनीय व्यक्तियों, विशेषकर साहित्यकारों, और समाजसेवियों का भी समावेश कर लिया गया है।

इस कोश के निर्माण की कहानी लगभग ५० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई। १९३६ ई० में अपनी विश्वविद्यालयी शिक्षा समाप्त करके हमारी विशेष रुचि जैन इतिहास के अध्ययन एवं शोध-खोज में प्रवृत्त हुई। उस समय तक पीटरसन, भंडारकर, हीरालाल आदि की रिपोर्टें; वेलङ्कर का जिनरत्नकोश, कनिंघम, गिरनॉट, स्मिथ, फुहरर, लूडर्स, राइस, नरसिंहाचर आदि की जैन हस्तलिखित ग्रन्थों, शिलालेखों, पुरावशेषों, कलाकृतियों आदि से सम्बन्धित शोध-खोज, आयंगर, शेषगिरिराओ आदि के दक्षिण भारतीय जैनधर्म विषयक प्रबन्ध, ही प्रकाश में आये थे। उस काल तक भारतीय इतिहास विषयक ग्रन्थों में राजनीतिक इतिहास पर ही बल दिया जाता था, सांस्कृतिक इतिहास उपेक्षित रहता था, कहीं कुछ कह भी दिया जाता था तो बौद्ध एवं ब्राह्मण परम्परा तक ही सीमित रहता था। इसी बीच स्वयं जैनजगत में पं० नाथूराम प्रेमी एवं आचार्य जुगल किशोर मुख्तार ने, विशेषकर जैन साहित्य के इतिहास की सशक्त भूमिकाएँ तैयार कीं, ब्र० शीतलप्रसाद, बा० कामताप्रसाद आदि ने भी ऐतिहासिक विषयों पर कलम चलाई, प्रो० हीरालाल जैन एवं डा० ए० एन० उपाध्ये जैसे मेधावी

साहित्यिक इतिहास संशोधक एवं ग्रन्थ सम्पादक भी प्रायः सभी प्रकाश में आ रहे थे। इस पृष्ठभूमि में जिस तथ्य ने हमारा ध्यान विशेषरूप से आकर्षित किया वह यह था कि जैन परम्परा में एक-एक नाम के कई-कई, कभी-कभी दर्जनों, आचार्य एवं ग्रन्थकार हो गये हैं। प्रसिद्ध-प्रसिद्ध जैन शास्त्रों का मुद्रण-प्रकाशन तो प्रारम्भ हो गया था किन्तु जिन शास्त्रीय पंडितों द्वारा उनके अनुवाद, टीकादि या सम्पादन हुए उनमें ऐतिहासिक प्रज्ञा अत्यल्प होने के कारण, बहुधा नामसाम्य से भ्रमित होकर, एक नाम के विभिन्न गुरुओं एवं साहित्यकारों को उनमें से जो सर्वप्रसिद्ध हुए उनसे अभिन्न मान लिया जाता था —यथा समन्तभद्र, पूज्यपाद, अकलंक, प्रभाचन्द्र आदि आचार्यों को तन्नामों के विभिन्न गुरुओं के समस्त कृतित्व का श्रेय दे दिया जाता था। पं० प्रेमी जी एवं मुख्तार साहब ने ऐसी अनेक गुत्थियों को सुलझाने का सफल प्रयत्न किया। शताब्दी के पांचवें दशक से स्वयं हमारे अनेक लेख 'अमुक नाम के जैनगुरु' या 'अमुक नाम के जैन साहित्यकार' पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। जैनाचार्यों एवं साहित्यकारों ही नहीं, नामसाम्य के कारण प्रमुख ऐतिहासिक पुरुषों एवं महिलाओं की पहचान में भी वैसी ही कठिनाई एवं भ्रान्तियों के लिए अवकाश रहता था। अतएव, इसप्रकार की समस्त सामग्री एव सूचनाओं को हमने तभी से अकारादि क्रम से एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। उसमें उत्तरोत्तर संशोधन-संवर्द्धन भी होता गया। अपने शोधप्रबन्ध 'प्राचीन भारतीय इतिहास के जैन साधनस्रोत (ई० पू० १०० से सन् ९०० ई० पर्यन्त)', इतिहास ग्रन्थ 'भारतीय इतिहास: एक दृष्टि', 'प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएँ', 'उत्तर प्रदेश और जैनधर्म' आदि के निर्माण में उक्त सामग्री से अभीष्ट सहायता मिली। पत्र-पत्रिकाओं में लेखों का क्रम भी साथ-साथ चलता रहा।

वर्तमान २०वीं शती ई० विशेषज्ञता का युग रहा आया, जिसमें ज्ञान-विज्ञान के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र मे विधिवत शोध-खोज, अनुसंधान और गवेषणा की अभूतपूर्व प्रगति हुई —इन प्रक्रियाओं की तकनीकों और विधाओं का भी द्रुत-वेग से विकास हुआ। प्राचीन ग्रंथों के सम्पादन व संशोधन को भी स्तरीय वैज्ञानिक पद्धति प्राप्त हुई। किन्तु विगत कई दशकों में एक अन्तर लक्षित हुआ —जबकि शताब्दी के पूर्वार्ध में कार्यरत अथवा कार्यारंभ करने वाले विद्वान प्रायः स्वान्तः सुखाय, समर्पित भाव से, श्रम एवं समय की उपेक्षा करके, अपनी क्षमता, शक्ति एवं प्राप्त साधनों का यथाशक्य पूरा उपयोग करते थे, उत्तरार्ध के दशकों में कार्य करने वालों की संख्यावृद्धि तो हुई, किन्तु उनकी मनोवृत्ति तथा कार्य के

प्रति समर्पण की भावना में पर्याप्त अन्तर लक्षित हो रहा है। पुराना विद्वान प्रायः निर्लोभी या अल्प सन्तोषी था—वह अपनी प्यास बुझाने के लिए स्वयं कुंआ खोदता था, साधन सामग्री स्वयं खोजता, जुटाता और संग्रह करता था, और फिर उसका मन्थन करके अपनी गवेषणा प्रस्तुत करने का प्रयास करता था। आज का विद्वान आर्थिक लाभ एवं व्यवसायिक बुद्धि से अधिक प्रेरित होता है, सब कुछ पका-पकाया, सहज-सुलभ चाहता है—शोधकार्य में भी सरलतम रूटीन, फारमूलों, अमौलिक साधन-स्रोतों का सहारा लेता है, कम से कम समय एवं श्रम के व्यय से अपना शोधप्रबन्ध या ग्रंथ लिख डालने की चेष्टा करता है। अतः, इस बीच, प्रायः पुराने विद्वानों की साधना के फलस्वरूप जो अनेक विविध संदर्भ ग्रन्थ प्रकाश में आ गये हैं, वह भी उसके लिए वरदान हैं।

उक्त संदर्भ ग्रन्थों में देश के विभिन्न शास्त्र-भंडारों में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रंथ प्रतियों की वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित सविवरण सूचियां, विविध प्रशस्तियों के संग्रह, शिलालेख संग्रह, पट्टावलियों-गुर्वावलियों-राज्यवंशावलियों-विज्ञप्तिपत्रों-तीर्थमालाओं-राजकीय अभिलेखों आदि के संग्रह, प्राचीनपुरावशेषों-कलाकृतियों-सिक्कों-मुद्राओं आदि के सविवरण सूचीपत्र, स्थलनाम कोश, ऐतिहासिक व्यक्ति-कोश, विषयविशेषों से सम्बन्धित कोश, विश्वकोश आदि परिगणित हैं। प्राचीन ग्रन्थों के स्तरीय सुसम्पादित संस्करणों की तुलनापरक एवं विवेचनात्मक प्रस्तावनाएं एवं विभिन्न अनुक्रमणिकाएं, परिशिष्ट आदि भी बड़े उपयोगी होते हैं। प्राचीन ग्रन्थों के स्तरीय सम्पादन-संशोधन में पं० प्रेमी जी एवं मुख्तार साहब के अतिरिक्त डा० उपाध्ये, प्रो० हीरालाल जी, डा० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, पं० कैलाशचन्द्र जी, फूलचन्द जी, बालचन्द जी प्रभृति विद्वानों ने उत्तम मानदण्ड स्थापित कर दिये थे, जिनका अनुकरण परवर्ती विद्वानों ने बहुत कम किया है। यह अवश्य है कि उपरोक्त प्रकारों के जो संदर्भ ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, उनमें अनेक त्रुटियां एवं दोष है, जैसे प्रामाणिक, सन्तोषजनक एवं सर्वांगपूर्ण होना चाहिए था, वैसे उनमें से गिने-चुने ही शायद है। किन्तु कुछ न होने से जो कुछ हैं, वह भी पर्याप्त लाभदायक हैं, और फिर ये प्रारम्भिक प्रयास हैं।

तो प्रस्तुत ऐतिहासिक व्यक्तिकोश भी ऐसा ही संदर्भ ग्रन्थ है—उसी रूप में उसे ग्रहण करना उचित है। लगभग ७० वर्ष पूर्व, १९१७ ई० में आरा के कुमार देवेन्द्र प्रसाद ने सैन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस से स्व० यू० एस० टंक की 'ए डिक्शनरी आफ जैना बायोग्रेफी' नाम की छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की थी जो अंग्रेजी वर्णमाला के प्रथमाक्षर 'ए' तक ही सीमित रही। उसमें दिये गये

परिचयों के स्रोत लेखक की वैयक्तिक जानकारी के अतिरिक्त अत्यन्त सीमित थे, क्योंकि पीछे जिन संदर्भ ग्रन्थों का संकेत किया गया है अथवा जो वर्तमान कोश की संदर्भग्रन्थ-संकेतसूची में निर्दिष्ट हुए हैं, उनमें से प्राय: कोई भी उस टंक के समय तक प्रकाशित ही नहीं हुए थे। स्व० क्षुल्लक जिनेन्द्रवर्णी का 'जैनेन्द्र सिद्धान्तकोश' विशालकाय ग्रंथ है, किन्तु वह मुख्यतया सिद्धान्तकोश है। प्रसंगवश 'इतिहास' शब्द के अन्तर्गत प्राय: कतिपय ऐतिहासिक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं आदि का भी उसमें समावेश करने का प्रयास किया है, उनमें से अनेक परिचय या तथ्य त्रुटिपूर्ण, सदोष, अपर्याप्त या भ्रान्तिपूर्ण हैं। अतएव उक्त दोनों में से किसी भी प्रकाशन से प्रस्तुत कोश की स्थानपूर्ति नहीं होती, इसकी आवश्यकता एवं उपयोगिता भी कम नहीं होती।

यों, त्रुटियाँ, कमियां या दोष इस कोश में भी हैं, और उनका जितना और जैसा अहसास स्वयं उसके निर्माता को है, वैसा और उतना शायद ही किसी प्रबुद्ध पाठक को है। श्रम और समय की परवाह न करते हुए और यथासम्भव सावधानी बरतते हुए भी कुछ कथन भ्रामक या अयथार्थ भी हो गये हो सकते हैं, मुद्रण की भी कुछ अशुद्धियां रह गई हो सकती हैं, जिन सबके लिए सहृदय पाठकों से विनम्र क्षमा याचना है। जैसा कि कहा जा चुका है, कोश की सामग्री अकारादि क्रम से ही, गत ५० वर्षों से एकत्र होती आ रही थी —उसे उसी रूप में प्रकाशित करने का साहस नहीं होता था। किन्तु, वृद्धावस्था के द्रुतवेग से आक्रमण तथा शारीरिक स्वास्थ्य की उत्तरोत्तर गिरती हुई स्थिति देखकर विचार हुआ कि जितना और जैसा भी संभव हो इसे प्रकाशित कर देना ही उचित है। हमारे सम्पादन में २८ वर्ष सफलता पूर्वक चलकर जैनसन्देश-शोधांक का प्रकाशन संघ के वर्तमान अधिकारियों की कृपा से स्थगित हो गया, किन्तु तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र समिति, उ०प्र०, लखनऊ के अधिकारियों ने वैसी शोधपत्रिका के अभाव की पूर्ति के लिए 'शोधादर्श' का प्रकाशन उससे अधिक भव्यतर रूप में प्रारम्भ करने का निर्णय कर लिया। इस सुअवसर का लाभ उठाकर, उनके आग्रह से, अपनी पूर्व संचित सामग्री को मूलाधार बनाकर वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर की प्रविष्टियों को क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित एवं सांकेतिक संदर्भों से सत्यापित करके कोशगत सामग्री का क्रमिक प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और शोधादर्श के प्रथम छ: अंकों में कोश के १२० पृष्ठ क्रमश: मुद्रित एवं प्रकाशित हो गये। उन्हें पढ़कर अनेक प्रबुद्ध पाठकों की प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई—यह अभूतपूर्व योजना है; अत्यन्त उपयोगी है, महत्त्वपूर्ण है, अत्यावश्यक है, इसे

चालू रक्खें, इसे पुस्तकाकार प्रकाशित करदें, इत्यादि। अतएव यही निर्णय लिया कि नागरी वर्णमाला के १२ स्वराक्षरों (अ–अं) में समाविष्ट कोश का प्रथम खण्ड प्रकाशित कर दिया जाय। साथ में (प्रास्ताविक भूमिका) आमुख के अतिरिक्त, परिशिष्टगत, उसी अकरादि क्रम में प्रदत्त प्रविष्टियों में, २०वीं शती ई० में अधुना दिवंगत विशिष्ट व्यक्तियों, विशेषकर विद्वानों, साहित्यकारों, कलाकारों, समाजसेवियों या अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त स्त्री-पुरुषों के संक्षिप्त परिचय दे दिये जायें। वर्तमान शती में दिवंगत व्यक्तियों के चुनाव में पर्याप्त कठिनाई एवं असमंजस की स्थिति रहती है– वे हमारे अपेक्षाकृत साक्षात् परिचय में रहे होते हैं, दूसरे, उनके निकट आत्मीय भी वर्तमान होते हैं, तीसरे कथन की ग़लतियां सहज ही पकड़ ली जाती हैं, और प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्बन्धियों का नाम कोश में देखने का इच्छुक होता है। तथापि प्रयास किया ही है। संदर्भग्रन्थ-संकेतसूची तथा सामान्य-संकेतसूची भी दे दी गई हैं। इस प्रकार यह खण्ड स्वयं में प्राय: सर्वांगपूर्ण होकर कम से कम इस क्षेत्र में भविष्य में कार्य करने वाले लेखकों के लिए एक सन्तोषजनक माडल का काम तो देगा ही। इसी नमूने पर हमारे द्वारा एकत्रित सामग्री के आधार से आगामी 'कवर्गादि' खण्ड भी शनैः शनैः प्रकाशित किये जा सकते हैं।

इस कार्य की निष्पत्ति में पूर्वगत विद्वानों के आशीर्वाद एवं प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रेरणा, वर्तमान प्रबुद्ध पाठकों का प्रोत्साहन, तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र समिति के महामन्त्री और हमारे अनुज अजितप्रसाद जैन (अवकाश-प्राप्त उप सचिव, उ.प्र. शासन), पुत्रों डा० शशि कान्त जैन (संयुक्त सचिव, उ०प्र० शासन तथा अध्यक्ष, अनन्त-ज्योति विद्यापीठ) एवं रमाकान्त जैन (अनुसचिव, उ० प्र० शासन तथा मन्त्री, ज्ञानदीप प्रकाशन), पौत्र नलिन कान्त जैन (मालिक, रत्न-ज्योति प्रेस), संदीप कान्त जैन एवं अंशु जैन 'अमर' (एम.ए.-इतिहास एवं पुरातत्त्व), पौत्रियों कु० अलका एवं कु० शेफ़ाली (प्रत्येक एम.ए., बी.एड.) आदि से यथावश्यक सहायता एवं सुविधा प्राप्त हुई है। इस कोश की गुणवत्ता के श्रेय मे वे सब भागीदार हैं, कमियों एवं दोषों का उत्तरदायित्व मात्र कोशकार का है।

आशा है, इस कोश का प्रबुद्ध जगत द्वारा उचित स्वागत होगा और इसका उपयोग करने वाले इससे लाभान्वित होंगे।

—ज्योति प्रसाद जैन

३ जून, १९८८
ज्योति निकुञ्ज,
चारबाग, लखनऊ-१९ (उ०प्र०)

जैन-ज्योतिः

ऐतिहासिक व्यक्तिकोष

अ

अक्का— प्राचीन मथुरा के जैन संघ की एक प्रभावक आर्यिका, वारणगण-आर्यहट्टिकियकुल-वज्रनागरीशाखा के धर्ति की शिष्या, महनंदि एवं बलवर्म की श्रद्धाचारी तथा नन्दा की शिष्या, जिसके उपदेश से श्रमिक जयदेव की पुत्रवधु और श्रमिक जयनाग की धर्मपत्नि सिंहदत्ता ने वर्ष ४० (सन् ११८ ई०) मे एक शिलास्तंभ स्थापित किया था।
[जैशिस. ii ४४; एइं-i, ४३ नं० १]

अक्कादेवी— हुमच्च के सान्तर नरेश राय सान्तर की धर्मात्मा रानी और उसके उत्तराधिकारी चिक्कवीर सान्तर की जननी, (ल० १००० ई०) [प्रमुख १७२]

अक्कादेवी— चालुक्य राजकुमारी, जयसिंह द्वि० जगदेकमल्ल (१०१४-४२ ई०) की भगिनी, जिसने अरसियबीडि में गोणद-बेडंगी नामक सुन्दर जिनालय निर्माण कराया था, और १०४७ ई० मे, चालुक्य नरेश सोमेश्वर प्र० के शासनकाल में, गोकाक दुर्ग में निवास करते हुए उक्त जिनालय के रखरखाव तथा मुनि-आर्यिकाओं के आहार दानादि के लिए मूलसंघ-सेनगण-पोगरिगच्छ के आचार्य नागसेन पंडित को भूमि आदि का प्रभूत दान दिया था।
[देसाई १०५-६; एइं xvii, पृ० १२२; जैशिसं iv, १३४]

अक्कणब्बरसी— सान्तर नरेश तैल तृ० त्रिभुवनमल्ल जगदेकदानी (११०३ ई०) की द्वितीय रानी, नन्नि सान्तर की साली, काम, सिंगण एवं

अम्मण की जननी, बडी धर्मात्मा।

[प्रमुख १७४; जैशिसं iii, ३४९]

अक्कब्बे— होयसल नरेश बल्लाल द्वि० (११७३-१२२० ई०) के मन्त्री चन्द्रमौलि की जननी और शंभुदेव की पत्नि।

[प्रमुख १६०; जैशिसं i, १२४]

अक्काम हेग्गिडिति— विजयनगर सम्राट कृष्णदेवराय की एक जैन महिला सामन्त जिसने १५१५ ई० में बरांग के जिनमंदिर की भूमि व्यवस्था कराने में सहायता दी थी।

[जैशिसं. iv ४५८]

अक्कसाल कामोज— ने चोल सम्राट कुलोत्तुग राजेन्द्र की पुण्यवृद्धि के लिए चन्द्रप्रभ जिनालय के लिए दान दिया था—उक्त नरेश का शासनकाल १०७४-११२३ ई० है।

[जैशिस iv २२४; प्रमुख ११३]

अकबर, जलालुद्दीन मुहम्मद—भारत का महान मुगल सम्राट (१५५६-१६०५ ई०), उदारनीति एवं सर्वधर्मसहिष्णुता के लिए इतिहासप्रसिद्ध। हीरविजय सूरि आदि कई जैन गुरुओं को सम्मानित किया, उनकी शिक्षाओं से भी प्रभावित हुआ, जैनों के हित मे कई फर्मान भी निकाले। उसके शासनकाल में जैनधर्म और उसके अनुयायी पर्याप्त फले-फूले। अनेक जैन शि० ले० एव साहित्यिक रचनाओं मे उसका उल्लेख है।

[देखिए- भाइ. ४७४-९५; प्रमुख २७७-८१]

अकमल— या अकुकवि, ब्रजभाषा हिन्दी पद्य में रचित 'शीलबत्तीसी' (३४ छन्द) के कर्ता—१६६४ ई० मे लिपिबद्ध एक गुटके में प्राप्त, अत: १७ वीं शती ई० के पूर्वार्ध में हुए होंगे।

[अने० १४/११-१२/३३३]

अकम्पन— १– ती० ऋषभकालीन काशिनरेश, सती सुलोचना का पिता, स्वयंवर प्रथा का प्रस्तोता–पुत्री का स्वयंवर किया।

२– भ० महावीर के एक गणधर शिष्य, अपरनाम अकम्पित, मिथिलावासी गौतमगोत्री ब्राह्मण विप्रदेव और जयन्ती के पुत्र। [महापुराण; जैशिसं० i १०५]

३– वैशाली के लिच्छवि नरेश चेटक के सप्तम पुत्र, भ० महावीर के मातुल। [प्रमुख० १०]

अकम्पनाचार्य— तथा उनके संघ के ७०० मुनियों पर प्राचीन काल में हस्तिनापुर में राजा बलि ने भीषण उपसर्ग किया था, जिससे मुनि विष्णु कुमार ने उनकी रक्षा एवं उद्धार किया था, रक्षाबन्धन पर्वारंभ।

अकम्पित— गणधर, दे० अकम्पन।

अकलङ्क— १. अकलङ्कदेव व भट्टाकलङ्कदेव (ल. ६४०-७२० ई०), महान प्रभावक दिगम्बराचार्य, नैयायिक, दार्शनिक, वादी एवं ग्रन्थकार, जैन न्याय के सर्वोपरि प्रस्तोता, अकलङ्क-न्याय के पुरस्कर्त्ता, देवसंघ (गण) से सम्बद्ध, वातापी के पश्चिमी चालुक्य नरेशों द्वारा पूजित, बौद्धों पर वाद-विजय के लिए प्रसिद्ध, उमास्वामिकृत तत्त्वार्थसूत्र की तत्त्वार्थराजवार्तिक तथा समन्तभद्रकृत आप्तमीमांसा की अष्टशती नाम्नी टीकाओं, और लघीयस्त्रय, न्यायविनिश्चय, सिद्धिविनिश्चय, प्रमाणसंग्रह प्रभृति महानग्रन्थों के प्रणेता, लघुहव्व नृपति के पुत्र, राजन् साहसतुंग तथा त्रिकलिंगनरेश हिमशीतल द्वारा सम्मानित, अनेक शि० ले० में तथा परवर्ती साहित्यकारों द्वारा सादर स्मृत एवं प्रशंसित, ब्राह्मण एवं बौद्ध नैयायिकों द्वारा भी प्रशंसाप्राप्त, तथा पूज्यपाद, पूज्यपादभट्टारक, वादिसिंह, वादीभसिंह, आदि अनेक सार्थक विरुदप्राप्त, अकलङ्क नाम के सर्वमहान एवं सर्वप्रथम ज्ञात जैनाचार्य।
[अने० १६/२; जैसिभा० १५/२; शोधांक० १-४
जैसो० १७१-१८०]

२– अकलङ्क पण्डित, श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि के ल० १०९८ ई० के एक शि० ले० में उल्लिखित आचार्य।
[जैशिसं० i १६९; शोधांक-१]

३–'अकलङ्कत्रैविद्य वादिमत्तांकुश'—मूलसंघ-देशीगण-पुस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वय के माघनंदि कोल्लापुरीय के प्रशिष्य, देवकीर्ति (स्वर्ग ११६३ ई०) के शिष्य, शुभचन्द्र त्रैविद्य एवं गण्डविमुक्त वादिचतुर्मुख रामचन्द्र त्रैविद्य के सधर्मा

और माणिक्य-भण्डारि मरियाने, महाप्रधान दण्डनायक भरत तथा श्रीकरण हेग्गडे बूचिमय्य जैसे होयसल राजपुरुषों द्वारा गुरुरूप से पूजित। [जैशिसं. i ४०; शोधांक-१] :

४– विवेक मञ्जरी वृत्ति (११९२ ई०) के कर्त्ता अकलङ्क।
[कै० चं०, न्या० कु० च०, i-प्रस्ता० २५; शोधांक-१]

५– अकलङ्कचन्द्र, मूल नंदिसंघ-सरस्वतीगच्छ-बलात्कारगण की पट्टावली में ७३ वें गुरु, वर्द्धमानकीर्ति के पश्चात और ललित-कीर्ति के पूर्व, समय ११९९-१२०० ई०।
[इंए० xi, ३४१-६१; शोधांक-१]

६– कलकेरे के भट्टारक अकलंकचन्द्र जिनके लिए मूलसंघ कुन्दकुन्दान्वय-काणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छ के आचार्य भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव के गृहस्थ शिष्य हालिगसवुण्ड ने पार्श्वनाथ-जिनालय निर्माण कराया था, ल० १३ वीं शती ई०।
[देसाई १४६, ३९०; जैशिसं iv ६११]

७– अकलङ्कदेव, जिन्होंने द्रविलसंघ-नन्द्यान्वय के वादिराज मुनि के शिष्य महामंडलाचार्य-राजगुरु पुष्पसेन के साथ १२५६ ई० में हुम्मच्च में समाधिमरण किया था।
[एक viii, नगर ४४; जैशिसं iii, ५०३; शोधांक-१]

८– अकलङ्कसंहिता तथा श्रावक-प्रायश्चित (१३११ ई०) के कर्त्ता अकलङ्क भट्टारक, संभवतया पोरवाड़ जातीय।
[कैचं-न्या० कु० च० प्रस्ता० २५; प्रसं १५०; शोधांक-१]

९– अकलङ्कमुनिप, नंदिसंघ-बलात्कारगण के जयकीर्ति के शिष्य, चन्द्रप्रभ के सधर्मा, विजयकीर्ति, पाल्यकीर्ति, विमलकीर्ति, श्रीपाल कीर्त्ति और आर्यिका चन्द्रमती के गुरु, संगीतपुरनरेश सालुवदेवराय द्वारा पूजित, बंकापुर में मादलएल्लप नृप के मदोन्मत्त प्रधान गजेन्द्र को अपने तपोबल से शान्त करने वाले, स्वर्गवास १५३५ ई० [प्रसं १२९, १४४; शोधांक-१]

१०– अकलङ्कदेव— संगीतपुर (हाडुवल्लि, दक्षिणी कनारा जिला) के मूलसंघ-देशीगण-पुस्तकगच्छीय पट्ट के भट्टारक, श्रवणबेलगोल मठाचार्य चारुकीर्ति पण्डित के परम्परा शिष्य,

नं० ८ के प्रशिष्य, कर्णाटक-शब्दानुशासन के कर्ता भट्टाकलङ्कदेव के गुरु, समय ल० १५५०-७५ ई०। सोन्दानरेश अरसप्प नायक द्वि. ने अपने १५६८ ई० के ताम्रशासन मे स्वयं को इन अकलङ्कदेव का प्रिय शिष्य कहा है।

[शोधांक-१ पृ० १४; देसाई. १३०-१३१]

११– भट्टाकलङ्कदेव, सुधापुर के भट्टारक, नं० १० के शिष्य, विजयनगर नरेश वेङ्कटपतिराय (१५८६-१६१५ ई०) द्वारा सम्मानित, सुधापुर में ही विविध ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की, छः भाषाओं में कविता कर सकते थे, विभिन्न सम्प्रदायों के न्याय शास्त्र में निष्णात, निपुण टीकाकार, कन्नड एवं संस्कृत भाषाओं के व्याकरण के महापंडित, अनेक नरेशों की सभाओं में वादविजय करके जैनधर्म की महती प्रभावना की, मञ्जरीमकरंद (१६०४ ई०) तथा सुप्रसिद्ध कन्नडी व्याकरण कर्णाटक-शब्दानुशासन के रचयिता थे जिसके कारण लोकप्रसिद्ध हुए, १५८७ ई० के शि० ले० (जैशिसं० iv ४९०) तथा १६०७ ई० के शि० ले० (जैशिसं iv ५०२) में भी इन्हींका उल्लेख है। संभवतया १६०७ ई० में इनका स्वर्गवास हुआ था।

[शोधांक-१ पृ० १४; आर. नरसिंहाचार्य कर्णाशब्दानु. भूमिका एवं कर्णाटक-कविचरिते]

१२– अकलङ्क-प्रतिष्ठापाठ या प्रतिष्ठाकल्प के रचयिता भट्टाकलङ्कदेव, जिसमें जिनसेन (९वीं शती) से लेकर सोमसेन त्रिवर्णाचार (प्राचीनतम उपलब्ध प्रति १७०२ ई०) तक के उद्धरण-उल्लेख आदि प्राप्त हैं, अत: ल. १७००ई०।

[शोधांक-१/१६; प्रसं० १६५-८,१८७]

१३– वादि अकलङ्कमुनि, ल. १७४० ई०, जो विजयकुमारकथे के कर्ता पद्मराज के गुरु थे। [शोधांक-१/१५]

१४– भट्टाकलङ्कमुनिप, देशीगण-पुस्तकगच्छ के कनकगिरि (कार्कल) के भट्टारक, १८१३ ई० में समाधिमरण किया था।

[एक. iv, १४६,१५०; शोधांक-१/१४]

१५– बस्तीपुर के एक अनिश्चित तिथि के शि.ले. में उल्लिखित,

अकलङ्क। [एक. iii १४५; शोधांक-१/१४]

१६– परमागमसार नामक कन्नड ग्रन्थ के कर्ता अकलङ्क।
[शोधांक-१/१५; जैसिभ. आराग्र. सू. १८२]

१७– विद्याविनोद नामक संस्कृत वैद्यकशास्त्र के कर्ता अकलङ्क स्वामि; इन्होंने अकलङ्कभट्टारक, वीरसेन, पूज्यपाद एवं धर्मकीर्ति महामुनि के उल्लेख किये हैं।
[शोधांक-१/१४; आरा सूची- ५०; न्याय कु.च. प्रस्ता.]

१८– विद्यानुवाद नामक मन्त्रशास्त्र के रचयिता अकलङ्क।
[वही; शोधांक-१/१४]

१९- व्रतफलवर्णन के कर्ता अकलङ्क कवि। [वही]

२०– चैत्यवन्दनादि सूत्र, साधु-श्राद्ध-प्रतिक्रमण, पदपर्याय-मंजरी नामक ग्रन्थों के रचयिता अकलङ्कदेव। [वही]

२१- अकलङ्क-स्तोत्र, स्वरूपसम्बोधन, बृहत्त्रय, न्यायचूलिका, प्रमाणरत्नदीप, अकलङ्क-प्रायश्चित, जैन वर्णाश्रम आदि, अकलङ्क के नाम से प्राप्त या प्रसिद्ध ग्रन्थों के रचयिता, एकाधिक विद्वान। [वही.]

यह संभावना है कि उपरोक्त २१ मे से कई एक परस्पर अभिन्न हो। साथ ही देवगण के पूर्वमध्यकालीन गुरुओं में, परवर्तीकाल मे संगीतपुर, सुधापुर, काकंल आदि के भट्टारकों में, तथा श्वेताम्बर परंपरा में भी अकलंक नाम के कतिपय अन्य गुरुओं के पाये जाने की संभावना है।

अकलङ्कदेव सूरि- श्वे. पूर्णिमागच्छीय, ११८३-८७ ई०, जिनपतिसूरि के समकालीन। [खरतरगच्छ बृहद् गुर्वावलि]

अकलंक चोल– तंजौर के प्रतापी नरेश कोलुत्तुंग चोल (१०७४-११२३ ई०) का चतुर्थ पुत्र एवं उत्तराधिकारी, विक्रम एवं त्रियम्समुद्र विरुदधारी, विद्वानों एवं गुणियों का आश्रयदाता, जैन धर्मानुयायी नरेश।
[प्रमुख.११३]

अकालवर्ष– दक्षिणापथ के राष्ट्रकूट वंश में कृष्ण नामधारी नरेशों की विशिष्ट उपाधि (दे. कृष्ण)

१. अकालवर्ष कृष्ण i शुभतुंग (७५७-७३ ई०)
[जैशिसं iv ५५]

२. अकालवर्ष कृष्ण ii शुभतुंग (८७८-९१४ ई०)– यह नरेश जैन था। [जैशिसं iv ७७]

३. अकालवर्ष कृष्ण iii शुभतुंग (९३९-६७ ई०)–यह भी जैन था। [भाइ २९४-३०८; प्रमुख ९८-१०८; जैशिसं iv ८३]

अकुकवि— दे० अकमल।

अक्रूर— १. महाभारतकालीन यदुवंशी वीर, कृष्ण का बान्धव, ती० नेमिनाथ का भक्त।

२. मगधनरेश श्रेणिक बिम्बसार (ल० ५५० ई० पू०) का एक पुत्र, ती० महावीर का भक्त। [प्रमुख १५]

अक्षयकीर्ति— एक दिग० मुनि जिन्होंने मदुरा से आकर श्रवणबेलगोल की चन्द्रगिरिपर शापवश सर्प से डसे जाकर, समाधिमरण किया था। उसका यह स्मारक लेख पल्लवाचारि ने लिखा था। [जैशिसं i १५८]

अक्षयराज— मेवाड़-उद्धारक सुप्रसिद्ध भामाशाह का पौत्र, जीवाशाह का पुत्र, मेवाड़ के राणा कर्णसिंह का और तदनंतर राणा जगतसिंह का प्रधान दीवान रहा, कुशल सेनानायक और वीर योद्धा भी था। [प्रमुख ३०२-३०३]

अक्षयराम— या अखयराम, दि० गृहस्थ पंडित, मंडलाचार्य विद्यानंदि (सूरत के भट्टारक) के शिष्य ने जयपुर नरेश जयसिंह के सूबा गुजरात में नियुक्त मुख्यमन्त्री श्रावक ताराचन्द्र के चतुर्दशी व्रतोद्यापन के उपलक्ष्य में १७४३ ई० की चैत्र शु० ५ को चतुर्दशीव्रतोद्यापन विधि-पूजा- जयमाल आदि सहित रचकर पूर्ण की थी। महेन्द्रकीर्ति की अकड़ी भी इन्हीं की कृति है। [प्रवी i २०; प्रमुख ३१८; कैच ४६]

अक्षरकवि— विवेकमंजरी (हि०) के कर्ता।

अक्षयचंद मूता– जोधपुर नरेश मानसिंह (१८०३-४३ ई०) का अत्यन्त शक्तिशाली ओसवाल दीवान, राज्य में प्रायः सर्वेसर्वा था, १८१७ ई० में राज्य के साथ ईस्ट इंडिया कम्पनी की दिल्ली-संधि का विरोध किया, राजा भी भयखाता था, किन्तु अन्ततः राजा ने इस दीवान को विषपान द्वारा मरवा डाला। दीवान ने १८०५ ई० में जालौर में

एक सुन्दर पार्श्व-जिनालय भी बनवाया था जिसके प्रतिष्ठाचार्य जिनहर्षसूरि थे। [टांक; टाड]

अक्षयराज— साह अखैराज श्रीमाल, चौदहगुणस्थान-चर्चा (गद्य-पद्य) के रचयिता (१७वीं शती ई०), संभवतया विषापहारस्तोत्र-टीका व एकीभावस्तोत्र, कल्याणमन्दिर तथा भक्तामर-स्तोत्र की भाषा टीकाओं के भी कर्ता यही हैं, दिग० पंडित।

[कैच १५८, १७०]

अक्षयराम— या अखैराम-दे० अक्षयराम

अखैराज— दे० अक्षयराज

अखैराम— दे० अक्षयराम

अगणि बोम्मय्य— ने १५३९ ई० में श्रवणबेलगोल के त्यागद-ब्रह्म-जिनालय के लिए स्थायी भूदान आदि दिए थे। दानी श्रावक कम्यय्य का पिता। [मेर्ज ३४८; प्रमुख २७४]

अगरचन्द बच्छावत— अगरजी, अगर मेहता, या मेहता अगरचन्द बच्छावत, अकबर-जहांगीर कालीन बीकानेर के सुप्रसिद्ध कर्मचन्द बच्छावत के वंशज पृथ्वीराज का ज्येष्ठ पुत्र था (जन्म १७२० ई०), उदयपुर-मेवाड़ के राणा अरिसिंह द्वि. ने उसे मांडलगढ़ का दुर्गपाल नियुक्त किया, शीघ्र ही राणा का प्रमुख मन्त्री बन गया, उसके उत्तराधिकारियों, हमीरसिंह द्वि. और भीमसिंह के समय में राज्य का प्रधान बना रहा, क़लम और तलवार दोनों का धनी था, अनेक युद्धों में भागलिया। लगभग आधी शती तक राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करके १८०० ई० में, ८० वर्ष की पक्वावस्था में इस कुशल प्रशासक, सुदक्ष राजनीतिज्ञ, प्रचण्ड शूरवीर और स्वामिभक्त जैन राजपुरुष का स्वर्गवास हुआ। उसका अनुज हंसराज और पुत्र मेवाड़ राज्य के प्रतिष्ठित राज्यमन्त्री रहे।

[प्रमुख. ३२७-८; टांक; टाड; कैच. २२५-२२७]

अगरजी— दे० अगरचन्द बच्छावत

अगरमेहता— दे० अगरचन्द बच्छावत

अगरय्य— गंगनरेश एरेयगंगनीतिमार्ग प्र० (८५३-७० ई०) का स्वामिभक्त

इसे कर्माचिका भूल, स्वामी के समाधिमरण के समय भी उसकी पूरी सार-सम्हाल की थी। [प्रमुख ७८]

अक्कूबाई बलडू— मारवाड़ निवासी मूलसंघी ने १७८६ ई० में श्रवणबेलगोल में आकर एक जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी।
[मेजै. ३२५; जैशिसं. i ३१२; एक. ii १०२]

अक्कतिरुवण्ण अडियार—ने तमिलनाड के उत्तर अर्काट जिले के करन्दै स्थान की कुंदिगिरि के कुन्थुनाथ जिनालय के गोपुर का जीर्णोद्धार १०४८ ई० में कराया था। [जैशिसं iv ५१९]

अखिल— ने उड़ीसा की खण्डगिरि की छोटी हाथीगुफा, ई० पू० प्रथमशती में, जैनमुनियों के लिए एक लेण बनवायी थी।
[जैशिसं iv ११]

अग्गल— अग्गलकवि या अग्गलदेव, जो श्रुतकीर्ति त्रैविद्यचक्रवर्ती के शिष्य थे, और जिन्होंने ११८९ ई० में कन्नड ग्रन्थ 'चन्द्रप्रभचरित' की रचना की थी—वह कवि और उनका उक्त काव्य अनेक परवर्ती विद्वानों द्वारा प्रशंसित हुए।
[जैसाइ ११०; प्रमु. १०३; ककच.]

अग्गलदेव— चालुक्य सम्राट सोमेश्वर प्र. एवं द्वि. के महाप्रधान एवं सेनापति बलदेवय्य के पिता, गंगवंशी सामन्त। [जैशिसं. iv १३८,१५१]

अग्गलसेट्टी— के पुत्र शान्तिसेट्टी ने समाधिमरण किया था, इंगलेश्वर में, १२-१३वीं शती। [जैशिसं iv ६००]

अग्गोति— आठवींशती में जीर्णोद्धारित आन्ध्रप्रदेश के एक प्रसिद्ध जिनालय का मूल निर्माता। [जैशिसं iv. ४९]

अग्निभूति— ती. महावीर के द्वितीय गणधर। [छठीशती ई० पू०]

अग्निमित्र— जिनसेनीय हरिवंश पुराण (सर्ग ६०) में प्रदत्त राज्यवंशावली के अनुसार अवन्ती का शासक, वसुमित्र-सह (ल. २री शती ई० पू०) [जैसो. २९६-७]

अग्निमित्रा— पोलासपुर के महावीर भक्त धनी कुम्हार सद्दालपुत्र की धर्मात्मा पत्नी। [प्रमुख २१]

अग्निमुक्ति— २४ पौराणिक कामदेवों में सातवें कामदेव।

अग्रसेन— अग्रोहा (प्राचीन अग्रोदक जनपद) का प्रमुख, जिसे दिगम्बराचार्य

लोहाचार्य ने अग्रवती ईसापूर्व में उक्त जनपद की बहुसंख्यक जनता के साथ जैनधर्म में दीक्षित किया बताया जाता है—अग्रोतकान्वय या अग्रवालों का पूर्वज। वह ती. ऋषभदेव की सन्तति में उत्पन्न इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय था, ऐसी अनुश्रुति है। उसके १८ पुत्रों के गुरुओं के नाम पर अग्रवालों के साढ़ेसत्तरह गोत्र प्रचलित हुए बताये जाते हैं।

अच्चुदेव भटार— देवगण-पाषाणान्वय के आचार्य, जिनके शिष्य महीदेव के गृहस्थ शिष्य निरवद्य ने मेलसगिरि पर १०६० ई० के लगभग निरवद्य-जिनालय निर्माण कराया था। जगदेकदर्प सेनमार नामक तत्कालीन राजा ने उस मन्दिर के हित में एक दानशासन जारी किया था, अन्य अनेक लोगों ने भी दान दिया था।

[जैशिसं ii १९३]

अचल—

१. पौराणिक ९ बलभद्रों में से द्वितीय बलभद्र।
२. पौराणिक ११ रुद्रों में छठे रुद्र।
३. ती. महावीर के ११ गणधरों में से नौवें गणधर अचल, अचलवृत या अचलभ्राता।
४. यशोबाहु और कोण्डकुन्द के मध्य होनेवाले १२ आचार्यों मे से ५वें। [जैशिसं i १०५]
५. दे० अचलदास राजा [जैशिसं v २५३-२५४]

अचलकीर्ति—

१. पंडित, फीरोजाबाद में 'अठारहनाते की कथा' रची, 'विषापहारभाषा' के भी कर्ता।
२. 'विश्वनाथ चिन्तामणि ईश' नामक भाषा स्तोत्र की रचना, १६५८ ई० में, करने वाले कवि। [टाक]
३. कारंजा के काष्ठासंघी भट्टारक कुमारसेन के प्रशिष्य और दिल्ली पट्ट के मण्डलाचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य अचलकीर्ति ने १६६६ ई० की पौष शु २ सोमवार के दिन 'नगर' नामक स्थान में 'धर्मरासो' की हिन्दी पद्य में रचना की थी। संभव है कि तीनों अभिन्न हों।

अचलदास— देवीकोट (जैसलमेर) के ओसवाल कुशलचंद नाहटा के पौत्र, लालजीमल के पुत्र, उ० प्र० के मिर्जापुर नगर में आ बसे थे (१८४७-१९११ ई०), म्यूनिसपल कमिश्नर एवं अनरेरी

मजिस्ट्रेट भी रहे; १८७७, १८९६ और १८९९ ई० के दुर्भिक्षों में सरोज जनता में निःशुल्क अन्न वितरण किया था। [टांक]

अचलदास, राजा— रामपुरा (मंदसौर, म० प्र०) के जिनधर्म प्रेमी चन्द्रावत राजा, ल. १५५० ई०। [जैशिसं v २५३-४]

अचलदेवी— १. हुम्मच के जिनभक्त सान्तर नरेश वीरसान्तर सान्तर की एक धर्मात्मा रानी, ल. १०६० ई०।

[प्रमुख १७२; जैशिसं ii २११]

२. होयसल नरेश नरसिंह प्र. (११४१-७३ ई०) की रानी, बल्लाल द्वि. की जननी— दे. एचलदेवी।

३. दे. आचलदेवी; होयसल साम्राज्य के मंत्री चन्द्रमौलि की धर्मात्मा पत्नी। [मेजै. १६९]

अचला— कुषाणकालीन (ल. पहली शती ई०) की मथुरा की एक धर्मात्मा जैन महिला, मल्हण की पुत्री, भद्रयश की पुत्रवधु, भद्रनंदि की भार्या, जिसने मथुरा में एक सुन्दर प्रस्तर आयागपट्ट प्रतिष्ठा-पित किया था।

[प्रमुख ६८; जैशिसं ii, ७१; एइं ii, १४,३२]

अचलदासी— रामपुरा-भानुपुरा के जिनधर्म पोषक चन्द्रावतवंशी राजा दुर्गभान (१५२९-९१ ई०) का पिता। [प्रमुख २८७]

अचलोजी मेहता— मोहणोत ओसवाल, वंशसंस्थापक मोहनजी की १८वीं पीढ़ी में, नगराज का पौत्र, सूजाजी का पुत्र, जयमल का अग्रज, 'ख्यात' की प्रसिद्धि के मुहता नैणसी का पितामह, जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन ने १५६२ ई० में गद्दी पर बैठते ही अचलोजी को अपना मंत्री बनाया, मुगलों आदि के विरुद्ध लड़े गये राजा के अनेक युद्धों में उसने भाग लिया, अन्ततः १५७४ ई० के सवराड़ के युद्ध में इस धर्मवीर ने अपने प्राण देकर राजा की रक्षा की। राजा ने उसकी स्मारक छत्री बनवायी।' [प्रमुख ३०६; टांक]

अचलनंदि— दे. अजलनंदि (देसाई, ११ कु. लौ.)

अच्युतराजेन्द्र— जैन राजा अच्युतवीरेन्द्र जिनदत्त का पिता, ल. ११५० ई०।

अच्युतराय— या अच्युतदेवराय (१५३०-४२ ई०), विजयनगर सम्राट, कृष्णदेवराय का उत्तराधिकारी, उसके शासन में अनेक जिन-

मन्दिरों को दान दिये थे, १५३९ ई० में गोम्मटेश (श्रवण-बेलगोल) का महामस्तकाभिषेक भी हुआ। यह राजा जैनाचार्य वादी विद्यानंदि के शिष्य देवेन्द्रकीर्ति का भक्त था।

[प्रमुख. २७२; जैशिसं. iv ४६७; मेजै. ३५८]

अच्युत वीरेन्द्र चिक्कराय— अच्युतवीरेन्द्र का पुत्र, विद्यानन्द स्वामी का भक्त, जैन नरेश। उसके राज्यसेवकी धर्मात्मा वणिक चिक्कतायि ने कनकाचल शान्तीश की पूजार्थ ११८१ ई० में किसरीपुर का दान किया था— इसका पुत्र भी कुशल वैद्य था।

[जैशिसं iii ४०१; एक iv १५८]

अजउदयी— उदयिन, उदयीभद्र या उदायी— दे. उदायी।

[प्रमुख २०; भाइ. ६९]

अजयभूप— कुम्भलगढ़ का जैन नरेश, ल. १४०० ई०।

[मेजै. ३४२ फु० नो०]

अजय श्रेष्ठि— बेलगुम्बे के बोम्मश्रेष्ठि का पौत्र, कल्लय श्रेष्ठि एवं मामाम्बा का धर्मात्मा पुत्र, देशीगण-पनसोक (पनसोगे) बलि के ललितकीर्ति भट्टारक के शिष्य देवेन्द्र सूरि का गृहस्थ शिष्य, १४वी शती के अन्तिम पाद में अपने नगर की नगरकेरिबसदि मे जिनबिम्ब प्रतिष्ठित कराया था, एवं दानादिक दिये थे।

[मेजै २४१-२; जैशिसं iv ५३८]

अजबबीबी— मुर्शिदाबाद के जगत सेठ फतहचंद के पुत्र आनंदचंद की पुत्री और कमलनयन चौधरी के पुत्र उदयचन्द की पत्नी, धर्मात्मा महिला (१७७३ ई०)। [टांक]

अजयपाल— अजय नरेन्द्र या अजयपाल, जो त्रिभुवनगिरि (ताहनगढ़, बयाना के निकट) का यादववंशी जैन नरेश (११५०-५१ ई०) था और जिसके राजविहार में माथुरसंघी विनयचन्द्र मुनि ने अपनी 'चूनड़ी' आदि रचनाएँ लिखी थीं। यह कुमारपाल प्र० का उत्तराधिकारी था। उसके एक अन्य वंशज नरेश का नाम भी अजयपाल द्वि. (११९२-९४) था।

अजयपाल— धर्मात्मा श्रेष्ठि, साहु रत्नपाल जिसने महोबा में ११६३ ई० में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी, का पुत्र, इसकी जननी का नाम

शाखा और भाइयों के कीर्तिपाल, वस्तुपाल एवं त्रिभुवनपाल थे। प्रतिष्ठित प्रतिमा तीर्थंकर अभिनन्दनाथ की थी।
[ए. एस. आई. २१, पृ. ७४; जैशिसं. iii ३६०, ३६१]

अजयराज— या अजयदेव, शाकंभरी का चौहान नरेश, अर्णोराज का पिता, ल. ११०५-३९ ई०। [गुच. १११,१२९-३२]

अजयराज— रणथंभौर का जिनधर्म पोषक चौहाननरेश, ल. १११०-३० ई०। [कैच. १९]

अजयराज पाटनी— हिन्दी के दिग. जैन सुकवि, आमेर निवासी, सवाईजयसिंह के समय में, ल. १७०० ई०, जिनकी नेमिनाथ चरित्र, यशोधर चौपई, चारमित्रों की कथा, चरखा चौपई, कक्का बत्तीसी, जिनजी की रसोई, शिवरमणी विवाह, नमोकार सिद्धि, कई पूजाएं, विनती पद आदि लगभग २० रचनाएं हैं।

अजयराज श्रीमाल— दिग., जयपुर निवासी ल. १६५० ई०। विषापहार, कल्याण मंदिर, एकीभाव स्तोत्रों तथा चतुर्दश गुणस्थान चर्चा की गद्य भाषा वचनिकाओं के लेखक।

अजयवर्मा- धारा के परमारनरेश विन्ध्यवर्मा का पूर्वज, संभवतया पिता; उसके अनुज लक्ष्मीवर्मा का पौत्र देवपाल, अर्जुनवर्मा के पश्चात, ल. १२१८ ई० में गद्दी पर बैठा था। धारा के ये प्रायः सब ही परमारनरेश जिनधर्म-सहिष्णु थे। [जैसाइ १३४-१३५]

अजयसेन— सेनगण के आचार्य वीरसेन के प्रशिष्य, गुणसेन के शिष्य और उदयसेन के सधर्मा। [प्रजै. २२७-२२८]

अजवर्मा— या अजयवर्मन, वनवासि का जिनधर्मी कदम्ब नरेश (५६५-६०६ ई०), कृष्ण-वर्म द्वि. का उत्तराधिकारी, उसका स्वयं का उत्तराधिकारी भोगिवर्म था। [भाइ २५५]

अजातशत्रु— महावीरकालीन मगधनरेश श्रेणिक बिम्बसार का पुत्र एवं उत्तराधिकारी प्रतापी सम्राट अजातशत्रु (ई० पू० ५३५-५०३) अपरनाम कुणिक। ती. महावीर का भी भक्त था और तथागत बुद्ध का भी सम्मान करता था। उसने मगधराज्य का विस्तार करके उसे साम्राज्य जैसा बना दिया, पाटलि-पुत्र का निर्माण और रथमूसल एवं महाशिलाकंटक जैसे विध्वंसक

मुद्रयन्त्रों का आविष्कार किया। बड़ा युद्धप्रिय था। अन्त में श्रावक के व्रत भी धारण किये थे।

[आइ. ६६-६९; प्रमुख १८-२०]

अजिका— माथुरसंघी साध्वी आर्यिका, जिनकी शिष्या पद्मश्रीने ११७६ ई० में, उदयपुर के निकट ऊणाहेली के जिनमंदिर में जिनस्तम्भ निर्मापित किया था। [कैच. ७२]

अजितकीर्ति— १. मूलसंघी भ. धर्मभूषण के प्रशिष्य तथा भ. देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य, जिनने १५८४ ई० में उखलद (महाराष्ट्र) में नेमिनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी।

[जैशिसं v. २४२-२४३-२४४]

२. मूलसंघी भ. धर्मभूषण के प्रशिष्य और भ. विशालकीर्ति के शिष्य, जिन्होंने १६४४ एवं १६५४ ई० में उखलद (महाराष्ट्र) में बिम्ब प्रतिष्ठाएँ की थीं।

[जैशिसं v २६७-२६८]

३. नन्दिसंघ-सरस्वतीगच्छ-बलात्कारगण के भ. धर्मभूषण की आम्नाय में मलखेड (मान्यखेट) पट्ट के भ. धर्मचन्द्र के शिष्य, जिन्होंने १६५४ ई० में कनकयांतुक जाति के दिग. जैन सेठ चखाहु सेठी एवं उसके परिवार के लिए, संभवतया बालापुर में, जिनबिम्ब प्रतिष्ठित की थी।

४. भ. कुमुदचन्द्र के शिष्य और भ. विशालकीर्ति (१६७० ई०) के गुरु-नागपुर प्रदेश। [जैशिसं iv पृ० ४०७]

५. उसी संघ-गच्छ-गण के नागपुर पट्ट के भ. हेमकीर्ति के शिष्य तथा भ. रत्नकीर्ति के गुरु, जिन्होंने १८०० ई० में एक पार्श्व-प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। १७६५ व १७७५ के प्रतिमालेख भी इन्हीं के प्रतीत होते हैं।

[जैशिसं iv, पृ० ४१३-१५]

६. अजितकीर्ति प्र०, चारुकीर्ति के शिष्य और शान्तिकीर्ति के गुरु, ल. १८०० ई०।

७. अजितकीर्ति द्वि., उपरोक्त शान्तिकीर्ति के शिष्य, जिन्होंने माघ कृ० चतुर्थी बुधवार १८०९ ई० को श्रवणबेलगोलस्थ

चन्द्रगिरि पर समाधिमरण किया था।

[जैशिसं i ७२]

अजितचन्द्र— गुजरात के कुन्दकुन्दान्वयी मंडलाचार्य श्रीकीर्ति के शिष्य, चारुकीर्ति के गुरु और यशःकीर्ति के प्रगुरु, लं. ११०० ई०।

[जैशिसं iv २८७]

अजितञ्जय— तिलोयपण्णत्ति आदि के अनुसार चतुर्मुखकल्कि का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, जिसने वीराब्द ९९८ (सन् ४७१-२ ई०) में दो वर्ष धर्म-राज्य किया था।

[हरि. पु ६०/४९; जैसाइ ८, १७, २१; प्रमुख २००; भाइ. १५१]

अजितदास, कवि— वाराणसी निवासी प्रसिद्ध दिग. जैन कवि वृन्दावनदास के सुपुत्र, जैनरामायण अपरनाम पद्मपुराण छन्दोबद्ध के रचयिता, ल० १८५० ई०।

अजितदास भौंसा-जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के मुख्यमन्त्री एवं आमेर दुर्ग के प्रशासक दिग. जैन मोहनदास भौंसा (भाँवसा) के कनिष्ट पुत्र, संघी कल्याणदास के अनुज, जयपुर के संघीजी के जिनमंदिर के निर्माता। [प्रमुख. २९५, ३१४]

अजितदेव— १. श्वे. आचार्य, 'योगविधि' के रचयिता, ल. १२५० ई०।
२. श्वे. आचार्य, 'पिंडविशुद्धिदीपिका' के कर्त्ता, ल. १६५० ई०।
३. श्वे. आचार्य, कल्पसूत्रवृत्ति के रचयिता [कैच.१८७]

अजितंधर— पौराणिक अनुश्रुति के ११ में से आठवें रुद्र।

अजितनाथ— चौबीस तीर्थंकरों मे से द्वितीय, जन्मस्थान अयोध्या, वंश इक्ष्वाकु, पिता महाराज जितशत्रु, माता महारानी विजयसेना, निर्वाणस्थान सम्मेद शिखर।

अजितपालनाथ- ल. ११४५ ई० के शि० ले० में उल्लिखित द्रमिलसंघी आचार्य श्रीविजय मुनि के शिष्य या प्रशिष्य, संभवतया अजितसेन-वादीभसिंह। [जैशिसं iii ३१९]

अजितप्रभसूरि- श्वे., १२५० ई० में 'शान्तिनाथचरित्र' की रचना की थी।

अजितप्रसाद रायबहादुर- सहारनपुर के ला० जम्बूप्रसाद के कुटुम्बी, मोहरसिंह खजांची के भतीजे और ला० धूमसिंह के पुत्र, धार्मिक एवं प्रभावशाली सज्जन। [प्रमुख ३६४]

अजितब्रह्म— १. या ब्रह्माजित, गोलशृंगार वंशोत्पन्न वीरसिंह की भार्या पीथा (या वीथा) की कुक्षि से उत्पन्न, मूलसंघीसंघ के सूरत पट्ट के भ० देवेन्द्रकीर्ति अपरनाम सुरेन्द्रकीर्ति (१३८७-१४४२ ई०) के शिष्य ब्रह्मचारी, और उनके पट्टधर भ० विद्यानंदि (१४४२-६६ ई०) के गुरुभ्राता, श्रेष्ठ विद्वान, शास्त्रज्ञ एवं कुशल कवि थे। भ० विद्यानन्दि के आदेश से इन्होंने भृगुकच्छ (भड़ौच) नगर के नेमिनाथ-जिनालय में, ल. १४५० ई० में, संस्कृत भाषा में 'हनुमच्चरित' अपरनाम 'शैलमुनीन्द्रराज-चरित' काव्य की रचना की थी।

२. प्राकृतभाषा की, ५४ गाथा निबद्ध कल्लाणलोयणा (कल्याणलोचना) नामक आत्मसम्बोधनरूप रचना के कर्ता— अंतिमगाथा में 'णिद्दिट्ठं अजियबंभेण' पाठ है। संभवतया उपरोक्त से अभिन्न हैं। [पुसू. ११२]

३. अल्पसम्बोधपद्धति तथा उत्सर्गपद्धति के रचयिता—संभवतया न. १४२ से अभिन्न हैं। [टांक]

अजितमुनिपति— होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के सन्धिविग्रहिक मन्त्री एवं दण्डाधिप पुणिसमय्य के गुरु द्रविडान्वय के आचार्य, १११७ ई० के शि० ले० में उल्लखित। [जैशिसं ii २६४]

अजितयशोवादि—नन्नसूरि के शिष्य और प्रद्युम्नसूरि (१० शती) के प्रगुरु।

अजितसागर— सिंहसंघ के आचार्य, सिद्धान्तशिरोमणि एवं षट्खंडभूपद्धति ग्रन्थों के कर्त्ता। [टांक]

अजितसिंह— देवगढ़ (उ० प्र०) के मंदिर न० ११ के शि० ले० में उल्लिखित सिंहान्वय के माधवसिंह के शिष्य और धर्मसिंह के गुरु। [जैशिसं v, पृ० ११७]

अजितसिंहमेहता— अर्जुनसिंह के औरसपुत्र, सवाईसिंह के दत्तक पुत्र, १८६१ ई० में मेवाड़ राज्य में सिविल जज थे, उनके पुत्र छत्रसिंह मेहता १९१६ ई० में जिलाधीश थे। [टांक]

अजितसिंह सूरि— राजगच्छी धनेश्वरसूरि के शिष्य, और वर्धमानसूरि (१० शती) के गुरु।

अजितसेन— १. मूलसंघ-[illegible]-[illegible]कवाटान्वय के आचार्य आर्यसेन के शिष्य एवं पट्टधर, कनकसेन के गुरु, जिनसेन एवं नरेन्द्रसेन के प्रगुरु— जिनसेन के शिष्य महापुराणकार मल्लिषेण (१०४७ ई०) थे और नरेन्द्रसेन के शिष्य नयसेन (१०४३ ई०) थे। गोम्मटसारादि ग्रन्थों के कर्त्ता नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती (ल० ९५०-९९० ई०) इन अजितसेनाचार्य को गुरुतुल्य मानते थे और उनके लिए 'ऋद्धिप्राप्त', 'गणधरतुल्य' 'भुवनगुरु' जैसे विशेषणों का प्रयोग करते थे। गंगनरेश मारसिंह द्वि. गंगवज्र-गुत्तियगंग (९६१-७४ ई०) के गुरु भी यही अजितसेनाचार्य थे—उन्हीं के निर्देशन में उक्त नरेश ने ९७४ ई० में बंकापुर में समाधिमरण किया था। महासेनापति महाराज चामुण्डराय के भी वह कुलगुरु थे— वह स्वयं, उनकी माता काललदेवी, भार्या अजितादेवी तथा पुत्र जिनदेव इन्हीं आचार्य के गृहस्थ शिष्य थे। जननी की प्रेरणापर इन्हीं आचार्य के मार्गदर्शन में वीरवर चामुण्डराय ने श्रवणबेलगोलस्थ विन्ध्यगिरि की विशालकाय अप्रतिम गोम्मटेश-बाहुबलि प्रतिमा का निर्माण कराया था और इन्हीं आचार्य से ९८१ ई० में उसकी प्रतिष्ठा कराई थी। यह अजितसेन बड़े प्रभावक राजगुरु एवं संघाचार्य थे।

[शोधांक ४१, पृ० १९-२०; जैशिसं iv १३८; गोम्मटसारजीवकाण्ड, भाज्ञापी० १९७८, जनरल एडिटोरियल पृ० ५-१३]

२. अजितसेन पंडितदेव 'वादीभसिंह' द्रविड़संघ-नन्दिगण-अरुङ्गलान्वय के आचार्य कनकसेन वादिराज के प्रशिष्य और श्रीविजय ओडेयदेव के शिष्य एवं पट्टधर थे। प्रसिद्ध आचार्य वादिराजसूरि (१०२५ ई०) को भी वह गुरुतुल्य मानते थे। गुणसेन और कुमारसेन उनके सधर्मा थे, तथा मल्लिषेण मलधारी आदि अनेक शिष्य-प्रशिष्य थे। श्रवणबेलगोल की ११२८ ई० की मल्लिषेण प्रशस्ति में इनकी भूरि भूरि प्रशंसा कीगई है। अन्य बीसियों शि० ले० में इनका उल्लेख व ससम्मान स्मरण

है। सुप्रसिद्ध संस्कृत गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि-काव्य तथा स्याद्वादसिद्धि आदि इनकी कई कृतियां हैं। उच्च कोटि के संस्कृत साहित्यकारों में इनकी गणना है। भारी वादी, शास्त्रार्थी, राज्यमान्य एवं प्रभावक आचार्य थे। निश्चित ज्ञात तिथि १०८७ ई० है जो संभवतया इनके समाधिमरण की है। बड़े दीर्घजीवि थे, लगभग ६० वर्ष तो मुनिजीवन रहा। [प्रोषांक-४१.२०; जैसिभा. ३५.i.२१-२३; जैशिसं i ५४; iv २४६.२८२.]

३. सेनगणाग्रगण्य अजितसेनाचार्य जिन्होंने तुलुवदेशस्थ वंगवाडि की शासिका जैन रानी विट्ठला देवी के पुत्र कामिराय वीर नरसिंह वंगनरेन्द्र (१२४५-७५ ई०) के पठनार्थ शृंगारमन्जरी नामक अलङ्कार शास्त्र की रचना की थी। काव्यशास्त्र के पिगल, छन्द, अलङ्कार आदि विषयों में यह आचार्य निष्णात थे। अलङ्कार चिन्तामणि, छन्दःप्रकाश, वृत्तवाद नामक ग्रन्थों के रचयिता अजितसेन भी यही रहे प्रतीत होते हैं। [प्रोषांक ४१.२०]

४. आ. माणिक्यनंदि के परीक्षामुखसूत्र की लघुअनन्तवीर्यकृत प्रमेयरत्नमाला नाम्नी टीका की न्यायमणिदीपिका नामक टीका के रचयिता अजितसेनाचार्य। [प्रोषांक ४१.२०]

५. शाकटायन के शब्दानुशासन पर यक्षवर्मकृत चिन्तामणि टीका (लघीयसीवृत्ति) की मणिप्रकाशिका टीका के कर्त्ता अजितसेन। [वही.]

६. द्रविलसंघी वासुपूज्य त्रैविद्य के शिष्य समयदिवाकर अजितसेन पंडित जिनका समाधिमरण ११९४ ई० में हुआ प्रतीत होता है। [जैशिसं.V.१११; प्रोषांक ४१] संभावना है कि न. ४,५ और ६ अभिन्न हों।

७. सेनगण की पट्टावली में नं० १४ पर, अर्हद्बलि के पश्चात और गुणसेन के पूर्व उल्लिखित अजितसेन।

[जैसिभा. i,१,३७-४३]

८. सेनगण की एक दूसरी पट्टावली में राजसेन के उपरान्त तथा नरेन्द्रसेन त्रैविद्य के पूर्व उल्लिखित अजितसेन। यह नरेन्द्रसेन

नैष्ठिक पं० आशाधर (११९३-१२४३ ई०) के गुरु कमलभद्र के परदादा गुरु थे। [शोधांक ४१. २०; जैए. xiii २. १-५]

९. वर्धमान मुनि के दशभक्त्यादिमहाशास्त्र में प्रदत्त पट्टावली में नं० ४ पर, आर्यसेन के पश्चात और वीरसेन के पूर्व उल्लिखित अजितसेन। [वही.]

१०. ल. १२ शती के शि० ले० में मारियदेव, बालचन्द्रदेव और नेमिदेव के उपरान्त तथा सोमचन्द्रदेव के पूर्व उल्लिखित अजितसेनदेव। [जैशिसं iv ३०१]

११-१२. मैसूर प्रदेश के तंकले नामक स्थान में एक शिलास्तंभ पर ९ भट्टारकों की नामांकित मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं, जिनमें से नं० ५ किन्हीं अजितसेन भट्टारक की है, और नं० ८ किन्हीं अजितसेन भटार की है। [जैशिसं iv ५४८-५६]

१३. अजितसेन मुनिवर, जिनके गृहस्थ शिष्य और मन्त्री चामुण्ड के पुत्र जिनदेवन ने श्रवणबेलगोल में जिनमंदिर निर्माण कराया था। लेख तिथिरहित है किन्तु यह आचार्य उपरोक्त नं० १ से अभिन्न प्रतीत होते हैं। [जैशिसं. i· ६७]

अजितादेवी— गोम्मटेश संस्थापक (९८१ ई०) वीरमार्तण्ड महराज चामुण्डराय की भार्या और जिनदेवण की जननी, धर्मात्मा महिला। [प्रमुख. ८४]

अजीतमती— ब्रह्मचारिणी बाई अजीतमति, सागवाड़ा (डूंगरपुर) के सम्पन्न दि. जैन हुंबड श्रावक कान्ह जी की पुत्री, सम्भवतया हिन्दी की प्रथम ज्ञात जैन कवियत्री, अनेक फुटकर पद्य रचनाएँ अध्यात्मिक छन्द, षट्पद, भक्तिपरक पद आदि एक गुटके में संग्रहीत प्राप्त हुई हैं। निश्चित ज्ञात तिथि १५९३ ई० है-जो उनके स्वयं के द्वारा उक्त गुटके के लिखने की तिथि है। सूरत पट्ट के भ. वादिचन्द्र सूरि की वह गृहस्थशिष्या रही प्रतीत होती है। [दे. वीर-वाणी, ३ मई ८४, पृ. ३११-१५]

अज्जण— या अज्जनृप, कुन्तलनाड का एक जैन राजा, ल. १४०० ई० [जैशिसं. iv. ४३१]

अज्जणंदि— दे. अज्जणंदि या आर्यनंदि ।

अज्जदेव— दे. आर्यदेव ।

अज्जणंदिभटार- जिन्होंने तामिलनाड के तिरुमलइ, आनैमलइ पर्वत आदि स्थानों में कई मुनियों की, जो संभवतया उनके गुरु थे, मूर्तियां निर्माण कराई थीं - समय लगभग ८ वीं–१० वीं शती ई के मध्य । [देसाई. ४२, ५६-५९; जैंच. २९,३५-३८]
तमिलदेश के विशेषकर मदुरा प्रदेश मे जिनधर्म का पुनरुद्धार करने वाले महान प्रभावक आचार्य थे ।

अज्जवइर— दे. आर्य वज्र या वज्र ।

अज्जुक— महासामन्त, रट्टवंशी, ने १०४८ ई० में एक जिनालय के लिए प्रभूत दान दिया था । संभवतया वह सौन्दत्ति के पृथ्वीराम रट्टवाली शाखा से भिन्न किसी अन्य शाखा का नरेश था ।

अञ्जनचोर— महावीरकालीन एक प्रसिद्ध दस्यु, ५०० चोरों का सरदार, जम्बु-कुमार के आदर्श से प्रभावित होकर उनके साथ ही, अपने साथियों सहित, मुनिदीक्षा लेली और मथुरा के वन में तपस्या करके कल्याण लाभ किया । मथुरा के कंकाली टीला क्षेत्र में इन तपस्वियों की स्मृति में ५०१ स्तूप निर्मित हुए बताये जाते हैं ।

अञ्जना सुन्दरी- वीरवर हनुमान की जननी, पवनञ्जय (पवन कुमार या प्रभ-ञ्जन) की पत्नी, विद्याधर नरेश महेन्द्र की पुत्री और प्रहलाद की पुत्रवधु । सोलह पौराणिक महासतियों में परिगणित, धार्मिक सुशीला, पतिव्रता नारीरत्न । अनेक कवियों ने उसकी करुण कहानी चित्रित की ।

अणहल्ल देवी- नाडौल के जिनधर्मी चौहान नरेश आल्हणदेवकी रानी और महाराज केल्हणदेव की जननी । इस राजमाता ने ११६४ ई० में संडेराव ग्राम के महावीर जिनालय के लिए भूमि दान दिया था । [जैंच.२२]

अटरादित्य— दे. अदटरादित्य प्र. एवं द्वि. कोङ्गाल्ववंशी जैन नरेश, ल० ११०० ई० । [प्रमुख. १८८]

अट्ठोपवासभटार- दे. अष्टोपवासि भटार.

अणहिल्ल— नड्डोल का चाहमान जैन नरेश, १२११ ई० [गुच. १३७, १४४]

अणुमान— वीरवर हनुमान का अपरनाम [उ. पु.]— दे. हनुमान

अण्ण— १. स्वयंभू- छन्द (ल. ८०० ई०) में उल्लिखित प्राकृत के पूर्ववर्ती कवि [जैसाइ. ३८५]

२. गोम्मटेश प्रतिष्ठापक चामुण्डराय (९८२ ई०) का बोलचाल का एक नाम। [जैसाई. २९२]

३. अण्ण, आम्नक-शाकम्भरी के अर्णोराज चौहान के अपरनाम- दे. अर्णोराज.

अण्णन्— मदुरा के पांड्य नरेश के जैन राजमन्त्री इस अण्णन् तमिलप्पल्लवरैयन की प्रार्थना पर शिगिकुलम (जिनगिरि) जिनमन्दिर की भूमि को करमुक्त किया गया था, १२५३ ई० में। [जैशिसं. iv ३३१-३३२]

अण्णमय्य— कोल्हापुर के शिलाहार कालीन ११३५ ई० के शि. ले. में स्थानीय रूपनारायण जिनालय के संरक्षक वीर-वणिक संघ का प्रतिनिधि धर्मात्मा जैन सेठ। [जैशिस iv २२१]

अण्णय्य— मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडेयर का जैन टकसालाध्यक्ष, राजा से प्रार्थना करके श्रवण-बेलगोल में 'कल्याणी' सरोवर निर्माण कराया, और उसके पौत्र कृष्णराज प्र. ओडेयर(१७१३-३१ ई०) के समय में उक्तसरोवर के तट पर सभामंडप, शिखर आदि बनवाकर उक्त निर्माण कार्य को पूर्ण किया था। [जैशिसं. i भू. ४८-४९; शोधांक-३८ पृ. ६०४-५]

अण्णय्या— राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृ. के जैन महामात्य और कवि पुष्पदंत (९५९ ई०) के आश्रयदाता भरत के पितामह। [जैसाई. ३१६; प्रमुख. १०९]

अण्णिग— वीर नोलंब, राजा अय्यप्प का ज्येष्ठ पुत्र,ल.९५० ई० [मेजै. ६९]

अण्णिग भट्टारक–१०२४ ई० के मारोल शि. ले. के महापंडित अनन्तवीर्य के प्रगुरु, प्रभाचन्द्र के गुरु और विमुक्तव्रतीन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य दिग. आचार्य। [देसाई. १०५]

अनंतश्रेष्ठि— राजा त्रियम्बक का महामात्य, 'जिनधर्म महामति', अम्बनश्रेष्ठि का पुत्र, ल. १५वीं शती।

अतिगैमान— 'व्यामुक्त-श्रवणोज्ज्वल' उपाधिधारी, केरल का जैन नरेश (ल· ११वीं शती), एरिणि का वंशज और किसी राजराजा का पुत्र—इसने कतिपय यक्ष-यक्षिणी मूर्तियों का जीर्णोद्धार कराके तिरु-मलै (अर्हत्सुगिरि, अर्हंत का पवित्र पर्वत) पर प्रतिष्ठापित किया था, प्रणाली बनवाई थी और घंटा आदि दान दिये थे। उक्त स्थान तुण्डीरमण्डल (तोण्डैमंडल) में स्थित था। [जैशिसं. iii. ४३४; प्रमुख. ११३]

अतिवीर— ती. वर्द्धमान महावीर का एक नामान्तर।

अत्तिकाम्बिका— बाणसवंशी जैन नरेश चाक्किराज की धर्मात्मा माता—दे. चाक्कि-राज [जैशिसं. ii. १८६]

अत्तिमप्पन शंबुकुल पेरिमाल—दे. राजगंभीर शंबुवराय, राजराज तृ. चोल का जैन सामंत. [मेजै. २४९]

अत्तिमब्बे— कल्याणी के उत्तरवर्ती चालुक्यवंश-संस्थापक सम्राट् तैलप द्वि. (९७३-९७ ई०) के प्रधान सेनापति मल्लप की पुत्री, प्रधानामात्य धल्ल की पुत्रवधु, प्रचण्ड महादण्डनायक वीर नागदेव की प्रिय पत्नी, कुशल प्रशासनाधिकारी वीरपदुवेल की जननी, 'दानचिन्ता-मणि' महासती अत्तिमब्बे आदर्श धर्मपरायण महिलारत्न थी। उसके सत् के तेज से नर्मदा का तूफानी प्रवाह स्थिर हो गया था, ऐसी अनुश्रुति है। कन्नड महाकवि पोन्न के शान्तिनाथ पुराण की उसने एक सहस्र प्रतियां अपने व्यय से लिखवाकर वितरित की थीं, अनेक मंदिरों व देवमूर्तियों का निर्माण कराया था, चतुर्विध-दान में सदा तत्पर रही, अनेक धार्मिक उत्सव, तीर्थयात्राएँ, तथा लोकोपयोगी कार्य किये। परवर्ती समय में अनेक विशिष्ट धर्मा-त्मा महिलाओं को उसकी उपमा दी जाती थी—'अभिनव अत्ति-मब्बे' कहलाना बड़े गौरव की बात समझी जाती रही। [प्रमुख. ११५-११८; भाइ. ३१४-५; जैशिसं iv ११७; देसाई. १४०-१४१; मेजै. १२७, १५६-१५७]

अत्तिमब्बे— दे. अत्तिमब्बे-अत्तिमब्बरसि नामरूप भी मिलता है। [जैशिसं. iv. ११७]

अदटरादित्य— कर्णाटक राज्य के कुर्ग एवं हासन जिलों का भूभाग कोंगलनाड कहलाता था– १०वीं से १२वीं शती पर्यन्त इस प्रदेश पर चोल नरेशों की सन्तति में उत्पन्न कोंगाल्व-वंशी नरेशों का राज्य रहा। इसवंश के सब राजे व रानियां आदि परम जिनभक्त थे। इसवंश में अदटरादित्य उपाधिधारी दो राजा हुए– राजेन्द्र पृथ्वी कोंगाल्व अदटरादित्य प्र० (१०६६-११०० ई०) तथा उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी त्रिभुवनमल्ल-चोल-कोंगाल्व अदटरादित्य द्वि.। इन नरेशों ने अदटरादित्य- चैत्यालय अपरनाम कोंगाल्व जिनगृह आदि कई भव्य जिनमंदिर बनवाये- काणूरगच्छ के आचार्य गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र सिद्धान्त प्रभृति कई दिग. मुनिराजों को स्वगुरु मानकर उनका सम्मान किया, अन्य अनेक कार्य धर्मप्रभावना के लिए किए। इनके अनेक मन्त्री, राजपुरुष, अधिकारी, सामन्त आदि भी जैन थे। दे. अटरादित्य। [प्रमुख· १८६-१८८; भाइ. ३३०-१; जैशिसं. i. ४९८,५००; ii. २२४]

अद्भुत कृष्णराज–चन्द्रावती-आबू का परमारवंशी जैन नरेश, ९६७ ई०, अरण्यराज का पुत्र, संभवतया कान्हडदेव से अभिन्न है। इसका पुत्र धरणीवराह था। [गुच. १८७,१९८]

अदलराय— या अदलरादित्य, होयसल नरसिंहदेव के महासामन्त गुलि. बाचिदेव के उपनाम, ११५० ई०– दे. बाचिदेव। [जैशिसं. iii. ३३३]

अदियम— एक प्रचण्ड चोल सेनापति जिसे विष्णुवर्द्धन होयसल और उसके जैन सेनापति गंगराज ने बुरी तरह पराजित किया था। दे. आदियम। [जैशिस i ५३, ९०, भू. ९०; प्रमुख. १४३]

अधोमुख— पौराणिक नवनारदों में अन्तिम।

अध्याडि नायक–या मलेयाल अध्याडिनायक, एक कुशल धनुर्धर जैन वीर, जिसने १२४४ ई० में श्रवणबेलगोलस्थ विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का अचूक निशाना लगाया था। [जैशिसं. i. ७४]

अनङ्गपाल तोमर–दे. अनंगपाल तोमर।

अनन्तपालदेव—त्रिभुवनगिरि का शूरसेनवंशी जैन नरेश (११२५ ई०), पृथ्वीपाल के पुत्र त्रिभुवन पाल का प्रपौत्र, विजयपाल का पौत्र, सूरपाल का पुत्र। [कंच. २७]

अनन्तवन् आसेवन्—जो गुणसेनदेव का शिष्य था, और जिसके भतीजे आच्चन् श्रीपालन ने मद्रास के कीलक्कुडि स्थान में जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी —ल. ७वीं शती ई० में [जैशिसं. iv. ३३-३८]

अनन्त— विजयनगर नरेश हरिहर द्वि. के शासनकाल के १३९७ ई० के शि.ले. के अनुसार राजा के एक बन्धु इम्मडि बुक्क का जैन धर्मावलंबी पुत्र अनन्त क्षमापति। [जैशिसं. v. १८२]

अनन्तकवि— कन्नड कवि, भ. शीलसागर और पंडिताचार्य के शिष्य, १७७८ ई० में 'बेलगोल-गोम्मटेश्वर चरित' की रचना की थी, जिसमें अनेक ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं का भी उल्लेख है, जिनमें से कई भ्रमपूर्ण हैं। [ककच.; जैशिसं. i सू. २७, ४८]

अनन्तकसेट्टि— जिसके पुत्र आदिसेट्टि ने मावितकेरे (मैसूर प्रदेश) के चन्द्रनाथ चैत्यालय में, ल. १४वीं शती ई० में, एक मनोज्ञ चतुर्विंशति-तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. iv. ४१९]

अनन्तकीर्ति— १. मूलनन्दिसंघ की पट्टावलियों में न० ३३ पर, उज्जैनी-पट्ट के अन्तर्गत, उल्लिखित आचार्य, पट्टाबली प्रदत्त समय ७०८–७२८ ई०, देशभूषण एवं धर्मनंदि के मध्य. [जैसिभा. i. ४, ७८-८०; शोधांक—१]

२. प्रामाण्यभङ्ग नामक ग्रन्थ के कर्त्ता (ल. ७५० ई०)- अनन्तवीर्य ने अपनी सिद्धिविनिश्चय टीका में इनका उल्लेख किया है। [शोधांक—२]

३. बृहत्सर्वज्ञसिद्धि एवं लघुसर्वज्ञसिद्धि के कर्त्ता, जिनके उल्लेख एवं उद्धरण वादि शान्तिसूरि के जैनतर्कवार्तिक, अभयदेवसूरि के वादमहार्णव, प्रभाचन्द्र के न्यायकुमुदचन्द्र और वादिराज के न्याय-विनिश्चयविवरण में प्राप्त होते हैं -ये सब आचार्य प्रायः ११वीं शती ई० के हैं। इन अनन्तकीर्ति का अनुमानित समय नौवीं शती ई० है। [शोधांक-२]

४. वादिराज (१०२५ ई०) द्वारा जीवसिद्धि-प्रकरण के कर्त्ता के रूप में स्मृत अनन्तकीर्ति--संभवतया यह स्वामिसमन्तभद्र (२री शती ई०) कृत जीवसिद्धि की टीका होगी। धर्मसिद्धि, प्रमाण-निर्णय आदि के कर्त्ता अनन्तकीर्ति भी संभवतया यही हैं, और संभव है कि न० ३ से अभिन्न हों। [शोधांक--१]

५. मालव के शान्तिनाथदेव से सम्बद्ध बलात्कारगण की चित्र-कूट आम्नाय के मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य अनन्तकीर्तिदेव, जिन्हें, १०७५ ई० के लगभग, केशवदेव हेग्गडे ने भूदान आदि दिया था। [जैशिसं. ii. २०८; एक. vii. ११४]

६. दिग. माथुरसंघी अनन्तकीर्ति, जिनने ११४७ ई० में बीकानेर प्रदेश में एक जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। [बीका.लेसं. २४५७; शोधांक-३]

७. अनन्तकीर्ति मुनि तपसाधक, जो होयसल नरेश वीर बल्लाल-देव द्वि. के दण्डनायक भरत की धर्मात्मा पत्नि जक्कब्बे के गुरु थे -इस महिला ने ११९६ ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिसं. iii. ४२७; एक vii. १९६; प्रमुख. १५८]

८. काणूरगण की पट्टावली में देवकीर्ति के पश्चात और धर्म-कीर्ति के पूर्व उल्लिखित अनन्तकीर्ति, जो १२०७ ई० में बान्धव नगर की शान्तिनाथ वसति के अध्यक्ष थे। [शोधांक--३; प्रसं. १३३; जैशिसं. iv. ३२१]

९. देशीगण-पुस्तकगच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव (स्वर्ग. १११५ ई०) के प्रशिष्य, आचारसार (११५४ ई०) के कर्त्ता वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य, रामचन्द्र मलधारि के गुरु और शुभ-चन्द्र अध्यात्मि (स्वर्ग. १३१३ ई०) के प्रगुरु अनन्तकीर्ति मुनिप --संभवतया न० ७ से अभिन्न हैं। [जैशिसं. i. ४१]

१०. काष्ठासंघ--माथुरगच्छ-पुष्करगण के प्रतिष्ठाचार्य अनन्त-कीर्ति, जो चन्द्रवाड (फीरोजाबाद, उ० प्र०) के १३७१ ई० के कई प्रतिमालेखों में उल्लिखित हैं। यह श्रेयांससेनके शिष्य और कमलकीर्ति (१३८९ ई०) के गुरु थे। [शोधांक--३; जैसिभा. xiii, २, १३२; प्रमुख. २४८]

११. इसी गण-गच्छ के भ. कमलकीर्ति (१४४९-८८ ई०) के शिष्य। [शोधांक ३]

१२. नंदिसंघ–सरस्वतीगच्छ–बलात्कारगण के सागवाड़ा पट्ट के मंडलाचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य, जिन्होंने १५४५ ई० के लगभग विशाल चतुर्विध संघ सहित दक्षिण देश को बिहार किया था और वहाँ रत्नकीर्ति-पट्ट स्थापित किया था, जिसके मुनि नग्न एवं वनवासी होते रहे। [शोधांक-३; जैसिभा. xiii. २. ११२-११५]

१३. इसी संघ–गण–गच्छ के मालवा पट्ट के अभिनव रत्नकीर्ति के शिष्य, कुमुदचन्द्र (१५५० ई०) के सधर्मा, और ब्रह्म रायमल्ल (१५५९–७६ ई०) तथा भ. प्रतापकीर्ति (१६१९ ई०) के गुरु–समय ल. १५५० ई० । [शोधांक–३]

१४. इसी गण-गच्छ के कृष्णगढ़ पट्ट के भ. महेन्द्रकीर्ति के पट्टधर और भ. भुवनभूषण के गुरु अनन्तकीर्ति– १७५५ ई० । [शोधांक–३]

१५. इसी गण-गच्छ के नागौर पट्ट के भ. सहस्त्रकीर्ति द्वि. के शिष्य और हर्षकीर्ति के गुरु भ. अनन्तकीर्ति– ल. १८०० ई० । [शोधांक–३]

१६. मूलसंघ–काणूरगण के अनन्तकीर्तिदेव जिनके गृहस्थ शिष्य बोप्पय ने, १४वीं शती ई० में, समाधिमरण किया था। [जैशिसं. iv. ४१८]

१७. अजमेर के नंदिसंघी भ. महेन्द्रकीर्ति के पट्टधर और भुवनभूषण के गुरु भ. अनन्तकीर्ति (१७१६-४० ई०) । इन्हींके उपदेश से १७३७ ई० में श्रावक रामसिंह ने मारोठ में साहों के जिनालय की प्रतिष्ठा कराई थी। [प्रभावक. २३०; कैच. ८६]

अनन्तदास— ने संघीदौगलदास आदि कई सेठों के सहयोग से, भ. क्षेमकीर्ति के उपदेश से, १६३९ ई० में शान्ति-जिन प्रतिष्ठोत्सव किया था। [कैच. ७७; अनेकान्त, xiii. १२७]

अनन्तनाथ— चौदहवें तीर्थंकर, जन्मस्थान अयोध्या, पिता सिंहसेन, माता जयश्यामा, इक्ष्वाकुवंशी नरेश।

अनन्तनाथ— कन्नड कवि, मन्मथ कोरवंजि-यक्षगान के रचयिता, ल.१८००ई० ।

अनन्तपाल— अन्हिलपुर (गुजरात) के पल्लीवाल दिग. जैन, आमनकवि के ज्येष्ठ पुत्र, कवि धनपाल पल्लीवाल (१२०४ ई०) के अग्रज, पाटी-गणित के रचयिता । [जैसाइ. ४७०]

अनन्तपालय्य—मनेवेग्गडे दण्डनायक, चालुक्य सम्राट त्रिभुवनमल्लदेव का जैन सामन्त तथा उसके अधीन एक बड़े प्रदेश का सूबेदार [जैशिसं. ii–२४३]

अनन्तपंडित— कन्नड कवि श्रीपति का मातुल, स्वयं विद्वान एवं कवि, वर्धमान (१५४२ ई०) द्वारा विद्वत्स्तोत्र में स्मृत ।

अनन्तप्प— दे. अन्तप्प ।

अनन्तमती— आर्यिका, हूमड़वंशोत्पन्न, जिन्होंने १५४७ ई० में, काष्ठासंघ-नंदीतटगच्छ-विद्याधरगण-रामसेनान्वय के भ. विशालकीर्ति के प्रशिष्य, भ. विश्वसेन के शिष्य, भ. विद्याभूषण से पार्श्व आदि जिनबिंबों की प्रतिष्ठा कराई थी । बड़ौदा के बाड़ी मोहल्ला के दिग. जैन मंदिर में उक्त लेखांकित पार्श्व प्रतिमा विराजमान है ।

अनन्तराज अरसु–बिलिकेरे के जैन राजा, और मैसूर नरेश इम्मडि कृष्णराज ओडेयर के सामन्त एवं प्रधान अंगरक्षक राजा देवराज अरसु (स्वर्ग १८२६ ई०) के प्रपितामह । [प्रमुख. ३२५]

अनन्तराम वैद्य—ग्वालियर निवासी मेहता ओसवाल, जयपुर नरेश रामसिंह के दीवान, जिनमंदिर बनवाया, १८४३ ई० । [टंक.]

अनन्तवर्मदेव—पूर्वीगंग नरेश, जिसके कृपापात्र जैन सेठ कण्णम नायक ने विज़गापटम जिले के भोगपुर स्थान में राजराजा - जिनालय निर्माण कराके उसके लिए ११८७ ई० में, अन्य व्यापारियों की सहमति से भूदान किया था । [मेजै. २५३; प्रमुख. १९१]

अनन्तवीर्य— १. बृहद् या वृद्ध अनन्तवीर्य, इस नाम के सर्वप्रथम आचार्य और भट्टाकलङ्कदेव (६४०–७२० ई०) के सर्वप्रथम टीकाकार जिनका उल्लेख सिद्धिविनिश्चय के टीकाकार अनन्तवीर्य द्वि. (रविभद्र. शिष्य) ने किया है । इनका अनुमानित समय ल. ७२५–५० ई० है । [शोधांक-१६ पृ. २०५; जैसो. १६८,१७७]
२. अनन्तवीर्य द्वि., 'रविभद्र पादोपजीवि', उपलब्ध सिद्धिविनि-

इचयटीका के कर्त्ता, अकलङ्क- साहित्य के मर्मज्ञ, विशिष्ट अभ्यासी एवं तलदृष्टा व्याख्याकार, विद्यानन्द के प्राय: समकालीन, समय ल. ८००-२५ ई० । प्रभाचन्द्र और वादिराज द्वारा स्मृत । इनके शिष्य कुमारसेन के प्रशिष्य विमलचन्द्र का समय ल. ९००-३५ ई० है । अकलङ्ककृत लघीयस्त्रय तथा प्रमाण-संग्रह के टीकाकार भी संभवतया यही अनन्तवीर्य हैं । [जैसो. १७६, १९९; शोधांक-१६; प्रवी. i-१, ८३]

३. लघु अनन्तवीर्य, जो माणिक्यनंदि कृत परीक्षामुखसूत्र की प्रमेयरत्नमाला नामक टीका के कर्त्ता हैं --टीका का अपरनाम परीक्षामुख-पंजिका है । यह टीका प्रभाचन्द्र (१००९-५३ ई०) कृत प्रमेय-कमलमार्तंड के संक्षेपसार के रूप में प्रस्तुत की गई है, और स्वयं उसकी न्यायमणिदीपिका नामक टीका के कर्त्ता अजितसेन पंडित का समय ल. ११७० ई० है । अत: लघु अनन्तवीर्य १०५० और ११७० ई० के मध्य किसी समय हुए थे । [शोधांक-१६]

४. अनन्तवीर्य भट्टारक, जिनका उल्लेख १०७७ ई० के एक शि. ले. में अकलङ्कसूत्र की वृत्ति के रचयिता के रूप में हुआ है, और जिनके पूर्व --अभिनन्दनाचार्य, कविपरमेष्ठि तथा त्रैविद्यदेव का उल्लेख हुआ है, और उपरान्त द्रविड़संघ-नन्दिगण-अरुङ्गलान्वय के कुमारसेन, मौनिदेव, विमलचन्द्र, कनकसेन वादिराज तथा कमलभद्र का क्रमश: उल्लेख हुआ है--उक्त वर्ष में कमलभद्र को ही लेखोल्लिखित दान दिया गया था । संभवतया उपरोक्त न० ३ से अभिन्न हैं । [जैशिसं. ii. २१३; एक. viii. ३५; शोधांक-१६]

५. अनन्तवीर्य या अनन्तवीर्य्यय, जो बेलगोल निवासी वीरसेन सिद्धान्तदेव के प्रशिष्य तथा गोणसेन पंडित भट्टारक के शिष्य थे, और जिन्हें ९७७ ई० में रक्कस नामक राजा ने दान दिया था । [जैशिस. ii-१५४; एक. i. ४; शोधांक-१६]

६. अनन्तवीर्य मुनि जिनका उल्लेख चामराजनगर की पार्श्व-बसति के १११७ ई० के शि. ले. में द्रविडान्वय के मल्लिषेणव्रती

के पश्चात्, श्रीपालदेव के साथ हुआ है । [जैशिसं. ii-२६४; एक-iv-८३; शोधांक-१६]

७. अनन्तवीर्य सिद्धान्ति, जो मूलसंघ-काणूरगण-कुन्दकुन्दान्वय के माघनंदि के शिष्य उन प्रभाचन्द्रदेव के सधर्मा थे जो १११७ ई० के शि. ले. के प्रस्तोता राजा नन्नियगंग के पिता राजाबर्म्मदेव के गुरु थे–अतः ल. ११०० ई० मे थे । [जैशिसं. ii. २६७; एक. vii-५७; शोधांक-१६]

८. अनन्तवीर्य सिद्धान्तदेव, जो काणूरगण-मेषपाषाणगच्छ के माघनन्दि सिद्धान्तदेव के शिष्य थे, प्रभाचन्द्र और मुनिचन्द्र के सधर्मा थे, और गंगनरेश रक्कसगंग के गुरु थे –यह उल्लेख उक्त राजा के भतीजे नन्नियगंग के मदिर निर्माण एवं भूदान के ११२१ ई० के शि. ले. में हुआ है । अतः इनका समय ल. ११०० ई० है, संभवतया न० ७ से अभिन्न हैं । [जैशिसं ii-२७७; शोधांक-१६]

९. अनन्तवीर्य सिद्धान्तकर जिनके शिष्य श्रुतकीर्ति बुध, कनकनंदि त्रैविद्य और मुनिचन्द्रव्रती थे –मुनिचन्द्र के शिष्य कनकचन्द्र, माधवचन्द्र और बालचन्द्र त्रैविद्य थे । अन्तिम दोनों को १११२ ई० (मतान्तर से ११३२ ई०) में जिनमदिरों के लिए दान दिये गये थे । संभवतया यह अनन्तवीर्य न० ७ एवं ८ से अभिन्न हैं । [जैशिसं. ii-२९९; एक. vii. ६४; शोधांक १६]

१०. सूरस्थगण के 'चारुचरित्रभूधर', 'राजाओं द्वारा वन्दितचरण', 'राद्धान्तार्णवपारग' अनन्तवीर्य, जिन की शिष्य परम्परा में क्रमशः बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, कल्नेलेदेव अष्टोपवासिमुनि, हेमनंदि, विनयनंदि और एकवीर मुनि हुए– अन्तिम के अनुज पल्लपण्डित अपरनाम पाल्यकीर्तिदेव के समय के ११२४ ई० के शि. ले. में इनका उल्लेख हुआ है । [जैशिसं ii-२६९; एक-iv-१९; शोधांक-१६]

११. अनन्तवीर्य, जिनका उल्लेख सेनगण की पट्टावली में न० २२ पर, अमितसेन के प्रशिष्य एवं कीर्तिसेन के शिष्य, तथा वीरसेन के गुरु और जिनसेन के प्रगुरु के रूप में हुआ है –समय ल. ७५० के कुछ पूर्व, संभव है कि न० १ से अभिन्न हों । [शोधांक-१६]

१२. अनन्तवीर्य, जिनका उल्लेख उसी पट्टावली में न० ४८ पर प्रद्युम्नकाव्यकर्त्ता महासेन (ल. ९९६-१००९ ई०) के प्रशिष्य, नरसेन के शिष्य, और राजभद्र के गुरु एवं वीरभद्र के प्रगुरु के रूप में हुआ है। [शोधांक-१६, पृ-२०७]

१३. वह अनन्तवीर्य जिनका उल्लेख कर्णाटक के बेलारी जिले के कोगलि ग्राम में प्राप्त एक तिथिरहित प्रतिमा लेख में हुआ है। [शोधांक-१६]

१४. हुम्मच के, ११४७ ई० के शि० ले. में उल्लिखित, मलधारी व्रती के कनिष्ठ सधर्मा या शिष्य और श्रीपाल त्रैविद्य के सधर्मा, महानवादी अनन्तवीर्य जो द्रविडसंघ-नंदिगण-अरुङ्गलान्वय के आचार्य थे। यह न० ६ से अभिन्न प्रतीत होते हैं, शायद न० ३ से भी। इन्हीं का उल्लेख ११५३ ई० के बेलूर के शि. ले. में भी है। [जैशिसं. iv. २४६; जैशिसं. iii. ३२६; एक. viii-३७; शोधांक-१६]

१५. पश्चिमी चालुक्य नरेश जयसिंह द्वि. जगदेकमल्ल के १०२४ ई० के एक शि. ले. में उल्लिखित गुरु परम्परा–कमलदेव-विमुक्त-व्रतीन्द्र-सिद्धान्तदेव–अण्णिय भट्टारक–प्रभाचन्द्र-अनन्तवीर्य—में अंतिम आचार्य, जिनके विषय मे कहा गया है कि वह उद्भट विद्वान थे, और व्याकरण, छन्द, कोष, अलङ्कार, नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, संगीत, कामशास्त्र, गणित, ज्योतिष, निमित्तज्ञान, स्मृति-साहित्य, राजनीति, जैनदर्शन एवं अध्यात्म में निष्णात थे। उनके शिष्य गुणकीर्ति सिद्धान्त भट्टारक और प्रशिष्य देवकीर्ति पंडित थे। यह परम्परा यापनीय संघ की, या मूलसंघ-सूरस्थगण-चित्रकूटान्वय की प्रतीत होती है। सभव है न० १० से अभिन्न है। [देसाई १०५]

१६. धारवाड़ जिले के मुगद नामक स्थान से प्राप्त १०४५ ई० के एक शि. ले. में उल्लिखित अनन्तवीर्य जो यापनीयसंघ के प्रभाचन्द्र के शिष्य निरवद्यकीर्ति के प्रशिष्य, गोवर्धनदेव के शिष्य और कुमारकीर्ति के सधर्मा थे। कुमारकीर्ति के शिष्य दामनन्दि और प्रशिष्य गोवर्धनदेव त्रैविद्य थे जिनके शिष्य दामनंदिगण्ड-

विमुक्त थे। शि. ले. अन्तिम दो आचार्यों के समय का है। [देसाई. १४२]

१७. अनन्तवीर्य पंडित, जिनका उल्लेख 'प्रवचन-परीक्षा' के कर्त्ता दि. जैन ब्राह्मण पं० नेमिचन्द्र (१६वीं शती ई०) ने अपने एक पूर्वज के रूप में किया है और उन्हें 'षटवाद-विशारद' बताया है। [शोधांक-१६; प्रसं. १०१]

१८. जयदेव भट्टारक के शिष्य, देशीगण के अनन्तवीर्यदेव जिनके प्रिय गृहस्थ शिष्य राय गौड ने आदितीर्थंकर की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। शायद इन्हीं के एक अन्य शिष्य ओबेयमसेट्टि ने एक अन्य प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. iv. ५४७, ५६७, ६१६, ६१७]

अनन्तवीर्यदेव— दे. अनन्तवीर्य न० ५– संभव है गृहस्थ पंडित व व्रती श्रावक रहे हों।

अनन्तसेनदेव— सप्तभंगीतरंगिणी के कर्त्ता पं० विमलदास के गुरु, वीरग्राम निवासी, दिग. [टंक]

अनन्तहंसगणि—श्वे., दशदृष्टान्त–चरित्र (१५१३ ई०) के रचयिता।

अनन्तामती-गन्ति–नविलूर संघ की तपस्विनी आर्यिका, जिन्होंने ल. ७०० ई० में, द्वादशतप धारणकर तथा यथाविधि व्रतों का पालन करके श्रवण-बेलगोल के कटवप्र पर्वत पर सुरलोक प्राप्त किया था। [जैशिसं. i-२८; एक. ii, ९८]

अनपायचोल— दे. कुलोत्तुंग चोलदेव द्वि. (११५० ई०) —इसके समय में शेक्किलार ने तमिल के प्रसिद्ध पेरियपुराणम् की रचना की थी। [मेजै. २७४]

अनलदेवी— सेनापति आषडाह्‌ कटकराज की पत्नी और कवि आसड की जननी। [टंक]

अनलसेन— या अंगसेन, अनुश्रुति के अनुसार उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के पुरोहित और जैनाचार्य सिद्धसेन दिवाकर के पिता। [टंक]

अनाथपिंडक— ती. महावीरकालीन एवं उनका भक्त श्रावस्ती का धनाधीश, जेतवन बिहार बनाने वाली बुद्धभक्त विशाखा का श्वसुर। [प्रमुख. २३]

अनुपमकवि— १०वीं शती ई० के प्रसिद्ध दिग. जैन दण्डनायक श्रीविजय की एक उपाधि। [टंक; एइं. X. पृ. १४७-५३; जैशिसं. iv-९७]

अनुपमादेवी— विदुषी, कलामर्मज्ञ, धर्मात्मा महिला, राज्यमन्त्री तेजपाल की धर्मपत्नी, उसी की प्रेरणा एवं देखरेख मे मन्त्रीश्वर तेजपाल-वस्तुपाल द्वय ने शत्रुञ्जय एवं गिरनार के और आबू के विश्व-प्रसिद्ध देलवाड़ा जिनमंदिरों का निर्माण कराया था, १२३० ई० में. [टंक.; गुच. २९५]

अनुरुद्ध— १. या अनिरुद्ध, महाभारतकालीन कृष्ण का पौत्र और प्रद्युम्न का पुत्र।

२. मगधनरेश उदायी का उत्तराधिकारी, जिसके उपरान्त मुण्ड, नागदशक आदि राजा हुए। [प्रमुख. २०]

अनूपसिंह— जिनचन्द्रसूरि का भक्त, जैनधर्म पोषक बीकानेर नरेश, १६६९-९८ ई० [प्रमुख ३३६]

अनूपसिंह भंडारी–जोधपुर निवासी ओसवाल, जब जोधपुर नरेश अजीतसिंह गुजरात का सूबेदार था (१७२०-२१ ई० में) तो यह भंडारी वहाँ उसका प्रतिनिधि तथा सर्वेसर्वाशासक था, किन्तु क्रूर एवं अत्याचारी था, उसने कपूरचंद भंसाली की हत्या कराई। जब १७२१ में हैदरकुली खाँ सूबेदार हुआ तो अहमदाबाद की जनता ने भंडारी की हवेली पर आक्रमण कर दिया, वह कठिनाई से जान बचाकर भाग सका। [प्रमुख. ३११; टंक]

अनंगपाल तोमर–दिल्ली नगर का निर्माण करने वाला तोमरवंशी अनंगपाल प्र० (७९६ ई०); उसके वंशजों में अनंगपाल द्वि. तथा कुछ कालोपरान्त अनंगपाल तृ० (११३२ ई०) था, जिसका राज्यश्रेष्ठि नट्टलसाहू था– उसने दिल्ली में कई विशाल एवं भव्य जिन-मंदिर बनवाये थे। यह तथा उस वंश के प्राय: सभी राजा जैन-धर्म के प्रश्रयदाता थे। [भाइ. १६६; प्रमुख.२०८-२०९; जैसो. २१९]

अनन्तप्प— अनन्तप्प, कन्नडकवि, अहिंसाकथे नामक यक्षगान (ल. १७२० ई०) का रचयिता, चन्दण्ण श्रेष्ठि और उसकी भार्या चन्नम का पुत्र, चिक्क-बल्लालपुर के राजा बैचभूप का आश्रित। [ककच.]

अन्धकवृष्णि— हरिवंश में यदुकुल के शूर के पौत्र, समुद्रविजय, वसुदेव आदि के पिता, कृष्ण और अरिष्टनेमि के पितामह। [उत्तर पु.]

अन्धवेल— १३९८ ई० के सिद्धरबसति के शि. ले. के अनुसार भ. महावीर के एक गणधर। [जैशिसं. i-१०५]

अन्नप्पसेठ— मैसूर के जैन नगरसेठ वीरप्प का पुत्र और कुमार वीरप्प का पिता, ल० १८५० ई० [प्रमुख. ३२७]

अन्हुलदेव— नाडौल का चौहान राजा, अश्वराज का पुत्र, ११६१ ई० में नाडौल में जिन-बिंब-प्रतिष्ठा कराई और ११६२ ई० में नादरा में विशाल महावीर जिनालय बनवाया। [प्रमुख. २०८]

अपराजित— १. भ. महावीर की शिष्य परम्परा में छठे आचार्य, तृतीय श्रुतकेवलि (४३५-४१३ ई० पू.). [जैसो. २६२]

२. खंडेला के राजा-प्रजा को जैनधर्म में दीक्षित करने वाले जिनसेनाचार्य के परम्परा गुरु. [कैच. १०३]

अपराजितगुरु—जो सेनसंघ के मल्लवादि के प्रशिष्य और सुमति-पूज्यपाद के शिष्य थे, और जिन्हें राष्ट्रकूट अमोघवर्ष प्र० के गुजरात के वायसराय कर्कराज सुवर्णवर्ष ने, ८२१ ई० के सूरत-ताम्रपत्र द्वारा नागसारिका के जिनमंदिर के लिये हिरण्ययोगा नामक क्षेत्र प्रदान किया था। [जैशिसं. iv. ५५]

अपराजितसूरि—*अपरनाम श्रीविजय, विजय या विजयाचार्य, यापनीय-नन्दिसंघ* के आचार्य चन्द्रनंदि के प्रशिष्य और बलदेवसूरि के शिष्य थे। आचार्य श्रीनंदिगणी की प्रेरणा पर इन्होंने शिवार्यकृत भगवती आराधना (प्रथम-द्वितीय शती ई०) की 'विजयोदया' नामक टीका की रचना की थी जो उक्त ग्रन्थ की सर्वप्राचीन उपलब्ध टीका है और उसका रचनाकाल ल. ७०० ई० है। उन्होंने दशवैकालिक सूत्र पर भी एक टीका लिखी थी। आरातीय सूरि-चूडामणि नागनंदिगणी उनके विद्यागुरु थे। संघभेद के समय प्रारम्भ में यापनीय संघ दिग. -श्वे. उभय सम्प्रदायों को जोड़ने वाली कड़ी का कार्य करता था, किन्तु अपराजितसूरि के समय तक वह दिग. मूलसंघ के नन्दिगण में अन्तर्भुक्त हो चला था। [जैसो. १८३; विजयोदया टीका संयुक्त भगवती आराधना के प्रकाशित संस्करणों की प्रस्तावनाएँ आदि]

अपरादित्य— कोंकण नरेश मल्लिकार्जुन का उत्तराधिकारी जैन नरेश, ११६२ ई० [गुच. २७२]

अप्पण— या अय्यण, कल्याणी के पश्चिमी चालुक्यवंश का नरेश, विक्रमादित्य के पश्चात और जयसिंह के पूर्व हुआ –शि. ले. ११३९ ई० का है। [जैशिसं iii. ३१३; एक. viii. २३३]

अप्पय— रट्टनरेश कार्त्तवीर्य चतुर्थ का श्रीकरण पदाधिकारी, और उक्त राजा एवं उसके उत्तराधिकारी मल्लिकार्जुन के मन्त्री तथा रट्ट-जिनालय के निर्माता बीचण का पिता, १२०४ ई० [जैशिसं iii. ४५३-४५४; iv. ३१८-३१९]

अप्पणय्य— और दडनायक केसिमय्य तथा रेब्बिसेट्टि की प्रार्थना पर चालुक्य त्रैलोक्यमल्ल के राज्य मे, १०६७ ई० में, नलगोण्डा की रानी ने कुछ प्राचीन जिनमंदिरों के लिए भूमि दान की थी। [जैशिसं V. ४०]

अप्पणय्य ऊरोडेय–ने चालुक्य जयसिंह द्वि के राज्य मे १०७२ ई० मे मैसूर के रायचूर जिले के तलेखान स्थान में एक जिनमंदिर बनवाया था जिसके लिये राज्य ने भूमि आदि दान की थी। [जैशिसं. V ४५]

अप्पयार्य— दे. अय्यपार्य, नामान्तर अप्पय, अय्यप, आर्यप।

अप्पर— काञ्ची के जिनधर्मी पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन प्र (६००-३० ई०) के समय के जैन मठ का मुनि धर्मसेन धर्मविरोधी होकर शैवसंत अप्पर के नाम से प्रसिद्ध हुआ –राजा को भी शैव बना लिया और दोनों ने जैनों पर भीषण अत्याचार किये। [भाइ. २४३; प्रमुख. ८९; देसाई. ३३, ३५, ६३, ८१]

अप्पुवराज— राष्ट्रकूट कृष्ण तृ. के जैन महासामन्ताधिपति शंकरगण्ड द्वि (९६४ ई०) के पितामह का पितामह–पूरा वंश जैन था। [देसाई. ३६८]

अबिनंदनभटार i व ii–दे. अभिनंदन भटार प्र. व द्वि। [देसाई.५९]

अबुल फजल— मुगल सम्राट अकबर (१५५६-१६०५ ई०) का दरबारी, मन्त्री और इतिहासकार, अकबरनामा तथा आइने-अकबरी का लेखक –अपनी 'आईन' में उसने जैनधर्म व उसके अनुयायियों का भी एक परिच्छेद में वर्णन किया है, कई तत्कालीन जैन विशिष्ट

जनों का भी उल्लेख किया है। वह एक उदार सहिष्णु सूफी विद्वान था। [भाइ. ४८५; प्रमुख. २८०; शोधांक. १७-१८]

अब्जचन्द्र— दे. पद्मचन्द्र।

अब्दुर्रहमान— प्रसिद्ध अपभ्रंशकाव्य 'संदेशरासक' का कर्ता, जैनों से प्रभावित, उस ग्रन्थ की प्रतियाँ भी जैन शास्त्र भंडारों में ही मिली हैं समय ११वीं शती ई०। [टंक]

अब्दुर्रहमान फूलवाला—दिल्ली निवासी मुसलमान, रत्नों की कटाई का काम करता था, एक स्थानकवासी साधु के प्रभाव से जैनधर्म अपनालिया, मृत्यु. १९१३ ई० [टंक]

अब्बक्कादेवी— चोटवंश की राजकुमारी ने अपनी भगिनी पद्मलदेवी के पुण्यार्थ, १५७१ ई० में एक ताम्रशासन द्वारा मूडबिद्रे की बसदि को दान दिया था। [जैशिसं. iv. ४८०]

अब्बलदेवी— गंगनरेश अरुमुलिदेव रक्कसगंग (ल. १०५० ई०) की धर्मात्मा रानी। [जैशिसं. ii २१३; iv. ४१०]

अब्बलब्बा— अपरनाम चन्द्रबेलब्बे, राष्ट्रकूट राजकुमारी, सम्राट अमोघवर्ष प्र. (८१५-७६ ई०) की पुत्री, और गंगनरेश राचमल्ल सत्यवाक्य द्वि. के अनुज एवं उत्तराधिकारी बूतुग गुणदुत्तरंग की पत्नी तथा कोमार बेडेंग एरेयंग की जननी, धर्मात्मा जिनभक्त राजरानी। [जैशिसं. ii. १४२; प्रमुख. ७७]

अब्बलब्बे— कन्नड के जैन महाकवि रन्न (जन्म ९४९ ई०) की धर्मात्मा जननी।

अब्बेय माचल या माचर—उस धर्मात्मा मार या मारेय का पिता, जिसने ११२० ई० के लगभग मत्तवूर की बसति में तपस्विनी आर्यिका चटवे-गन्ति का स्मारक बनवाया था। [जैशिसं. ii. २७३; iv. ४१०; मेजै. ३२९]

अभय— १. ती. महावीर कालीन १० अनुत्तरोपपादक मुनिवरों में से एक। [जैसिको. i ७०]

२. भद्रबाहु द्वि (ई० पू० ३७-१४) के गुरु यशोबाहु का अपर-नाम।

३. दे. अभयकुमार या अभयराजकुमार।

४. दे. अभयदेव।

अभयकीर्ति— १. सैद्धान्तिक, वनवासी, दिगम्बराचार्य, जो नन्दिसंघ की पट्टावली में न० ७७ पर, ग्वालियर पट्ट के अन्तर्गत, चारुकीर्ति के पश्चात और वसन्तकीर्ति के पूर्व उल्लिखत हैं –समय ल. १२०७ ई०।

२. उसी संघ के देवचन्द्र के शिष्य, और वसन्तकीर्ति के गुरु तथा विशालकीर्ति के प्रगुरु –विशालकीर्ति के शिष्य शुभकीर्ति और प्रशिष्य धर्मचन्द्र का उल्लेख १३०० ई० के चित्तौड़ के शि. ले. में हुआ है। [जैशिसं. V. १५२,१७३]

३. उसी संघ के दिल्ली-पट्टाधीश रायराजगुरु प्रभाचन्द्र के शिष्य, और उन आर्यिका धर्मश्री के प्रगुरु, जिन्हें १४०४ ई० में महमूद शाह तुगलुक के शासनकाल में, साहीवाल जातीय श्रावक नल्ह ने पुष्पदन्त कृत अपभ्रंश आदिपुराण की प्रति भेंट की थी।

४. काष्ठासंघ-माथुरगच्छ-पुष्करगण की पट्टावली के दसवें गुरु, जो विश्वकीर्ति के शिष्य और भूतिसेन के गुरु थे ।

५. उसी पट्टावली के २३वें गुरु, जो यशःकीर्ति के शिष्य और महासेन के गुरु थे।

अभयकुमार— अभय, अभयराजकुमार या अभयकुमार, मगधनरेश श्रेणिक बिंबिसार (छठी शती ई० पू०) के वैश्य (मतान्तर से ब्राह्मण) पत्नी नन्दा से उत्पन्न पुत्र, पिता महाराज श्रेणिक का बुद्धिनिधान महामन्त्री, विचक्षण राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, अत्यन्त न्यायप्रिय सुविचारक, परम जिनभक्त, ती. महावीर का अनन्य उपासक, अन्त में मुनिदीक्षा लेकर आत्मसाधन किया। अरब (इराक़ या ईरान) का राजकुमार आर्द्रक (संभवतया अर्देशिर) इसका परम मित्र था और इसके प्रभाव से उसने जैनधर्म अंगीकार किया, ती. महावीर के भारत आकर दर्शन किये, अन्त में मुनिदीक्षा ली। अभयकुमार की अद्वितीय बुद्धिमत्ता, चातुर्य एवं न्यायप्रियता की अनेक कहानियां प्रचलित हैं –आज भी जैन गृहस्थ मांगलिक अवसरों पर 'हमें अभयकुमार जैसी बुद्धि प्राप्त हो' यह भावना करते हैं। [भाइ. ६५; प्रमुख. १७-१८]

अभय कुमार— जैसलमेर राज्य के विक्रमपुर का धर्मात्मा जैन सेठ, जिसने ल. ११८५ ई० में, जिनपतिसूरि के मार्गदर्शन में, तीर्थयात्रा - संघ निकाला था। [कैच. ३९]

अभयचन्द— १. अजितसिंह मेहता के भागिनेय, जो १८६२ ई० में मेवाड़ राज्य (उदयपुर) में सिविल जज थे। [टांक.]

२. दे. अभयपाल, चन्द्रवाड़ का चौहान नरेश, ल.१३७१ ई० [प्रमुख.२४८]

अभयचन्द्र — १. मूलनन्दिसंघ - सरस्वतीगच्छ - बलात्कारगण की पट्टावली में न०३८ पर उल्लिखित आचार्य, जो रामकीर्ति के पश्चात् और नरचन्द्र के पूर्व उज्जयिनी पट्टपर हुए, समय ल. ८७८-९७ ई०। [शोधांक-४८]

२. काष्ठासंघ - माथुरगच्छ - पुष्करगण की पट्टावली के १४वें आचार्य, विश्वचन्द्र के पश्चात तथा माधवचन्द्र के पूर्व हुए। [शोधांक-४८]

३. अभयचन्द्र पंडित, जो किरिय मौनी भट्टारक के गुरु थे, और जिनका उल्लेख गंगनरेश भूतुग (९३८-५३ ई०) के शासन काल के, ९५२ ई० के शि.ले. में हुआ है। [मेजै. २०१]

४. अभयचन्द्र वादी, जिनका उल्लेख चालुक्य जयसिंह प्र. के समय के, १०३६ ई० के शि. ले. में, कालमुख-शैव संप्रदाय के पंचलिंग - मठाध्यक्ष लकुलिश पंडित की वादविजयों के प्रसंग में हुआ है। [मेजै. ४९-५०, २०२]

५. बडोह (विदिशा, म. प्र.) के जिनमंदिर के द्वार पर उत्कीर्ण, १०५७ ई० के शि.ले.में उल्लिखित अभयचन्द्र। [जौशिसं.V.३८]

६. बेलवे के जैनगुरु, जो मूलसंघी मेघचन्द्र के शिष्य थे, और जिन्हें १०६२ ई० में होयसलनरेश विनयादित्य द्वि. ने भूदान दिया था। [भाइ. ३४१-२; प्रमुख. १३५; मेजै. ७५; जैशिसं. iv.१४५]

७. वह अभयचन्द्र, जिनकी गृहस्थ श्राविका शिष्या पद्मावती-यक्का ने १०७८ ई० में उनके स्वर्गवासी होने पर उनके द्वारा अधूरे छोड़े जिनालय का निर्माण कार्य पूरा कराया था।

[मेजै. १५७; जैशिसं. iv. ५५९]

८. देशीगण-पुस्तकगच्छ के चारुकीर्ति के प्रशिष्य, माघनन्दि के शिष्य, तथा बालचन्द्र के गुरु और उन रामचन्द्र मलधारि के प्रगुरु, जिनके शिष्य शुभचन्द्र का स्वर्गवास १३१३ ई० में हुआ था —अत: इन दिगम्बराचार्य अभयशशि या अभयचन्द्र का समय ल. १२५० ई० है। [शोधांक-४८; जैशिसं. i. ४१]

९. वैयाकरणी दिगम्बराचार्य अभयचन्द्र, जिन्होंने ल. १२८० ई० में शाकटायन कृत शब्दानुशासन की 'प्रक्रियासंग्रह' नाम्नी टीका लिखी थी। [शोधाक-४८; जैसाइ. १५१, १५५]

१०. अभयचन्द्र सिद्धान्ति त्रैविद्य - चक्रवती, जिन्होंने नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवती के गोम्मटसार-जीवकांड की (गाथा ३८३ पर्यंत की) 'मन्दप्रबोधिका' नामक संस्कृत टीका लिखी थी, जिसका उल्लेख केशवर्णी ने उसी ग्रन्थ की अपनी कन्नडी टीका (१३५९ ई०) में किया है। त्रिलोकसार-व्याख्यान तथा कर्मप्रकृति इन अभयचन्द्र की अन्य कृतियां रही बताई जाती हैं। यह देशीगण-पुस्तकगच्छ की इंगुलेश्वर शाखा के दिगम्बराचार्य थे, और बालचन्द्र पंडितदेव (स्वर्ग. १२७५ ई०) के गुरु या ज्येष्ठ सधर्मा थे, अत: इनका समय ल. १२००-५० ई० है। [शोधांक-४८; जैशिसं. iii. ५१४ व ५२४]

११. उसी इंगुलेश्वर शाखा के अभयचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, जो माघनन्दि भट्टारक के शिष्य थे, नेमिचन्द्र भट्टारक के सधर्मा थे, और बालचन्द्र पण्डितदेव (स्वर्ग. १२७५ ई०) के गुरु थे —यह न० १० से अभिन्न प्रतीत होते हैं, संभवतया न० ८ और ९ से भी। [शोधांक-४८; जैशिसं. iii. ५१४, ५२४; एक. v. १३१, १३२]

१२. महावाद-वादीश्वर, रायवादीपितामह, वादिसिंह अभयचन्द्र सिद्धान्तदेव, जो अकलङ्कदेवकृत 'लघीयस्त्रय' के टीकाकार तथा स्याद्वादभूषण नामक कृति के रचयिता हैं। [शोधांक-४८; न्याय-कु. च. i की प्रस्तावना]

१३. अभयचन्द्र महासैद्धान्तिक, जो उसी संघ के बालचन्द्रव्रती के

पुत्र या शिष्य थे, और जिनका स्वर्गवास सल्लेखनापूर्वक १२७९ ई० में हुआ था। [मेजै २१३; एक. v. १३३; जैशिसं. iii. ५२४]

१४. अभयचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, जिनके शिष्य श्रुतमुनि और प्रशिष्य प्रभेन्दु थे– प्रभेन्दु के प्रधानशिष्य श्रुतकीर्ति (स्वर्ग. १३८४ ई०) थे। श्रुतमुनि के परमागमसार में भी इनका उल्लेख है। [शोधांक ४८; जैशिसं. iii. ५८४; प्रवी. i १२८]

१५. चारुकीर्ति पंडितदेव (ल. १२०० ई०) के गुरु अभयचन्द्र सिद्धान्तदेव [जैशिसं. iii. ४३८; एक. vii. २२७]

१६. उन बालचन्द्र पंडितदेव के गुरु अभयचन्द्र सिद्धान्तिक-चक्रवर्ती, जिनकी गृहस्थशिष्या श्राविका मलियक्के (मलव्वे) ने, ल. १२०० ई० में, समाधिमरण किया था। [जैशिसं. iii. ४३९; एक. xii. ५]

१७. माघनन्दि एवं नेमिचन्द्र की शिष्य परम्परा में उत्पन्न महानवादी 'वादिसिंह' अभयचन्द्रदेव, अभयचन्द्रसूरि या अभयसूरि, जिनके शिष्य श्रुतमुनि एवं प्रशिष्य श्रुतकीर्ति थे –श्रुतकीर्ति के प्रशिष्य चारुकीर्ति पंडितदेव का स्वर्गवास १३९८ ई० में हुआ। [शोधांक-४८; जैशिसं. i. १०५]

१८. रायराजगुरु, महावादवादीश्वर, रायवादीपितामह अभयचन्द्र सिद्धान्तदेव, जिनका गृहस्थशिष्य नागरखंड का शासक बुल्लगौड था –बुल्लगौड के पौत्र गोपणगौड का स्वर्गवास १४१५ ई० में हुआ था। [शोधांक-४८; जैशिसं. iii ६१०; iv. ५४५; एक. vii ३२९]

१९. देवचन्द्र के शिष्य अभयचन्द्र, जो नागरखंड के शासक गोपीपति (गोपण) और उसके पुत्र बुल्लपगौड (स्वर्ग १४६६ ई०) के राजगुरु थे। [जैशिसं. iv. ५४५; iii. ६४६; एक. viii. ३३०]

२०. वर्धमान मुनिद्वारा विद्वत्स्तोत्र (१५४२ ई०) में स्मृत अभयचन्द्रसूरि, जो कल्याणनाथ के पुत्र थे और साल्वेन्द्र नृप की सभा में पूजित हुए थे। [शोधांक-४८; प्रसं. १३५]

२१. उसी स्तोत्र में अन्यत्र स्मृत अभयचन्द्रमुनि सिद्धान्तवेदी, जिनका उल्लेख पं. आशाधर (ल. १२००-५० ई०) के पश्चात हुआ है, और जिन्हें केशवार्य आदि कई राजाओं द्वारा पूजित रहा बताया है। [प्रसं. १३५; जैशिसं. iii. ६६७; एक. viii. ४६; शोधांक-४८]

२२. प्रवचनपरीक्षा, प्रतिष्ठातिलक आदि ग्रन्थों के रचयिता पं. नेमिचन्द्र के गुरु अभयचन्द्रसूरि –नेमिचन्द्र का समय ल. १४०० ई० है। [शोधांक-४८; प्रसं १०१]

२३. नन्दि संघ के निर्ग्रन्थाचार्य अभयचन्द्र त्रैविद्यचक्रवर्ती, जिनकी प्रेरणा से भट्टारक नेमिचन्द्र ने, १५१५ ई० में, चित्तौड़ दुर्ग में गोम्मटसार की जीवतत्त्वप्रदीपिका नाम्नी संस्कृत टीका रची थी –उक्त टीका का शोधन-सम्पादन करके उसकी प्रथम प्रतिलिपि इन्हीं अभयचन्द्र ने की प्रतीत होती है। [शोधांक-४८; पुजैवासू. ८९]

२४. नन्दिसंघ की लाड-बागड शाखा के भ. अभयचन्द्र, जो सूरत पट्ट के भ. लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य थे, और अभयनन्दि एवं पद्मकीर्ति (१५४० ई०) के गुरु थे। [शोधांक-४८]

२५. भ. अभयचन्द्र, जिनके मारवाड़ निवासी शिष्यद्वय, ब्र धर्मरुचि एवं ब्र. गुणसागर पंडित ने १४९१ ई० में श्रवणबेलगोल की यात्रा की थी। [जैशिसं. i. ३३२; मेजै. ३२६]

२६. उन रत्नकीर्ति के प्रगुरु भ. अभयचन्द्र, जिनकी शिष्या आर्यिका वीरमती ने, १६०५ ई० में, मैनपुरी (उ. प्र.) में जिन प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी –१६०६ ई० के बालापुर के जिन प्रतिमा लेख में भी संभवतया इन्हीं का उल्लेख है। [शोधांक-४८]

२७. ध्यानामृत तथा भव्यजनकंठाभरण नामक ग्रन्थों के रचयिता अभयचन्द्र –१२०० और १३०० ई० के मध्य हुए प्रतीतहोते हैं।

२८. क्षीरोदानी-पूजाष्टक (१४९१ ई०) के रचयिता अभयचन्द्र।

२९. अभयचन्द्र, जिनका उल्लेख, अभयनन्दि के साथ, सुमति सागर रचित बृहत्-षोडशकारण-पूजा में, तथा कारंजा से प्राप्त, १६०२ ई० के. इन्हीं सुमतिसागर के चिन्तामणि-पार्श्वनाथ प्रतिमालेख में हुआ है। [शोधांक- ४८; प्रवी. i. ६३]

३०. अभयचन्द्र, जिनका उल्लेख लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य, अभयनंदि के गुरु और रत्नकीर्ति के परम्परागुरु के रूप में, रत्नकीर्ति के शिष्य भ. कुमुदचन्द्र की हिन्दी रचना ऋषभ-विवाहला (१५५१ ई०) में हुआ है। [शोधांक- ४८]

३१. अभयेन्दु या अभयचन्द्र वाक्पति-वादिवेताल, जिनका उल्लेख महापुराण (१०४७ ई०) आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता दिग. मल्लिषेणसूरि ने अपने सरस्वती- (भारती-) कल्प में किया है- इस कल्प का ज्ञान उन्होंने इन अभयचन्द्र से प्राप्त किया था। [प्रवी. i ९७]

३२. भट्टारक कुमुदचन्द्र के शिष्य एवं पट्टधर भ. अभयचन्द्र (१६२८-१६६४ ई०), सूरत के नन्दिसंघीपट्ट से सम्बद्ध, बड़े विद्वान एवं प्रभावक सन्त थे, देवजी ब्रह्मचारी आदि उनके अनेक शिष्य थे। [प्रभावक, २०६-२०७]

अभयचन्द्र— दिग. जैन, हिन्दी कवि, भक्तामर-चरित् और दशलक्षण-व्रतकथा के लेखक। [टंक]

अभयचन्द्र— जिसने धनरूप व मनरूप के सहयोग से प्रतापगढ़ नरेश महारावल सामंतसिंह के राज्य में, १७८१ ई० में, भ. आदिनाथ का भव्य जिनालय बनवाया था। [कैच. ३५]

अभयचन्द्र— श्वे. श्रावक, सोमक का पुत्र, सिन्धदेशस्थ मामनपुर का निवासी, खरतरगच्छी जयसागर उपाध्याय के निर्देशन में, १४२६ ई० में मरुकोट के लिये तीर्थ-यात्रा संघ ले गया था। [टंक.]

अभयचन्द्र— विक्रमादित्य-चरित्र (१४३३ ई०) के लेखक रामचन्द्र के गुरु। [टंक]

अभयचन्द्र सूरि— राजकुलगच्छी का तथा उनके शिष्य अमलचन्द्र का उल्लेख ल. ८५४ ई० के एक शि. ले. में हुआ है। [टंक; एइं.i.१२०]

अभयचन्द्रिका— माघनन्दि के शिष्य मेघचन्द्र की भतीजी, प्रसिद्ध आर्यिका, ल० ११०० ई० । [जैशिसं i. ५५]

अभयड— कुमारपाल सोलंकी के जैन दंडनायक सोभनदेव के पुत्र और वसन्तपाल के पिता ने ११९९ ई० में नन्दीश्वर - बिम्ब प्रतिष्ठा की थी, परम जैन था । [गुच. २९५. २९६]

अभयतिलक— श्वे विद्वान, जैन एवं अजैन न्यायशास्त्रों के प्रसिद्ध टीकाकार, यथा पंचप्रस्थ-न्यायतर्क-व्याख्या या न्यायालंकार टिप्पण, न्याय-सूत्रटीका, न्यायभाष्यटीका, न्यायवार्तिक टीका, तात्पर्यवृत्तिटीका, न्याय-तात्पर्यपरिशुद्धि टीका, आदि, । शायद इन्होंने हेमचन्द्राचार्य कृत सं. द्वयाश्रय काव्य की वृत्ति, पालनपुर में १२५५ ई० में रची थी —यह जिनेश्वरसूरि के शिष्य थे । [कैच १६७]

अभयदेव— यशोदेव का पुत्र और गुजरात नरेश कुमारपाल चौलुक्य का सेना-पति । राजाज्ञा से ल. ११६० ई० में तरौरा नामक स्थान में ती. अजितनाथ का भव्य एवं विशाल जिनमंदिर निर्माण कराया था ।

अभयदेव— १. इनके शिष्य वर्धमान ने, गुर्जरनरेश जयसिंह सिद्धराज के शासनकाल में, १११५ ई० में, देवक्करग्राम में, धर्म-रत्नकरण्डक नामक ग्रन्थ की रचना की थी । [टंक.]

२. दिग. श्रावक, जिसने अपनी भार्या मल्ही एवं पुत्र केसो सहित, १३३१ ई० में, एक कांस्य जिनप्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी, जो अब सोनागिर के एक मदिर में विराजमान है । [जैशिस. V १७९]

३. स्तंभन-पार्श्वनाथस्तोत्र (हिन्दी) के रचयिता, जो दिल्ली के दिग. जैनमदिर के शास्त्रभंडार के एक गुटके (लिपि १५६९ ई०) में सुरक्षित है ।

४. गुणभद्रसूरि के शिष्य और त्रिभंगीसार-टीका के कर्त्ता सोम-देवसूरि के पिता— ल० १६०० ई० ।

अभयदेवसूरि— १. तर्कपञ्चानन, प्रसिद्ध श्वेताम्बराचार्य जो राजगच्छीय प्रद्युम्न-सूरि के शिष्य थे, और जिन्होंने ल. ९६८ ई० में, सिद्धसेनकृत सम्मति-सूत्र की तत्त्वबोध-विधायिनी अपरनाम वादमहार्णव नामक टीका रची थी । [पुजैवासू.]

२. नवाङ्गीटीकाकार के रूप में प्रसिद्ध श्वेताम्बराचार्य, जिन्होंने २६ आगमिक टीकाएँ रची थीं। स्वर्गवास १०७८ ई०। यह जिनेश्वर सूरि के शिष्य थे। [प्रभावक. ७७]

३. जयन्त विजयकाव्य (१२२१ ई०) के रचयिता श्वेताम्बर विद्वान।

४. सन् १०३९ ई० में स्वर्गस्थ शान्तिसूरि के गुरु, संभवतया न० १ से अभिन्न। [गुच. २४०]

५. विदर्भ-नरेश ईल या ऐल (१०८५ ई०) के गुरु, संभवतया दिग. [प्रमुख. २२३]

६. मलधारी, जो हर्षपुरीयगच्छ के जयसिंहसूरि के शिष्य थे, गुजरातनरेश कर्ण सोलंकी, शाकंभरी नरेश पृथ्वीराज चौहान, सौराष्ट्र के राखेंगर, आदि अनेक राजाओं द्वारा सम्मानित, प्रभावक श्वेताम्बराचार्य, जिन्होंने अनेक ब्राह्मणों को जैनधर्म में दीक्षित किया था। उनके शिष्य हेमचन्द्र मलधारि ने १११३ ई० में 'भवभावना' लिखी थी। [टंक.; कैच. ६५]

७. नवाङ्गीटीकाकार की पांचवी पीढ़ी में हुए रुद्रपल्लीय गच्छ के श्वेताम्बराचार्य, विजयन्त-विजय काव्य (१२२१ ई०) के रचयिता—उनके शिष्य देवभद्र का १२३९ ई० के एक शि. ले. में उल्लेख हुआ है। [टंक] सभवतया न० ३ से अभिन्न हैं।

८. प्रद्युम्नसूरि के शिष्य और धनेश्वर सूरि के गुरु श्वे. आचार्य, ल. ९७५ ई० [कैच. २७] —नं० १ से अभिन्न प्रतीत होते हैं।

९ः युगप्रधान जिनेश्वरसूरि के प्रधान शिष्य, विधिमार्गी अभयदेव-सूरि। [कैच. २०४-५]

अभयधर्म उपाध्याय— कविवर पं. बनारसीदास (१५८६-१६४१ ई०) के मित्र भानुचन्द्रयति के खरतरगच्छी गुरु। [टंक.]

अभयनन्दि— १. महान वैयाकरणी दिगम्बराचार्य, देवनन्दि पूज्यपादकृत जैनेन्द्र व्याकरण की सर्वप्राचीन उपलब्ध एव ज्ञात टीका 'महावृत्ति' (१२००० श्लो.) के रचयिता। अनुमानतः ८५० और १०५० ई० के मध्य किसी समय हुए। [शोधांक ४६ पृ. २२०; जैसाइ. १००-११६]

२. देशीगण-कुन्दकुन्दान्वय के अभयनन्दि भटार जिनका उल्लेख ४६६ ई० के मर्करा ताम्रशासन में गुणचन्द्र के पश्चात और शीलभद्र के पूर्व हुआ है। किन्तु यह अभिलेख जाली सिद्ध हो चुका है, अर्थात मूल अभिलेख का नौवीं-दसवी शती में कराया गया नवीन संस्करण। [जैशिसं. ii. ९५; एक. i.कुर्ग. १]

३. नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती (ल. ९५०-९९० ई०)के गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, त्रिलोकसार और लब्धिसार में उल्लिखित उनके स्वयं के तथा वीरनन्दि और इन्द्रनन्दि के गुरु आचार्य अभयनन्दि। [शोधांक- ४६ पृ. २२०]

४. देशीगण के आचार्य गुणनन्दि के शिष्य, विबुधगुणनन्दि के कनिष्ट सधर्मा और चन्द्रप्रभचरित्र के कर्त्ता वीरनन्दि के गुरु। [वही]

५. ज्वालमालिनी कल्प (९३९ ई०) के कर्त्ता इन्द्रनन्दि के सिद्धान्तशास्त्रगुरु। [वही; पुजैवासू. ७१-७२]

६. देशीगण-कोंडकुन्दान्वय के देवेन्द्र सिद्धान्त भटार के प्रशिष्य, चान्द्रायण भटार के शिष्य गुणचन्द्र भटार के शिष्य अभयनन्दि पंडितदेव जिनकी शिष्या आर्यिका णाणब्बेकन्ति की गृहस्थ शिष्या राजरानी पाम्बब्बे ने ९७१ ई० में समाधिमरण किया था। शोधांक- ४६; [जैशिसं. ii. १५०]

७. वर्धमान मुनि के दशभक्त्यादि महाशास्त्र में प्रदत्त नन्दिसंघ-सरस्वतीगच्छ-बलात्कारगण की पट्टावली के २१वें गुरु, जो गुणचन्द्र के पश्चात और सकलचन्द्र के पूर्व हुए। [शोधांक-४६; प्रसं. १३३]

८. सन् ११४६ ई० के शि. ले. में उल्लिखित सकलागमार्थ निपुण सकलचन्द्र के गुरु अभयनन्दि मुनि। [जैशिस i. ५०; शोधांक- ४६]

९. त्रैकाल्य योगि के शिष्य और सकलचन्द्र के गुरु तथा मेघचन्द्र त्रैविद्य (स्वर्ग. १११५ ई०) के प्रगुरु– मेघचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र का स्वर्गवास ११४६ ई० मे हुआ था। [जैशिस i ४७, ५०] –इन अभिलेखों में इन अभयनन्दि की प्रभूत प्रशंसा की गई है।

१०. अभयनन्दि पण्डित, जिनके गृहस्थ शिष्य कोतय्य ने ११०० ई० के लगभग श्रवण बेलगोल की यात्रा की थी। [जैशिसं. i. २२]

११. वाणीगच्छ (सरस्वतीगच्छ) के विजयेन्द्रसूरि के परम्परा शिष्य, और महिपालचरित्र के कर्त्ता चारित्रभूषण के गुरु रत्ननन्दि के प्रगुरु योगीन्द्रचूडामणि अभयनन्दिसूरि। [प्रवी. i. ५३]

१२. पश्चिमी चालुक्य नरेश विक्रमादित्य पंचम (१००८-१५ ई०) के राज्यकाल के १००८ ई० के शि. ले. में प्रदत्त देशीगण-कुन्दकुन्दान्वय की गुरुपरम्परा (रविचन्द्र-गुणसागर-गुणचन्द्र-अभयनन्दि-माघनन्दि-सिंहनन्दि-कल्याणकीर्ति) में उल्लिखित अभयनन्दि। [देसाई. १४७]

१३. सन १०७१-७२ ई० के दो शि. ले. में उल्लिखित नन्दिसंघ-बलात्कारगण के आचार्य विमलचन्द्र के प्रशिष्य, गुणचन्द्र के शिष्य, गण्डविमुक्त प्र. के सधर्मा, सकलचन्द्र सिद्धान्तिक के गुरु, और उन गण्डविमुक्त द्वि- के प्रगुरु जिनके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र थे। [जैशिसं. iv. १५४-१५५; देसाई ३८७-८]

१४. सूरतपट्ट के भ. लक्ष्मीचन्द्र की परम्परा में हुए वह अभयनन्दि जो अभयचन्द्र के शिष्य और रत्नकीर्ति के गुरु थे, बृहत्-षोडशकारण पूजा एवं उसकी प्राकृत जैमाल के रचयिता– कई प्रतिमालेखों मे भी उल्लेख है। शिष्य रत्नकीर्ति का समय १६०७ ई० है। दशलाक्षण पूजा भी शायद इन्ही की कृति है। [शोधांक. ४६ पृ. २२१. प्रवी. i. ६३]

१५. अभयनन्दि, जिनका प्रभाचन्द्राचार्य (ल. १०१०-५० ई०) ने अपने शब्दाम्भोज-भास्कर नामक जैनेन्द्र महान्यास में देवनन्दि के साथ स्मरण किया है– महावृत्तिकार से ही अभिप्राय प्रतीत होता है। [प्रवी. i. ९४]

१६. स्वप्नमहोत्सव-बृहत् तथा स्वप्नविधिबृहत् के कर्त्ता। [शोधांक. ४६, पृ. २२१]

१७. लघुस्वपन के कर्ता, जिसकी टीका भावशर्मा ने की है। [शोधांक. ४६ पृ. २२१]

१८. हलेबिड के कन्नड शि.ले., १२६५ ई०, में उल्लिखित अभयनन्दि जो शुभचन्द्र के शिष्य और उन अडहनन्दि सिद्धान्ति के गुरु थे जो उक्त शि. ले. में उल्लिखित दान प्राप्त करने वाले माघनन्दि से लगभग एक दर्जन पीढ़ी पूर्व हुए थे। [जैशिसं. iv ३४२,३७६; v. १२७]

उपरोक्त लगभग डेढ़ दर्जन गुरुओं में नं० १ से ७ तक अभिन्न रहे हो सकते हैं (समय ल. ९०० ई०) संभव है नं० १२ भी। नं० ८, ९, १०, १३ (समय ल. १०२५-५० ई०) भी परस्पर अभिन्न रहे हो सकते हैं। नं० ११,१५,१६ एवं १७ अनुसंधानीय हैं। नं० १७ की तिथि ल. १००० ई० है' और नं० १४ की ल. १५५० ई० है।

अभयपाल— चन्दवाड का चौहानवंशी जैन राजा (१२वीं शती ई०)– उसके जैन मन्त्री सेठ अमृतपाल ने भी नगर में एक भव्य जिनालय बनवाया था। [प्रमुख. २०८,२४८]– अभयपाल राजा भरतपाल का उत्तराधिकारी था, इसीवंश का अभयपाल द्वि (ल. १३५० ई०) सारंग नरेन्द्र का उत्तराधिकारी था –सोमदेव जैन उसका मन्त्री था। [भाइ. ४५६]

अभयपाल— राजा कीर्तिपाल का पुत्र और नाडोल नरेश कल्हण का अनुज, इस धर्मात्मा जैन राजकुमार ने, ११७६ ई० में, माता महिबल देवी तथा भाई लखनपाल सह श्री शान्तिनाथोत्सव के लिए प्रभूत दानादि दिये थे। [टंक; कैच. २२; ए इ. xi. पृ. ४९-५०]

अभयभद्र— काष्ठासंघी गुणभद्रसूरि के शिष्य ने, बीकानेर प्रदेश में १४८८ तथा १४९० ई० में कई जिनप्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित की थी। [नाहटा. ४९, ६२. १७८२]

अभयराज संघवी– दिग. जैन गर्गगोत्रीय अग्रवाल संघपति भगवानदास के पुत्र तथा 'समवसरणपाठ' आदि के रचयिता पं० रूपचन्द्र के अग्रज। [टंक.; प्रवी. i १०७, भू० ७६]

अभयराम— या निर्भयराम, दिग. जैन, खावड़ागोत्री खण्डेलवाल, आमेर-जय-पुर के कछवाहा राज्यसंस्थापक राजा सोढदेव, ल. ११वीं शती ई०, का विश्वासपात्र मन्त्री एवं सहायक। [प्रमुख. ३१३]

अभयशशि— दे. अभयचन्द्र।

अभयसिंह— सिन्धुदेश का एक भट्टि सर्दार जिसे बृहत्खरतरगच्छी जिनदत्त-सूरि ने १११८ या ११४१ ई० में जैनधर्म में दीक्षित किया था, और जिसके वंशज अभरिया ओसवाल कहलाये –ऐसी एक अनु-श्रुति है। [टंक.]

अभयसिंह ओसवाल– दिल्ली निवासी पल्लवगोत्रीय रायगोकुलचन्द्र के पुत्र जो १८१८ ई० में आनरेरी मजिस्ट्रेट थे –उनके पुत्र बहादुरसिंह थे। [टंक]

अभयसिंह सूरि– वृद्धतपागच्छी मुनिघोष के शिष्य और उन जयतिलक के गुरु, जिनके शिष्य रत्नसिंह सूरि को गुजरात के सुल्तान अहमदशाह (१४११-४१ ई०) ने सम्मानित किया था– १४३९ ई० के शि ले. में उल्लेख है। [टंक.]

अभयसूरि— १. देशीगण-पुस्तकगच्छ-इंग्लेश्वर बलि के दिगम्बराचार्य, जिनके शिष्य श्रुतमुनि भावसंग्रह और परमागमसार (१३४१ ई०) के कर्ता हैं। [पुजैवासू. ११०-१११; प्रवी. i. १२८]

२. उन केशववर्णी के गुरु, जिन्होंने भ. धर्मभूषण की प्रेरणा से, १३०२ ई० में, गोम्मटसार की संस्कृत-कन्नड मिश्रित टीका 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' रची थी। [पुजैवासु. ८९]

२. उपनाम वादिसिंह, जो अभयचन्द्रसूरि के कनिष्ट सधर्मा श्रुत-कीर्ति के प्रशिष्य और चारुकीर्ति के शिष्य थे –इनके सधर्मा सिंहनार्य और पंडितदेव (स्वर्ग १३९८ ई०) थे। [जैशिस. i. १०५]

अभयसेन— १. हरिवंश पुराण (७८३ ई०) में प्रदत्त उसके कर्त्ता जिनसेन-सूरि की गुरुपरम्परा में उल्लिखित अभयसेन प्र. जो सिद्धसेन के गुरु थे, ल. ६०० ई०।

२. उसी गुर्वावली के अभयसेन द्वि. उक्त सिद्धसेन के शिष्य थे और भीमसेन के गुरु थे, ल. ६५० ई०।

३. मूलसंघ-सेनगण की पट्टावली में न० १८ पर उल्लिखित अभयसेन, जो सिंहसेन के शिष्य और भीमसेन के गुरु थे –संभव है न० २ से अभिन्न हों।

४. उसी पट्टावली में न० ६१ पर उल्लिखित अभयसेन जो हेमसेन के शिष्य और लक्ष्मीभद्र के गुरु थे।

अभयेन्दु— दे. अभयचन्द्र

अभिचन्द्र— जैनपुराण-प्रसिद्ध १४ कुलकरों (मनुओं) में से दसवें कुलकर।

अभिनन्द देव— ११५० ई० के बमनि शि. ले. को उत्कीर्ण करने वाले जैन शिल्पी गोव्योजन या गोलोज के गुरु, दिग. मुनिराज। [जैशिसं iii. ३३४; एइं. iii. २८]

अभिनन्दन नाथ— चतुर्थ तीर्थंकर, इक्ष्वाकुवंशी, जन्मस्थान अयोध्या, पिता स्वयंवर, जननी सिद्धार्था।

अभिनन्दन भट्ट— वर्धमान मुनि के श्रावकस्तोत्र (१५४२ ई०) में अभिनन्दित पार्श्वदेव तथा बोम्मरस नामक धर्मात्मा श्रावकों का पिता। [प्रसं. १३५]

अभिनन्दन भट्टार प्र.— कनकनन्दि भटार के शिष्य और अभिमंडल भटार के गुरु, तमिलदेश के मदुरा तालुके मे प्राप्त विशाल महावीर प्रतिमा के पादपीठ पर उत्कीर्ण लेख, ल ७वीं शती ई०, में उल्लिखित आचार्य। [देसाई ५९; जैशिसं. iv ३३-३८]

अभिनन्दन भट्टार द्वि.— उपरोक्त प्रतिमा के प्रतिष्ठाता, तथा अभिनन्दन भटार प्र. के शिष्य। [वही.] -अपरनाम अभिमंडल भटार या अरिमंडल भटार।

अभिनन्दनाचार्य— १०७७ ई० के शि. ले में द्रविडसंघ-नन्दिगण-अरुंगलान्वय के प्राचीन गुरुओं मे पूज्यपाद, कविपरमेष्ठि आदि के साथ उल्लिखित दिग. आचार्य। [जैशिसं.ii.२१३; एक.viii नागर ३५]

अभिनन्दि पंडितदेव- उन आर्यिका नानब्बेकन्ति के गुरु, जिनकी गृहस्थ शिष्या गंगनरेश भूतुग की भगिनी राजकुमारी पाम्बब्बे थी –यह राजकुमारी भी आर्यिका बन गई और ९७१ ई० में उसने समाधिमरण किया था। [मेजै १५७]

अभिनव— दिग. गृहस्थ विद्वान, मल्लिनाथपुराण और (वैद्यक) निघंटु के कर्त्ता। [टंक.]

अभिनव आदिसेन— तमिलनाड के जिंजी तालुक में स्थित चित्तामूर के दिग. मठ के भट्टारक, जिन्होंने १८६५ ई० में वहां के पार्श्वनाथ जिनालय का विस्तार एवं नवीनीकरण किया था। [देसाई. ५१; जैशिसं. iv. ५३२]

अभिनवचन्द्र— कन्नड ग्रन्थ हयशास्त्र (अश्वपरीक्षा एवं चिकित्सा) के कर्त्ता। [प्रसं. ५६]

अभिनव चारुकीर्ति— दे. चारुकीर्ति। [मेजं. २९९; देसाई. १८२]

अभिनव देवराज— दे. विजयनगर नरेश देवराज द्वि.।

अभिनव धर्मभूषण— दे. धर्मभूषण, न्यायदीपिका के कर्त्ता।

अभिनव नेमिचन्द्र— दे: नेमिचन्द्र।

अभिनव पम्प— होयसल नरेश बल्लाल प्र. (११०१-११०६ ई०) के राजकवि, प्रसिद्ध जैन कन्नड कवि एवं साहित्यकार, कन्नडी जैन रामायण के कर्त्ता नागचन्द्र का अपरनाम —दे. पंप एवं नागचन्द्र।

अभिनव पंडितदेव— दे. पंडितदेव। [मेजं २९९, ३२६]

अभिनव पांड्यदेव— दे. पांड्यदेव।

अभिनव रत्नकीर्ति— दे. रत्नकीर्ति, सूरतपट्ट के भट्टारक, ल. १६०० ई०।

अभिनव वादिकीर्तिदेव— दे. वादिकीर्ति। [मेजं. ३५९]

अभिनव विशालकीर्ति— दे. विशालकीर्ति। [मेजं. ३५९]

अभिनव श्रुतमुनि— दे. श्रुतमुनि (१३६५ ई०), कन्नड जैन साहित्यकार। [टंक]

अभिनव श्रेष्ठि—ती. महावीर कालीन राजगृह का एक अत्यन्त धनवान श्रावक, महावीर का भक्त, उसका प्रतिद्वन्द्वी जीर्णश्रेष्ठि था। [टंक.]

अभिनव समन्तभद्र— दे. समन्तभद्र। [मेजं. ३४६]

—'अभिनव' विशेषण मूलनाम के द्वितीयादि परवर्ती व्यक्तियों के लिए बहुधा प्रयुक्त हुआ है, अतएव ऐसे अन्य भी समस्त उल्लेखों में उस व्यक्ति के मूल या प्रधान नाम के अन्तर्गत देखें।

अभिमण्डल भटार— दे. अभिनन्दन भटार प्र. एवं द्वि.।

अभिमन्यु— १. महाभारत का किशोर वीर, अर्जुन पांडव एवं सुभद्रा का पुत्र। २. ग्वालियर का कच्छपघातवंशी नरेश, अर्जुन का पुत्र, विजय पाल का पिता, और दूबकुण्ड जैन शि: ले. (१०८८ ई०) के महाराज विक्रमसिंह का पितामह। संभवतया धाराधीश भोज परमार का समकालीन था। ग्वालियर के इस कच्छपघात राजवंश में बराबर जैनधर्म की प्रवृत्ति रही आई। [प्रमुख. २१२-२१३; जैशिसं. ii. २२८; गुच. ७५,७७-८०]
३. हरिवंश पुराण के कर्त्ता दिग. जैन पं. रामचन्द्र का पुत्र, जिसके अनुरोध पर उक्त ग्रन्थ की रचना की गई थी, यह महादानी था। [प्रवी. i. ३०]

अभिमानचिन्ह, अभिमानमेरु, अभिमानाङ्क आदि— अपभ्रन्श जैन महाकवि पुष्पदन्त के उपनाम, दे. पुष्पदन्त।

अभिमानाङ्क— प्राचीन अपभ्रन्श कवि, जिनका उल्लेख उद्योतनसूरि ने अपनी कुवलयमाला (७७८ ई०) में तथा हेमचन्द्राचार्य ने भी किया है। [जैसाइ. ४७३]

अभिरामदेवराय— महान जैन कन्नडकवि आदिपंप या पंप (स्वर्ग. ९४१ ई०) के पिता जैनधर्मावलम्बी तैलेगु ब्राह्मणपडित। [मेजै. २६५]

अभीचिकुमार— सिन्धु-सौवीर के वीतभयपत्तन नरेश उदायन तथा रानी प्रभावती के एकलौते पुत्र, ती. महावीर के भक्त, राज्य का उत्तराधिकार अस्वीकार करके मुनिदीक्षा लेली थी, ल. ५५० ई० पू.। [प्रमुख. १३]

अभ्रदेव, पं०— दिग., भ. चन्द्रभूषण के शिष्य, ल. १४५० ई०, श्रवणद्वादशी-कथा (सस्कृत, श्लो. ८०) के लेखक –रचना १५०६ ई० के गुटके में प्राप्त। [अनेकान्त ३७/३, पृ १५]
–संभवतया षोडशकारण विधान के कर्त्ता अभ्रपंडित भी यही हैं।

अमनसिंह, मुन्शी— सोनीपत निवासी गोयलगोत्री अग्रवाल, दिग. जैन, बिशनसिंह के पुत्र, बहुधा दिल्ली रहते थे, छापाप्रचार के प्रारंभिक युग में अच्छा कार्य किया, बीसियों छोटी-बड़ी पुस्तकें स्वद्रव्य से प्रकाशित कीं, यथा आदिनाथ स्तुति (१८९३ ई०), पार्श्वनाथ स्तुति (१८९६ ई०), भूधरकृत पार्श्वपुराण का संपादन एवं सब छपा-

म्सर (१८९८ ई०), आदि। स्वर्गवास सोनीपत में १९०५ ई० में हुआ। [टंक.; प्रका. जै. सा.]

अमर— १. मुग्धबोधकर्ता पं. वोपदेव द्वारा धातुपाठ में स्मृत आठ प्राचीन वैयाकरणों में से एक —संभवतया जैन थे

२. होयसल नरसिंह प्र. (११४६-७३ ई०) के प्रसिद्ध जैन मन्त्री हुल्लराज के अनुज। [जैशिस. i. १३८; मेजै. १४१]

३. जैतारण निवासी ओसवाल, जिसके पुत्र भानाभंडारी ने जोधपुर नरेश गजसिंह के समय में, १६२१ ई० में, कापर्दा में अतिभव्य पार्श्व जिनालय बनवाया था। [टंक.]

अमरकीर्ति— १. अमरकीर्तिगणि, अमरसूरि या महाकवि अमरकीर्ति माथुरसंघी दिगम्बराचार्य अमितगति द्वि. (९९०-१०२० ई०) की शिष्य परम्परा में, क्रमशः, शान्तिषेण-अमरसेन-श्रीषेण-चन्द्रकीर्ति के पश्चात हुए —संभवतया वह चन्द्रकीर्ति के कनिष्ठ सधर्मा एवं शिष्य थे। अपभ्रंश भाषा में उन्होंने नेमिनाथ चरित (११८८ ई०), महावीर चरित, यशोधर चरित, धर्मचरित-टिप्पण, सुभाषित-रत्ननिधि, धर्मोपदेश चूडामणि, ध्यानप्रदीप, पुरन्दरविधान-कथा और षट्कर्मोपदेशरत्नमाला नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की थी। अन्तिम ग्रन्थ की रचना उन्होंने महाकांठा प्रदेश के गोधरानगर में उसके शासक चौलुक्य कृष्ण के राज्यकाल में, ११९१ ई० में, गुणपाल एवं चर्चिणी के पुत्र अम्बा प्रसाद नागर के हितार्थ की थी, जो, ऐसा प्रतीत होता है कि, उनका संसारपक्षीय अनुज था। [शोधांक-५० पृ. ३६९, ७०]

२. महापण्डित अमरकीर्ति त्रैविद्य, जो 'शब्दवेधस' थे, कर्णाटक के दिगम्बराचार्य थे, और सैन्द्रक राजवंश में उत्पन्न हुए थे। वह धनञ्जय-नाममाला के भाष्य के रचयिता है, जिसमें अनेक पूर्ववर्ती विद्वानों का स्मरण किया है, जिनमें पं० आशाधर अन्तिम है, अतः इनका समय ल. १२५०-१३०० ई० है। [वही, पृ. ३७०]

३. वर्धमान मुनि के दशभक्त्यादि महाशास्त्र (१५४२ ई०) में स्मृत एक पूर्वाचार्य जो निर्मलगुणाश्रय, शास्त्रकोविद एवं भट्टा-

रक शिरोमणि थे, तथा विशालकीर्ति के सधर्मा थे। [वही; जैशिसं. iv. ४०३]

४. दक्षिणी मूलनन्दिसंघ-बलात्कारगण की पट्टावली : वसन्त-कीर्ति-देवेन्द्रविशालकीर्ति-शुभकीर्ति-धर्मभूषणप्र०-अमरकीर्ति-धर्म-भूषण द्वि. (स्वर्ग. १३७३ ई०), में उल्लिखित अमरकीर्ति। [वही; जैशिसं. i. १११; iv ४४९; मेजै. ३००]

५. योगचिन्तामणि नामक योगविषयक संस्कृत ग्रन्थ के रचयिता-ऐसा लगता है कि न० ३,४ एवं ५ अभिन्न हैं, और उनका समय ल. १३५० ई० है। [शोधांक-५० पृ. ३७०]

६. मूलनन्दिसंघ के सूरतपट्ट के भ. पद्मनन्दि के शिष्य देवेन्द्र-कीर्ति थे और प्रशिष्य विद्यानन्दि थे, जिनके शिष्य मल्लिभूषण थे और प्रशिष्य यह भ. अमरकीर्ति सूरि थे। इन्होंने श्री जिन-सहस्त्रनाम की चन्द्रिका नाम्नी टीका रची थी, जिसमे स्वयं को 'भारतीनन्दन' लिखा है, श्रुतसागर सूरि का स्मरण किया है, टीका को भ. विश्वसेन द्वारा अनुमोदित लिखा है, और संघाधि-पति सुधाचन्द्र श्रावक के नामांकित किया है। इनका समय ल. १५०० ई० है। [वही; प्रवी. i. २२,९६]

७. मूलनन्दिसंघ के मलखेड पट्ट के भ. धर्मचन्द्र के शिष्य, विशालकीर्ति के सधर्मा और भुवनकीर्ति एव भ. सकलकीर्ति (१६०५ ई०) के गुरु। भुवनकीर्ति के शिष्य विद्याषेण (१५९७ ई०) थे। उपरोक्त विशालकीर्ति अन्तरीक्ष-पार्श्वनाथ (शिर-पुर अकोला) एव शोलापुर पट्टों के संस्थापक थे। इन भ अमरकीर्ति का समय ल १५५०-७५ ई० है। [शोधांक-५०]

८. काणूरगण के आचार्य अमरकीर्ति जिनके गृहस्थशिष्य बोप्पय्य ने चामराजनगर की पार्श्वनाथ-बसति मे समाधिमरण किया था। [मेजै ३२]

९. सारस्वतगच्छ-बलात्कारगण के अमरकीर्ति, जिनके शिष्य माघनन्दि के ग्रहस्थ शिष्य श्रेष्ठि भोगराज ने, विजयनगर नरेश हरिहरराय प्र० के शासनकाल मे, १३५५ ई० में, रायदुर्ग मे

'अनन्तनाथ-जिनालय प्रतिष्ठापित' किया था। [मेजै. ३३८; देसाई ३९५; प्रमुख. २६१; जैशिसं iv. ३९३]

संभवतया इन्हीं माघनन्दि के एक अन्य श्रेष्ठि शिष्य ने १३८५ ई० में, केसबार के पार्श्वमन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। [जैशिसं. v. १८१]

अमरकीर्ति सूरि– श्वे., कालिदासकृत 'ऋतुसंहार' की टीका के रचयिता, ल. १५८६ ई०। [टक.]

अमरचन्द— १. दीपचन्द के पुत्र और प्रसिद्ध दानी वीरचन्द सी. आई. ई., जे. पी. (स्वर्ग. १८८८ ई०) के भाई। [टंक.]

२. मंगरौल निवासी तलकचन्द के पुत्र, प्रसिद्ध दानी, बम्बई वि. वि. में बी. ए. में जैन साहित्य लेकर उत्तीर्ण होने वाले सर्वोत्तम विद्यार्थियों के लिए १०००० रु० से छात्रवृत्ति स्थापित की। उनके पुत्र हेमचन्द (१८७८-१९१४ ई०) भी बड़े दानशील थे। [टक.]

३. दिल्ली निवासी, गोखरुगोत्रीय ओसवाल सभाचन्द्र के पुत्र, बादशाही-रत्नकोश-रक्षक, 'राय' उपाधि प्राप्त। दो पुत्र हुए– मोहमकसिंह और डालचन्द। यह राजा डालचन्द नादिरशाही (१७३९ ई०) के बाद दिल्ली छोड़कर मुर्शिदाबाद चले गये। उनके पुत्र उत्तमचन्द ने, १७८६ ई० में, वाराणसी से लखनऊ के राय हुकमचन्द टेकचन्द को पत्र लिखा था। [टंक]

अमरचन्द कवि– राजा अरिसिंह (११६९-१२४० ई०) के समय मे कवि कल्पलता वृत्ति, कविशिक्षावली, पद्मानन्दकाव्य (१२४० ई०), बाल-भारत, छन्दोरत्नावली तथा स्यादि-शब्द-समुच्चय की रचना की थी। [टक.] –दे अमरचन्द सूरि न० ३.

अमरचन्द खेमचन्द– डामन के प्रसिद्ध जैन कोट्याधीश मोतीशाह के मुनीम थे, दोनों ने १८३६ ई० में शत्रुञ्जय पर्वत पर पास-पास जिनमन्दिर बनवाये थे। [टंक.]

अमरचन्द गोदिका– सांगानेर निवासी धर्मात्मा श्रीमन्त, ग्रन्थकार जोधराज गोदिका (ल. १६६५ ई०) के पिता। [कास २४२]

अमरचन्द परमार– प्रसिद्ध जैन कवि एवं वक्ता, पशुवध एवं चीरफाड़ का विरोध किया, स्वर्ग. १९१६ ई० । [टक.]

अमरचन्द पाटनी– १८०३-३५ ई० तक जयपुर राज्य के दीवान रहे । दीवान रतनचन्दसाह के पौत्र और दीवान श्योजीलाल के सुपुत्र थे, बड़े धर्मात्मा, दयालु, उदार और दानी थे, दिग. जैन थे, अनेक साहित्यकारों के प्रश्रयदाता, जरूरतमन्दों के त्राता थे । अपनी हवेली के निकट विशाल धर्मशाला एवं भव्य जिनमन्दिर बनवाया, जो 'छोटे दीवान जी का मन्दिर' नाम से प्रसिद्ध है । धर्म-कर्म के बड़े पक्के थे । एक राजनैतिक षडयन्त्र मे प्राण गंवाये । परमात्मप्रकाश-टिप्पण के कर्त्ता; पं० सदासुखजी व कवि वृन्दावनलाल के साथी । [प्रमुख. ३४१-३४२]

अमरचन्द बड़जात्या, पं०– सागानेर निवासी, १७वीं शती, तेरापंथ आम्ननाय के प्रबल पोषक [कैच. ९२,९३]

अमरचन्द बांठिया– १. ग्वालियर के सिंधिया नरेश के मंत्री (१८०३-१३ ई०), राजकोप के शिकार हुए, श्वे. जैन । [टंक.]

२. ग्वालियर के सिंधिया नरेश के राजमहल के गंगाजली नामक कोषागार के खजांची तथा राज्य के साहूकार थे- १८५७ ई० से स्वतन्त्रता संग्राम मे रावसाहब आदि विद्रोही सरदारों के कहने पर वह खजाना उनके लिये खोल दिया और यथेच्छ धन लेने दिया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने १८५८ ई० मे फांसी का दण्ड दिया । [मेकफर्सन की रिपोर्ट]

अमरचन्द सुराना– बीकानेर नरेश सूरतसिंह (१७८७-१८२८ ई०) के दीवान, १८०५ ई० में भट्टी सर्दार जाब्ता खाँ से भटनेर छीना, १८०८ ई० में जोधपुर नरेश मानसिंह के जैन सेनापति इन्द्रराज के आक्रमण को निरस्त करके जगनेर की सधि की, राज्य के कई विद्रोही सामन्तों का सफलतापूर्वक दमन किया, राजा ने 'राव' की उपाधि, सरोपा एवं हाथी दिया, अन्त मे १८१७ ई० में अमीरखां पिंडारी के साथ षडयन्त्र करने के झूठे आरोप में फांसी दे दी गई –विधवा युवापत्नी बची । [टंक.; प्रमुख· ३३७; कैच २२३-४]

अमरचन्द सोगाणी— भयाराम के पुत्र थे, दिग. जैन, १७७२-७७ ई० में जयपुर राज्य के दीवान रहे। [प्रमुख. ३४०]

अमरचन्द्र— १. फागी निवासी, चर्चासंग्रह के कर्त्ता।

२. लुहाड़ा, पंडित, १८३४ ई० में बीसविहरमान पूजा, व्रतविधान पूजा आदि रची थीं।

३ आदिनाथ चरित्र (प्रा०), वनदत्तकथा, काव्याम्नाय, वन-मालानाटक, सम्यक्त्वकुलक, हैमशब्द-समुच्चय, उपदेशमाला-अवचूरि (१४६१ ई०), आदि ग्रन्थों के कर्त्ता तन्नाम एक या अधिक विद्वान, श्वे., संभव है इनमें से कोई या कुछ गृहस्थ भी हों। [टंक]

अमरचन्द्र सूरि— १. श्वे. यति, हेमचन्द्राचार्य के शिष्य या सहयोगी विद्वान, गुज-रात नरेश जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) द्वारा 'सिंह-शिशुक' उपाधि से सम्मानित। [प्रमुख. २३१-२]

२. नागेन्द्रगच्छी आनन्दसूरि के गुरुभाई, सिद्धान्तार्णव के कर्त्ता —१२वीं शती।

३. श्वे. जैनदत्त के शिष्य, १३वीं शती, पद्मानन्द काव्य (जिनेन्द्रचरित्र), कलाकलाप, अलंकार प्रबोध, सूक्तावली, काव्य-कल्पलतापरिमल सटीक, आदि के कर्त्ता —दे. अमरचन्दकवि।

अमरदत्त— खम्भात निवासी गोखरुगोत्री ओसवाल पद्मसी के पुत्र, दिल्ली आकर मुगल बादशाह शाहजहाँ को एक बहुमूल्य रत्न भेंट किया और 'राय' की उपाधि पाई। इनका भाई श्रीपति था, पुत्र उदयचन्द और पौत्र सभाचन्द एवं फतहचन्द थे —फतहचन्द को उसके मामा सेठ मानकचन्द ने गोद ले लिया था, और वही फतहचन्द बंगाल (मुर्शिदाबाद) का सुप्रसिद्ध प्रथम जगत्सेठ हुआ। [टंक]

अमरनन्दि— विद्यानन्दि की शिष्य परम्परा में और माणिक्यनन्दि की गुरु परम्परा में हुए अमरनन्दि, १३०८ ई० के एक शि. ले. के अनु-सार। [जैशिस. i. १०५]

अमरप्रभसूरि— भक्तामर स्तोत्र की सुखबोधिकावृत्ति नामक टीका के रचयिता,

तथा कल्याणमन्दिर स्तोत्र के टीकाकार गुणसागर के दादागुरु। [टंक.], संभवतया श्वे.।

अमर भंडारी— जोधपुर के राज्यमन्त्री भानाभंडारी (१६२१ ई०) का पिता। [प्रमुख ३१०]

अमरमुदगल गुरु— यापनीयसंघ-कुमिलिगण के महावीर गुरु के शिष्य ने ९वीं शती ई०, में चिंगलपेट (मद्रास) के देशवल्लभ जिनालय का निर्माण कराया था। [जैशिस iv ७०]

अमरसिंह— या अमरसिंह गणि, गुप्तकालीन (५वीं शती ई०) जैन विद्वान, सुप्रसिद्ध 'अमरकोश' के रचयिता—डा० मंगलदेव शास्त्री प्रभृति अनेक अजैन संस्कृतज्ञ विद्वानों का भी अनुमान है कि 'अमरकोष-कार जैन थे। [जैसी २८]

अमरसिंह— १. करहल के चौहान राजा भोजराज का जिनभक्त यदुवंशी मन्त्री, १४१४ ई० में रत्नमयी जिनबिंब का प्रतिष्ठा महोत्सव किया था। [प्रमुख २४९]

२. मुगल सम्राट शाहजहाँ के अधीन शिवपुरी (म. प्र.) का राजा जिसके समय, १६२८ ई० मे कोलारस के जैन मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ था। [जैशिसं iv ५०६]

३. जोधपुर के जैन दीवान खिमसी भंडारी का पुत्र, ल १७०० ई० [प्रमुख ३१०]

अमरसिंह ठक्कुर— माथुरान्वयी कायस्थों में शिरोमणि, भव्य श्रावक, जिनके प्रति-बोधार्थ भ अमलकीर्ति के शिष्य भ. कमलकीर्ति ने, ल. १५०० ई० में, देवसेनकृत 'तत्त्वसार' की संस्कृत टीका लिखी थी। यह ठक्कुर संतोष के पौत्र, ठक्कुर लखू (लक्ष्मण) के पुत्र, तथा श्रीपथपुर (बयाना) के निवासी थे। प० गोविन्द से पुरुषार्था-नुशासन भी इन्होंने लिखाया था। [प्रवी, i. ८७,८९]

अमरसिंह श्रीमाल— मोचा, बूड़िया (अम्बाला के निकट) के निवासी थे। इनके पिता केसरीसिंह ने १८०१ ई० के युद्ध में सिक्खों की ओर से अंग्रेजों से लड़कर वीरगति पाई थी। अंग्रेजो द्वारा बूड़िया पर अधिकार कर लिये जाने के बाद अमरसिंह सहारनपुर आकर

रहने लगे, प्रसिद्ध कानूनगो हुए, प्रभावशाली व्यक्ति थे। इन का पुत्र जवाहरसिंह था। [टंक.]

अमरसेन— माथुरसंघी अमितगति द्वि. (ल. १००० ई०) के प्रशिष्य, शान्तिषेण के शिष्य, श्रीषेण के गुरु, और अमरकीर्तिगणि (११९० ई०) के परदादा गुरु। [शोधांक-५० पृ. ३६९]

अमरा भौंसा— मिर्जा राजा जयसिंह के मुख्यमन्त्री मोहनदास भांवसा (१६५९ ई०) के पुत्र, स्वयं भी जयपुर राज्य में राजमन्त्री थे, एक नवीन जिनमन्दिर बनवाया था, और तेरापन्थ शुद्धाम्नाय का पोषण किया था। [प्रमुख. २९५]

अमरेन्द्रकीर्ति— १. मूलनन्दिसंघ के आमेर पट्ट की सांगानेर शाखा के भट्टारक, १६१४ ई० में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा की थी।

२. उसी संघ के नागौर पट्ट के मंडलाचार्य भट्टारक, देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य और रत्नकीर्ति के गुरु; समय १६८० ई०।

अमलकीर्ति— १. छन्दोनुशासन के कर्त्ता जयकीर्ति के शिष्य, ने ११३५ ई० में योगीन्दुकृत योगसार की प्रति लिखाई थी। चित्तौड़ के ११५० ई० के शि. ले. में उल्लिखित जयकीर्ति के शिष्य रामकीर्ति के सधर्मा दिगम्बर मुनि —या कोई स्वतंत्र योगसार रचा था।

२. काष्ठासंघ-माथुरागच्छ-पुष्करगण के भट्टारक तथा तत्त्वसार टीका के कर्त्ता कमलकीर्ति के गुरु, और संयमकीर्ति के शिष्य, समय ल. १५०० ई०। [प्रवी i ८७]

३. मदुरा के राजा कुनपाण्ड्य द्वारा ६४४ ई० में श्रवणबेलगोल में मन्दिर के अधिष्ठाता नियुक्त किये गये दिग. मुनि—तदनंतर इस राजा ने शैव बनकर जैनों पर अत्याचार किये थे। [टंक.]

अमलचन्द्रभट्टार— कलाचन्द्र सिद्धान्तदेव भट्टार के शिष्य, जिन्होंने कोंगाल्व नरेश अदटरादित्य प्र० के राज्य मे, ल. १०८० ई० में, एक भव्य जिनालय प्रतिष्ठापित किया था। [जैशिसं. ii. २२४; प्रमुख. १८८; एक. V. १०२]

अमितगति— १. माथुरसंघी दिगम्बराचार्य, प्रसिद्धग्रन्थकार —सुभाषितरत्नसंदोह (९९३ ई०), धर्मपरीक्षा (१०१३ ई०), पंचसंग्रह (१०१६

ई०) उपासकाचार अपरनाम अमितगति-श्रावकचार, आराधना (शिवार्यकृत प्रा. मूलाराधना का पद्यबद्ध सटीक संस्कृत अनुवाद), सामायिक पाठ, भावनाद्वात्रिंशिका, प्रभृति प्रसिद्ध ग्रन्थों के रचयिता। जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सार्द्धद्वयद्वीप प्रज्ञप्ति तथा व्याख्या प्रज्ञप्ति के संस्कृत अनुवाद भी इन्होंने किये बताये जाते हैं। मालवा के परमार नरेश वाक्पतिराज मुंज (९७४-९७ ई०), सिंधुल (९९७-१००९ई०) और भोजदेव (१००९-५३ ई०), इन आचार्य के प्रश्रयदाता एवं प्रशंसक थे, वह उनकी राज्यसभा के एक विद्वत्‌रत्न थे, और राजधानी धारानगरी के जैन विद्यापीठ के एक प्रमुख आचार्य थे। उनके प्रायः सब ग्रन्थ प्रौढ़ संस्कृत में निबद्ध हैं, और प्रथम सातों ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। इन आचार्य की गुरु-परम्परा में क्रमशः सिद्धान्तपार-गामी वीरसेन –देवसेनअमितगति प्र० –नेमिषेण-माधवसेन हुए, और शिष्य परम्परा में से शान्तिषेण-अमरसेन-श्रीषेण-चन्द्रकीर्ति-अमरकीर्तिगणि (११९० ई०) हुए। इस प्रकार वह स्वयं माधवसेन के शिष्य और शांतिषेण के गुरु थे। बड़े प्रभावक एवं लोकसंग्राहक आचार्य थे। समय ल. ९७५-१०२५ ई०।

२. अमितगति प्र०, जो माथुरसंघी वीरसेन के प्रशिष्य, और अमितगति द्वि. के गुरु माधवसेन के प्रगुरु थे –समय ल. ९०० ई०।

३. अमितगति 'वीतराग', जो संस्कृत के 'योगसारप्राभृत' नामक आध्यात्मिक ग्रन्थ के रचयिता हैं —संभव है कि न० २ से न० १ से अभिन्न हों।

४. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, चन्द्र प्रज्ञप्ति, सार्द्धद्वयद्वीप प्रज्ञप्ति, आदि ज्ञात किन्तु अनुपलब्ध ग्रन्थों के रचयिता अमितगति —संभव है, अभिन्न हों।

५. भ. श्रीभूषणकृत पाण्डवपुराण (१६०० ई०) में स्मृत शब्द-व्याकरणार्णव अमितगति। [प्रवी. i. ७१]

६. पं० गोविन्द के पुरुषार्थानुशासन (ल. १५०० ई०) में जय-सेन आदि पुरातन आचार्यों के साथ स्मृत अमितगति यति। [प्रवी. i. ८९]

अमिततेज— १. २४ पौराणिक कामदेवों में से द्वितीय।
२. वीरवर हनुमान का एक अपरनाम। दे. हनुमान।

अमितव्य दण्डनायक— अपरनाम अमृतदण्डाधीश या अमृत चमूनाथ, होयसल नरेश बल्लाल द्वि का महाप्रधान, सर्वाधिकारी, आभूषणाध्यक्ष और वीर सेनानी, सामन्त चट्टमनायक (चेट्टिसेट्टि) का पौत्र, नयकीर्ति पण्डितदेव का गृहस्थ शिष्य। अपने जन्मस्थान लोक्कुगुण्डी में एक भव्य जिनालय एवं विशाल सरोवर निर्माण कराये, सत्र, अग्रहार और प्रपा स्थापित किये, ब्राह्मणों के लिए पृथक अग्रहार बनाया और अमृतेश्वर शिव का मन्दिर भी बनवाया। उसके जिनमन्दिर का नाम एकक्कोटि जिनालय प्रसिद्ध हुआ, ती. शान्तिनाथ उसके मूलनायक थे। इस मन्दिर आदि के लिए उसने १२०५ ई० में, अपने परिवार, भाइयों, नायकों, नागरिकों एवं कृषक प्रजाजनों की उपस्थिति में भारी धर्मोत्सव किया तथा प्रभूत दानादि दिये—दे. अमृत दण्डनाथ। [प्रमुख. १५९-१६०; जैशिसं. iii. ४५२; एक. vi. ३६]

अमितसागर— तमिल देश के १०वीं शती ई० के प्रसिद्ध जैन वैयाकरणी, जिनके शिष्य दयापाल मुनि ने शाकटायन-व्याकरण की रूपसिद्धि नामक टीका रची थी।

अमितसिंह सूरि— आंचलगच्छी मुनि जिनके उपदेश से चित्तौड़ के रावल समरसिंह (१२६५ ई०) ने राज्य में जीवहिंसा बन्द करा दी थी। [प्रमुख. २५३]

अमितसेन— पुन्नाटसंघी, हरिवंश पुराण (७८३ ई०) के कर्ता जिनसेन सूरि के गुरु कीर्तिषेण के कनिष्ट सधर्मा, शतजीवि, पवित्र पुन्नाटगणाग्रणी। [हरि. पु.]

अमित्रघात— मगध के जैन मौर्य सम्राट बिन्दुसार (ई० पू० २९८-२७३) का विशेषण। [प्रमुख. ४४]

अमियसागर— दे. अमृतसागर। [जैशिसं. iv. पृ. ३९१]

अमियचन्द्र— दे. अमृतचन्द्र।

अमोघवर्ष— १. दक्षिणापथ का जैनधर्मावलम्बी राष्ट्रकूट सम्राट नृपतुंग शर्ववर्म पृथ्वीवल्लभ अतिशयधवल अमोघवर्ष प्र. (८१५-७७ ई०),

गोविन्द तृ. जगत्तुंग प्रभूतवर्ष का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, कृष्ण द्वि. अकालवर्ष का पिता, सेनगण के आचार्य जिनसेन स्वामी का गृहस्थ शिष्य, गुरुओं, विद्वानों, साहित्यकारों एवं कवियों का प्रश्रयदाता, प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका (संस्कृत) एवं कविराजमार्ग (कन्नड) का रचयिता। उसके परिवार के कई सदस्य, अनेक सामन्त एवं अधिकारीगण भी जैन थे। उसके शासनकाल में जैनधर्म खूब फला-फूला, जैन साहित्य का सृजन भी प्रभूत हुआ। अपने युग का महान एवं प्रतापी नरेश। [भाइ. २९९-३०४; प्रमुख. १०१-१०६]

२. राष्ट्रकूट अमोघवर्ष द्वि. (९२२-२५ ई०), इन्द्र तृ. का पुत्र एव उत्तराधिकारी था, कुलपरंपरानुसार जैन था, अनुज गोविन्द च. के षडयन्त्र का शिकार हुआ। [भाइ. ३०६]

३. अमोघवर्ष तृ. बद्दिग (९३६-३९ ई०), अमोघवर्ष द्वि. और गोविन्द च. का चचा था, गोविन्द को गद्दी से उतारकर स्वयं राजा बना, शान्तिप्रिय जैन नरेश था, पुत्री रेवा (दीवालम्बा) का गंगनरेश भूतुग द्वि. से विवाह कर दिया था, कृष्ण तृ. का पिता था। [भाइ. ३०६-३०७]

अमोलकचन्द खिन्दुका— दीवान नोनदराम के पुत्र, स्वय १८२५-२९ ई० मे जयपुर राज्य के दीवान रहे। [प्रमुख. ३४४]

अमोलकचन्द पारीख— कलकत्ता निवासी ने १८८७ ई० मे जर्मन प्राच्यविद डा० होर्नले को 'उवासगदसाओ' की हस्तलिखित प्रति भेंट की थी। [टंक]

अमलोकचन्द श्रीमाल— महिमवाल गोत्री रामलाल के पुत्र, खेतड़ी राज्य के परम्परागत मन्त्री, झुझनू मे १९१५ ई० मे स्वर्गवास हुआ, इनके भाई सोभालाल भी राज्य के मन्त्री रहे। [टंक.]

अमोलकराम रायबहादुर— खुर्जा (जि. बुलन्दशहर, उ. प्र.) के प्रसिद्ध दिग. जैन सेठ, एक अनाथालय की स्थापना के लिए ४०,००० रु० प्रदान किये। इनके सुपुत्र सेठ मेवालाल (रानीवाला) भी धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ और दानी सज्जन थे। [टंक]

अमोहिनी— हारीतिपुत्र पाल की भार्या, धर्मात्मा श्रमण श्राविका अमोहिनी ने अपने पुत्रों पालघोष, पोष्ठघोष तथा धनघोष के साथ मथुरा में, स्वामि महाक्षत्रप शोडास के राज्यकाल में, वर्ष ४० (=ई० पू० २६) में, अर्हंतपूजार्थ आर्यवती की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. II-५; ए. इ. II. १४. २]

अमृतकुमारी बीबी– मुर्शिदाबाद जिले के मोहिमपुर की ओसवाल महिला, जीवन मल तथा मानिकचंद कोठारी की जननी— १८७९ ई० में जगत सेठ गोविन्दचन्द की पत्नी प्राणकुमारी को पुत्र जीवनमल गोद दे दिया, जो गुलाब चन्द कहलाया। [टंक.]

अमृतचन्द्र— १. अमृतचन्द्राचार्य, अमृतचन्द्रसूरि या ठक्कुर अमृतचन्द्रसूरि, कवीन्द्र, आत्मनिष्ठ सिद्धयोगि एवं आध्यात्मिक सन्त, कुन्दकुन्दाचार्य के सर्वमहान एवं प्रथम ज्ञात व्याख्याकार —समयसार की आत्मख्याति टीका, समयसारकलश, प्रवचनसार-टीका, पंचास्तिकाय-टीका, तत्त्वार्थसार, पुरुषार्थसिद्धयुपाय तथा लघुतत्त्वस्फोट अपरनाम शक्तिमणित– (शक्तिभणित) कोश के रचयिता। संभवतया एक प्राकृत श्रावकाचार और प्रा. ढाढसीगाथा के भी कर्त्ता हैं। धर्मरत्नाकर (९९८ ई०) और सुभाषितरत्नसंदोह (९९३ ई०) से ही पूर्ववर्ती नहीं हैं, वरन् अमितगति प्र. (ल० ९०० ई०) के योगसार प्राभृत से भी पूर्ववर्ती हैं। अतएव इन महान दिगम्बराचार्य का समय लगभग ९०० ई० है।

२. वह अमृतचन्द्र जो मूल नन्दिसंघ की पट्टावली के अनुसार ९०५-९५८ ई० में हुए —संभव है कि न० १ से अभिन्न हों।

३. अमियचन्द, अमियमइन्दु या अमयचन्द, जो अपभ्रन्श प्रद्युम्न-चरित्र के कर्त्ता महाकवि सिंह के गुरु थे, उन्ही की आज्ञा से कवि ने ब्राह्मणवाड में बल्लालदेव (होयसल ?) के राज्य में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी। उनके स्वयं के गुरु माधवचन्द्र मलधारि देव थे, समय १२वीं शती ई०।

४. पुन्नाट गुरुकुल के अमृतचन्द्र, जिनके शिष्य विजयकीर्ति ने ल. ११५४ ई० में एक जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित की थी —मूर्त्ति सुल्तानपुर (पश्चिमी खानदेश, महाराष्ट्र) में प्राप्त हुई है। संभव है न० ३ से अभिन्न हों। [जैशिसं. V. ९८]

अमृत दण्डनाथ— दे. अमितय्य दण्डनायक [प्रमुख. १५९-१६०]

अमृतनन्द— दे. अमृतानन्द योगि ।

अमृतनन्दि— अकारादि वैद्यकनिघंटु (कन्नड) के लेखक, ल० १३०० ई० । [ककच.]

अमृतपण्डित— दिग. व्रतकथाकोश के कर्त्ता । [टंक.]

अमृतपाल— १. चन्द्रवाड (फ़ीरोजाबाद, उ० प्र०) के चौहान नरेश अभयपाल का मन्त्री, जिसने चन्द्रवाड (चन्द्रपाठ दुर्ग) में भव्य जिनमन्दिर बनवाया था, १२वीं शती ई० में । वह नगरसेठ हल्लण का पुत्र था, अभयपाल के उत्तराधिकारी जाहड का भी प्रधानमन्त्री रहा –वह जिनभक्त, सप्तव्यसन विरत, दयालु और परोपकारी था । उसका पुत्र सोढू भी राज्यमन्त्री था [प्रमुख. २०८, २४८]
२. नाडलाई (राजस्थान) के चाहमान नरेश रायपाल और रानी मानल देवी का पुत्र, रुद्रपाल का भ्राता, परिवार जैन था, ११३३ ई० में इस परिवार ने यतियों आदि के लिए दान दिया था । [जैशिसं. iv. २१८]

अमृतप्रभसूरि— योगशतक (हि०) के कर्त्ता ।

अमृतब्बे कन्ति– तपस्विनी आर्यिका, जिनके समाधिमरण करने पर उनके पुत्र पद्मनन्दि भट्टारक ने, ९७५ ई० में, मैसूर के निकट उनका स्मारक-स्तंभ स्थापित किया था । [जैशिसं. iv. ९०]

अमृतय्य— सरटूर के राजा तिलकरस के जैन मन्त्री देवण्ण का धर्मात्मा पुत्र, जिसने ११७५ ई० में मुनगुन्द (धारवाड) की पार्श्वनाथ-बसदि में समाधिमरण किया था । [जैशिसं iv. ३४६]

अमृत वाचक— श्वे. यति ने, १७९१ ई० में, संघ की प्रेरणा से, राजगृह में अनिमुक्तकमुनि की मूर्त्ति प्रतिष्ठापित की थी । [टंक.]

अमृतविजयगणि– तपागच्छी हीरविजयसूरि के प्रशिष्य, १६४१ ई० में सिरोही में बिम्ब प्रतिष्ठा की । [प्रमुख. २९४]

अमृत विमल— श्वे. ने ज्ञानविमलसूरि (१६९१ ई०) को काव्यशास्त्र, न्यायशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र में शिक्षित किया था । [टंक.]

अमृतसागर— दिग. मुनि, ने ११७६ ई० में, कुलोत्तुंग चोल के राज्य में, कुलतूर के राजा माधवन के मामा (या श्वसुर) की प्रेरणा पर

तमिल भाषा में 'कारिगै' नामक प्रसिद्ध छन्दशास्त्र लिखा था, जिसकी टीका गुणसागर ने रची थी। [जैशिसं. iv. पृ. ३९१] लेख में नामरूप अमिदसागर दिया है।

अमृतादेवी— धर्मात्मा महिला, जिसके हितार्थ १६०० ई० में भक्तामरस्तोत्र की प्रति लिखाई गई थी। [टंक.]

अमृतानन्द योगि— ने ल० १२९९ ई० में, ककातीय नरेश प्रतापरुद्रदेव के सामन्त मन्व (मन्वगण्ड गोपाल) भूपति के लिए संस्कृत में अलङ्कार संग्रह नामक ग्रन्थ की रचना की थी, दिग.। उस वर्ष के नेल्लू ताम्रशासन में इस सामन्त का उल्लेख है।

अमृश्री— खरतरगच्छी संवेगी साध्वी, क्षवेरश्री की शिष्या, विदुषी एवं प्रगतिशील विचारों वाली, उदयपुर में १९११ ई० में स्वर्गस्थ हुई। [टंक.]

अम्ब— कर्णाटक का एक जैन सामन्त राजा, अम्बराजा (अम्बीराय) और माणिकदेवी का पुत्र, १४२१ ई० के एक दानलेख में उल्लिखित। [जैशिसं iv. ४३३]

अम्ब— क्षेमपुर (गेरसोप्पे) की जैन महारानी भैरवाम्बा का एक पुत्र, महाराज इम्मडिदेवराय एवं भैरव का अनुज और सालुवमल्ल का अग्रज अम्ब क्षितीश, १५६० ई०। [मेजै.३४४; प्रमुख.२७५]

अम्बट— अर्थूणा के ११०९ ई० के जैन शि. ले. के प्रस्तोता धर्मात्मा धन-कुबेर भूषण सेठ के बड़े भाई बाहुक व उनकी पत्नि सीहका का सुलक्षण पुत्र। [प्रमुख. २१८]

अम्बड— आम्रभट, गुजरात के चौलुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) के प्रसिद्ध जैन मन्त्री उदयन का पुत्र, स्वयं कुमार पाल (११४३-७४ ई०) का राजमन्त्री एवं प्रचंड सेनानायक। ११७३ में अजयपाल के विद्रोह मे मारा गया। [प्रमुख. २३१, टंक.]

अम्बड़— ती. महावीर के परमभक्त एक ब्राह्मण पण्डित। [प्रमुख. २८]

अम्बदेव— श्वे., नागेन्द्रगच्छी पासडसूरि के शिष्य ने शत्रुंजय-उद्धारक समराशाह पर, १३१४ ई० में, 'संघपति समरारास' (हिन्दी-गुज.) की रचना की थी।

अम्बर— १. अर्थूणा के प्रसिद्ध धर्मात्मा जैन सेठ भूषण (११०९ ई०) के पूर्वज, तलपाटक (राजस्थान) निवासी, नागर वंशतिलक अशेष-शास्त्राम्बुधि जैनेन्द्रागम-वासनारससिक्त धर्मात्मा देशव्रती वैद्य-राज एवं चमत्कारी चिकित्सक –भूषण सेठ के प्रपितामह थे, अत: ल० १०२५ ई०। [प्रमुख. २१७-२१८]

२. शाकंभरी के जासट सेठ और आमुष्या का पुत्र, पद्मट का अग्रज, जिनमन्दिर निर्माता धर्मात्मा सेठ, ल० ११०० ई०। [प्रमुख. २०६]

अम्बरसेन— या अंबरसेन 'पण्डित शिरोरत्न', जिनकी उपस्थिति में लाड-बागड संघ के दिगम्बराचार्य शान्तिषेण ने, जो संभवतया इनके कनिष्ट गुरु भाई थे, धाराधीश भोजदेव की राज्यसभा में सैकड़ों वादियों पर विजय प्राप्त की थी— १०८८ ई० के दूबकुण्ड (चंडोभ, ग्वालियर) के जैन शि. ले. में यह उल्लेख प्राप्त है। [जैशिसं. ii २२८; एइं. ii. १८; जैसाई. १७२; प्रमुख· २१३]

अम्बरसेन — दिग. आचार्य वैज्रक के शिष्य मुनि चित्रसेन के सधर्मा, जयपुर प्रदेश, ११६० ई०। [कैच.७१]

अम्बराजा— दे. अम्ब।

अम्बषेणगणि— १. या अम्बसेनगणि, दिग., कवि धनपाल द्वारा अपभ्रन्श बाहु-बलि चरित्र (१३९७ ई०) में स्मृत एक पूर्ववर्ती ग्रन्थकार जो अमियारहण (अमृताराधन) ग्रन्थ के कत्ता थे।

२. अपभ्रन्श हरिवंशपुराण (११वीं शती) के कर्त्ता कवि धवल के गुरु, संभवतया एक पूर्ववर्ती हरिवंश पुपाणकार भी —अत: समय ल० १००० ई०। संभव है नं० १ व २ अभिन्न हों।

अम्बा प्रसाद— गोघरा निवासी गुणपाल नागर एवं चर्चिणी के विद्यारसिक धर्मात्मा पुत्र जिनके हितार्थ अमरकीर्तिगणि ने अपभ्रन्श भाषा में षटकर्मोपदेश-रत्नमाला की ११९० ई० में रचना की थी–संभव-तया यह उक्तगणि के अग्रज भी थे। [शोधांक-५० पृ. ३७०]

अम्बीराय— दे. अम्ब।

अम्बुवन श्रेष्ठि— या अम्बवन श्रेष्ठि, क्षेमपुर (गेरसोप्पे) के राज्यसेठ योजण श्रेष्ठि के प्रपौत्र नागसेट्टि की पत्नि नागम से उत्पन्न, स्वयं भी अपने समय में राज्यसेठ था, उसके दो भाई थे, और दो पत्नियाँ

थीं। सारा परिवार परम्परागत परम जैन था। मुनिराज अभिनव समन्तभद्र के उपदेश से प्रेरित होकर इस धर्मात्मा सेठ ने, १५६० ई० में, योजणश्रेष्ठि द्वारा निर्मापित नेमीश्वर जिनालय के सामने कांस्य धातु का एक अतिभव्य, कलापूर्ण एवं उत्तुंग मानस्तंभ स्थापित किया, जिसमें चार मनोज्ञ जिनबिम्ब स्थापित किये और ऊपर ठोस स्वर्णकलश चढ़ाया, महोत्सव किया और दानादि दिये। [प्रमुख. २७५, २७६; मेजै. ३४५-३४७: एक. viii. ५५]

अम्म— प्र. एवं द्वि. —दे. अम्मराज प्र. एवं द्वि. [मेजै. २५१-२५२]

अम्मइय— अपभ्रंश महाकवि पुष्पदन्त (९६५ ई०) के एक प्रशंसक —कवि के मेलयाटी आने पर उनकी सर्वप्रथम भेंट, उवतनगर के बाहर वन में, इन अम्मइय तथा इनके मित्र इन्द्र से हुई थी। [जैसाइ. ३०८, ३२१, ३७६]

अम्मगावुंड— वेणूर ग्राम के रट्ट नरेश लक्ष्मीदेव का जैन सामन्त, जिसने १२०९ ई० में, महाराज की अनुमतिपूर्वक, चिचुणिके के पार्श्वनाथ जिनालय के लिए, स्वगुरु कनकप्रभ द्वि. को, जो यापनीय-संघ-कारेयगण-मेलापान्वय के कनकप्रभ प्र. के प्रशिष्य और त्रैविद्य चक्रेश्वर श्रीधरदेव के शिष्य थे, भूमिदान किया था। [देसाई. ११८]

अम्मण— दानशील धर्मात्मा पट्टणसामि नोक्कय्य सेट्टि (१०६२-७७ ई०) का पिता। [मेजे. १७४, १७८; प्रमुख. १७३]

अम्मण— या अम्मण भूमिपाल, हुमच्च के सांतरवंशी जैन नरेश तैल तृ: त्रिभुवनमल्ल जगदेकदानी (११०३ ई०) की द्वितीय रानी अक्कादेवी (अक्कला देवी) का तृतीय पुत्र, ११५९ ई०। [प्रमुख. १७४; जैशिसं. iii. ३४९]

अम्मणदेव सान्तर— हुम्मच नरेश चिक्कवीर सान्तर और रानी बिज्जलदेवि का पुत्र, होचलदेवि का पति, तैलपदेव प्र० और राजकुमारी वीरबरसि का पिता, धर्मात्मा जैन नरेश, समय ल० १०५० ई०। [प्रमुख. १७२]

अम्मरस— राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृ. (९१४-२२ ई०) का जैन सेनापति, जिसने कोपबल तीर्थ की यात्रा की थी और दानादि दिये थे,

दान की तिथि ८९० ई० है। [देसाई. ३९४; प्रमुख. १०७; जैशिसं. iv-६०]

अम्मराज— वेंगि के पूर्वी चालुक्य वंश का प्रतापी एवं धर्मात्मा जैन नरेश अम्मराज द्वि. विजयादित्य षष्ठ 'समस्तभुवनाश्रय' (९४५-७० ई०), महाराज भीम द्वि. और लोकमहादेवी का पुत्र, जिनभक्त तो था ही, शिव और शैवों का भी आदर करता था, उसकी पट्टरानी अय्यन महादेवी थी, और प्रधान सेनापति परम जैन दुर्गराज था। इस नरेश के शासन में आन्ध्र प्रदेश में जिनधर्म अत्युन्नत अवस्था में रहा, अनेक दान दिये गये, अनेक जिनमंदिर बने, अनेक जैन मुनियों का सम्मान हुआ। इसी वंश में एक अम्म या अम्पराज प्र० (९२२-२९ ई०) भी हो चुका था, जो शायद भीम प्र० का पुत्र था। [जैशिसं. iv. १००; प्रमुख. ९४-९५; देसाई १६६,१९८; जैशिसं. ii. १४४; भाइ. २९०-२९१; मेजै. २५१-२]

अयप्प गावुंड— आवलिनाड का जैन महाप्रभु, जिसकी धर्मात्मा पत्नि कालिगावुंडि ने १४१७ ई० के लगभग समाधिमरण किया था —ये पति-पत्नि गुणसेन सिद्धान्त के गृहस्थ शिष्य-शिष्या थे। [मेजै ३३२]

अयम— सौराष्ट्र के शक क्षहरात नहपान (२६-२७ ई०) का जैनमन्त्री। [जैसो. ९०; प्रमुख. ६३-६४]

अयामल— दिल्ली निवासी दिग. जैन, बादशाह मुहम्मद शाह (१७१९-४८ ई०) के कमसरियट विभाग के अधिकारी, ने मुहल्ला खजूर की मस्जिद में जिनमंदिर बनवाया था। [टक.]

अयोध्या प्रसाद— दिल्ली निवासी गर्गगोत्री अग्रवाल दिग. जैन शान्तिलाल के पुत्र, लार्डलेक के अधीनस्थ एक अधिकारी, बड़े दानशील एवं परोपकारी सज्जन थे। उनके सुपुत्र रायबहादुर प्यारेलाल का स्वर्गवास १८९६ ई० में हुआ। [टंक.]

अयोध्या प्रसाद खजांची— दिल्ली के ला० ईसरी प्रसाद के अनुज, १८७८ में सरकारी खजांची थे। [प्रमुख. ३६०]

अय्कण— या करिय-अय्कण, होयसल नरेश विष्णुवर्धन के वीर एवं धर्मात्मा जैन सामन्त सोम (सोवेय नायक), जो कलुकणिनाड

का शासक था, का प्रपितामह, बुग्गगाउंड का पितामह, बाम का पिता वीरवर अय्कण, जिसे एक मस्त जंगली हाथी को वश में करने के कारण राजा ने करिय-अय्कण उपाधि दी थी। सोम द्वारा मन्दिर आदि निर्माण की तिथि ११४२ ई० है, अतः अय्-कण ल० १०७५ ई०। [जैशिसं iii. ३१८; प्रमुख ९५; एक. iv. ९४-९५]

अय्य— कोंगाल्व नरेश के सामन्त, मदुवंगनाड के राजा, किविर निवासी अय्य ने १२ दिन की सल्लेखना पूर्वक, १०५० ई० में, स्वर्गवास किया था। [मेजै. ९५, १५८; जैशिसं. ii. १८४]

अय्यण— कल्याणी के उत्तरवर्ती चालुक्यवंश में तैल द्वि. का पौत्र, सत्याश्रय (९९७-१००९ ई०) का भतीजा, विक्रमादित्य पं. (१००९-१३ ई०) का उत्तराधिकारी —केवल एक वर्ष राज्य करने वाला अय्यन द्वि., इसके पश्चात जयसिंह द्वि (१०१४-४२ ई०) राजा हुआ —-समय १०१३-१४ ई०; इसके पूर्व भी इस वंश में एक अय्यन प्र राजा हो चुका था। [भाइ.३१५; जैशिसं iii.४०८]

अय्यण चन्बरसङ्क— गंग नरेश अरुमुलिदेव का श्वसुर, रानी गावब्बरसि का पिता, जैनसामन्त, ल० १००० ई०। [जैशिसं ii २१३; प्रमुख.१७४]

अय्यन महादेवी— १. अय्यण महादेवी प्र० वेंगि के पूर्वी चालुक्यवंश संस्थापक कुब्ज विष्णुवर्धन (६१५ ई०) की महारानी ने बेजवाड़ा की प्रधान जैन बसति के लिए मुष्निनिकुंड ग्राम दिग. जैनगुरु कलि-भद्राचार्य को भेंट किया था —संभवतया उक्त जिनालय की निर्माता भी वही थी। [देसाई. १९]

२. इसी वंश के विजयादित्य प्र० की रानी और विष्णुवर्धन चतुर्थ (७६४-९९ ई०) की जननी अय्यन महादेवी द्वि. ने ७६२ ई० में उपरोक्त दानपत्र की पुनरावृत्ति एवं नवीनीकरण किया था। [भाइ. २८९; प्रमुख. ९४-९५; मेजै २५१-२५२]

अय्यप— ने अपने पिता नोलंब-पल्लव नरेश महेन्द्र प्र० के साथ एक जैन-मन्दिर के लिए, ९वी शती ई० में, कुछ दान दिये थे। [देसाई. १५७], तदनंतर इस अय्यपदेव ने धर्मपुरी के जिनालय को एक ग्राम दान दिया था —इन पिता पुत्र के गुरु सेनगण के विजयसेन के शिष्य कनकसेन भटार थे [देसाई. १६२]

अय्यपगौड— धर्मात्मा जैन सामन्त, जिसकी पत्नी कालि गौडि ने १४१७ ई० में समाधिमरण किया था [प्रमुख २६५]

अय्यपदेव— दे. अय्यप। [एइं. X पृ. ६५] –उसका ज्येष्ठपुत्र अग्गिवबीर नोलंब भी जैन था। [मेजैं. ६९]

अय्यपार्य— अय्यप, अर्यप, आर्यप, अप्पयार्य आदि विभिन्न नामरूपों से उल्लेखित अय्यपार्य जिनेन्द्र –कल्याणाभ्युदय अपरनाम जिनानुवादांग नामक संस्कृत प्रतिष्ठापाठ के रचयिता हैं, जिसे उन्होंने १३१९ ई० में, ककातीय नरेश रुद्रदेव के राज्य में, एकशिलपुर (वारंगल-राजधानी) में लिख कर पूर्ण किया था। वह हस्तिमल्ल सूरि के प्रशिष्य और गुणवीर सूरि के शिष्य पुष्पसेन मुनि के गृहस्थशिष्य, काश्यपगोत्री –जैनालपाकवंशी सागारधर्मी करुणाकर और अर्कमाम्बा के सुपुत्र थे, श्रीपाल इनके बन्धु थे, और वह धरसेनाचार्य, कुमारसेन मुनि और पुष्पसेन को स्वगुरु मानते थे –पुष्पसेनाचार्य के आदेश से ही उक्त ग्रन्थ की रचना की थी। मूलसंघसेनगण से सम्बद्ध थे, किन्तु गृहस्थ विद्वान ही रहे प्रतीत होते हैं। दिग. परम्परा के महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठापाठों में इनके ग्रन्थ की गणना है। [प्रमुख.१९१; प्रवी.i.८१; शोधांक-४९ पृ. ३३३; मेजैं. २६३]

अय्यपोटि मुनीन्द्र- बलहारिगण–अड्डकलिगच्छ के सकलचन्द्र सिद्धान्त के शिष्य और उन अर्हनन्दि भट्टारक के गुरु थे, जिनकी गृहस्थ श्राविका शिष्या राजरानी चामकाम्बा ने वेंगि के पूर्वी चालुक्य नरेश अम्मराज द्वि.(९४५-७० ई०) से एक दान पत्र द्वारा सर्वलोकाश्रय जिनालय के लिए एक ग्राम का दान कराया था। [प्रमुख. ९५.]

अय्यप्प— ने श्रीयम्म के साथ, रणपाकरस के राज्यकाल में, ८वीं शती ई० में, कुडलूर की नदीतटस्थित पूर्वीय-बसदि (जिनालय) के लिए, कई उद्यान आदि दान किये थे। [जैशिसं. iv. ४७]

अय्यवर्मा— तलकाड का जिनधर्मी गंगनरेश, ल० ३०० ई०, माधव प्र. का पौत्र, और माधव द्वि. का पुत्र। [मेजैं. ८]

अय्योपोत्ति— आर्यिका, गणिनी, जो बलहारीगण के अर्हनंदि मुनि की गुरुनि थीं। [एइं. vii. २५, पृ. १७७]

अय्यणालि— महानायक रेचय्य का पुत्र, चातुर्वर्णश्रमणसंघ का सहायक, अंकनाथपुर में, १०वीं शती ई० में, समाधिमरण किया। [जैशिसं. iv. १०७]

अर— अरनाथ, १८वें तीर्थंकर, ७वें चक्रवर्ती, १४वें कामदेव, हस्तिनापुर के कुरुवंशी नरेश सुदर्शन और महारानी मित्रसेना के सुपुत्र। बहुधा 'अरह' या 'अरहनाथ' लिखा जाता है, जो गलत है।

अरकीर्ति— यापनीयनंदिसंघ-पुन्नागवृक्षमूलगण के आचार्य विजयकीर्ति के शिष्य, और राष्ट्रकूट सामन्त चाकिराज के गुरु, जिसकी प्रार्थना पर राष्ट्रकूट सम्राट गोविन्द तृ. प्रभूतवर्ष ने, ८१२ ई० के कदब ताम्रशासन द्वारा उक्तगुरु को शीलग्राम के जिनेन्द्र मन्दिर के लिए जलमंगल नामक ग्राम प्रदान किया था। [मेजै. ८८; प्रमुख. १००] दे. अर्ककीर्ति।

अरट्टनेमि कुरत्ति– गुरुनी आर्यिका, तमिलदेशस्थ प्राचीन दिग. जैन आर्यिकासंघ की एक आचार्या, मम्मई कुरत्ति की शिष्या। [देसाई. ६७]

अरट्टनेमि भटार– एक तमिलदेशस्थ प्राचीन शि. ले. में उल्लिखित पेरयक्कुडि के दिगम्बराचार्य, जिनकी आर्यिका शिष्या गुणन्दांगी कुरत्ति थीं। [देसाई.६९.]

अरट्टिति— धर्मात्मा सामन्त महिला, पुत्र सिगम के जिनदीक्षा लेने पर, कुडलूर दुर्ग के निकट का बहुतसा क्षेत्र धर्मार्थ दान कर दिया था –शि. ले. गंग नरेश श्रीपुरुषमुत्तरस के काल का, ल. ७५० ई० का है। [जैशिस. ii. १२०]

अरयम उडैयान- ने १०६८ ई० में करन्दै (मद्रास प्रांत) के एक जिनालय के लिए दान दिया था। [जैशिसं. iv. १५०-१५१]

अरयम्म— ९१५ ई० के, राष्ट्रकूट इन्द्र तृ. के, वजीरखेड़ा ताम्रशासन के अनुसार इस नरेश की जननी महारानी लक्ष्मी के मातामह, वेमुलवाड के जिनधर्मी चालुक्य नरेश सिहुक (नरसिंह) के पुत्र अरयम्म या अरिकेसरी। [जैशिसं. V. १४; शोधांक-२४]

अरल श्रेष्ठि— राघव-पाण्डवीय काव्य के कर्ता, संभवतया दिग. विद्वान।

अरसप्पनायक— १. प्रथम, सोंदा राज्य का संस्थापक जिनधर्मी नरेश। [देसाई. १३१]

२. द्वितीय, अरसप्पनायक प्र० का पुत्र एवं उत्तराधिकारी,

१५५५ से १५९८ ई० तक शासन किया, राज्य का प्रभूत उत्कर्ष किया, वह तत्कालीन भट्टारकों अकलंक द्वि. तथा भट्टाकलंक का भक्त गृहस्थ शिष्य था। उसकी एक पुत्री बीलिगि के राजा घन्टेन्द्र से विवाही थी –वह राज्यवंश भी इन्हीं गुरुओं का भक्त था। अपने १५६८ ई० के ताम्रशासन में उसने स्वयं को शब्दानुशासन के कर्ता भट्टाकलंक का प्रिय शिष्य कहा है। [देसाई. १२९-१३१]

अरसप्पोडेय— १. गेरसोप्पे के एक शि. ले. के अनुसार, इस राजा की दौहित्री शान्तलदेवी ने समाधिमरण किया था –संभव है अरसप्प प्र. या द्वि. से अभिन्न हो। [देसाई. १३१; जैशिसं. iv. ५३९]

२. जिसके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेय ने १७५७ ई० में चारुकीर्ति पंडितदेव को भूमिदान किया था। [जैशिसं. iv. ५२०]

अरसय— १०८१ ई० के लक्ष्मेश्वर के दानलेख के दाता (दिनकर) का एक धर्मात्मा सम्बंधी। [जैशिसं. iv. १६५]

अरसब्बे गन्ति— सूरस्थगण के कल्नेले के आचार्य रामचन्द्रदेव की शिष्या तपस्विनी आर्यिका, जिसने १०९५ ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिस.ii.२३४; एक. v. ९६]

अरसादित्य— या राजा आदित्य, विष्णुवर्धन होयसल (११०६-४१ ई०) के जैन मन्त्री एवं वीरसेनानी दण्डनायक बलदेवण्ण के पिता, उसकी भार्या का नाम आचाम्बिके था, दो अन्य पुत्र, पंपराय और हरिदेव, तथा पौत्र माचिराज भी उक्त नरेश के जैन वीर सेनानी थे। [प्रमुख. १४६; जैशिस. i. ३५१; मेजै. १३३]

अरसार्य— मूलगुन्द निवासी जैन वैश्य श्रेष्ठि चन्द्रार्य का पिता, चिकार्य का पुत्र और नागार्य का भ्राता –इसने राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण द्वि. अकालवर्ष के शासनकाल में, ९०३ ई० में, स्वपिता द्वारा निर्मापित भव्य एवं उत्तुंग जिनालय के लिये स्वगुरु कनकसेन मुनि को प्रभूत भूमिदान किया था –यह मुनि चन्द्रिकावाटसेनान्वय के कुमारसेन के प्रशिष्य और वीरसेन के शिष्य थे। [प्रमुख.१०६; देसाई. १३४; जैशिसं. ii. १३७]

अरसिकब्बे— चामराज चमूपति की प्रथम पत्नी, और विष्णुवर्धन होयसल के राजदण्डाधीश एवं सन्धिविग्रहिक मन्त्री वीरवर पुणिसमय्य

(१११७ ई०) की धर्मात्मा जननी। [प्रमुख.१४६; मेजै.१२१; जैशिस. ii-२६४; एक. iv. ८३]

अरसिकब्बे— हुमच्च के वीरदेव साम्तर (१०६२ ई०) की सास, उनकी दान-शीला धर्मात्मा रानी चागलदेवी की जननी, स्वयं भी बड़ी धर्मात्मा महिला। [जैशिसं.१९८; एक.viii ४७; प्रमुख.१७३]

अरहदास— चौधरी चीमा के पुत्र और चौधरी देवराज (१५१९ ई०) के चचा। [प्रमुख. २४४]

अरहनाथ— दे. अर या अरनाथ, १८वें तीर्थंकर।

अरिकीर्ति— दे. अर्ककीर्ति।

अरिकेसरी— विदर्भदेशस्थ अचलपुर नगर के अपने समकालीन जैन नरेश के विषय में श्वे. जयसिंहसूरि ने अपनी धर्मोपदेशमालावृत्ति (८५६ ई०) में लिखा है—'इस अचलपुर में दिगम्बर जैन आम्नाय का भक्त अरिकेसरी नामक राजा राज्य करता है, जिसने अनेक महाप्रसाद निर्माण करा के उनमें तीर्थंकर प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित कराई हैं।' [प्रमुख. २२३]

अरिकेसरी— वातापी के प्राचीन पश्चिमी चालुक्यों की एक शाखा पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर) प्रदेश पर शासन करती थी, दिग. जैनधर्मावलम्बी थी, अकलंकदेव की परम्परा के देवगण के गुरुओं की विशेष भक्त थी, गंगधारा, लेंबूपाटक (वेमुलवाड) और पोदन (बोधन) इन राजाओं के अन्य मुख्य नगर थे। इसवंश में अरिकेसरी नाम के तीन (या चार) राजाओं के होने का पता चलता है— १. अरिकेसरी प्र., युद्धमल प्र. का पुत्र एव उत्तराधिकारी, ल० ८०० ई०। २. अरिकेसरी द्वि., वंश का सातवां राजा था, बद्दिग प्र. का पौत्र और मारसिंह द्वि. का पुत्र था तथा महान कन्नड कवि आदि-पम्प(९४१ ई०)का प्रश्रयदाता था। इस राजा की पत्नी राष्ट्रकूट राजकुमारी लोकाम्बिका थी। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी बद्दिग द्वि. था, जिसके समय में उसके गुरु, देवसंघ के सोमदेवसूरि ने, उसकी राजधानी गंगधारा में ही, ९५९ ई० में, यशस्तिलकचम्पू की रचना की थी। ३. अरिकेसरी तृ. बद्दिग द्वि. का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। उसने अपने पिता द्वारा राजधानी लेंबूपाटक में निर्मापित शुभधाम जिनालय

के लिए ९६३ ई० में एक ग्राम आचार्य सोमदेवसूरि को दान किया था। इसी राजा के समय में, ९६६ ई० में, गंगनरेश मारसिंह ने पुलिगेरे के शंखतीर्थ पर गंगकन्दर्प जिनालय बनवाकर उसके लिए देवगण के जयदेव पण्डित को भूमिदान दिया था। [प्रमुख. १८५-१८६; देसाई. १०२; भाइ. ३३३-३२४]

अरिकेसरी— या हरिकेसरीदेव, नागरखंड का कदम्बवंशी जैन राजा, १०५५ ई०। [प्रमुख. १८६, १२३-१२४; जैशिसं. ii. १८७; इए. iv. १ ए. १ पृ. २०३]

अरिकेसरी— हुमच्च के जैन नरेश नन्नि सान्तर की रानी और राय सान्तर की जननी सिरियादेवी का पिता, ल.१००० ई०। [प्रमुख.१७२]

अरिकेसरी— १११५ ई० में जिस धर्मात्मा सामन्त नोलंब की प्रेरणा से कोल्हापुर के शिलाहार गण्डरादित्य ने दान दिये थे, उसका एक धर्मात्मा पूर्वज। [जैशिसं iv. १९२]

अरिकेसरी असमसमन मारवर्मन— मदुरानरेश कुनपांड्य (७८३ ई०) का अपरनाम, जिसने शैवसंत तिरुज्ञान संबंदर के प्रभाव में जैनों पर भीषण अत्याचार किय थे। [मेजै. २७५-२७७]

अरिट्ठनेमि— दे. अरिष्टनेमि।

अरिट्टोनेमि— मूर्त्तकार, संभवतया जिसने, ल० ९०० ई० में, श्रवणबेल गोल के चन्द्रगिरि की भरतेश्वर मूर्त्ति का निर्माण किया था। [जैशिसं. i.२५, भू. १४]

कुछ विद्वानो का अनुमान है कि गोम्मटेश बाहुबलि की विशाल मूर्त्ति (९८१ ई०) का शिल्पी भी कोई अरिट्टोनेमि या अरिष्टनेमि था। [टंक.]

अरिदमन— सौराष्ट्र के वेलाकुल का एक राजा, जिसके एक क्षत्रिय कर्मचारी कामर्द्धि के पुत्र ही प्रसिद्ध श्वेताम्बराचार्य देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण (४५३-६६ ई०) थे। [टंक.]

अरिमंडल भटार— दे. अभिमंडल भटार [मेजै. २४४-४५]

अरिविंगोज— राष्ट्रकूट इन्द्रराज तृ. (९१४-२२ ई०) के परम जैन दण्डनायक श्रीविजय का विरुद। [जैशिसं iv. ९७]

अरिष्टनेमि— या नेमिनाथ, २२वें तीर्थंकर, जन्मस्थान शौरिपुर (आगरा जिला, उ० प्र०), पिता समुद्रविजय, माता शिवादेवी, हरिवंश

जो यदुवंश शाखा में हुए, नारायण कृष्ण के साक्षात भाई। महाभारतकालीन।

अरिष्टनेमि— १. या अरिट्टनेमि पंडित, परसमयध्वंसक उपाधि, मलेगोल्ल के निवासी, श्रवणबेलगोल के एक प्राचीन यात्रा लेख में उल्लिखित। [जैशिसं i. २९७]

२. आचार्य, जिन्होंने, ल. ७०० ई० मे, कटवप्रगिरिपर, दिण्डिक-राज नामक राजा और कम्पितादेवी की उपस्थिति में समाधि-मरण किया था, इनके अनेक शिष्य थे। [जैशिसं. i. १५२]

३. आचार्य, जो कडंकोट्टूर के निवासी थे, और तिरुमलै के परवादिमल्ल के शिष्य थे, ने एक यक्षिप्रतिमा बनवाई थी —काल अनिश्चित। [जैशिसं. iii. ८३१]

४. अष्टोपवासि गुरु के शिष्य अरिट्टनेमि पेरियार (अरिष्टनेमि महान), एक प्राचीन तमिल लेख में उल्लिखित। [देसाई.५७, ६१,८०]

५. गंगनरेश पृथ्वीपति प्र० (ल. ८५० ई०) के गुरु दिगम्बरा-चार्य, यह राजा बड़ा वीर पराक्रमी योद्धा था, युद्ध में ही वीर गति पाई। संभवतया उसकी तथा उसकी रानी कम्पिला की उपस्थिति में आचार्य ने कटवप्र पर्वत पर समाधिमरण किया था —संभव है न० २ से अभिन्न हों। [प्रमुख. ७७]

६. पेरियकुडि के अरिष्टनेमि भट्टारक, जिनके एक शिष्य को राष्ट्रकूट कृष्ण द्वि. अकालवर्ष (८७८-९१४ ई०) के सामन्त विक्रमवरगुण ने दान दिया था। [प्रमुख. १०६]

७. अरिष्टनेमि भट्टारक, अपरनाम नेमिनाथ त्रैविद्य, जो श्री-देवताकल्प नामक मन्त्रशास्त्र के रचयिता हैं। वीरसेन के प्रशिष्य और गुणसेन के शिष्य थे। ल. ११०० ई०।

८ अरिट्टनेमि भटार, जिनके शिष्य गुणन्दांगिकुरट्टिगल के दान का ७वीं शती ई० के एक तमिल अभिलेख में उल्लेख हैं। [जैशिस. iv. २३]

९. तिरुप्पानमलै के दिगम्बराचार्य अरिष्टनेमि जिनकी शिष्या ने परान्तकचोल के राज्यकाल में, ९४५ ई० में, जनहित के लिए एक कूप बनवाया था। [जैशिसं. iv. ८२]

अरिसिंह— लावण्यसिंह का पुत्र और अमरचन्द्र का मित्र, जिसने धोलका के राज्यमन्त्री वस्तुपाल की प्रशंसा में, १२१९-२० ई० में, सुकृत-संकीर्तन काव्य रचा था। [टंक.; गुच. २]

अरिहरराज— विजयनगर नरेश —दे. हरिहरराय। महा मण्डलेश्वर कुमार अरिहरराज सम्राट हरिहर द्वि. (बुक्क द्वि.) का पुत्र था जिसका अपरनाम बुक्कराज था –१३८२ ई० के जिनमंदिर के लिए दिये गये दान का लेख है। [जैशिसं. iii-५८१; एइं.vii. १५ A.]

अरुणमणि— ने १६१७ ई० में सं. विमलनाथपुराण की रचना की थी। [कैच. १९०]

अरुणमणि— कवि, पंडित, नामान्तर लालमणि, अरुणरत्न, रक्तरत्न आदि, ने १६५९ ई० में, मुद्गल अवरंगसाहि (मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब) के राज्यकाल में, जहांनाबाद (दिल्ली) के पार्श्व जिनालय में, अजितजिन-चरित्र नामक संस्कृत काव्य की रचना की थी। वह ग्वालियरपट्ट के काष्ठासंघी भट्टारक श्रुतकीर्ति के प्रशिष्य और बुधराघव के शिष्य कान्हरसिंह के पुत्र, या शिष्य, थे। [प्रमुख. २९५]

अरुमुलिदेव— अपरनाम रक्कसगंग द्वि., रक्कसगंग प्र० का भतीजा, राजा वासव और कंचलदेवी का पुत्र, गावब्बरसि का पति, महिलारत्न चट्टलदेवी, सान्तर रानी बीरलदेवी और राजविद्याधर का पिता, जैन नरेश। ल. १०५० ई०। [प्रमुख. १७४; भाइ. २७५; मेजै. १५९; जैशिसं. ii. २१३, २४८]

अरुमोलि चोल– १००५ ई०, सम्भवतया राजराज चोल का एक जैन सामन्त, जो गुणवीर मुनि और गणिशेखर उपाध्याय का गृहस्थ शिष्य था। [जैशिसं. ii-१७१]

अरुमोलिदेव— तमिलभाषा मे भगवान अर्हंत का एक पर्यायवाची नाम। [जैशिसं. iv. २१९ –शि. ले. ११३४ ई० का है]

अरुवन्दै आण्डाल– पोन्नूर निवासी धर्मात्मा श्रावक ने, जिनालय के लिए घृत-दीपक, अक्षत आदि का दान किया –१४वीं शती ई० [जैशिसं. iv. ४०५]

अरुहनंदि भट्टारक– मूलसंघ-सूरस्थगण-चित्रकूटान्वय के भ. कनकनंदि के प्रशिष्य, भ. उत्तरासंग के शिष्य, भास्करनंदि एवं श्रीनंदि के सधर्मा, और

उन आर्य पण्डित के गुरु जिन्हें चालुक्य सोमेश्वर द्वि. के शासन-काल में, १०७४ ई० में, अरसरबसदि नामक जिनालय के लिए महामण्डलेश्वर लक्मरस ने दान दिया था। [देसाई. १०७-१०८; जैशिसं. iv. १५८]

अवहणन्दि सिद्धान्ति— मैसूर के १२०५ ई० के, नंदिसंघ-बलात्कारगण के माघनंदि सैद्धान्तिक के शि. ले. में उल्लिखित उनकी गुरुपरंपरा में अभय-नंदि भट्टारक के बाद और देवचन्द्र के पूर्व उल्लिखित अवहणंदि सिद्धान्ति। [जैशिसं. iv. ३४२]

अरेयक्के— हुमच्च के वीर सान्तर के जैन मन्त्री नकुलरस (१०५३ ई०) की धर्मात्मा जननी। [जैशिसं. iv.१३७]

अरेयमारेय नायक— ने होयसल बल्लाल तृ. के समय, ल. १३०० ई० में, एक्कोटि-जिनालय के लिए विशाल सरोवर बनवाया था। [मेजै.१८४]

अरैयणाविदि— तमिलदेश के आचार्य गुणसेनदेव (७वीं शती ई०) के एक धर्मा-त्मा शिष्य। [जैशिसं. iv. ३३-३८]

अर्ककीर्ति— १. यापनीयनन्दिसंघ-पुन्नागवृक्षमूलगण-श्रीकित्याचार्यान्वय के गुरु कुविलाचार्य के अन्तेवासी विजयकीर्ति के शिष्य, जिन्हें कुनुंगिल नरेश चालुक्य विमलादित्य को शनिग्रहपीड़ा से मुक्त करने के उपलक्ष्य में, उसके मामा अशेषगंगमंडलाधिराज चाकिराज की प्रार्थना पर राष्ट्रकूट सम्राट गोविन्द तृ. प्रभूतवर्ष जगतुंग ने अपने ८१२ ई० के कदब ताम्रशासन द्वारा शिलाग्राम के जिना-लय के लिए जालमंगल ग्राम दान किया था। [प्रमुख. ७७, १००; भाइ. २९८; जैशिसं. ii-१२४; एइं. iv]
—दे. अरकीर्ति व अरिकीर्ति, शुद्धनाम अर्ककीर्ति है।

२. शाकटायन-व्याकरण के कर्त्ता शाकटायन पाल्यकीर्ति के गुरु या सधर्मा, संभव है कि नं० १ से अभिन्न हों।

अर्ककीर्ति नृप— १३९८ ई० के शि. ले. में उल्लिखित एक राजा, जो संभवतया दिगम्बराचार्य अभयसूरि का भक्त था। [जैशिसं i-१०५]

अर्कनन्दि— पुण्यास्रवकथाकोशकार रामचन्द्र मुमुक्षु के परम्परागुरु, पद्मनन्दि के शिष्य, माधवनन्दि के गुरु, वसुनन्दि के प्रगुरु -वसुनन्दि के शिष्य श्रीनन्दि थे, प्रशिष्य केशवनन्दि, जिनके शिष्य रामचन्द्र मुमुक्षु थे —ल० १२वीं शती ई०।

अर्कमाम्बा— या अर्काम्बा, जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (१३१९ ई०)के कर्ता अय्यपार्य की जननी, जिनभक्त करुणाकर की धर्मपत्नी। [प्रवी. i. ८१]

अर्जन— सतलखेडी (मंदसौर, म० प्र०) के साह आहव के पुत्र... संघवी द्वारा १४८३ ई० में निर्मापित जिनमंदिर का सूत्रधार। [जैशिसं. V-२२५]

अर्जुनदेव— १. गुजरात का बघेला राजा (ल. १२६१-७४ ई०), जैन नरेश, वीसलदेव का उत्तराधिकारी। [गुच ३१७]

२. १३९८ ई० के शि. ले. में उल्लिखित सिंहणार्य के भक्त एवं गृहस्थ शिष्य राजा। [जैशिसं. i १०५]

अर्जुन पांडव— अपरनाम पार्थ, धनञ्जय, सव्यसाची आदि, हस्तिनापुर के कुरुवंशी राजा पांडु और कुन्ती का तृतीय पुत्र, कृष्ण का सखा, अद्वितीय धनुर्धर, महाभारत युद्ध का सर्वोपरि वीर योद्धा, अन्त में जैन मुनि के रूप मे तपस्या की और आत्मकल्याण किया। [हरिवंश पु.; पांडव पु.; देसाई-२०१]

अर्जुन भील— सरतर का भील सरदार, हीरविजयसूरि से अहिंसाणुव्रत लिया, ल. १५७५ ई०। [कैच-२०९]

अर्जुन भूपति— ग्वालियर के कच्छपघटवंशी जैन नरेश विक्रमसिंह (१०८८ ई०) के प्रपितामह, जिन्होंने विद्याधर के लिए युद्ध मे राज्यपाल को मारा था। इनके पिता पांडु श्री युवराज थे, पुत्र अभिमन्यु, पौत्र विजयपाल और प्रपौत्र विक्रमसिंह थे। ये सब जैन राजे थे। [जैशिस. ii-२२८; एइं. ii-१८; प्रमुख. २१२-२१३]

अर्जुन मालाकार (माली)- सौ. महावीरकालीन राजगृह का एक अभिशप्त नृशंस हत्यारा, जिसका कायापलट समता के साधक प्रभुभक्त सुदर्शन सेठ के प्रभाव से हुआ, मुनिदीक्षा ली और आत्मकल्याण किया। [प्रमुख. २४]

अर्जुन वर्मदेव— धारा का जैनधर्म सहिष्णु परमार नरेश (१२१०-१८ ई०), विन्ध्यवर्म का पौत्र, सुभटवर्मा का पुत्र, दिग. जैन महापंडित आशाधर का प्रशंसक, और अमरुशतक की रससंजीवनी टीका का रचयिता। प० आशाधर के पिता सल्लक्षण इस राजा के सन्धिविग्रहिक मन्त्री थे। [प्रमुख. २११; जैसाइ. १३३; गुच. ११४-११८]

अर्णोराज— शाकंभरी (सांभर) और अजमेर का चाहमान (चौहान) नरेश, पृथ्वीराज प्र० का पुत्र, विग्रहराज च०, पृथ्वीराज द्वि. और सोमेश्वर का पिता, गुजरात के जयसिंह सिद्धराज का जामाता, श्वे. आचार्य जिनदत्तसूरि (ल. ११५० ई०) का भक्त, इस राजा के अपरनाम आन, आरण व अन्नलदेव थे, ११३३ ई० के लगभग गद्दी पर बैठा। [जैशिसं. iv. २६५ (११७० ई०); प्रमुख. २०५; टक.; कैच. १९; गुच. १३२-१३३]

अर्म्मोनिदेव मुनीन्द्र— यापनीयसंघ-कण्डूरगण के शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य और उन प्रभाचन्द्रदेव व्रति के गुरु, जिन्हें ९८० ई० में, सौन्दत्ति के जिनालय के लिए दान दिया गया था। [जैशिसं. ii-१६०] अपरनाम मौनिदेव।

अर्यनन्दि— दे. आर्यनन्दि।

अर्हंनंदि— दे. अर्हंनन्दि।

अर्हत्सेन— अनुमानतः पद्मपुराणकार रविषेण के प्रगुरु अर्हन्मुनि का अपरनाम। [जैसाइ. २७३]

अर्हद्बल— लोहाचार्य (१४ ई० पू०-ई० ३८) के तुरन्त उपरान्त होने वाले चार आरातीय (दिग.) यतियों में से एक–संभव है कि आचार्य अर्हद्बलि से अभिन्न हों। [जैसो. १०६-१०७]

अर्हद्दास— ती. महावीर कालीन राजगृह के एक प्रमुख जिनभक्त श्रेष्ठि, जिनके एकमात्र पुत्र जम्बूकुमार (अन्तिम केवलि जम्बूस्वामि, निर्वाण ई० पू० ४६५) थे–मतान्तर से इस श्रेष्ठि का नाम ऋषभदत्त था। [प्रमुख. २६]

अर्हद्दास— जो श्रवणबेलगोल की सिद्धर बसति के दायीं बाजू के स्तंभ पर उत्कीर्ण १३९८ ई० के पण्डितार्य की विस्तृत एवं सुन्दर स्मारक-प्रशस्ति के रचयिता हैं। [जैशिसं. i. १०५]

अर्हद्दास कवि— भव्यजनकण्ठाभरण (भव्यकण्ठाभरण-पञ्जिका), मुनिसुव्रत-काव्य और पुरुदेवचम्पु नामक तीन संस्कृत ग्रन्थों के रचयिता, गद्य एवं पद्य के सिद्धहस्त लेखक तथा माधुर्य एवं प्रसादादि गुण-विशिष्ट कुशल कवि, पं० आशाधर के भक्त एवं प्रशंसक, संभवतया शिष्य अथवा निकट उत्तरवर्ती विद्वान, समय ल. १२५० ई०। इन्होंने शायद एक सरस्वतीकल्प भी रचा था। [प्रमुख. २१२; जैसाइ. १३८-१४३]

अर्हद्बलि— ईस्वी सन् के प्रारंभ के लगभग, दक्षिणात्य मूलसंघ के प्रधानाचार्य, भद्रबाहु श्रुतकेवलि की परम्परा में हुए। अनुश्रुति है कि इन्होंने ६६ ई० में वेण्णानदी के तट पर स्थित महिमा नगरी में दिगम्बर मुनियों का अखिल महासम्मेलन किया था जिसमें मूलसंघ को सर्वप्रथम नन्दि, सेन, सिंह, देव, भद्र आदि उपसंघों में विभाजित किया गया था। इन्होंने श्रुतधर आचार्य धरसेन के आह्वान पर अपने पुष्पदन्त और भूतबलि नामक दो सुयोग्य शिष्यों को उनके पास भेजा था और फलस्वरुप षट्खंडागम-सिद्धान्त के रूप में अंगपूर्वों का आंशिक उद्धार एवं पुस्तकीकरण हुआ था। [जैसो. १०६-११२; प्रमुख. ६४]

अर्हद्भक्त— ९७२ ई० में समाधिमरण करने वाली तपस्विनी आर्यिका पाम्बब्बे के पुत्र राजकुमार, जिसने माता का स्मारक बनवाया—दीक्षापूर्व वह एक महारानी थी। [जैशिसं.ii. १५०; एक. vi. १]

अर्हद्वल्लभ— *संस्कृत ग्रन्थ 'वैश्यजाति' के कर्ता।*

अर्हन्मुनि— पद्मपुराण (६७६ ई०) के कर्त्ता रविषेण के प्रगुरु, लक्ष्मणसेन के गुरु, दिवाकर यति के शिष्य और इन्द्रगुरु के प्रशिष्य। [पद्मपु. प्रशस्ति]

अर्हनन्दि— १. अर्हणन्दि मुनीन्द्र, जो यापनीयसंघ-कण्डूरगण के रविचन्द्र स्वामि के शिष्य और शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के गुरु, अम्मौनिदेव के प्रगुरु और उन प्रभाचन्द्रदेव के प्रप्रगुरु थे, जिनके समय में, ९८० ई० में, सौन्दत्ति के जिनालय के लिए दान दिया गया था। [जैशिसं. ii-१६०, २०५; देसाई. ११३-११४]

२. मुनि अर्हनन्दि भट्टारक, बलहारिगण-अड्डकलिगच्छ के सकलचन्द्र के प्रशिष्य, अय्यपोटि मुनीन्द्र (या आर्यिका ?) के शिष्य, और राजमहिला चामकाम्बा के गुरु, जिसने उन्हें पूर्वीचालुक्य नरेश अम्मराज द्वि. (९४५-७० ई०) से जिनमंदिरों के लिए भक्तिपूर्वक दान दिलाया था। [प्रमुख. ९५; जैशिसं. ii. १४४; देसाई. २०]

३. अर्हनन्दि आचार्य या अर्हणदिबेट्टददेव, कल्याणी के चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ त्रैलोक्यमल्ल (१०७६-११२८ ई०) के

धर्मगुरु, बालचन्द्र के शिष्य, १११२ ई० में सम्राट के सेनापति कालिदास ने इन्हें पार्श्व-मंदिर के लिए ग्राम दान किया था। [प्रमुख. १२२; जैशिस. iv. १९०]

४. अर्हनन्दि मुनि, जो देशीगण-पुस्तकगच्छ के सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के शिष्य थे, नरेन्द्रकीर्ति त्रैविद्य तथा उन मुनिचन्द्र भट्टारक (११५४ ई०) के गुरु थे, जो स्वयं होयसल नरसिंह प्र० (११४१-७३ ई०) के जैन महाप्रधान देवराज द्वि. के धर्मगुरु थे। [प्रमुख. १५०; जैशिसं. iii-३२४]

५. अर्हनन्दि सिद्धान्तदेव, जो मूलसंघ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कुन्द-कुन्दान्वय के कुलचन्द्र के शिष्य और क्षुल्लकपुर (कोल्हापुर) की रूपनारायण-बसति के आचार्य माघनन्दि सिद्धान्तदेव के अन्ते-वासी थे, और जिन्हें ११५० ई० में शिलाहार नरेश विजयादित्य देव ने पार्श्व जिनालय के लिए भूमि आदि का दान दिया था। [जैशिसं.iii ३३४; एइ.iii.२८; प्रमुख.१८२,१८५; देसाई.१२१]

६. अर्हनन्दि त्रैविद्य, जो प्राकृत शब्दानुशासन के कर्ता त्रिविक्रम (ल० १२०० ई०) के गुरु थे। [प्रवी. i ९५]

७. अर्हनन्दि बेट्टददेव (ल० ११वीं शती ई०), जो रक्कसय्य के धर्मगुरु के पूर्वज थे और महान तपस्वी थे। वह वर्धमान मुनि के प्रशिष्य और बालचन्द्र व्रती के शिष्य थे —स्वयं उन्हें १११२ ई० में कालिदास दण्डनाथ ने पार्श्व-जिनालय के लिए भूमिदान दिया था। [देसाई. १८९, १९०, २४७, २५०; जैशिस. iv. १९०]

८. अर्हणंदि मुनीन्द्र जो बाहुबलि भ० के शिष्य सकलचन्द्र भट्टारक (समाधिमरण १२३६ ई०) के शास्त्रगुरु थे। [जैशिसं iv.३२७]

९. अर्हनन्दि पण्डित, दानचिन्तामणि अत्तिमब्बे के धर्मगुरु, जिन्हें उसने लोक्किगुडि में भव्य जिनालय बनवाकर, १००७ ई० में, अपने पुत्र पडेवल तैल के शासन में, उक्त मंदिर के रखरखाव आदि के लिए प्रभूत दान दिया था —यह आचार्य सूरस्थगण-काऊरगच्छ के थे, चालुक्य सम्राट आहवमल्ल सत्याश्रय का राज्यकाल था। [देसाई. १४०; जैशिसं. iv ११७]

१०. अर्हनन्दि, जो मूलसंघ-कुन्दकुन्दान्वय के क्राणूरगण-तिन्त्रिणि-गच्छ के चतुर्मुख सिद्धान्तदेव की शिष्य परम्परा में वीरनन्दि के

शिष्य और रविनन्दि के गुरुभाई थे। उनके परम्पराशिष्य त्रिभुवनचन्द्र के ११३८ ई० के शि. ले. में यह गुरुपरम्परा प्राप्त है, अतः इन अर्हन्नन्दि का समय ल० ९५० ई० है। [देसाई. २८१, २८२]

११. माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्ती को, १३वीं शती ई० के उत्तरार्ध में, दिये गये दानशासन में उल्लिखित उनके परम्परा गुरु, जो अभयनन्दि भट्टारक के शिष्य थे और देवचन्द्र के गुरु थे। [जैशिसं iv ३७६]

अलक्षेन्द्र— यूनानी सम्राट एवं विश्वविजेता सिकन्दरमहान (ई०पूर्व०३२६) के नाम का संस्कृत रूपान्तर।

अलफखां— १. अलाउद्दीन खलजी के समय गुजरात का सूबेदार, जिसने १३०४ ई० में, मीराते-अहमदी के अनुसार, अन्हिलवाड के जिन-मंदिरों को तोड़कर उनके संगमरमर के स्तंभों से वहां की जामा-मस्जिद बनवाई थी। [टंक.; बम्बई गजेटियर.i,१,पृ.२०५]
२. औरंगजेब के समय फ़तेहपुर का सूबेदार था, जिसके दीवान ताराचन्द जैन थे। [प्रमुख. २९७]

अलवा ब्र०— या ब्रह्म अलवा, ईडर पट्ट के मूलसंघी भ. गुणकीर्ति के शिष्य, ने १५८० ई० में जिनमूर्ति प्रतिष्ठा की, या कराई, थी। [जैसिभा. vii, १, पृ. १२-१८]

अलसकुमार महामुनि— श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि के एक शि.ले. में उल्लिखित। [जैशिसं. i १७५]

अलाउद्दीन खलजी— दिल्ली का सुलतान (१२९६-१३१६ ई०), उसके समय में काष्ठासंघ-माथुरगच्छ-पुष्करगण के भ. माधवसेन ने दिल्ली में अपना पट्ट स्थापित किया था, सुल्तान के दरबार में राघो, चेतन आदि कई वादियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था, सुलतान से जैनों के हित में ३२ फरमान प्राप्त किये थे। उस समय दिग. जैन अग्रवाल पूर्णचन्द्र दिल्ली का नगरसेठ था जो गिरनार के लिए एक विशाल यात्रासंघ ले गया था —उसी समय गुजरात के प्रमुख श्वे. सेठ पेथडसाह भी संघ लेकर आये थे। इस सुलतान के ठक्करफेरु आदि कई जैन पदाधिकारी थे। कई अन्य जैनगुरु भी उसके द्वारा सम्मानित हुए बताये जाते हैं। [भाई. ४०९-११; प्रमुख. २३९-४०]

अलार— तिरुकुरल के रचयिता तिरुवल्लुवर के आश्रयदाता या गुरु एलाचार्य का सिंहली नाम। दिग. अनुश्रुति उन्हें कुन्दकुन्दाचार्य से अभिन्न सूचित करती है, तमिल अनुश्रुति एक धनी श्रेष्ठि और सिंहली अनुश्रुति सिंहलद्वीप का एक चोलशासक (ई० पू० १४५-१०१) [मेज. २४०-२४१]

अलावदीन सुरत्राण– संभवतया गुजरात का सुलतान था, जिसके समय में १४६१ ई० में, दिग. जैन खण्डेलवाल श्राविका ने दिल्लीपट्ट के भ. पद्मनंदि के प्रशिष्य और मदनकीर्ति के शिष्य भ नेत्रनंदि के शिष्य ब्रह्म गल्ह को महाकवि सिंह के अपभ्रंश प्रद्युम्नचरित्र की प्रति भेंट की थी।

अलियमरस— कदम्बवंशी जैन राजा ने, ल० ८८९ ई० में, कोपबल तीर्थ पर एक विशाल जिनालय बनवाकर धर्मोत्सव किया था और प्रभूतदान दिया था। [देसाई. ३९४; जैशिस. iv. ६०]

अलियमारिसेट्टि– एक दिग. धर्मात्मा श्रेष्ठि, जो ल. ११८५ ई० के श्रवणबेलगोल के एक लेख में प्रमुख दानियों की सूची में उल्लिखित है। [जैशिसं. i. ८७]

अलियादेवी— धर्मात्मा जैन राजकुमारी, हुम्मचनरेश काम सान्तर और रानी बिज्जलदेवी की पुत्री, जगदेव एवं सिंगिदेव की भगिनी, कदम्बनरेश होन्नेयरस की पत्नी, राजा जयकेसिदेव की जननी और काणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छ के बन्दलिके तीर्थाध्यक्ष भानुकीर्ति सिद्धान्त की गृहस्थ शिष्या ने सेतुनामक स्थान में भव्य जिनालय निर्माण कराके, उसके लिए, ११५९ ई० में, स्वगुरु को भूमि आदि का प्रभूत दान दिया। शि ले. में उसकी धार्मिकता की बड़ी प्रशंसा करते हुए उसे 'अभिनव अत्तिमब्बे' कहा गया है। [प्रमुख. १७७; जैशिसं. iii. ३४९; एक. viii. १५९]

अलुपेन्द्र— तुलुवदेश के जैनधर्मावलम्बी अलुपवंशी नरेशों (११वीं-१४वीं शती ई०) की सामान्य उपाधि।

अलोज— शिल्पी, जिसने जैनमदिरों के पाषाणों से कट्टवेल्लूर का हनुमान मंदिर बनाया था। [टंक.]

अल्ल— राष्ट्रकूट कृष्ण तृ. (९३९-६७ ई०) का एक शत्रु सामन्त, जिसे सम्राट के प्रधान सहायक जैन गंगनरेश मारसिंह ने पराभूत किया था। [जैशिस i. ३८]

अल्लट— १. मेवाडदेशस्थ अहार (अहाड) का जैन राजा जिसका उल्लेख विदग्धराज और मम्मट के साथ ९९६ ई० के एक अभिलेख में प्राप्त होता है —इसी राजा के प्रश्रय में बलभद्रसूरि ने ९५३ ई० में हस्तिकुंडी-गच्छ स्थापित किया था। यह भर्तृपट्ट द्वि. का पुत्र और शक्तिकुमार (९७७ ई०) का पिता था। [टंक.; कैच २७, ३५, ६५; गुच. १७२-३]

२. मेवाड नरेश जिसने चित्तौड मे ८९६ ई० में एक भव्य जैन मानस्तंभ बनवाया था। [कैच. ११४]

अल्लप्प— कार्कल नरेश लोकनाथरस के प्रमुख राज्याधिकारी ने, १३३४ ई० में, शान्तिनाथ-बसनि के लिए भूमिदानादि किये थे। [मेजै. ३६१; माइइ. vii २४७]

अल्लाम्बा— विजयनगर नरेश बुक्कराय के अधीनस्थ हुल्लनहल्ली के राजा नरोत्तमश्री की धर्मात्मा माता जिसने १३६८ ई० में समाधिमरण किया था। वह राजा पेरुमल्लदेव के भाई की पत्नी थी, और श्रुतमुनि (स्वर्ग. १३७२ ई०) की गृहस्थ शिष्या थी। [प्रमुख २६२; जैशिसं. iii. ५७१]

अल्हण— धर्मात्मा खण्डेलवाल श्रावक, जिसका पुत्र पापासाहु, पौत्र बूदेव तथा पद्मसिंह, और प्रपौत्र हरदेव था, जो पं० आशाधर (ल० १२००-५० ई०) का प्रशंसक एक भक्त था। [प्रमुख २१२]

अल्हणसाहु— दिल्ली के जैन धनकुबेर नट्टलसाहु और कवि श्रीधर (११३२ ई०) का मित्र एवं प्रशंसक। [प्रमुख २०९]

अवनिपशेखर श्रीवल्लभ— पांडयनरेश, ९वी शती ई०, के समय सित्तन्नवासल के जैनगुहामन्दिरों का जीर्णोद्धार हुआ था। [जैशिसं. iv ६२]

अवनिमहेन्द्र— जिनधर्मी गंगनरेश शिवकुमार (शिवकुमार नवकाम) का विरुद, जिसने, ७वीं शती ई० में एक जिनमन्दिर के लिये चन्द्रसेनाचार्य को प्रभूत दान दिया था। [जैशिसं iv. ७४]

अवन्ति— अवन्ति नगरी का सस्थापक, महावीर कालीन चंडप्रद्योत का एक पूर्वज मालव नरेश।

अवन्तिपुत्र— ती० महावीरकालीन मथुरा का एक जिनभक्त नरेश। [प्रमुख. २१]

अवन्तिवर्मन— १ पाटलिपुत्र नरेश नाटवनन्दि (ई० पू० ४६५) का अपरनाम। [प्रमुख. ३०]

२. मथुरा का महावीर युगीन जैन नरेश । [प्रमुख. २१]

अवरंगसाहि— मुगलसम्राट औरंगजेब (१६५८-१७०७ ई०) का जैन साहित्य में बहुधा इस नाम से उल्लेख हुआ है।

अविद्धकर्ण— १. आदिपुराणकार जिनसेनस्वामि (८३७ ई०) का एक विशेषण क्योंकि बाल्यावस्था में ही वह गुरु वीरसेन स्वामि की शरण में आगये थे और बालब्रह्मचारी रहे।

२. गोल्लाचार्य के शिष्य पद्मनन्दि कौमारदेव (११वीं शती ई०) का विशेषण।

अविनीत कोंगुणी— गंगवाडि (मैसूर) के गंगवंश का छठा नरेश, तदंगल माधव का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, काकुत्स्थवर्म कदम्ब का दौहित्र और शान्तिवर्मन एवं कृष्णवर्मन का प्रिय भागिनेय, शतजीवि, दीर्घकालीन राज्यकाल, महान प्रतापी और परम जिनभक्त नरेश, दिगम्बराचार्य विजयकीर्ति उसके गुरु थे। आचार्य देवनन्दि पूज्यपाद (ल० ४६४-५२४ ई०) ने उसके प्रश्रय में ही अपनी साहित्य साधना की और युवराज दुर्विनीत को शिक्षित किया। गंग अभिलेखों मे महाराज अविनीत को 'विद्वज्जनों मे प्रमुख, मुक्तहस्तदानी, दक्षिणापथ मे जातिव्यवस्था एवं धर्म-संस्थाओं का प्रधान संरक्षक' बताया है, और लिखा है कि 'उसके हृदय में महान जिनेन्द्र के चरण अचलमेरु के समान स्थिर थे'। उसने कई जिनमन्दिर बनवाये, अनेक मुनियों, तीर्थों और मन्दिरों को दान दिये, साहित्य और कला को प्रोत्साहन दिया। दक्षिणापथ के अपने समय के सर्वमहान नरेशों मे परिगणित। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी दुर्विनीत गंग (४८२-५२२ ई०) था। [भाइ २६०; प्रमुख. ७३; मेजै. १८-१९]

अविरोधी अलवार— मूलत: अजैन थे, कालान्तर में जैन हो गये, और मयलापुर के भगवान नेमिनाथ की भक्ति में तमिलभाषा में १०० पद्यों का एक अत्यन्त सरस अन्ताक्षरी स्तोत्र रचा था।

अव्वे— गेरसोप्पे की धर्मात्मा श्रीमती अव्वे ने तथा उनके साथ समस्त गोष्ठी ने १४१९ ई० मे धर्मकार्यों के लिए श्रवणबेलगोल मे प्रभूत दान दिये थे। [प्रमुख. २६५]

अव्वैयार— पूजनीया आर्यिका, प्राचीन तमिल साहित्य की बहुप्रशंसित प्राचीन

कवियत्री, कुरलकाव्य प्रणेता तिरुवल्लवर की भगिनी। [टंक.]
—दे. औवे।

अशोक— प्रसिद्ध मौर्यसम्राट अशोक महान (ई० पू० २७३-२३४), अपर-नाम अशोकचन्द्र, अशोकवर्धन, चण्डाशोक, प्रियदर्शी, आदि, विश्व के सार्वकालीन सर्वमहान नरेशों में परिगणित, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र, सम्राट बिन्दुसार अमित्रघात (ई० पू० २९८-२७३) का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, राजधानी पाटलिपुत्र, कलिंग विजय (ई०पू० २६२) से हृदयपरिवर्तन, बौद्ध अनुश्रुतियों के अनुसार बौद्धधर्म का सर्वमहान समर्थक एवं प्रसारक, कुल परम्परा से जैन, जीवन के पूर्वार्ध में जैन ही रहा, उत्तरार्ध में बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के प्रभाव से बौद्ध धर्म के प्रति विशेष झुकाव, वस्तुतः सर्वधर्म सहिष्णु, न्यायनीतिपरायण प्रजावत्सल नरेश, जनहित के अनेक कार्य किये, तत्कालीन विदेशी यूनानी राजाओं से भी मैत्री सम्बन्ध, अपने अनेक महत्त्वपूर्ण शिलालेखों, स्तंभलेखों आदि के लिये प्रसिद्ध, अहिंसाधर्म का प्रतिपालक। [भाइ. ९२-१००; प्रमुख. ४५-४८]

अशोकचन्द्र— दे अशोक।

अशोकवर्धन— दे. अशोक।

अश्वग्रीव— ९ प्रतिनारायणों में से प्रथम प्रतिनारायण।

अश्वपति— पद्मावती नगरी निवासी सुभट, जिनके पुत्र सङ्घल मुनिदीक्षा लेकर शंकर मुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए और भद्रान्वयभूषण आचार्य गोशर्म के शिष्य थे, तथा जिन्होंने, गुप्त सं० १०६ अर्थात् सन ४२६ ई० में, विदिशा (म० प्र०) के निकटस्थ उदयगिरि की गुहा मे पार्श्व प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। [जैशिस. ii-९१; इ. ए. xi, पृ० ३१०; प्रमुख. १९९]

अश्वपतेर्हिम— जिसका पुत्र बंगाल पर्यन्त राज्य करने वाला दिल्लीपुर का वह महम्मुद सुरित्राण (सुलतान) था, संभवतया जौनपुर का सुलतान महमूदशाह शर्की, जिसकी राजसभा मे कर्णाटक के सिंहकीर्ति मुनि ने (ल० १४५० ई० में) बौद्धादि अनेक अजैन वादियों को पराजित किया था —यह उल्लेख वर्धमानमुनि रचित, ल० १५३० ई० (१५४१ ई०) की, विद्यानन्द-प्रशस्ति मे है। [जैशिस iii. ६६७; भाइ. ४२७]

अश्वपाल— नाडौल का जैन चौहान राजा, बलिराज का पुत्र व अणहिल्लका अग्रज, आहित का पिता– ११वीं शती। [गुच. १४९,१७०]

अश्वराज— १. नाडौल का जैन धर्मावलम्बी चौहान नरेश, अल्हणदेव चौहान (११६१-६२ ई०) का पिता– अल्हणदेव स्वयं और अधिक उत्साही जैन था, उसने नादरा में एक विशाल महावीर-जिनालय बनवाया था, बहुतसी सम्पत्ति दान करदी थी, और अन्त में दीक्षा लेकर जैन मुनि बन गया था। अश्वराज का एक दान शासन १११० ई० का है। [प्रमुख. २०८; कैच. २०]

२. गुजरात के बघेलो के मन्त्री वस्तुपाल-तेजपाल का पिता– ल० १२०० ई०। [कैच. २१४-२१६]

अश्वसेन— काशिदेशस्थ वाराणसी के उरगवंशी नरेश, २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ (ई० पू० ८७७-७७७) के पिता।

अश्वा— मौद्गलीपुत्र पुष्पक की धर्मात्मा भार्या, जिसने ई० सन् के प्रारंभ के लगभग मथुरा में एक जिन-प्रासाद निर्माण कराया था। [जैशिसं. ii. ८६; प्रमुख. ६९]

अश्विनी— ती. महावीर के साक्षात परमभक्त श्रावस्ती के सेठ नन्दिनीपिता की धर्मात्मा पत्नि। [प्रमुख. २३]

अष्टोपवासिगन्ति (कन्ति)— श्रीनन्दि पण्डितदेव की शिष्या आर्यिका, जो शम-दम-यम-नियमयुक्त विमल चरित्र वाली और जिनधर्म के संरक्षण में सदैव प्रसन्न रहने वाली साध्वी थी, जिन्हें स्वगुरु से, १०७६ ई० में, ध्वजतटाक के पार्श्वजिनालय के संरक्षण, शास्त्र-लेखकों (लिपिकारों) के निर्वाह, आदि धार्मिक कार्यों के लिए भूमिदान मिला था। इस साध्वी को बहुधा आठ-आठ उपवास रखने के कारण 'अष्टोपवासि' विरुद प्राप्त हुआ था। [देसाई. १४४; जैशिसं ii-२१०; प्रमुख. १२१; इंए xviii २७३]

अष्टोपवासि मुनि— १. तमिल देश के एक प्राचीन जैनाचार्य अरिट्टनेमि पेरियार के गुरु। इनके एक अन्य शिष्य माघनन्दि थे, जिनके शिष्य गुणसेन प्र०, प्रशिष्य वर्धमान, और प्रप्रशिष्य गुणसेन द्वि. थे। [देसाई. ५७, ६१; जैशिसं iv. ३१]

२. मूलसंघ-देशीगणपुस्तकगच्छ के अष्टोपवासि भटार, जिन्होंने १०५४ ई० में, बेहूरु में एक भव्य जिनालय निर्मापित किया था

और उसके लिए दान प्राप्त किये थे [देसाई. १५१; जैशिसं. vi.१३९-१४०]

३. कवलिगणाचार्य अष्टोपवासि भटार, जिनके शिष्य रामचन्द्र भटार को, ९६८ ई० में, कदम्बलिगे के राजा पड्डिग की रानी अक्किसुन्दरी द्वारा काकम्बल में निर्मापित जिनालय के लिए दो ग्राम दान किये गये थे। [प्रमुख. १११]

४. मूलसंघ-बलात्कारगण के अष्टोपवासि मुनि, जो वर्धमान के प्रशिष्य और विद्यानन्द के शिष्य थे, तथा पक्षोपवासि गुणचन्द्र के गुरु थे। ल० ११०० ई० —जिस ११७५-७६ ई० के शि. ले. में उल्लेख है वह उनसे चार-पांच पीढ़ी आगे का है। [देसाई. ११७]

५. सूरस्थगण के कल्नेलेदेव के शिष्य अष्टोपवासि मुनि, जिनके शिष्य हेमनन्दि और प्रशिष्य विनयनन्दि थे, जिनके शिष्य पाल्य-कीर्ति (१११८ ई०) थे —अतः इन अष्टोपवासि का समय ल० ११०० ई०। [जैशिसं. ii-२६९]

६. देशीगण के अष्टोपवासि कनकनंदि भटार, जिनकी प्रेरणा पर चालुक्य जगदेकमल्ल के राज्य में, १०३२ ई० में, जगदेकमल्ल जिनालय के लिए राजा द्वारा भूमिदान दिया गया था। [जैशिसं. iv. १२६]

७. अष्टोपवासि कनकचन्द्र, नन्दिसंघ-बलात्कारगण के देवचन्द्र के शिष्य और नयकीर्ति के गुरु —१२०५ ई० के शि. ले. में जिन माघनन्दि को दान दिया गया था, उनके परम्परा गुरु, ११वीं शती ई०। [जैशिसं. iv. ३४२ एवं ३७६]

असग— महाकवि, उपशममूर्त्ति-शुद्धसम्यक्त्व-सम्पन्न श्रावक पटुमति और उनकी सम्यक्त्वशुद्धशीला भार्या बैरेति के सुपुत्र, ने मौद्गल्य-पर्वतस्थ निवासवन् में संपत नाम्नी सद्श्राविका द्वारा पुत्रवत् परिपालित होकर मुनिराज भावकीर्ति के सान्निध्य में विद्याध्ययन किया था, तदनन्तर सर्वजनोपकारि श्रीनाथ राजा के राज्य में, (चोडविषय) चौलदेश की विरलानगरी में जाकर जिनोपदिष्ट आठ ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमे वर्धमानचरित सं० ९१०, अर्थात् ८५३ ई० में समाप्त हुआ था, और फिर अपने जिनधर्म भक्त ब्राह्मण मित्र जिनाप की प्रेरणा पर शान्तिनाथ पुराण को

रचना की थी। उनके ये दोनों संस्कृत महाकाव्य उपलब्ध एवं प्रकाशित हैं—अन्य छः ग्रन्थ क्या थे और संस्कृत, कन्नड या तमिल, किस भाषा में रचे गये, यह अज्ञात है। विद्वत्समूह में प्रमुख, शब्द-समयार्णव-पारग यशस्वी नागनन्दि आचार्य के असग प्रमुख गृहस्थ शिष्य थे, इनके एक अन्य गुरु आर्यनन्दि थे। पोन्न (९५० ई०) आदि परवर्ती कन्नड कवियों ने असग की प्रभूत प्रशंसा की है, और चन्द्रप्रभचरित्र (ल० ९५० ई०), गद्यचिन्ता-मणि एवं धर्मशर्माभ्युदय (११वीं शती ई०) पर असग का प्रभाव लक्षित है। उत्तरपुराण गुणभद्र (ल० ८५०-९० ई०) का असग ने कोई संकेत नहीं किया है। [जैसो. २२१; प्रवी. i. ७९]

असगमरस— राष्ट्रकूट कृष्ण तृ० के यादववंशी जैनसामन्त शंकरगण्ड द्वि. (९६४ ई०) का पिता—उस वर्ष महासामन्ताधिपति शंकरगण्ड द्वि. ने कुपण तीर्थपर जिनालय निर्माण कराके उसके लिए दान दिये थे। [देसाई. ३६८]

असगु— कवि ने ल० १२५७ ई० में चन्दनबालारास की रचना की थी। [कास. १५४]

असन्ध्यमित्रा— विदिशा की श्रेष्ठिकन्या, सम्राट अशोकमौर्य की पत्नी, और राजकुमार कुणाल की जननी, सम्राट सम्प्रति की पितामही। [प्रमुख. ४८]

असपाल— ने १४१५ ई० में टोंक में पद्मनंदि के शिष्य विशालकीर्ति के आदेश से पार्श्वनाथ-बिम्ब-प्रतिष्ठा की थी। [कैच. ७५]

असराज— ग्वालियर के संघपति काला (१४४० ई०) का चचा, अग्रवाल जैन सेठ। [प्रमुख. २५१]

असवब्बरसि— कदम्बनरेश एरेयंगदेव की धर्मात्मा रानी, जिसने १०९६ ई० में, एक भव्य जिनमन्दिर निर्माण कराकर उसके लिए देशीगण के रविचन्द्र सैद्धान्तदेव को दान दिया-दिलाया था। [जैशिसं. iv. १६९-१७०]

असवर मारय्य— होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वि. का प्रधानमन्त्री हिरिय-हेग्गडे असवरमारय्य, जिसने १२०४ ई० में कुन्तलापुर के आचार्य नेमि-चन्द्रभट्टारक के लिए शिलाशासन लिखवाकर दिया था। [जैशिसं. iii-४५०]

असवाल बुध— अपभ्रंश भाषा के सुकवि ने, १४२२ ई० में, कुशार्त्तदेशस्थ करहल के चौहान राजा भोजराज के जैनमन्त्री अमरसिंह के पुत्र लोणासाहु के लिए पासणाहचरिउ (पार्श्वनाथ चरित्र) की रचना की थी। [प्रवी. ii. १०१; प्रमुख. २४९]

—वस्तुत: लोणासाहु ने अपने भाई सोणिग के हितार्थ यह ग्रन्थ लिखाया था। उस समय भोजराज के पुत्र संसारचन्द (पृथ्वीसिंह) का शासन चल रहा था।

असियकाल मल्लिसेट्टि— पश्चिमी चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य के राज्यकाल (१२वीं शती ई०) के एक शि. ले. में उल्लिखित एक धनी जैन व्यापारी, जिसने जिनमन्दिर निर्माण कराया था और प्रभूत दान दिया था। [देसाई. ३०४]

अहिवान— वादिदेवसूरि का भक्त नागौर नरेश, ल. १२०० ई० [कैच.२०६]

अहोबल पण्डित— जिन्हें, होयसल नरेश नरसिंहदेव प्र॰ के शासनकाल में, ११६० ई० में, जैन सामन्त लोकगवुंड एवं माकवे गवुंडि की पुत्री चट्टवे गवुंडि के पुत्र होयसलगवुंड ने अपनी माता की स्मृति में जिनालय बनवाकर, तदर्थ भूमि आदि दान दिया था। यह गुरु द्रमिलसंघी श्रीपालत्रैविद्य के प्रशिष्य और वासुपूज्यव्रती के शिष्य थे। [जैशिसं. iii. ३५१; एक. vi. ६९]

आ

आइच्चाम्बा— दे. आदित्याम्बा, अपभ्रंश के महाकवि स्वयंभू की पत्नी, कवि की रामायण के अयोध्याकाण्ड के लिखने में प्रमुख प्रेरक। [जैसाइ. ३७४]

आकलपेअक्के— कुन्दकुन्दान्वय के सोमदेवाचार्य की शिष्या आर्यिका, जिसने १२६७ ई० में अण्णिगेरि (धारवाड़, मैसूर) में समाधिमरण किया था। [जैशिसं. iv. ३४३]

आकिय मंगिसेट्टि— जिसके पुत्र गुम्मिसेट्टि ने १४६३ ई० में चित्तलद्रुग में समाधिमरण किया था। [जैशिसं iv. ४४२]

आगमश्री आर्यिका— मूलनन्दिसंघ के भ. जिनचन्द्र के शिष्य सिंहकीर्ति की

शिष्या क्षुल्लिका जिसने १४७४ ई० में कलिकुंड-यन्त्र की प्रतिष्ठा कराई थी। [नाहटा. ४९]

आगमसिरि बाई— आर्यिका जिनकी १४०५ ई० में बिजौलिया में निषिधिका (समाधिस्मारक) बनवायी गयी थी। [कैच. ७८]

आचगौड— शिलाहार नरेश विजयादित्य के जैन सेनापति कालण (११६५ ई०) का प्रपितामह। [जैशिसं. iv. २५९]

आचण— उपरोक्त आचगौड के वंशज, कालण का पुत्र, जिन्नण और रमण का भाई [जैशिसं. iv २५९]

आचण्णकवि— दिग., पुरिकरनिवासी ब्राह्मण केशवराज एवं मल्लम्बिका का पुत्र, नन्दि योगीश्वर का शिष्य, पार्श्वपंडित द्वारा पार्श्वपुराण (११८९ ई०) में उल्लेखित, स्वयं ने अग्गल का उल्लेख किया है। पिता केशवराज के अधूरे कन्नडी वर्धमानपुराण को पूर्ण किया था ११९५ ई० में। [ककच.; टंक.]

आचण्णसेनबोव— एरम्बरगेय नगर का उच्च राजस्व अधिकारी, दिग., जिसके पुत्र देवण ने, जो देशीगण-पुस्तकगच्छ-इंगलेश्वरबलि के माघवचन्द्र भट्टारक का गृहस्थ शिष्य था, सिद्धचक्र एवं श्रुतपंचमी व्रतों के उद्यापन के उपलक्ष्य में पंचपरमेष्टि की प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराई थी, १२वीं शती ई० में। [देसाई. ३८२]

आचन चामुण्डर भट्टारक— ने विजयण्ण एवं बमण्ण द्वारा निर्मित शान्तिनाथ प्रतिमा वरुणग्राम (मैसूर) में १०वीं शती ई० में प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिस. iv. १०१]

आचलदेवी— १. आचले, आचाम्बा या आचियक्कन, होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वि. के मन्त्रीश्वर चन्द्रमौलि की परमजिनभक्त भार्या थी। वह मासवाडिनाड के प्रमुख शिवेयनायक एवं चन्दब्बे की पौत्री, सोवण्ण नायक एवं बाचब्बे की पुत्री और नायक सोम की भगिनी थी, और देशीगण के नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य बालचन्द्र मुनि की गृहस्थ शिष्या थी। इस रूप-गुण-शील सम्पन्न धर्मात्मा महिलारत्न ने ११८२ ई० में श्रवणबेलगोल में अक्कन-बसदि नामक अति भव्य पार्श्व-जिनालय निर्माण कराया था, जो होयसल कला का अवशिष्ट अति उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। उसके लिए उसने तथा उसके पति चन्द्रमौलि ने होयसलनरेश से

कई ग्राम स्वगुरु मुनि बालचन्द्र को दान कराये थे। उसने और भी कई जिनमन्दिर बनवाये तथा अनेक धार्मिक एवं लोकोपकारी कार्य किये। [प्रमुख. १६०; जैशिसं. i. १०७, १२४, ४२६; शोधांक-२८]

२. उपरोक्त आचलदेवी की बुआ, जो मासवाडिनरेश हेम्माडिदेव से विवाही थी—परमश्रावक शिवेयनायक की यह पुत्री भी परम जैन थी। [जैशिसं. i. १२४]

३. चालुक्य जगदेकमल्ल के सामन्त कदम्बवशी तैल मंडलेश की धर्मात्मा रानी, ११४८ ई० [जैशिसं. iv. २३६]

आचले— दे. आचलदेवी नं० १

आचाम्बा— दे आचलदेवी न० १

आचाम्बिके— अरसादित्य नामक राजा की पत्नी और पम्पराज, हरिराज तथा होयसल नरेश के परम जैन मन्त्रीश्वर बलदेव की जननी, और कर्णाटक-कुल-तिलक माचिराज की पितामही। [जैशिसं.i.३५१]

आचियक्कन या आचियक्के— दे. आचलदेवी नं० १

आच्चन श्रीपालन— ७वीं शती के शि. ले. मे उल्लिखित गुणसेन के शिष्य अनत्तवन का भतीजा। [जैशिसं. iv. ३३-३८]

आजाही— १५वीं शती ई० के ग्वालियर निवासी तथा अपभ्रंश भाषा क महाकवि रइधु ने अपने सम्मइजिणचरिउ की रचना जिस हिसार निवासी धनी व्यापारी एवं धर्मात्मा श्रावक साहू तोमड के प्रश्रय में की थी, उसकी इस धर्मात्मा पत्नी ने स्वयं भी गोपाचल-दुर्ग में एक विशाल चन्द्रप्रभ-प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराई थी। [अने. ४०/२, पृ. २२]

आटेकचन्द्र गोगामी— ने सागवाड़ा के महारावल जशवन्तसिंह से १८३६ ई० में जीवहिंसा निषेधक फर्मान निकलवाया था। [प्रमुख. ३४५]

आडतराम— दिग. जैन कवि पं० वृन्दावनदास (ल० १८०० ई०) के मित्र, काशी निवासी धार्मिक सज्जन। [टक.]

आणदेव— कवि-रचित गाथा, त्रिभुवनतिलक मन्दिर व उसके संस्थापक शावड के विषय में, बेहार (म. प्र.) के स्तंभलेख मे। [जैशिस iv. ३०२]

आणंदराम— दिल्ली निवासी धर्मात्मा श्रावक, जिनके देहरा (जिनालय) मे

सुप्रभदोहा आदि कतिपय ग्रन्थों की, १७७८ ई० में, प्रतिलिपि हुई थी। [पुजैवासू. ११८]

आण्डप्प— बीलिगि (कर्णाटक के सिद्धपुर तालुका) के जिनधर्मी राज्यवंश का संस्थापक (ल० १३५० ई०), लगभग एक दर्जन वंशजों ने अनेक जिनमन्दिर बनवाये, दानादि दिये। [देसाई. १२८]

आण्डय्य— कन्नडभाषा का अत्यन्त लोकप्रिय जैनकवि, 'कब्बिगरकाव' (१२३५ ई०) का रचयिता। [ककच. i. ३६७-३६८; मेजै. २६६)

आत्मबुद्धि— धर्मात्मा श्रावक जिसने कलिंग देशस्थ उदयगिरि पर 'छोटी हाथी गुंफा' बनवाकर दान की थी —ल० प्रथम शती ई.पू [प्रमुख.५८]

आतमाराम, स्वामि— (१८३६-९७ ई०), मूलतः श्वे. स्थानकवासी साधु थे, कुछ समय बाद श्वे. मन्दिरमार्गी यति बने। १९वीं शती ई० के अन्तिमपाद में महान प्रभावक एवं धर्म प्रचारक जैनाचार्य थे। स्वामि दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, रानाडे, गोखले आदि महापुरुषों के उस युग में जैनधर्म का सफल प्रतिनिधित्व किया, देश एवं विदेशों में धर्मप्रचार की प्रबल भावना थी। शिकागो (अमरीका) के सर्वधर्म सम्मेलन (१८९३ ई०) में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए बैरिस्टर वीरचन्द राघवजी गांधी को भेजा, शिकागो-प्रश्नोत्तर नामक ग्रन्थ लिखा, अन्य अनेक छोटी बड़ी पुस्तकें लिखीं, यथा जैन तत्त्वादर्श, तत्त्वप्रसाद निर्णय अज्ञानतिमिर भास्कर आदि। कई ग्रन्थमालाएँ, प्रकाशन संस्थाएं उनके नाम से चलीं। वह श्रीमद् विजयानन्दसूरी भी कहलाते थे।

आदण्ण गौण्ड— होललकेरे की शान्तिनाथ-बसदि का जीर्णोद्धार कराने वाले दानशील जिनभक्त धर्मात्मा श्रावक बोदण्णगौड का पुत्र, सोमण्ण एवं शान्तण्ण का भ्राता, धर्मात्मा श्रावक, अपने पिता एवं भाइयों के धार्मिक निर्माणों, धर्मोत्सवों, दानादि में सहयोगी। इनके गुरु मूलसंघी पार्श्वसेन भट्टारक थे। तथोक्त महोत्सव एवं दानादि ११५४ ई० में किये गये थे। [प्रमुख. १९५; जैशिसं. iii. ३३८; एक. xi, १]

आदप्पार्य— वर्धमानमुनि (१५४२ ई०) द्वारा 'जगद्वन्द्य-सुकुमारचरित्रेश-परवादिविदारक' रूप में प्रशंसित प्रभावक दिगम्बराचार्य।

आदिलखाँ— या यादखाँ, जैनधर्म में दीक्षित एक मुसलमान, जिसने 'भ. ऋषभ की होली' (बाबो ऋषभ बैठे अलबेले...) शीर्षक भावपूर्ण कविता लिखी थी। [टंक.]

आदलीचन्द— ने माणकदास नोगामी आदि महाजनों के सहयोग से सागवाड़ा के महारावल उदयसिंह से १८५४ ई० में जीवहिंसा निषेधक आदेशपत्र निकलवाया था। [प्रमुख. ३४५]

आदिगवुण्ड— बाचगवुण्ड का पौत्र होन्नगवुण्ड एवं जक्केगवुण्डि का पुत्र, और मार्वुंडि, मार, माच तथा नाक गवुण्डों का पिता। महाप्रधान आदिगवुण्ड होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वि. के बोप्पदेव दण्डेश का अधीनस्थ राजपुरुष था। इस परिवार के धर्मगुरु द्रमिलसंघी वासुपूज्य मुनि के शिष्य पेरुमल्लदेव थे। आदिगवुण्ड ने १२४८ ई० में एक विशाल जिनालय बनवाकर, अपने पुत्रों सहित महान धर्मोत्सव किया था तथा स्वगुरु को भूमि आदि का दान समर्पित किया था जिसमें कोण्डाले के ४० जैन परिवारों के साथ समस्त ब्राह्मण भी सम्मिलित थे। [प्रमुख. १६३; जैशिस. iii. ४९६; एक. V. १३८]

आदित्य— हरिवंश पुराण की प्रशस्ति (७८३ ई०) मे उल्लिखित वर्धमान-पुराण के कर्ता पूर्ववर्ती दिग. विद्वान। [प्रभावक. ५२]

आदित्य चोल— इस नरेश के समय (ल० ८५० ई०) उत्तरी अर्काट जिले के वन्डवाश तालुके में वेडालग्राम के निकटस्थ पार्वतीय गुफाओं में एक विशाल आर्यिका आश्रम था, जिसकी अध्यक्षा आर्यिका गणिनी कनकवीर कुरत्तियार थी, जो वेडाल के मूलसंघी भट्टारक गुणकीर्ति की शिष्या थीं, और जिनके आश्रम में ५०० साध्वी शिष्याएँ थीं। उसी समय एक अन्य संघ मे ४०० साध्वियां थीं। राजा जैनधर्म का प्रश्रयदाता था। [देसाई. ४६]

यह चोल नरेशों में आदित्य प्रथम था।

आदित्य दण्डाधिप— चालुक्य सम्राट त्रिभुवनमल्ल के अधीनस्थ राजा पाण्ड्य का प्रधान सेनापति यादववंशी सूर्य चमूप था–उसका अनुज यह आदित्य दण्डाधिनाथ शूरवीर दुर्द्धर योद्धा था। द्रविडसंघी मल्लिषेण मलधारी के शिष्य श्रीपाल त्रैविद्यदेव इन भ्रातृद्वय के धर्मगुरु थे। इन भाइयों ने सेम्बनूर मे एक उत्तम पार्श्व जिन-

मंदिर बनवाकर उसके लिए पुजारी शान्तिशयन पंडित को प्रभूत दान ११२८ ई० में दिया था। [जैशिसं. ii २८८]

आदित्य नृप— दे. अरसादित्य, होयसल सेनापति बलदेवण्ण (ल० ११२० ई०) का पिता, एक जैन राजा। [मेजै. १३३]

आदित्य वर्म— जिनधर्मी युद्धवीर सामन्त था, जिसने, ल० १३०० ई० में, काणूरगण मेषपाषाणगच्छ के कागिनेल्लि स्थित जिनालय में उत्तुंग स्तंभ (मानस्तंभ) बनवाया था। [देसाई. १४६; जैशिसं. iv. ६०३]

आदित्य शर्मा— प्राकृत शब्दानुशासन के कर्त्ता जैन वैयाकरणी त्रिविक्रम के पितामह। [प्रवी. ९४]

आदित्याम्बा— दे. आइचाम्बा, अपभ्रन्श महाकवि स्वयंभू (ल० ८०० ई०) की विदुषी पत्नी।

आदिदास— १. ने १५१८ ई० में, मलेयूर पर्वत पर स्वगुरु, कालोग्रगण (कोल्लारगण) के आचार्य मुनिचन्द्रदेव का चरणचिन्ह युक्त समाधिस्मारक बनवाया था। उसका गुरुभाई तथा इस धर्मकार्य में सहयोगी वृषभदास था। [मेजै. ३३०; जैशिसं. iii ६६३; एक. iv. १४७, १४८, १६१; प्रमुख. २७१]

२. तुलुवदेशीय श्रावक आदिदास ने, जो हनसोगेबलि के हेमचन्द्र का तथा ललितकीर्ति भट्टारक का शिष्य था, मलेयूर (कनकगिरि) पर, १३५५ ई० में, विजयदेव की मूर्ति बनवाकर स्थापित की थी, स्वगुरुओं की समाधियां भी बनवाई थीं। [मेजै. ३२८; एक. iv-१५३]

आदिदेव— आदिनाथ, आदिपुरुष, आदिब्रह्मा आदि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के अपरनाम

आदिदेव मुनि— मूलसंघ-देशीयगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वय-इंगलेश्वरबलि के रायराजगुरु अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती के प्रशिष्य और श्रुतमुनि के शिष्य आचार्य प्रभेन्दु (प्रभाचन्द्र) के प्रिय अग्रशिष्य श्रुतकीर्तिदेव के १३८४ ई० मे स्वर्गस्थ हो जाने पर उनके शिष्य आदिदेव मुनि ने सुमतिनाथ-जिनालय का जीर्णोद्धार कराया तथा उसमें सुमति तीर्थंकर की एवं स्वगुरु श्रुतकीर्तिदेव की

मूर्तियां बनवाकर स्थापित की थीं। इस कार्य में श्रुतगण के समस्त भव्य श्रावकों ने भी योग दिया था। [जैशिसं. iii. ५८४; मेजै. ३३०; एक. iv-१२३]

१३६७ ई० में स्वर्गवासी होने वाले देवचन्द्र व्रतिप के शिष्य और श्रुतमुनि के प्रशिष्य आदिदेव भी यही प्रतीत होते हैं। [प्रमुख. २६२, २६३]

आदिनाथ— १. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का अपरनाम —दे. ऋषभदेव।

२. प्रवचनपरीक्षाकार पं० नेमिचन्द्र (ल० १५०० ई०) के भ्राता जिन्हें भव्यानंद-काव्य (१५४२ ई०) में 'बुधस्तुत्य-वाद-विजयी-मल्लिरायनृप-स्वान्त-सरोजात-प्रभाकर-दशरथतुल्य-करणिकतिलक (मन्त्री विशेष)' आदि विशेषणों के साथ स्मरण किया है- यह धर्मात्मा जैन ब्राह्मण श्रावक, विद्वान एवं राज-पुरुष थे। [प्रसं. १०१, १३५, १३७, १४८]

३. आदिनाथ पंडितदेव मूलसंघ-तिन्त्रिणिगच्छ के आचार्य थे। इनके एक तेलीजातिय कृषक श्रावक शिष्य ने १६९९ ई० में, तेल निकालने का एक पत्थर का कोल्हू बनवाकर देवमंदिर के लिए समर्पित किया था। [जैशिसं. iii. ७२४; एक. iii. ४८]

४. दिग. ब्राह्मण आदिनाथ, देवेन्द्र एवं आर्यदेवी के पुत्र, और विजयप्प एवं संहिताकार नेमिचन्द्र के भाई- १६वीं शती। संभवतया न० २ से अभिन्न हैं। [टंक.]

५. दिग. ब्राह्मण आयुर्वेदज्ञ, पार्श्वनाथ के पुत्र, कोदण्डराम के पिता, और ब्रह्मदेव के पितामह। [टंक.]

६. लक्ष्मेश्वर के १०८१ ई० के शि. ले. में उल्लिखित दान के समर्थक वैद्य कल्प का एक पुत्र। [जैशिसं. iv. १६५]

आदिपंप— पम्प नामके प्रथम एवं सर्वमहान जैन कन्नडकवि, वेंगिमंडल निवासी दिग. जिनधर्मी तैलेगु ब्राह्मण अभिरामदेवराय के पुत्र, जन्म ९०२ ई०, पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर) के चालुक्य नरेश अरि-केसरी द्वि. के आश्रित, आदिपुराण और विक्रमार्जुनविजय (भारत) नामक दो सुप्रसिद्ध चम्पूकाव्यों के प्रणेता, (९४१ ई० —संभवतया स्वर्गवास की अथवा ग्रन्थ रचना की तिथि) अमर कवि। [मेजै. २६५; ककच.; टंक.]

आदि भट्टारक— प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ- ऋषभ । [देमाई. २२०]

आदियण्ण— कन्नड कवि, दिग. श्रुतयति के गृहस्थशिष्य मुनिगण्ण के पुत्र, ब्रह्म, चन्द्र और विजयप्प के भाई, स्वयं चन्द्रकीर्ति के शिष्य प्रभेन्दु मुनि के गृहस्थ शिष्य थे। ल. १६५० ई० में गेरसोप्पे नरेश भैरवराय के गुरु वीरसेन की आज्ञा से कन्नडकाव्य धन्यकुमार चरित की रचना की थी।

आदिराज— गेरसोप्पे के १४८१ ई० के शि. ले. में उल्लिखित पार्श्व-प्रतिष्ठा कराने वाली अक्कबरसी के पति मंगभूप का अपरनाम। [जैशिसं. iv ४३३]

आदिसागर— श्रीपालचरित्र (हिन्दी) के रचयिता।

आदिसेट्टि— १. अनंतकसेट्टिति के पुत्र ने ल. १४वीं शती में मादिनकेरे में चौबीसी की स्थापना की थी। [जैशिसं. iv. ४१९]
२. के पुत्र बोम्मरसेट्टि ने शृंगेरी में १५२३ ई० में चन्द्रनाथ प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. iv. ४६५]

आदिसेन— या आद्यन्तसेन, काष्ठासंघ-नदीतटगच्छ-विद्यागण-रामसेनान्वय के भ. यशःकीर्ति के शिष्य और ब्रह्म कृष्णदास (१६२४ ई०) के गुरु भ. रत्नभूषण के प्रगुरु थे। [प्रजा. ४०-४२]

आदिसेन भट्टारक अभिनव— दे. अभिनव आदिसेन। [जैशिस. iv. ५३२]

आनलदेव— दे. अर्णोराज चौहान। [कैच. १९]

आनन्द— ९ पौराणिक बलभद्रों में छठे बलभद्र।

आनन्द— महावीर तीर्थ के दश अनुत्तरोपपादकों में से पांचवे।

आनन्द— उपासकदशांग सूत्रानुसार ती. महावीर के दश परमभक्त सद्-श्रावकों में प्रथम, वाणिज्यग्राम का प्रधान धनाधीश, नगरसेठ एवं राज्यसेठ गृहपति आनन्द और उसकी धर्मपत्नी शिवानन्दा तीर्थंकर के उपदेश एवं प्रभाव से जैनधर्म अंगीकार करके परिग्रह परिमाण-व्रत के धारक आदर्श लोकोपकारी सद्श्रावक बने थे। [प्रमुख. २१-२२]

आनन्द— जयसिंह सिद्धराज सोलंकी का जैन राज्यमंत्री। उसका पुत्र पृथ्वीपाल महाराज कुमारपाल का राज्यमंत्री था। [गुच. २६०]

आनन्दऋषि— दिग. त्यागी मराठी साहित्यकार, १९२७-२८ ई० में जैनधर्मांचे अहिंसातत्त्व, वैराग्यशतक (अनुवाद), आत्मोन्नतिचा सरल उपाय, अन्यधर्मापेक्षा जैन धर्मातील विशेषता, आदि लगभग एक दर्जन पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कराई थी।

आनन्द कवि— श्वे. तपागच्छी हेमविमलसूरि के प्रशिष्य और कमलसाधु के शिष्य ने १५९३ ई० में राजस्थानी भाषा मे 'चौबीस तीर्थंकरों का गीत' रचा था।

आनन्दघन— श्रेष्ठ अध्यात्मिक संत एवं कवि, श्वे., ल० १६२५-७५ ई०, आनन्दघन-चौबीसी, आनन्दघन बहत्तरी, स्तवनावली, आदि ब्रजभाषा, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा की कई पद्य रचनाओं के प्रणेता, इनके पद पर्याप्त लोकप्रिय, आध्यात्मिक रस से ओत-प्रोत और असाम्प्रदायिक है। यह संभवतया मेड़ता के निवासी थे। इस नाम के कतिपय अन्य जैनकवि भी हुए लगते है। जन्म १६०३ ई० में और स्वर्गवास १६७३ ई० में हुआ बताया जाता है। [कास. २३९-४०]

आनन्दचन्द— जगतसेठ फतहचन्द (१७२८ ई०) का ज्येष्ठ पुत्र, दयाचन्द एवं महाचन्द का अग्रज, पिता के जीवन में ही निधन हो गया— उसका एकमात्र पुत्र महताबचन्द बाद में मुर्शिदाबाद का द्वितीय जगतसेठ हुआ। [टक.]

आनन्दजी कल्याणजी— श्वे. समाज की सर्वप्रसिद्ध तीर्थ संरक्षक पेढ़ी का कल्पित नाम, केन्द्रीय कार्यालय अहमदाबाद में है। [टक.]

आनन्ददेव— ने १७३७ ई० में मूलनन्दिसंघ के भ. दत्तकीर्ति तथा महेन्द्रकीर्ति के साथ जयपुर नरेश अभयसिंह और मेड़ता के राजा बखतसिंह के समय मे मारोठनगर में वृहत् जिनबिंब प्रतिष्ठा कराई थी।

आनन्दभगत— आर्द्रकुमार-चौपदी के कर्त्ता

आनन्दमय्य— होयसल नरेश बल्लाल द्वि (११७३-१२२० ई०) का आश्रित, कन्नड जैन कवि, मदनविजय नामक काव्य का रचयिता। [प्रमुख. १५७]

आनन्दमेरु— रायमल्लाभ्युदय काव्य (१५५८ ई०) के कर्त्ता पद्मसुन्दर के दादागुरु और पद्ममेरु के गुरु श्वे. आचार्य। [टक.]

आनन्दराज सुराना— जन्म १५ सित० १८९१ ई०, जोधपुर में, स्वर्गवास २४ सित० १९८० ई० दिल्ली में, सेठचांदमल सुराना के सुपुत्र 'प्राणीमित्र', 'पद्मश्री' आदि मानद उपाधिप्राप्त, तपे हुए स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, कई बार जेल यात्रा की, दिल्ली राज्य की विधानसभा के कई वर्ष सदस्य रहे, सर्वाधिक उत्साह प्राणीरक्षा, जीवदया प्रचार और पशु-पक्षियों के संरक्षण में रहा, अतएव तदुद्देशीय अनेक स्थानीय, प्रान्तीय, अखिल भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रिय संस्थाओं एवं संगठनों से सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे। अन्य कई सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध। साथ ही सफल व्यापारी भी। [प्रोग्रे. १०३-१०५]

आनन्दराम— १. दिल्ली निवासी दिग. मित्तलगोत्री अग्रवाल, जिनके भाई बखतावरमल ने रतनलाल के सहयोग से १८७७ ई० में जिनदत्त चरित्र (हिन्दी पद्य) की रचना की थी। [टंक.]

२. दिल्ली निवासी श्वे. फांफलिया श्रीमाल, जयपुर राज्य में उच्च पदाधिकारी रहे— उनके पुत्र चुन्नीलाल, हीरालाल एवं मोहनलाल थे। [टंक.]

३. बसवा निवासी दिग. श्रावक, पं० दौलतराम कासलीवाल (१७३८-७२ ई०) के पिता। [प्रमुख. ३१८]

आनन्दवर्द्धन— श्वे. साधु ल० १७५० ई०, कल्याणमंदिरपद, भक्तामरपद आदि (हिन्दी) के रचयिता।

आनन्दविजय— श्वे. साधु, ल० १६५० ई०, हर्षकुलकृत त्रिभंगीसूत्र की वृत्ति के रचयिता।

आनन्दविमलसूरि— श्वे. तपागच्छी आचार्य (१४९०-१५३९ ई०), सुधारवादी संत, सौराष्ट्र, मालवा, मारवाड आदि प्रदेशों में ग्रामीण जनता के मध्य धर्मप्रचार को विशेषरूप से प्रोत्साहन दिया। इनका भक्त श्रावक तुर्नसिंह प्रभावशाली था और इनके धर्मप्रचार कार्य में सहयोगी था। [टंक.]

आनन्दसूरि— हेमचन्द्राचार्य के एक सुयोग्य शिष्य और उनकी प्रवृत्तियों में सहयोगी, चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) ने उन्हें 'व्याघ्रशिशुक' उपाधि से सम्मानित किया था। [प्रमुख. २३१-२३२]

आनल— एक चौलुक्य राजा, जिसे हर्षपुरीयमलधारीगच्छ के श्रीचन्द्रसूरि के शिष्य मुनिचन्द्र ने जैनधर्म में दीक्षित किया था, ११वीं शती। [टंक.]

आना— गदहिया गोत्री श्रावक साह आना ने अपनी पत्नी भीमनी के पुण्यार्थ १४११ ई० में उपकेशगच्छी देवगुप्तसूरि से शान्तिनाथ-बिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी। [कैच. ९७]

आनेग— १. हैहयवंशी अय्यण के वंशज जिनधर्मी नरेश आनेग प्र० 'बिरुदंकभीम' ने, जो गुलबर्गा प्रदेश का शासक था, चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ का सामन्त था और द्रविड़संघ-सेनगण के भ. मल्लिसेन के अग्रशिष्य भ. इन्द्रसेन का गृहस्थ शिष्य था, १०९४ ई० में एक अति भव्य जिनालय बनवाकर उसके लिए स्वगुरु को प्रभूत दान दिया था। [देसाई. २१४. २३६-२४०]

२. इसीवंश का आनेग द्वि., एक अन्य जैन नरेश जो बाच का पुत्र, लोक तृ. का पिता था, गजविद्या-विशारद प्रसिद्ध वीर था। [देसाई. २१५]

आपिशल— सोमदेवसूरि द्वारा यशस्तिलकचम्पू (९५९ ई०) में उल्लिखित एक प्राचीन वैयाकरणी।

आबाजी भणसाली— जामनगर के जामसाहिब का जैनमन्त्री, आ. हीरविजयसूरिका भक्त, ल० १५९५ ई०। [कैच. २१०]

आभड— अन्हिलवाडपट्टन का एक स्वपुरुषार्थी प्रसिद्ध जैन जौहरी, जो हेमचन्द्राचार्य का भक्त था, और जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) के हाथ एक अति मूल्यवान रत्न बेचकर राजा द्वारा सम्मानित हुआ था। उसने कई जिनमन्दिर बनवाये, जैन साधुओं की सेवा-संरक्षण में उत्साही, धर्मप्रचार में योग देता था। [टंक.]

आमदेव— बघेरवाल दिग. श्रावक, मूलसंघी गुणभद्रसूरि के शिष्य और लाटी भाषा (गुजराती ?) मे त्रिभंगीसार टीका के रचयिता सोमदेव के पिता, बैजणि के पति। [प्रवी. i. २१]

आमा— १. खंभात के चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-मंदिर के प्रतिष्ठापक सांमदेव साहू (१२९५ ई०) के भाई तथा उक्त प्रतिष्ठोत्सव में सहयोगी। [जैसाई. ५७४]

२. डूंगरपुर के रावल गजपाल (ल० १४५० ई०) का जैनमंत्री, जिसने आंतरी में शान्ति जिनालय बनवाया। [प्रमुख. ६१२]

आभीर— ती० ऋषभ के एक पुत्र, महारानी सुमंगला से उत्पन्न, पिता के मुनिसंघ में सम्मिलित हुए। [टंक.]

आभू— १. थराड का श्रीमाल श्वे. प्रभावशाली श्रावक एवं संघपति। [टंक.]

२. मध्यकाल में इस नामके और भी दो-एक धर्मात्मा श्रावक हुए प्रतीत होते है। [टंक.]

३. मालवा के मण्डन मन्त्री (१४०५-३२ ई०) के पूर्वज, जालौर के श्रीमाल श्रावक। [प्रमुख. २४६]

४. सोलंकियों का जैन दण्डनायक, जिसकी पुत्री कुमारदेवी अश्वराज की पत्नी और वस्तुपाल-तेजपाल की माँ थी। [गुच. ३०८]

आम— ग्वालियर का राजा, श्वेताम्बराचार्य बप्पभट्टिसूरि का भक्त शिष्य। संभवतया वह गुर्जरप्रतिहार वत्सराज (७८३ ई०) के पुत्र एवं उत्तराधिकारी नागभट द्वि. नागावलोक (८००-८३३ ई०) से अभिन्न है। बप्पभट्टिचरित्र में इस नरेश की गुरुभक्ति एवं धार्मिक कार्यकलापों का वर्णन है। [प्रमुख. २०३-२०४; जैसाइ. २४३; कैच. १८; गुच. १९-२८]

आम्रकारदेव— उन्दान का पुत्र, और गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वि विक्रमादित्य का एक जिनधर्मी वीर दण्डनाथ था, जिसने सांची के एक शि. ले. के अनुसार, ४१२ ई० में, काकनादबोट के विहार मे जैनमुनियों के नित्य आहारदान तथा रत्नगृह में दीपक जलाने के लिए ईश्वरवासक नामक ग्राम और २५ स्वर्ण दीनारों का दान किया था। [प्रमुख. १९८; जैसाइ. ५७३; कार्पस इन्स. इंडि. iii. पृ. २९]

आम्म कवि— अन्हिलपुर (गुजरात) निवासी दिग. पल्लीपाल श्रावक, नेमि-चरित्र (सं०) का कर्त्ता और 'गणितपाटी' के लेखक अनन्तपाल तथा तिलकमंजरीसार के कर्त्ता धनपाल (१२०३ ई०) का पिता। [टंक.]

आमुष्या— शाकम्भरी के पुण्यात्मा श्रेष्ठि जासठ की धर्मात्मा भार्या, ल० ११०० ई०। [प्रमुख. २०६]

आमोहिनी— हारीतिपुत्र पाल की भार्या श्रमणश्राविका कौत्सी आमोहिनी, जिसने अपने पालघोष, प्रोस्थाघोष तथा धनघोष नामक पुत्रों के सहयोग से, मथुरा में, स्वामी महाक्षत्रप शोडास के शासनकाल में, ईसापूर्व २४ मे, आर्यवती (तीर्थंकर-जननी) की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [प्रमुख. ६५-६६; जैशिसं ii. ५; एइं. ii. १४ २] —पाठान्तर अमोहिनि।

आम्रदेवसूरि— १. श्वे. बडगच्छीय जिनचन्द्रसूरि के शिष्य, नेमिचन्द्रसूरिकृत व्याख्यानमणिकोश की टीका (११३३ ई०) के कर्त्ता।
२. जिनके उपदेश से चित्तौड़ मे, राणा कुम्भा के राज्यकाल मे, १४५७ ई० मे, साह हरपाल ने २१ जैन देवियों की मूर्त्तियां स्थापित कराई थीं। [प्रमुख. २५४]

आम्रभट— अम्बड, राज्यमन्त्री, मन्त्री उदयन का पुत्र —दे अम्बड। [कैच. २१४]

आम्बट— बिजौलिया के पार्श्वनाथमंदिर के निर्माता प्राग्वाटवंशी दिग. श्रावक सेठ लोलाक का एक धर्मात्मा पूर्वज, शुभंकर का पौत्र और जासट का पुत्र —शि. ले. ११७० ई०। [जैशिसं. iv. २६५]

आयच गावुंड— चालुक्य जगदेकमल्ल प्र० की एक प्रादेशिक प्रशासिका रेवकब्बरसि का एक राज्याधिकारी था और यापनीयसंघ के जयकीर्ति त्रैविद्यदेव के सुप्रसिद्ध शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्ती का गृहस्थ शिष्य था। उसने अपनी स्वर्गीय भार्या कञ्चिकब्बे की स्मृति में अपनी जन्मभूमि पोसवूर में एक भव्य जिनालय निर्माण कराकर, उसके लिए स्वगुरु को, १०२८-२९ ई० में, सुपारी-उद्यान तथा अन्य भूसम्पत्ति पादप्रक्षालन पूर्वक समर्पित की थी। यह दिग. श्रावक अपनी धार्मिकता के लिए प्रसिद्ध था। [देसाई. १४१-१४२; जैशिसं. iv १२५]

आयचम्पय्य— हुलगुंद के १०७४ ई० के शि. ले. में उल्लिखित दानदाताओं में से एक मह करण (लेखाधिकारी) भी था। [जैशिसं. iv. १५८]

आयुविमल्ल श्रावक— द्वारा बेलेगुर में निर्मापित जिनालय के लिए १०६६ ई० में महामंडलेश्वर लक्ष्मरस ने मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंश के शान्तिनन्दि भट्टारक को भूमिदान दिया था। [जैशिसं. iv. १४७]

आयतवर्मा— १. बेललट्टि के जिनालय का निर्माता, अज्जरम्य का पेर्गड़े (नगर प्रशासक), ९९० ई०। [देसाई. ३९१; जैशिसं. iv. ९१]

२. कन्नड कवि, रत्नकरण्ड-चम्पू के रचयिता, ल. १४०० ई०। [प्रमुख. २६४; ककच; मेजै. ३७६]

३. कागिनेल्लि के १०३२ ई० के शि. ले. में उल्लिखित जिनालय के लिए स्वर्णदान-दाता आयतवर्मा [जैशिसं. iv. १२७]

आयुवीर्य— ती. ऋषभ के महारानी सुमंगला से उत्पन्न एक पुत्र।

आरबोज— चित्तारि के तोज का पुत्र, जिसने १०५३ ई० की बीर सान्तर की दान प्रशस्ति उत्कीर्ण की थी। [जैशिसं. iv. १३७]

आरतराम— खिन्दुका गोत्री खंडेलवाल दिग जैन, नेवटाग्राम के निवासी, १७५७-१७७८ ई० में जयपुर राज्य के दीवान रहे, नेवटा में विशाल जिनमन्दिर बनवाया, जयपुर की अपनी हवेली में भी चैत्यालय बनवाया। इनके कई वंशज भी राज्य के दीवान रहे। [प्रमुख. ३३९]

आरम्बनन्दि— शायद दिग. भट्टारक थे, जिन्हें परकेसरिवर्मन विक्रम-चोल के समय, ११३५ ई० में कुछ भूमि बेची गई थी। [जैशिसं. iv. २१५]

आरियदेव— कीलक्कुडि (मदुरा) के १२वीं शती ई० के शि.ले. में उल्लिखित दिग. गुरु। [जैशिसं. iv. ३०१]

आरुलणपेरुमान— धर्मात्मा श्रावक, ९वीं शती के तमिल शि. ले. में उल्लिखित। [जैशिसं iv. ६७]

आर्द्रक— या आर्द्रककुमार, पारस्यदेश का राजकुमार, (अरदेशिर ?) श्रेणिक बिम्बसार के पुत्र एवं प्रधानमन्त्री अभयकुमार का मित्र, उसके प्रभाव से जैन बना, भारत आया, ती. महावीर के दर्शन किये और दीक्षा लेकर जैन मुनि बना। [प्रमुख. १८; टक.]

आर्द्रदेव— नोमकवंशी कायस्थ, दिग. जिनधर्मी, पत्नी राधा, पुत्र धर्मशर्माभ्युदय एवं जीवंधर चम्पू के कर्ता सुप्रसिद्ध कवि हरिचन्द्र, ११वीं शती ई०। [जैसाइ. ४६२; टंक]

आर्यमन्दि— जम्बूखण्डगण के आचार्य, जिन्हें उनके भक्त सेन्द्रकवंशी इन्द्रनन्द अधिराज ने, ल० ६०० ई० में, अर्हत्पूजा एवं साधु वैयावृत्य के लिए ताम्रपत्र द्वारा ग्राम दान किया था। [जैशिसं. iv. २२]

आर्यदेव— १. प्राचीन मथुरा के कोट्टियगण-स्थानीयकुल वैरशाखा के आर्य हस्तहस्ति के प्रशिष्य और आर्यमंगुहस्ति (माघहस्ति या नाग-हस्ति) के श्राद्धचर (श्रद्धाचारी या सधर्मा) वाचक आर्यदेव, जिनकी प्रेरणा से १३२ ई० में सिंह के पुत्र लोहिककारुक (लुहार) गोव (गोप) ने मथुरा में एक सरस्वती प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। मथुरा के ही १३० ई० के एक शि. ले. में भी आर्यदिवित के रूप में संभवतया इन्हीं का उल्लेख है। [एइ. i. ४३/२१; ii. १४/१८; जैशिस. ii. ५४, ५५; जैसो. ११५-११६; प्रमुख. ६८]

२. सन् १०७७ ई० के एक शि. ले. के अनुसार तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता एक पुरातन आचार्य, जिनका उल्लेख समन्तभद्र, शिवकोटि, वरदत्त और सिंहनन्दि जैसे पुरातन आचार्यों के मध्य किया गया है। [एक: viii. ३५; जैशिसं. ii. २१३] —संभव है कि सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थसूत्रकार उमास्वामि का ही उप या अपरनाम रहा हो, अथवा इन आर्यदेव का अपना कोई स्वतन्त्र तत्त्वार्थसूत्र हो जो अब अनुपलब्ध है।

३. जम्बूखण्डीगण के आचार्य आर्यदेव, जिनका उल्लेख ९२३ ई० के गोकक ताम्रशासन में हुआ है —वह उस समय विद्यमान रहे प्रतीत होते है। [मेजै. २५६]

४. मल्लिषेण प्रशस्ति (११२८ ई०) में परवादिमल्ल और चन्द्रकीर्ति के मध्य उल्लिखित 'राद्धान्तकर्त्ता आचार्यवर्य आर्यदेव जिन्होंने कायोत्सर्ग अवस्था में देहत्याग करके स्वर्ग प्राप्त किया था' ल० ७७५-८०० ई०। [जैशिसं. ५४]

आर्यदेवी— धर्मात्मा महिला, विजयपार्य एवं श्रीमती की पुत्री, चन्द्रपार्य, ब्रह्मसूरि एवं पार्श्वनाथ की भगिनी, देवेन्द्र पण्डित की धर्मपत्नी, आदिनाथ, विजयप तथा प्रवचनपरीक्षा के कर्त्ता पं० नेमिचन्द्र (१६वीं शती ई०) की जननी। [प्रसं. १०१]

आर्यनन्दि— १. पंचस्तूपान्वय के चन्द्रसेन मुनि के शिष्य और धवल (७८१ ई०), जयधवल आदि के कर्ता वीरसेन स्वामि के गुरु अज्जणंदि या आर्यनन्दि, समय ल० ७००-५० ई०। [जैसो. १८६, १८९; जै. एं. xii. १, पृ. १-६; प्रवी. i. १२३-१२४]

२. मूलसंघी बालचन्द्र के शिष्य आर्यनन्दि, जो गंगनरेश राच-मल्ल सत्यवाक्य प्र० (८१५-५३ ई०) के धर्मगुरु थे। [प्रमुख. ७७]

३. अज्जनन्दि या आर्यनन्दि ने भवनन्दि के शिष्य और किसी बाणनरेश के धर्मगुरु देवसेन की, जो संभवतया स्वयं उनके भी गुरु थे, एक मूर्ति बनवाकर स्थापित की थी। ल० ९वीं-१०वीं शती ई०। [मेजै. २४३]

४. अज्जनन्दि, अच्चणंदि या आर्यनन्दि, जिन्होंने मदुरा तालुके में एक अन्य प्रतिमा प्रतिष्ठापित की, १०वीं शती ई० के एक तमिल शि. ले. में उल्लिखित। [मेजै. २४३-२४४; जैशिसं. iv. ७१]

५. जिनकी माता का नाम गुणमति था। कुछ विद्वान इन शि. ले. को ल० ७०० ई० का अनुमान करते हैं। [जैशिसं. iv. ३३-३८]

६. आर्यनन्दि आचार्य, जिन्हें सेन्द्रकवंशी राजा इन्द्रणंद ने भूमि-दान दिया था, ल० ७०० ई० —दे. आर्यणंदि। [जैशिसं. iv. २२]

७. एक अन्य प्राचीन तमिल शि. ले. में गुणनन्दि और कनकसेन के साथ उल्लिखित अज्जनंदि या आर्यनन्दि। [मेजै. २४४]

८. गोम्मटेश्वर प्रतिमा के प्रतिष्ठापक मन्त्रीश्वर चामुण्डराय के धर्मगुरु अजितसेन के गुरु आर्यसेन अथवा आर्यनन्दि, ल० ९३० ई०। [देसाई. १३४, १३७, १३९]

९. वर्धमान चरित्र (८५३ ई०) आदि के कर्ता महाकवि असग के एक गुरु। [प्रवी. i. ७९]

आर्यनन्दिक— आर्यनन्दिक या आर्यनन्दि आचार्य जिनके उपदेश से मथुरा में, ११० ई० में, श्राविका जितमित्रा ने अर्हत् की सर्वतोभद्रिका प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. ii-४१]

आर्यप— दे. अय्यपार्य।

आर्यपण्डित— मूलसंघ-सूरस्थगण-चित्रकूटान्वय के कनकनन्दि भ. के प्रप्रशिष्य, उत्तरासंग भ० के प्रशिष्य, अरुहनन्दि भट्टारक के शिष्य, आर्य-पण्डित को, चालुक्य सोमेश्वर द्वि. के राज्यकाल में, १०७४ ई० में, राजधानी पोन्नुगुन्द की अरसर-बसदि नामक प्रमुख जिनालय के लिए प्रादेशिक शासक महामंडलेश्वर लक्ष्मरस ने भूमिदान दिया था। [देसाई. १०७-१०८; जैशिस. iv. १५८]

आर्यमंक्षु— अज्जमंखु, आर्यमंगु, आर्यमखु या आर्यमक्षु एक पुरातन आचार्य, जो कषायप्राभृत (पेज्जदोसपाहुड) रूप मूल श्रुतागम के उद्धार एवं पुस्तकीकरण से सम्बद्ध हैं। अनुश्रुति है कि गुणधराचार्य ने उक्त आगम का मूलसूत्रगाथाओं एवं विवरण गाथाओं में उद्धार एवं पुस्तकीकरण किया, जिसका उन्होंने आर्यमंक्षु तथा नागहस्ति को व्याख्यान किया, अथवा उन दोनों को वे सूत्र-गाथाएं गुरुपरम्परा से प्राप्त हुईं, और उनके समीप यतिवृषभा-चार्य (२री शती ई०) ने उनका अध्ययन करके उन पर चूर्णि-सूत्रों की रचना की थी। आर्यमंक्षु प्रथम शती ई० में हुए प्रतीत होते हैं। [जैसो. १०७, १०९; प्रवी. i. १२४]

आर्यरक्षित— श्वेताम्बराचार्य, ल० २री शती ई०, अनुयोगद्वार सूत्र के रच-यिता कहे जाते हैं।

आर्यवती— संभवतया ती. महावीर की जननी त्रिशलादेवी, जिनकी मूर्ति श्राविका आमोहिनी ने ई० पू० २४ में, मथुरा में प्रतिष्ठापित की थी। [प्रमुख. ६५-६६; जैशिसं. ii. ५; लूडर्स सूची नं० ५९]

आर्यसुसेन्दु— दिग. आचार्य, जिनके शिष्य विजयकीर्तिदेव के भक्त गृहस्थ-शिष्य कोंगाल्व नरेश ने १३९० ई० में, अपनी धर्मात्मारानी सुगुणी देवी के साथ, मुल्लुरु के चन्द्रनाथ जिनालय का निर्माण कराया तथा दान दिये थे। [मेजै. ३१३]

आर्य सुहस्ति— दे सुहस्ति।

आर्यसेन— १. मन्त्रीश्वर चामुण्डाराय (९८१ ई०) के गुरु अजितसेन के गुरु। [देसाई. १३४, १३७, १३९]

२. मूलसंघ-सेनगण-पोगरिगच्छ के राजपूजित ब्रह्मसेन मुनिनाथ

के शिष्य और उन महासेन मुनीन्द्र के गुरु, जो चालुक्य महारानी केतलदेवी के पणक-चूडामणि (दीवान) चाकिराज के धर्मगुरु एवं विद्यागुरु थे जिसने १०५४ ई० में कई जिनालय बनवाकर प्रभूत दान दिया था। [प्रमुख. १२३; जैशिसं. ii. १८६; देभाई. १०६]

३. कन्नड 'पुण्यास्रवपुराण' के संशोधनकर्ता एवं संपादक (१३३१ ई०)।

आलाक— टोंक (राजस्थान) के ११०२ ई० के जिनप्रतिमा-लेख में उल्लिखित धर्मात्मा श्रावक। [जैशिसं. iv. १८५]

आलपदेवी— दे. अलपादेवी। [जैशिसं. iv. ६२१-६२२]

आलाण्विरल्वान मोंगन— उपनाम कुलोत्तुंग शोलकाडवरायन ने कुलोत्तुंग चोलदेव द्वि. के राज्य में, ११३७ ई० में, भ० चन्द्रनाथ की पूजार्चा के लिए एक ग्राम की चावल की फसल दान की थी। [जैशिसं. iv. २२३]

आलिग— गुजरात नरेश जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) का एक जैन मन्त्री। [प्रमुख. २३१]

आलोक— १. दिग. जैन वैद्यराज अम्बर के पौत्र, श्रुतज्ञ एवं आयुर्वेद पारंगत पापाक के ज्येष्ठपुत्र, साहस एवं लल्लुक के अग्रज, शीलवती हेला के पति, माथुरान्वयी छत्रसेन गुरु के अनन्य भक्त, और बाहुक, लल्लाक एवं उस भूषण सेठ के पिता, जिसने अर्थूणा (जिला डूंगरपुर, राजस्थान) में, ११०९ ई० मे, एक भव्य विशाल वृषभ-जिनालय निर्माण कराके महान धर्मोत्सव किया था। यह सेठ आलोक सहजप्रज्ञ, इतिहास एवं तत्त्वार्थ के ज्ञाता, संवेगयुत, साधुसेवी, और भोगी एवं योगी सज्जन थे। [प्रमुख. २१८; जैशिसं. iii. ३०५ क.]

२. उपरोक्त सेठ भूषण और उनकी भार्या सीली के ज्येष्ठपुत्र, साधारण, शान्ति आदि के भाई, गुरु-देवभक्त धर्मात्मा सज्जन। [वही.]

आल्लुर— महावीर जिनेन्द्र के एक भक्त धर्मात्मा, जिनके श्रवणबेलगोल में समाधिमरण करने पर चन्द्रगिरि पर उनका स्मारक बनाया गया था। [जैशिसं. i. १५५]

आल्पादेवी— या आलपदेवी, आलुपवंशी परम जैन धर्मात्मा राजकुमारी, नोलम्ब-पल्लव राजा इरंगोल की रानी, काणूरगण-कोण्डकुन्दान्वय के पुष्पनन्दि मलधारीदेव के शिष्य दावनन्दि आचार्य द्वारा कोट्टशिवरम में निर्मापित जिनालय का जीर्णोद्धार एवं संरक्षण तथा विविधरूपों में जिनधर्म की प्रभावना करने वाली महिला, १०वीं शती ई०। [देसाई. १५८-१५९, १६३; जैशिसं. iv. ६२१-६२२]

आल्हण— १. गृहपतिवंशी दिग. श्रेष्ठि पाणिधर का धर्मात्मा पुत्र, जिसने ११४८ ई० में, खजुराहो में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी। [जैशिस. iii. ३२९; प्रमुख. २२६]

२. ब्रह्मक्षत्रगोत्रीय मानू के पुत्रों आल्हण और दोल्हण ने १२४० ई० में कांगड़ा (हिमाचलप्रदेश) के कीरग्राम में महावीर जिनालय बनवाया था। [टंक.]

३. गुजरात के गंधारपत्तन (बन्दरगाह) का जैन व्यापारी, जिसके वाजिया तथा राजिया नामक वंशजों का मुग़ल सम्राट तथा फरंग देश के बादशाह के दरबारों में विशेष सम्मान था। [टंक.]

आल्हणदेव— नाडोल के चाहमान नरेश अश्वराज का पुत्र एवं उत्तराधिकारी राजा आल्हणदेव (११५२-६१ ई०), जो चौलुक्य कुमारपाल का सामन्त था, अनल्लदेवी का पति और केल्हण, गजसिंह एवं कीर्तिपाल का पिता था, और जिसने संडेरगच्छ के यतियों को, ११६१ ई० में, महावीर जिनालय के केशर, चन्दन, घृत आदि के लिये पांच स्वर्णमुद्रा मासिक का सदैव चलने वाला दान दिया था। [टंक; कैच. २१-२२; गुच. १५३]

आल्हणसिंह— चन्द्रावती नरेश ने १२४३ ई० में पार्श्व-जिनालय के लिए दान दिया था। [कैच. २५]

आल्हा— मांडू के सुलतान के जैन मन्त्री के छः पुत्रों में से एक —इसके भाई बाहड का पुत्र प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राज्यमन्त्री मंडन धनदराज (१४४६ ई०) था। [टंक.]

आल्हा संघी— भोज बघेरवाल के पुत्र और भ. सुरेन्द्रकीर्ति के गृहस्थ शिष्य ने ल० १७०० ई० मे, उदयपुर के निकट धुलेव मे नवनिर्मापित जिनालय का प्रतिष्ठोत्सव किया था। [कैच. ७२]

आल्हू— गृहपतिवंशी जैन श्रेष्ठि महिपति का धर्मात्मा पुत्र, जिसने ११५१ ई० में, मण्डलिपुर में जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी। [जैशिसं. iii. ३३६; प्रमुख. २२६]

आशा— ईडर निवासी धर्मात्मा सेठ ने पत्नी लक्ष्मी और पुत्री शिला सहित, भ. वादीभूषण के उपदेश से नेमिनाथ बिम्ब प्रतिष्ठा की थी—ल० १५९० ई०। [कैच. ७७]

आशाधर, पं०— शाकम्भरी प्रदेश के माण्डलगढ़दुर्ग के दुर्गपति दिग. श्रावक सल्लक्षण बघेरवाल और उनकी भार्या रत्नी के सुपुत्र पंडित प्रवर आशाधर साहित्यिक महारथी थे। जब ११९३ ई० में, इनकी बाल्यावस्था में ही, मुहम्मदगोरी ने अजमेर पर अधिकार किया तो इनके परिवार ने जन्मभूमिका परित्याग करके धारानगरी में शरण ली, पिता सल्लक्षण परमारनरेश अर्जुनवर्मा (१२१०-१८ ई०) के सन्धिविग्रहिक मन्त्री हो गये, और वहीं पं० महावीर प्रभृति विद्वानों के निकट आशाधर ने अपनी शिक्षा पूरी की। तदनन्तर उन्होंने नालछा को अपना आवास एवं साधनाकेन्द्र बनाया, वहीं एक विशाल विद्यापीठ स्थापित किया, और १२२५ ई० से १२४५ ई० के मध्य लगभग चालीस विविधविषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की संस्कृत में रचना की। नयविश्वचक्षु, प्रज्ञापुंज, कविराज, सरस्वतीपुत्र, आचार्यकल्प, सूरि आदि अनेक सार्थक विरुद उन्हें तत्कालीन जैन एवं अजैन विद्वानों से प्राप्त हुए। उनके शिष्यों में उदयसेन मुनि, वादीन्द्र विशालकीर्ति, मदनकीर्ति, पं० देवचन्द्र, भ० विनयचन्द्र, पं० आजाक, कविवर अर्हद्दास प्रमुख थे, और भक्त श्रावकों में धर्मात्मा हरदेव, महीचन्द्र साहु, केल्हण, धनचन्द्र, धीनाक आदि गणनीय थे। बिल्हणकवीश और बालसरस्वती मदनोपाध्याय ने पंडित जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की है, परमार नरेश विन्ध्यवर्मा, अर्जुनवर्मा, सुभटवर्मा, देवपाल और जैतुगिदेव उनके प्रश्रयदाता थे। पंडितजी की धर्मपत्नी सरस्वती यथानाम तथा गुण थी, और पुत्र छाहड़ राज्यमान पदाधिकारी था। जीवन की सन्ध्या में पंडित जी उदासीन त्यागी व्रती श्रावक के रूप में आत्मसाधनरत रहे। [प्रमुख. २११-२१२; भाइ. १६९]

आशानाथ— अजमेर निवासी बोहिथ के पुत्र ने चाटसू के जिनालय में, १६०४ ई० में, मानस्तंभ बनवाया था। [कैच. ८२]

आशाधरसूरि— दे. आशाधर —परवर्ती कतिपय उल्लेखों में प्राप्त नामरूप। [प्रवी. i. ९]

आशानन्दी— दिग., संस्कृत पंचपरमेष्ठि-पाठ के रचयिता।

आशामल— दिल्ली की शाही कममरियट के अधिकारी, धर्मात्मा श्रावक, जिनने १७४३ ई० में मस्जिद-खजूर मोहल्ले के पंचायती जैन मन्दिर का निर्माण कराया था। [प्रमुख. २८४]

आशा शाह— या शाह आशा, उकेशवंशीय दरडागोत्री ओसवाल, जिसके पुत्र संघवी मण्डलिक ने १४५८ ई० में, आबू पर्वत पर देवमूर्त्तियां प्रतिष्ठापित की थी। [प्रमुख. २४७]

आशाशाह देपरा— मेवाड़ राज्य में कुम्भलमेर का जैनदुर्गपाल, जिसने राणा सांगा के बालक पुत्र उदयसिंह को अपने आश्रय में लेकर शत्रुओं से उसकी रक्षा की और अन्त में सिंहासन प्राप्त करने मे उसकी सहायता की थी– आशाशाह की वीर जननी इस कार्य में प्रेरक एव सहायक थी— ल० १५४० ई०। [प्रमुख. २५७; भाइ. ४५०]

आशुक— गुजरात के चौलुक्य जयसिंह सिद्धराज का प्रधानमन्त्री, परम जैन, इसकी प्रेरणा से महाराज ने ११२३ ई० में शत्रुंजय की यात्रा की थी। दिग. कुमुदचन्द्र और श्वे. देवसूरि का शास्त्रार्थ इसी मन्त्री के समय में हुआ था। [गुच. २५८-२५९]

आषढाह कटकराज— वीर जैन सेनापति, संभवतया गुजरात के, ल० १२वीं शती, अनलदेवी के पति, आसड और कवि आसड के पिता। [टंक.]

आषाढ़सेन— अहिच्छत्र (उत्तर पांचाल) नरेश शौनकायन के प्रपौत्र, वंगपाल और रानी तेवणी के पौत्र, राजा भागवत और वैहिदरी रानी के पुत्र, महाराज आषाढ़सेन ने अपने भागिनेय, गोपालीपुत्र, राजा बृहस्पतिमित्र की राजधानी कोशाम्बी के निकटस्थ छठे तीर्थंकर पद्मप्रभु की तप एवं केवलज्ञान भूमि प्रभासगिरि (पभोसा) पर काश्यपीय अर्हतों (निर्ग्रन्थ जैन मुनियों) के लिए गुफाएँ निर्माण कराई थीं —ल० द्वितीय-प्रथम शती ईसापूर्व में। [प्रमुख. ६०; जैशिसं. ii. ६-७; एइं ii. पृ. २४२-२४३]

आसकरण— शीलविजय की तीर्थमाला (१६९१ ई०) के अनुसार गोलकुंडा के प्रसिद्ध ओसवाल सेठ देवकरण शाह के अनुज और उदयकरण के अग्रज —तीनों भाई सम्यक्त्वी, निर्मलबुद्धि, गर्वरहित और गुरुभक्त थे। [जैसाइ. २३१]

आसकरण कवि— दे. आसाराम।

आसकरण मेहता— १७०८ ई० में कृष्णगढ़ नरेश राजसिंह का मुख्य दीवान था। वह राजा कृष्णसिंह और राजा मानसिंह के मुख्यमन्त्री मेहता रायचन्द्र (स्वर्ग. १६६६ ई०) का पौत्र, और राज्यमन्त्री मेहता कृष्णदास (स्वर्ग १७०६ ई०) का पुत्र था। उसका पुत्र देवीचन्द रूपनगर नरेश सरदारसिंह का मुख्य दीवान था। [प्रमुख. ३०६]

आसकरण मेहता— जोधपुर राज्य के प्रधानमन्त्री मेहता जयमल (१६२९-३९ ई०) का पुत्र था, और प्रसिद्ध ख्यातकार मुहनोत नैणसी का भाई था। तीन अन्य भाई सुन्दरदास, नरसिंहदास एवं जगमाल थे, जननी सरूपदे थी। [प्रमुख. ३०७]

आसकरण संघपति— घमोनी (जिला सागर, म० प्र०) के सनुकुटागोत्री गोलापूरब, दिग. जैन धर्मात्मा श्रावक, मोहनदे के पति, संघपति रतनाई और हीरामणि के पिता, नरोत्तम, मण्डन, राघव, भगीरथ, नन्दि और बलभद्र के पितामह ने अपने पूरे परिवार सहित, १६५९ ई० में, दमोह के भ. ललितकीर्ति के शिष्य ब्रह्म सुमतिदास के उपदेश से, जेरठ के भ. सकलकीर्ति के शिष्य पं० द्वारिकादास से घमौनी में एक महान शान्तियज्ञ समारोह कराया था। विधान चन्द्रप्रभ जिनालय में किया गया था। मुगल सूबेदार खबुल्लाहखां भी उन्हें बहुत मानता था। इस दानशील, उदार, धर्मात्मा श्रेष्ठि ने कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार, कई नवीन मन्दिरों का निर्माण, तथा अन्य अनेक धार्मिक कार्य किये थे। [प्रमुख. २९५]

आसड— आषढाह् कटकराज और अनलदेवी के पुत्र, जासड के भाई, पृथ्वीदेवी एवं जैतल्लदेवी के पति, राजड, जैत्रसिंह और अरिसिंह के पिता, गृहस्थ श्वे. विद्वान, मेघदूत टीका, उपदेशकंदली,

विवेकमंजरी तथा कई जिनस्तोत्र-स्तुतियों के रचयिता, ल० १२५० ई०। [टंक.]

आसराउ— दिल्ली निवासी गर्गगोत्री अग्रवाल दिग. जैन दानशील धर्मात्मा दिउचन्द और बालुहि के पुत्र, प्रसिद्ध संघही दिउढासाहु के तथा हूमाहि एवं चोचासाहु के भाई—धर्मात्मा दिउढासाहु ने १४४३ ई० में अपने कुलगुरु भ. यशःकीर्ति से हरिवंशपुराण की रचना कराई थी। [प्रमुख. २४३]

आसराज— अश्वराज या अश्वक, ११११० ई०। कटुकराज और आल्हणदेव के पिता, नाडोल का चौहान जैन नरेश। [गुच. १५०-१५४] —दे. अश्वराज।

आसा— पट्टन निवासी मोढज्ञातीय श्वे. ठक्कुर जल्हण का पुत्र, प्रसिद्ध मन्त्री वस्तुपाल के भाई तेजपाल की पत्नी सुहडदेवी का पिता —१२३३ ई० के एक शि. ले. में उल्लिखित। [टंक.]

आसाराम— १. दिग., हिन्दी कवि, नेमिचन्द्रिका काव्य की रचना वि. सं. १७६१ (१७०४ ई०) में की थी अपरनाम आसकरण। इनके कई सुन्दर पद भजन भी प्राप्त हैं। [शोधादर्श ३-४]

२. दिग., हिन्दी कवि, अहिछित्र-पार्श्वनाथस्तोत्र (१७७५ ई०) के रचयिता। [शोधांक-२८]

आसार्य— दे. अरसार्य—मूनगुन्द के ९८० ई० के शि. ले. के अनुसार इस दिग. जैन सामन्त ने सेनगण के कनकसेन मुनि को जिनालय के लिए पान का क्षेत्र दान दिया था। [जैशिसं. ii-१३७]

आसिग— कवि, ने जालोर में ल० १२०० ई० में जीवदयारास और चन्दनबाला रास की रचना की थी। [कैच. १६५]

आस्ता— अजमेर में, चौहान नरेश पृथ्वीराज तृतीय के समय में, ११९० ई० में, साधु हालण की धर्मपत्नी तथा वर्धमान और महिपालदेव की सम्मानित माता श्राविका आस्ता ने पार्श्व प्रतिमा प्रतिष्ठापित कराई थी। [प्रमुख. २०६; जैशिस. iii-४२१]

आहड— १. अपरनाम आगड, गुजरात का चावडावंशी जैन नरेश, ल० ९०० ई०। [गुच. २०८, २११]

२. गुजरात नरेश चौलुक्य जयसिंह सिद्धराज तथा कुमारपाल के प्रसिद्ध जैन महामन्त्री उदयन (स्वर्ग ११५० ई०) का पुत्र,

बाहड, अम्बड और सोल्ला का भाई, स्वयं भी राज्य का वीर सेनानी एवं मन्त्री। [प्रमुख. २३३]

३. बिजोलिया के सुप्रसिद्ध पार्श्वनाथ मन्दिर का निर्माता शिल्पी, सूत्रधार हरसिंह का पौत्र और पाल्हण मिस्त्री का पुत्र। [जैशिसं. iv. २६५]

आहवमल्ल— १. कल्याणी के उत्तरवर्ती पश्चिमी चालुक्य वंश का संस्थापक तैलप द्वि. आहवमल्ल (९७४-९९७ ई०), जैनधर्म का प्रश्रय-दाता था —उसके कई मन्त्री, सेनापति तथा अनेक सामन्त भी जैन थे। सुप्रसिद्ध सती अत्तियब्बे उसी के सेनापति नागदेव की पत्नी थी। [प्रमुख. ११४-११८; भाइ. ३१०-३१५; देसाई. १४०,१४९; मेजै. १०६; जैशिसं. iv. ११७]

२. इसी वंश का अन्य नरेश, सोमेश्वर प्र० त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल (१०४२-६८ ई०), जो जयसिंह द्वि. जगदेकमल्ल (१०१४-४२ ई०) का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था, जैनधर्म का प्रश्रयदाता था, बल्कि एक शि. ले. में उसे स्याद्वादमत (जैन-धर्म) का अनुयायी लिखा है, उसने कई जिनमन्दिर निर्माण कराये, १०५५ ई० में जैनगुरु इन्द्रकीर्ति को दान दिया, जैनाचार्य अजितसेन पंडित वादिघरट्ट (वादीभसिंह) का 'शब्दचतुर्मुख' उपाधि प्रदान करके सम्मान किया, १०५४ ई० में त्रिभुवनतिलक-जिनालय के लिए महासेन मुनि को दान दिया, जातकतिलक (१०४९ ई०) नामक ज्योतिषशास्त्र के रचयिता जैनगुरु श्रीधराचार्य, गण्डविमुक्त रामभद्र, आदि अन्य जैन सन्तों का भी सम्मान किया था —उसने १०६८ ई० में तुंगभद्र में जलसमाधि ले ली थी। होयसल नरेश विनयादित्य द्वि० उसका सामन्त था। [प्रमुख. १२०; भाइ. ३१६-३१७; देसाई. २११; मेजै. ५१-५३; एक. ii. ६७; जैशिसं. i-५४; ii-२०४, २१३; iii-३१७, ४०८, ४५२; iv १३०-१३१]

३. कलचुरिवंश के एक नरेश, रायनारायण आहवमल्ल का उल्लेख ११८२ ई० के एक शि. ले. में हुआ है। वह संकम कलचुरि का अनुज एवं उत्तराधिकारी था। [जैशिसं. iii. ४०८; एक. vii. १९७.]

४. आहवमल पेमीलहि महामंडलेश्वर ने १०८४ ई० में आन्ध्र-प्रदेश के कीर्तिनिवास शान्ति जिनालय में मुनियों के आहारदान के लिए आचार्य कमलदेव सिद्धान्ती को भूमिदान दिया था। [जैशिस. V. ५३]

५. चन्द्रवाड (फिरोजाबाद, उ० प्र०) का जैनधर्मावलम्बी चौहान नरेश आहवमल्ल (ल० १२५७ ई०) जो श्रीबल्लाल का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था —उसके पिता के जैन मन्त्री सोढू का ज्येष्ठपुत्र रत्नपाल इस राजा का नगरसेठ था, और कनिष्ठ पुत्र कृष्णादित्य राज्य का प्रधानमन्त्री एवं सेनापति था। [भाइ. ४५६; प्रमुख. २४८]

आहिल— नाडोल का चाह्मानवंशी जैन नरेश, महेन्द्र का पौत्र, अश्वपाल का पुत्र, अणहिल्ल का भतीजा, ल० १०५० ई०। उसके निस्संतान होने के कारण उसके पश्चात उसका चचा अणहिल्ल राजा हुआ। [गुच. १४९, २३९]

आह्लादन— दे. आल्हणदेव। [गुच. १५३]

इ

इक्ष्वाकु— प्रथम तीर्थंकर आदिपुरुष भगवान ऋषभदेव का एक अपर नाम, इक्षुदण्ड (गन्ने) के प्रयोग एवं उपयोग का अविष्कार करने के कारण पड़ा; इसी आधार पर उनके वंशजों, प्राचीन भारत के क्षत्रियों का आद्यवंश इक्ष्वाकुवंश कहलाया। [भाइ २४; महापु.]

इच्छादेवी— कन्नडी भुजबलि चरित के अनुसार भ. ऋषभदेवकी रानी सुनन्दा से उत्पन्न पुत्र, पोदनपुर नरेश भुजबलि 'बाहुबलि' की भार्या। [जैशिसं. i, भू. २४]

इडिभट्ट— सरस्वती-पूजन की जयमाल के रचयिता। [दिल्ली-धर्मपुरा प्रति १६/२]

इडियम— होयसल नरेश विष्णुवर्धन के महासेनापति गंगराज ने, जो परम जैन थे, १११७ ई० के लगभग, चोलसम्राट के प्रचंड सामन्त इडियम को पराजित करके अपने महाराज के लिए तलकाडुदेश की विजय की थी। इसी चोल सामंत का उल्लेख कहीं कहीं अडियम या आदियम नाम से भी हुआ है। [जैशिसं. ii २६३; प्रमुख १४३]

इत्सिंग— बौद्ध चीनी यात्री, ६९३ ई० में भारत आया, उसके यात्रा विवरण ऐतिहासिक महत्त्व के हैं। [पुजैवासू. १४९]

इदुक्पट्टुव— गंगनरेश अविनीत कोंगणि के यापनिक संघ द्वारा प्रतिष्ठापित एक अर्हत्‌देवतायतन (जिनमंदिर) को, ४४२ ई० में, प्रदत्त दान विषयक होसकोटे (या हसकोटे) ताम्रशासन के लेखक पेरेर का पिता। [प्रमुख. ७३; जैशिस iv. २०]

इन्दगरस— इन्दगरस वोडेयर (ओडेयर) या यिन्दगरस, तौलवदेशस्थ संगीतपुर का जैननरेश, महामंडलेश्वर इन्द्र का पौत्र, संगिराय ओडेयर का पुत्र, सालुवेन्द्र महाराज इन्दगरस ओडेयर (१४९०-९६ ई०) [जैशिसं. iii ६५५, ६५६; एक. viii. १६३, १६४; भाइ. ३८९; मेजै. ३१८, ३५५; प्रमुख. २७२-२७३]

इन्दप— लक्ष्मेश्वर के १०८१ ई० के दानपत्र में उल्लिखित चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ के पुत्र युवराज जयसिंहदेव के अधीनस्थ महासामन्त एरेमय्य के भाई दोण द्वारा दिये गये दान में प्रेरक एवं सहयोगी एक धर्मात्मा श्रावक जो अरसय्य का पौत्र और वैद्य कश्यप का पुत्र था। [जैशिसं iv. १६५; एइ. १६]

इन्दर— ल० १०७७ ई० के हुम्मच के शि.ले. के अनुसार मंदिर निर्माता पट्टणस्वामि धर्मात्मा सेठ नोक्कय्य का 'वैश्यवंशतिलक' रूपगुणनिधान पुत्र। [जैशिसं. ii. २१२; एक. viii. ५७; प्रमुख. १७३]

इन्दुजा— आर्यिका, देवगढ़ (जि० ललितपुर, उ० प्र०) के १०३८ ई० के तथा अन्य कई शिलालेखों में उल्लिखित, प्रभावक जैन साध्वी। [साहनी रि. १९१८, i. २३]

इन्द्र— १. वीरात् ९५८-१००० (सन् ४३१-४७३ ई०) में राज्य करने वाले धर्मविध्वंसक अत्याचारी चतुर्मुख कल्कि का पिता। [जैसो. ४४-४५; जैसाइ. २०]

२. आठ प्राचीन प्रसिद्ध वैयाकरणियों में से एक, शायद प्रथम। [जैसाइ. १६२]

३. गोम्मटसार (ल० ९८१ ई०) के अनुसार पाँच प्रसिद्ध पुरातन मिथ्यादृष्टियों में से एक— संशय-मिथ्यात्व का उदाहरण। [जैसाइ. १६२]

४. इन्द्र या इन्द्रराज, वेंगि के पूर्वी चालुक्यवंश के संस्थापक कुब्ज विष्णुवर्द्धन का कनिष्ट पुत्र, जयसिंह प्रथम का अनुज और विष्णुवर्द्धन द्वि० (६६६-६७५ ई०) का पिता– ये सब जैन थे। [जैशिसं. ii. १४३, १४४; iv. १००; एइं. ix. ६; vii. २५; भाइ. २८९; प्रमुख. ९४]

५-८. राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र प्र० (ल० ६५० ई०), दन्तिवर्मन का पुत्र और गोविंद प्र० का पिता था। इंद्र द्वि (ल० ७००-२० ई०) गोविंद प्र० का पौत्र, और कर्क का ज्येष्ठ पुत्र तथा दंतिदुर्ग (ल० ७२०-७५८ ई०) का पिता था। इंद्र तृ० नित्यवर्ष रट्टकंदर्प (९१४-२२ ई०) कृष्ण द्वि० का पौत्र एवं उत्तराधिकारी था— ती० शांतिनाथ का विशेष भक्त था। इन्द्र चतुर्थ (९७३-९८२ ई०) राष्ट्रकूट वंश का अन्तिम नरेश था, परम जैन एवं परमवीर था —सल्लेखनापूर्वक श्रवणबेलगोल में मृत्यु का वरण किया, ९८२ ई० में। [भाइ. २९२-३०९; प्रमुख. ९७-११२; अल्तेकर.; जैशिसं. i. ३८, ५७, भू. ७९; ii. १२४, १२७, १६४; iv ५५]

९. राष्ट्रकूटों की गुजराती शाखा का गुर्जरार्य इन्द्र, जो मूलशाखा के ध्रुवधारावर्ष का पुत्र, गोविन्द तृ० प्रभूतवर्ष (७९३-८१४ ई०) का अनुज तथा उसके द्वारा नियुक्त गुर्जरदेश का प्रान्तीयशासक, अमोघवर्ष नृपतुंग का चचा एवं प्रारंभिक समय में अभिभावक, गुर्जरार्य कर्कराज का पिता। [प्रमुख. ९९-१०१; भाइ. २९९; अल्तेकर.; जैशिसं. iv. ५५, ८९, ९७; v. १४, १५]

१०. इन्द्र या इन्द्रराय, जिसने, अपने मित्र अम्मइय के साथ, अपभ्रंश महापुराण (९५९ ई०) के कर्ता महाकवि पुष्पदन्त को वन में बैठादेखकर उससे मेलपाटी नगर में चलने का आग्रह

किया था। [जैसाइ. ३०८, ३२१]

इन्द्रकीर्ति— १. मैनापतीर्थ के कारेयगण के मूल भट्टारक के प्रशिष्य और गुणकीर्ति के शिष्य कामविजेता इन्द्रकीर्ति स्वामी, जिनके छात्र (विद्याशिष्य) सौंदत्ति के सामन्त रट्टराज पृथ्वीराम ने ८७५ ई० में जिनालय बनवाकर दान दिया था। [जैशिसं. ii. १३०; प्रमुख. १७७]

२. सर्वशास्त्रज्ञ कविकुमुदराज जैनाचार्य इन्द्रकीर्ति, जिन्होंने पूर्वकाल में गंगनरेश दुर्विनीत द्वारा निर्मापित कोगलि के जिन-मंदिर के लिए, चालुक्य त्रैलोक्यमल्ल के समय में, १०५५ ई० में, दान दिया था। [जैशिसं. iv. १४३; प्रमुख. १२०]

३. इन्द्रकीर्ति पण्डित, जो चालुक्य भूलोकमल्ल के समय, ११३२ ई० में, लक्ष्मेश्वर की गोग्गिय बसदि के संरक्षक थे। [जैशिसं. iv. २१६]

४. रट्टनरेश लक्ष्मीदेव के १२२८ ई० के शि. ले. के अनुसार रट्टराजगुरु मुनिचन्द्र के साथ उल्लिखित एवं हुलि की माणिक्य-तीर्थद बसदि के अध्यक्ष तथा शुभचन्द्र सि. दे. के सधर्मा प्रभा-चन्द्र सि. दे. थे, जिनके शिष्य इन्द्रकीर्ति और श्रीधरदेव थे। [देसाई. ११४-११५]

इन्द्रगुरु— पद्मपुराण के कर्ता रविषेणाचार्य (६७६ ई०) के गुरु लक्ष्मणसेन के गुरु अर्हन्मुनि थे, उनके गुरु दिवाकर यति थे, जो इन इन्द्रगुरु के शिष्य थे, समय लगभग ६०० ई०। [जैसो. १८१; पुजैवासू. १६२; जैसाइ. २७३; पद्मपु. १२३/१६७]

इन्द्रजीत कवि— अटेर-हथिकंत-शौरिपुर के भट्टारक जिनेन्द्र भूषण के आश्रित ब्रजभाषा के कवि, मैनपुरी में १७८३ या १७८८ ई० में मुनि-सुव्रतपुराण की रचना की थी, अन्य रचनाएं कुंथुनाथपुराण, अरनाथपुराण, मल्लिनाथपुराण आदि। [काहि. २०२; प्रभा. ३३]

इन्द्रजीत राजा— दतिया (दिलीपनगर) का बुन्देलानरेश, जिसके पुत्र छत्रजीत के राज्यकाल में, १७७९ ई० में, सोनागिर में एक जिनमंदिर (नं० ५०) बना था। [जैशिसं. v. २७८ पृ. १०७]

इन्द्रनंद— सेन्द्रक वंश के अधिराज के पुत्र एवं उत्तराधिकारी और राष्ट्रकूट

देज्ज महाराज के सामंत, इस धर्मात्मा नरेश ने अर्हत्पूजा एवं तपस्वियों की सेवा आदि के लिए ताम्रशासन द्वारा ग्राम दान दिया था —समय ल० ६०० ई०। [जैशिसं. iv. २२; एइ. २१ पृ. २८९]

इन्द्रमित्र— १ श्वेताम्बराचार्य सुस्थित (सुप्र) के शिष्य, अपरनाम कालक प्र०, समयईसापूर्व २०२। [जैसो. १०५, २६५]

२. कुछ श्वे० पट्टावलियों के अनुसार सिद्धसेन दिवाकर के गुरु। [जैसो. १६५-१६६]

इन्द्रदेवरस— कन्नडी श्रीपालचरित्र के कर्ता। [आरा पृ. ३२]

इन्द्रनन्द— दे. इन्द्रणद।

इन्द्रनन्दि— १. महाचार्य इन्द्रनन्दि, जिनके शिष्य महावरि न कोत्तरि (कोतरिखेड़ा, अहिच्छत्रा, जि० बरेली, उ०प्र०) के पार्श्वपति (ती० पार्श्वनाथ) के लिए कोई दान दिया था या निर्माण करा या कराया था। लेख संस्कृत में हैं, गुप्तकालीन अनुमानतः ५वीं शती ई० या उससे कुछ पूर्व का है, अहिच्छत्रा के खंडहरों में एक पाषाण वेदिकास्तंभ पर उत्कीर्ण है, जिस पर ६ अर्हंत मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण है। कोत्तरि का अर्थ है मंदिरों का ढेर या टीला। [ए. एस. आई. ii. पृ २८; जैशिसं iii. ८४३]

२. साधुशिरोमणि-धीरोन्नत-संयमी इन्द्रनन्दि आचार्य, जिन्होंने मोह विषयादि को जीतकर (श्रवणबेलगोल के) कटवप्र पर्वत पर समाधिमरण किया था —ल० ७०० ई०। [जैशिसं. i. २०५]

३. इन्द्रनंदि मुनि, जो पापग्रहों का निग्रह करने वाले और राजाओं द्वारा पूजित थे, तथा मल्लिषेण-प्रशस्ति में जिनका उल्लेख गगनरेश श्रीपुरुष मुत्तरस 'शत्रुभयंकर' (७२६-७६ ई०) द्वारा सम्मानित विमलचंद्राचार्य के उपरांत और राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्र. शुभतुंग (७५७-७३ ई०) द्वारा सम्मानित परवादि-मल्ल के पूर्व हुआ है —अतः ल० ७५०-७५ ई०। [जैशिसं. i. ५४]

४. जिन इन्द्रनंदि का उल्लेख सिद्धरबसति के शि. ले. में विद्या-नंदि के प्रशिष्य एवं वामनंदि के शिष्य के रूप में हुआ है—

इनके उपरांत क्रमश: अमरनंदि-वसुनंदि-मेघनंदि-माणिक्यनंदि का उल्लेख है। विद्यानन्द का समय ल० ८०० ई० है, और माणिक्यनन्दि का ल० १००८ ई०, अत: इन इन्द्रनन्दि का समय ल० ८५० ई० है। [जैशिसं. i. १०५]

५. जिन इन्द्रनन्दि के शिष्य वासवनन्दि, प्रशिष्य बप्पनन्दि और प्रप्रशिष्य ज्वालिनीकल्प (९३९ ई०) के कर्ता इन्द्रनंदि द्वि. थे। [प्रवी. i. ९१ पृ. १३८]

६. 'ज्वालिनीकल्प' (९३९ ई०) के रचयिता इन्द्रनंदि योगीन्द्र जो बप्पनंदि के शिष्य थे, महाविद्वान और मन्त्रवादी थे— इस ग्रंथ की रचना उन्होंने राजधानी मान्यखेट में राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण तृ० के शासन काल में की थी। [प्रवी. i. ९१; प्रमुख. १०९]

७. वह 'श्रुतसागर-पारग' आचार्य इन्द्रनंदि जिन्हें गोम्मट-सारादि (ल० ९८०) के कर्ता आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्र-वर्ती ने गुरुरूप से स्मरण किया है लब्धिसार (गा० ६४८) में तो स्वयं को स्पष्टतया 'वच्छ' (वत्स या शिष्य) कहा है।

८. प्रसिद्ध 'श्रुतावतार कथा' के रचयिता इन्द्रनंदि– उक्त कथा में उन्होंने वीरसेन-जिनसेन (८३७ ई०)पर्यन्त ही सिद्धांतग्रंथों की टीकाओं आदि का उल्लेख किया है, अतएव इनका समय अनु-मानत: ल० ९५० ई० या १०वीं शती ई० है। [जैसो. ११०, १२३, २२०]

९. छेदपिण्ड नामक प्रायश्चित शास्त्र (श्लो. सं. ४२०) के रचयिता योगीन्द्र इन्द्रनंदि गणी —यह शास्त्र उन्होंने चतु:संघ एवं चतुर्वर्ण के हितार्थ रचा था। [पुजैवासू. १०९]

१०. नीतिसार या नीतिसार-समुच्चय, अपरनाम समयभूषण (श्लो. सं. ११३) के रचयिता इन्द्रनंदि। ग्रंथ में जिन पूर्व-वर्ती आचार्यों का उल्लेख हुआ है, उनमें से, कालक्रम की दृष्टि से, १०वी शती ई० के उत्तरार्ध में हुए सोमदेव और नेमिचन्द्र सि. च. हैं, अत: यह इन्द्रनंदि ल० १००० ई० या कुछ उपरान्त के हैं। [पुजैवासू. ७१]

११. इन्द्रनंदि-संहिता में उल्लिखित वह पूर्ववर्ती पुरातन इंद्रनंदि

जिन्होंने एक पूजाविधि एवं संहिता की भी रचना की थी। [पुजैवासू. १०७]

१२. प्रसिद्ध एवं उपलब्ध प्राकृत 'इंद्रनंदि संहिता' के रचयिता —क्योंकि उन्होंने वसुनंदि और एकसंधि भट्टारक का भी उल्लेख किया है, अतः १२वीं शती ई० के उपरांत हुए होने चाहिएँ। [पुजैवासू. ७१, १०७]

१३. प्रतिष्ठापाठ के कर्त्ता इन्द्रनंदि, जिसका उल्लेख अय्यपार्य ने अपने जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय या विद्यानुवादांग (१३१९ ई०) में किया है, और हस्तिमल्ल के प्रतिष्ठाविधान में भी हुआ है— अतः इन इन्द्रनंदि का समय ल० १२०० ई० है। [प्रसं. १०, १०७; प्रवी. i. ८१]

१४. वज्रपंजराराधना के कर्त्ता इन्द्रनंदि। [प्रसं. ८९]

१५. जिनका उल्लेख प्रवचन-परीक्षा के कर्त्ता पं० नेमिचन्द्र (१५वीं शती ई०) ने अकलंकदेव के पश्चात् और अनन्तवीर्य, वीरसेन, जिनसेन आदि से पूर्व हुए एक ब्राह्मणकुलोत्पन्न पुरातन जैनाचार्य एवं ग्रंथकार के रूप में किया है। [प्रसं. १०१]

१६. इन्द्रनंदि, जिनका उल्लेख वर्धमान मुनि (१५४२ ई०) ने एक पुरातन ग्रंथकार के रूप में, तथा काणूरगण के मुनियों में जटासिंहनंदि के पश्चात और गुणचन्द्र के पूर्व किया है। [जैशिसं. iii. ६६७; प्रसं. १२४, १३२]

१७. वह इन्द्रनंदि, जिनसे कनकनंदि ने, जो नेमिचन्द्र सि. च. के एक गुरु थे, सकलसिद्धान्त को सुनकर अपने सत्त्वस्थान (विस्तर सत्त्वत्रिभंगी) की रचना की थी। [गोम्मट. कर्म. ३९६; पुजैवासू. ७२]

१८. प्रतिष्ठाकल्प और ज्वालिनीकल्प के रचयिता इंद्रनंदि मुनीन्द्र, जो ११८३ ई० के एक शि. ले. के अनुसार विमलचन्द्र और परवादिमल्ल के मध्य हुए थे। [जैशिसं. iii. ४१०]

१९. अनुमानतः १०वीं शती के एक कन्नड शि. ले. में गुणचन्द्र मुनि के साथ उल्लिखित इंद्रनंदि मुनि। [जैशिसं. iv. ११५]

२०. चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२६ ई०) के एक कन्नड शि. ले. के अनुसार मूलसंघ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-

कुन्दकुन्दान्वय के इन्द्रनंदि, जिनके शिष्य बाहुबलि आचार्य ने जिनमंदिर बनवाकर भूमिदान प्राप्त किया था। [जैशिसं. iv. 21.] हम्पी से प्राप्त १२वीं शती के प्रारंभ के एक भग्नस्तंभ पर अंकित कन्नड शि. ले. के अनुसार गोल्लाचार्य के प्रशिष्य, गुणचन्द्र के शिष्य, और नन्दिमुनि एवं कन्ति (आर्यिका श्रीमती कन्ति, प्रसिद्धि कवियत्री) के शायद सधर्मा इन्द्रनन्दि। [जैशिसं. iv. ३१३]

उपरोक्त इन्द्रनंदियों में कई एक परस्पर अभिन्न हो सकते हैं।

इन्द्रपाल— ईद्रपाल, इन्द्रपाल या इंद्रपाल गोप्तीपुत्र ने, जो वीर योद्धा था और पोठय एवं शकों के लिए कालव्याल था, मथुरा में, ईसापूर्व १४-१३ मे अर्हत्पूजा के लिए दान दिया था और उसकी भार्या शिवमित्रा ने एक आयागपट स्थापित किया था। [जैशिसं. ii. ९१०; प्रमुख. ६६]

इन्द्रपालित— सम्राट अशोक मौर्य के पौत्र एवं उत्तराधिकारी जैन सम्राट सम्प्रति का एक उपनाम। [प्रमुख. ४९]

इन्द्रभूति गौतम— समस्त वेद-वेदांग में पारंगत, ब्राह्मणकुलोत्पन्न, गोतमगोत्रीय, तेजस्वी महापंडित इंद्रभूति, जो तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर के प्रथम शिष्य एवं प्रधानगणधर थे। दीक्षा ई०पू० ५५७; केवल ज्ञानप्राप्ति ई० पू० ५२७; निर्वाण ई० पू० ५१५ —तीर्थंकर की वाणी को द्वादशांग श्रुत में निबद्ध करने का श्रेय इन्हें ही है। [भाइ. ५७-५९]

इन्द्रभूपाल— संगीतपुर (हाडुवल्लि, उत्तर कन्नड) का जैन नरेश, जिसे बल्लालजीवरक्षक मंडलाचार्य चारुकीर्ति (ल० ११०० ई०) के प्रशिष्य और श्रुतकीर्ति के शिष्य आचार्य विजयकीर्ति प्र० की कृपा से राज्य सिंहासन प्राप्त हुआ था —ल० १२०० ई० मे। [जैशिसं. iv. ४९०]

इन्द्रभूषण— काष्ठासंघ-नदीतटगच्छ के भ० राजकीर्ति के प्रशिष्य और भ० लक्ष्मीसेन के पट्टधर भ० इन्द्रभूषण, जिनकी आम्नाय के उत्तर-भारतीय बघेरवाल श्रावकों, ने शायद उन्हींके साथ ससंघ आकर, १६६२ ई० मे श्रवणबेलगोल की यात्रा की थी। [जैशिसं. i. ११९]

शायद इन्हीं की गृहस्थ शिष्या दुलणबाई ने, जो गोवलगोत्रीय बघेरवाल जातीय थी, १६२८ ई० में नागपुर में बिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी। ऐसे कई लेखों में इनका उल्लेख है —इनके शिष्य सुरेन्द्रकीर्ति थे। यह कारंजा पट्ट के भट्टारक थे —एक लेख में इन्हें चन्द्रकीर्ति का प्रशिष्य लिखा है। [जैशिसं. iv, पृ. ४०६–४११]

इन्द्ररक्षित— पाला (जि० पूना, महाराष्ट्र) के समीप वन की एक गुहा मे प्राप्त ४ पंक्तियों के ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा के लेख मे अरहंतों को नमस्कार करके, भदंत इंदरखित (इन्द्ररक्षित) द्वारा उक्त लेण (गुहा) तथा वहीं एक पोढि (जलकुण्ड) के बनवाये जाने का उल्लेख है —समय ल० दूसरी शती ई०। [जैशिसं. v. १ पृ. ३]

इन्द्रराज— राष्ट्रकूट वंश का अन्तिम नरेश, इन्द्रचतुर्थ, बड़ा वीर योद्धा पोलो का प्रसिद्ध खिलाड़ी, रट्टकन्दर्प, राजमार्त्तण्ड, कलियलोल्गंड, वीरर वीर, कीर्तिनारायण आदि प्रतापसूचक उपाधियों का धारक, गंगगांगेय का दौहित्र, गंग मारसिंह का भानजा, राजचूडामणि का जामाता, राष्ट्रकूट कृष्ण तृ० का पौत्र। इस वीर ने ९८२ ई० में श्रवणबेलगोल में समाधिमरण किया था। देखिए इन्द्रचतुर्थ राष्ट्रकूट (न० ८) [जैशिसं. i. ३८, ५७; ii १६४; प्रमुख. १११-११२; भाइ. ३०९]

इन्द्रराज— नामक अन्य नरेशों के उल्लेखों को भी 'इन्द्र' के अन्तर्गत देखें।

इन्द्रराज सिंघवी— जोधपुर राज्य का प्रसिद्ध जैन युद्धवीर, सेनापति एवं मन्त्री सर्वाधिकारी, कुशल राजनीतिज्ञ, महाराज विजयसिंह, भीमसिंह और मानसिंह के शासनकालों में राज्य का स्तंभ बना रहा। अन्तिम राजा के समय में, १८१६ ई० में, अपने शत्रुओं के षड-यन्त्र से मारा गया। [प्रमुख. ३३४-३३६]

इन्द्रवामदेव, पंडित— त्रिलोकसार-दीपक प्राकृत (दिल्ली-सेठ का कूंचा, न०४९) के कर्त्ता।

इन्द्राणी— गर्गगोत्रीय अग्रवाल दिग० जैन साहु सोनू की धर्मात्मा भार्या, जिसने १५४३ ई० में वर्द्धमान-काव्य की प्रति लिखकर दान की थी। [प्रसं. १८७]

इन्द्रहंस गणि— श्वे., भुवनभानुचरित्र (१४९७ ई०), बलिनरेन्द्रकथा, और 'मन्ह जिणाण' की कल्पवल्ली टीका के कर्ता।

इन्द्रसेन— संभवतया कारंजा की काष्ठासंघी गद्दी के भ. लक्ष्मीसेन के शिष्य। इन्होंने १६५८ ई० में काष्ठासंघ-लाडवागडगच्छ के भ. प्रतापकीर्ति की आम्नाय के बघेरवाल श्रावकों के लिए बिंब-प्रतिष्ठा कराई थी। संभवतया इन्हीं का अपरनाम इन्द्रभूषण था। [प्रभावक. १०२]

इन्द्रसेन पण्डितदेव— द्रविलसंघ-सेनगण-पोगरगच्छ के आचार्य इन्द्रसेनपण्डितदेव जिन्हें, ११६७ ई० में, आन्ध्रदेश के अधिपति श्रीवल्लभचोल की राजधानी उज्जिवोलल के बहिर्जिनालय के लिए भूमिदान आदि दिये गये थे। मंदिर की मूलनायक प्रतिमा चेन्नपार्श्वदेव थे। [जैशिसं V. १०३, १०४]

इन्द्रायुध— आचार्य जिनसेन पुन्नाट के हरिवंशपुराण (७८३ ई०) के उल्लेखानुसार उससमय उक्त ग्रन्थ के रचनास्थल वर्द्धमानपुर (बदनावर, म. प्र.) की उत्तर दिशा मे इन्द्रायुध का राज्य था —वह कन्नोज के भण्डि या वर्मवंशी नरेश वज्रायुध का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। स्वयं उसका पुत्र एव उत्तराधिकारी चक्रायुध था, जिससे गुर्जरप्रतिहार वत्सराज के पुत्र नागभट्ट द्वि. (आमराज) ने कन्नौज का राज्य छीना था। [भाइ. १५७; जैसो. १९६-२०१; हरिवंश. ६६/५३]

इब्राहिम लोदी— दिल्ली का तीसरा एवं अन्तिम लोदी सुल्तान (१५१७-२६ ई०), सिकन्दर लोदी का पुत्र एव उत्तराधिकारी, कुरुजांगल देश का स्वामि —इसके राज्यकाल मे, १५१८ ई० में, काष्ठा-संघी भ. गुणभद्र की आम्नाय के जैसवाल चोधरी जगसी के पुत्र चौ० टोडरमल ने श्रीचन्द्रकृत उत्तरपुराण-टीका की प्रति कराई थी; १५२० ई० मे योगिनीपुरनिवासी गर्गगोत्री अग्रवाल साहु वीरदास ने फ़ीरोज़ाबाद दुर्ग मे मुनि विमलकीर्ति को सुलोचना चरित की प्रति दान की थी; १५२३ ई० मे सिकदराबाद में भ. जिनचन्द्र के शिष्य भ. प्रभाचन्द्र के शिष्य ब्रह्म बीडा को यशोधर चरित्र की प्रति दान की गई थी; १५२५ ई० मे काष्ठासंघो आम्नाय के एक बसेह निवासी गर्गगोत्री अग्रवाल

श्रावक ने भविष्यदत्तचरित्र की प्रति दान की थी। [प्रज. १४०, १६४, १७२; जैसाइ. ३३६]

इम्मडि भट्टोपाध्याय— विद्यानुशासन (या विद्यानुवाद) नामक ग्रन्थ में उद्धृत एक पूर्ववर्ती जैन ग्रन्थकार। [जैसाइ. ४१७]

इम्मडि कृष्णराज ओडेयर— मैसूर नरेश, ने ९ अगस्त १८३० ई० को श्रवणबेलगोल के भट्टारक चारुकीर्ति स्वामि को सनद दी थी। [जैशिसं. i. १४१, ४३४]

इम्मडि दण्डनायक— होय्सल नरसिंह प्र. के सेनापति माचियण (११५३ ई०) का पिता। [जैशिसं. iv. २४६]

इम्मडि दण्डनायक बिट्टियण्ण— दे. बिट्टियण्ण, बिट्टिदेव, विष्णुदण्डाधिप। [जैशिसं. iii. ३०५; प्रमुख. १४८-१४९]

इम्मडि देवराज ओडेयर— ने १५१४ ई० में अनन्ततीर्थंकर-बसति एवं चौबीस तीर्थंकर बसति को भूदान किया था और १५२२ ई० में तौलवदेशस्थ क्षेमपुर (गेरसोप्पे) में एक ताम्रशासन द्वारा लक्ष्मेश्वर के शंख-जिनालय के लिए देशीगण के चन्द्रप्रभदेव मुनि को भूमिदान दिया था। [जैशिसं. iv ४६२, ४६३; v २३१]

इम्मडि बुक्क— विजय नगर के प्रसिद्ध जैन सेनापति बचप के पुत्र, मन्त्रीश्वर इम्मडि बुक्क ने १३९५ ई० में कुन्थुनाथ चैत्यालय बनवाया, और, दानी, १३९७ ई० के शि. ले. में भी उल्लेख है। [जैशिसं. iv. ४०४; v. १८२]

इम्मडि भैररस— भैरवेन्द्र, भैररसवोडेय, इम्मडिभैररस वोडेर या भैरव द्वि. जो तुलुदेशस्थ कारकल का जिनधर्मी नरेश था, भैरव प्र० (भैरवराज) का भानजा और उत्तराधिकारी था, और जिसने १५८६ ई० में कारकल में गोम्मटदेव की मूर्ति के सामने वाली पहाड़ी चिक्कबेट्ट पर एक भव्य एवं विशाल जिनालय बनवाया था जो रत्नत्रय, सर्वतोभद्र या चतुर्मुख-बसदि और त्रिभुवनतिलक चैत्यालय कहलाया। उसने और भी अनेक धर्मकार्य किये। ये कार्य उसने स्वगुरु, कारकल के भट्टारक ललितकीर्ति मुनीन्द्र की प्रेरणा एवं उपदेश से किये थे। यह राजा धर्मात्मा होने के साथ-साथ बड़ा शूरवीर, प्रतापी, सुशासक, दानशील और विद्यारसिक भी था। [प्रमुख. ३२०-३२१; जैसाइ. २१५]

इम्मडि भैरवरस—सोलुव का जिनधर्मी नरेश, जिसने १५२९ ई० में वरांग की नेमिनाथबसदि के लिए भैरवपुर ग्राम दान किया था। [जैशिसं. iv. ४६१]

इरिव बेडङ्ग— गंगनरेश वीरबेडङ्ग नरसिंह सत्यवाक्य जो कोमर बेडङ्ग एरेयंग नीतिमार्ग (९०७-१७ ई०) का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था और राचमल्ल सत्यवाक्य तृ. (९२०-३७ ई०) तथा प्रतापी गंगनरेश बूतुग (९३७-५३) का पिता था, तथा द्रविलसंघी त्रिकालमौनि भट्टारक के शिष्य मुनि विमलचन्द्र पण्डित का गृहस्थ शिष्य था। [जैशिसं. ii. १४२, १६६; प्रमुख. ७८,७९]

इरिव बेडेंग सत्याश्रय— कल्याणी के उत्तरवर्ती चालुक्य वंश का दूसरा सम्राट, तैलप द्वि. का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, जिनधर्मी नरेश, राज्य-काल (९९७-१००९ ई०), राष्ट्रकूट सम्राट इन्द्रचतुर्थ का प्रति-द्वन्द्वी भी और प्रशंसक मित्र भी, महासती अतिमब्बे के वीर पति नागदेव का भी परम मित्र, रन्न एवं पोन्न नामक कन्नड के महाकवियों का प्रश्रयदाता, वीर, प्रतापी, उदार एवं धर्मात्मा। कहीं-कहीं नामरूप एलेवबेडेङ्ग भी मिलता है। [प्रमुख. ११८; जैशिसं. i. ५७]

इरुग दण्डनाथ— इरुगप प्र०, यिरुगप, इरुगेन्द्र या इरुगेश्वर विजयनगर के प्रारंभिक नरेशों के सर्वप्रसिद्ध जैनमन्त्री एवं महाप्रधान बैच, बैचप या बैचप-माधव का द्वितीय पुत्र, मंगप और बुक्कण नामक दण्डनाथों का भाई, स्वयं प्रसिद्ध दण्डनाथ (सेनापति) और राज्यमन्त्री था। पिता बैचप की मृत्यु के उपरान्त वही सम्राट हरिहर द्वि. (१३७७-१४०४ ई०) का महाप्रधान नियुक्त हुआ। वह जैनाचार्य सिंहनंदि का गृहस्थ शिष्य था। उसने १३६७ ई० में चेलूमल्लूर में एक जिनमंदिर बनवाया था व दान दिया था, १३८२ ई० में तमिल देशस्थ तिरुपतिकुन्रू के त्रैलोक्यवल्लभ जिनालय के लिए एक ग्रामदान किया था १३८५ ई० में राजधानी विजयनगर में अत्यन्त कलापूर्ण पाषाणनिर्मित सुप्रसिद्ध कुन्थुनाथ-चैत्यालय बनवाया जो कालान्तर में गणि-गित्ति-बसदि (तेलिन का मंदिर) नाम से प्रसिद्ध हुआ, १३८७ ई० मे स्वगुरु पुष्पसेन की आज्ञा से काँची के निकट स्वनिर्मापित

मंदिर के सम्मुख भव्य मण्डप बनवाया था और १३९४ ई० में एक विशाल सरोवर का उत्कृष्ठ बाँध बनवाया था। वह एक कुशल अभियंता (इंजीनियर) और भारी विद्वान भी था —नानार्थरत्नाकर नामक महत्त्वपूर्ण संस्कृत कोश उसी की रचना है। लगभग ४० वर्ष साम्राज्य की निष्ठापूर्वक सेवा करके १४०४ ई० के लगभग उसका स्वर्गवास हुआ। [प्रमुख. २६७-२६८; भाइ. ३६७-३६८; जैशिसं. i. ८२; iii. ५७९, ५८१, ५८६, ५८७; iv. ४०३, ४०४; v. १८२, १९२; मेजै. ३०२-३०६]

इरुगप दण्डेश द्वि.— अपने चाचा का नामराशि, विजयनगर साम्राज्य का यह सचिवकुलाग्रणी दण्डाधीश इरुगप द्वि. महाप्रधान बैच-माधव का पौत्र, महाप्रधान-सर्वाधिकारी इरुग प्र० एवं दण्डनायक बुक्कण का भतीजा, और दण्डनाथ मंगप की भार्या जानकी से उत्पन्न अत्यन्त शूरवीर, यशस्वी, कुशल राजनीतिज्ञ और धर्मात्मा था। सम्राट देवराय द्वि. (१४१९-४६ ई०) के तो प्रायः पूरे राज्य-काल में वह साम्राज्य का प्रमुख स्तंभ बना रहा— १४४२ ई० में वह साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण प्रान्त चन्द्रगुप्ति एवं गोआ का सर्वाधिकारी शासक था। वह श्रवणबेलगोल के पीठाध्यक्ष पंडिताचार्य का भक्त था, जिन्हें उसने १४२२ ई० में गोम्मटेश्वर की नित्य पूजा हेतु एक ग्राम दान दिया था तथा एक विशाल सरोवर एवं सुन्दर उद्यान समर्पित किया था। वह अनन्य जिनभक्त और बड़ा सदाचारी था। उसका सहोदर दण्डनाथ बैचप द्वि. भी बड़ा युद्धवीर, विजेता एवं भव्याग्रणी जिनभक्त था। [प्रमुख. २६८; भाइ. ३७१; जैशिसं. i. ८२; मेजै. ३०७]

इक्कोल— १२वीं-१३वीं शती ई० में, मैसूर प्रदेश के उत्तरी भाग के एक हिस्से पर जिनधर्मी निडुगलवंशी राजाओं का राज्य था, जो स्वयं को चोलमहाराज—मार्तण्डकुलभूषण—उरैयूरपुर—वराधीश्वर कहते थे। इनके सुदृढ़ पहाड़ी दुर्ग का नाम कालाजन था। वंश का तीसरा राजा मंगिनृप था। उसके पौत्र गोविन्दर का पुत्र एवं उत्तराधिकारी इरुंगोल प्र० था, जो गुणचन्द्र के

शिष्य नयकीर्ति सि. च. का गृहस्थ शिष्य था, और जिसे विष्णु-वर्धन होय्सल ने एक युद्ध में पराजित किया था। उसके पौत्र इम्मंनृप की रानी बाचलदेवी से, जो कलिवर्म की पुत्री थी, इरुंगोल द्वि. उत्पन्न हुआ था, जिसने १२३२ ई० में अपने आश्रित गंगेयन मारेय के निवेदन पर उसके द्वारा निर्मापित जिनालय के लिए भूमिदान दिया था। इसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी इरुंगोल तृ. (इरुंगोलदेव-चोल महाराज) था, जिसने १२७८ ई० में मल्लिसेट्टि द्वारा निर्मापित जिनालय के लिए प्रभूत दान दिया था। निडुगलवंश के इरुंगोल नामक ये तीनों ही राजा परम जैन थे। [प्रमुख. १९३-१९४; जैशिसं. i. १३८; ii. ३०१; iii. ४७८; iv. ६२१-६२२; मेजै. २१०]

इरुंगोल-प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय— दे. इरुङ्गोल।

इलपेद मानविषल, वर्धमान— जैनाचार्य, जिन्हें चोल नरेश परकेसरिवर्मन (राजेन्द्र प्रथम) के राज्य के तीसरे वर्ष में ग्रामादि दान दिये गये थे —ल० १००० ई०। [जैशिसं. iv. १२१]

इलाड महादेवी— चोलसम्राट राजराज-केशरीवर्मन के राज्य के ८वें वर्ष में, अर्थात ९९२ ई० में उसके सामन्त जिस इलाडराज (लाटराज) वीर चोल ने तमिलदेशस्थ पचपाडवमलै के प्रसिद्ध चैत्यालय के लिए दानशासन दिया था, उसकी दानशीला धर्मात्मा रानी-उस रानी की प्रार्थना पर ही वह दान दिया गया था। [जैशिसं. ii. १६७]

इलाडराज वीरचोल— इलाड महादेवी (९९२ ई०) का पति, राजा। [जैशिसं. ii. १६७]

इलाडै अरैयन तिरुवडि— तमिलदेशस्थ अनुदूरनाडु के एलुमून ग्राम का निवासी, जिसकी धर्मात्मा पत्नी तिरुनंगै ने श्री नामुलूर के मंदिर में, १०वीं शती ई० में, एक जिनबिंब प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. v २४]

इलैयभटारर— मुनिराज ने, १०वीं शती ई० मे, शिगवरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास) में ३० दिन के उपवासोपरान्त समाधिमरण किया था। [जैशिसं. v. २५]

इलम्पूर्णर— तोलकप्पियम नामक प्राचीन तमिल व्याकरण का प्रथम टीकाकार, तमिल जैन विद्वान।

इलंगोवडिगल— या इलङ्गोवडिगल, वञ्जी के चेरनरेश चेरलादन के पुत्र, राजा सेगुंत्तवन के अनुज, मणिमेकलइ के कर्त्ता बौद्धकवि कुलवणिगनशात्तन के मित्र, और प्रसिद्ध प्राचीन तमिल जैन महाकाव्य शिलप्पदिकारम् के रचयिता जैन राजकुमार —अंततः जैन मुनि हो गये थे, समय ल० १५० ई०।

इलंगौतमन— अपरनाम मदिरै आशिरियन ने, ९वीं शती ई० में, पांड्यनरेश अवनिपशेखर श्रीवल्लभ के राज्यकाल में सित्तनवासल (पुदुकोट्टे, मद्रास) के अर्हंत मंदिर के अंतरमण्डप का जीर्णोद्धार और बाह्यमंडप का निर्माण कराया था। [जैशिस. iv. ६२]

इसहल— महाकवि स्वयंभू (ल० ८०० ई०) द्वारा उल्लिखित प्राकृत भाषा के पूर्ववर्ती पुरातन कवि। [जैसाइ. ३८५]

इंगरसओडेय— हाडुवलिय राज्य के शासक संगिराय के पुत्र एवं उत्तराधिकारी, जिनके समय में, १४५० ई० में, बैंदूर की पार्श्वनाथ बसति के लिए अनेक दान दिये गये थे। [जैशिसं. iv. ४४१] —शायद यह इन्दगरस का पितामह और सांगिराय का पिता इंद्र ही था —दे. इन्दगरस।

इंदरक्षित— दे. इन्द्ररक्षित।

ई

ईचण— होय्सल नरेश वीर बल्लाल द्वि. (११७३-१२२० ई०) का प्रसिद्ध सन्धिविग्रहिक मंत्री। वह तथा उसकी साध्वी भार्या सोमलदेवी (या सोवलदेवी) परम जिनभक्त, धर्मात्मा एवं दानशील थे। इस दम्पति ने १२०५ ई० में गोग्गनामक स्थान में वीरभद्र नामका अति सुन्दर जिनालय बनवाया था, जो पूरे बेलगवत्तिनाड में अद्वितीय था और १२०७ ई० में उसके लिए स्वगुरु वासुपूज्य देवको अनेक दान दिये थे, और एक निर्धन

कन्या का विवाह भी कराया था। [प्रमुख.- १६१-१६२; जैशिसं. iii. ४५१, ४५५, ४५६]

ईदलशाह— श्वेताम्बर मुनि शीलविजयगणि की दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा के समय (ल० १६८३ ई०) में बीजापुर का सुल्तान सिकन्दर आदिलशाह जो अली आदिलशाह द्वि. का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। [जैसाइ. २१७; भाइ. ४४४]

ईल— जिनधर्म का अनुयायी विदर्भनरेश ईल, अपरनाम ऐल (१०८५ ई०) जैनाचार्य अभयदेवसूरि का भक्त था, एलउर (एलोरा) उसकी राजधानी थी, जिसकी प्रसिद्धि उसके बहुत समयपूर्व से ही एक महत्त्वपूर्ण जैन तीर्थक्षेत्र के रूप में रहती आई थी। [प्रमुख २२३]

ईशनंदि, पंडित— देवगढ़ (जि० ललितपुर, उ० प्र०) के मंदिर न० १६ के शि. ले. में पं० लक्ष्मनंदि और पं० श्रीचन्द्र के साथ उल्लिखित पं० ईशनंदि। [जैशिसं. v-पृ. ११८]

ईशानकवि— पुष्पदंत के महापुराण (९६५ ई०) में अपभ्रंश के एक पुरातन कवि के रूप में बाण, द्रोण एवं श्रीहर्ष के साथ उल्लिखित—स्वयं बाण ने भी हर्षचरित में भाषाकवि ईशान का उल्लेख किया है। [जैसाइ. ३२५, ३७१]

ईशान योधि— कित्तूरसंघ के आचार्य योगिराज ईशान ने, ल० ७०० ई० में श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि पर पंचपरमेष्ठि की भक्ति पूर्वक समाधिमरण किया था। [जैशिसं i. १९४]

ईश्वर— चालुक्य सम्राट विक्रमादित्य षष्ठ के समय के १०८१ ई० के लक्ष्मेश्वर शि. ले. में, पुलिगेरे के महासामन्त एरेमय्य के बन्धु दोण द्वारा सेनगण के आचार्य नरेन्द्रसेन द्वि. को दिये गये दान में सहयोगी वैद्यराज कश्यप के द्वितीयपुत्र, और इन्दप, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति एवं पार्श्व के भ्राता धर्मात्मा श्रावक [जैशिसं. iv. १६५]

ईश्वर कृष्ण वार्षगण्य— सांख्यकारिका के कर्त्ता, जिनका उल्लेख जैनेन्द्र एवं शाकटायन जैसे जैन व्याकरणों में हुआ है —समय अनुमानतः १ली-से ४थी शती ई०। [जैसाइ. २१८-१९]

ईश्वर चमूप— होय्सल नरेश नरसिंह प्रथम (ल० ११४१-७३ ई०) का एक सुयोग्य, स्वामिभक्त जैन वीर योद्धा, सेनानी एवं मन्त्री, महा-प्रधान सर्वाधिकारी दण्डनाथ एरेयंग का पादपद्मोपजीवी (सहायक या अधीनस्थ), शायद पुत्र भी, और उस धर्मात्मा दानशीला नारीरत्न माचियक्के का पति जो देशीगण के गण्ड-विमुक्तदेव की गृहस्थ शिष्या थी और जिसने ११६० ई० में तीर्थक्षेत्र मयबोलल पर एक मनोरम जिनालय तथा पद्मावतीकेरे नामक सरोवर का निर्माण कराया था और महाराज नरसिंह की सहमतिपूर्वक बहुतसा भूमिदान दिया था। स्वयं चमूपति ईश्वर ने भी मन्दारगिरि की प्राचीन बसदि (जिनमंदिर) का जीर्णोद्धार कराया था। [प्रमुख १५०, १५३; मेजै. १४०, १४६-१४७, १६८; जैशिसं. iii. ३५२; एक. xii. ३८]

ईश्वरदास— मालवा के सुलतान ग़यासुद्दीन का गजपाल (हस्तिशाला का अध्यक्ष) था और धर्मात्मा जैन था —भ० श्रुतकीर्ति ने अपनी धर्मपरीक्षा (१४९५ ई०) तथा परमेष्ठिप्रकाशसार (१४९६ ई०) में उसका उल्लेख किया है। [प्रमुख. २४६]

ईश्वरभट्ट— धर्मपुर (बीड, महाराष्ट्र) की सेट्टिय बसदि के प्रमुख, यापनीय संघ वंदियूरगण के महावीर पण्डित को दिये गये दान की प्रशस्ति का लेखक —ल० ११वीं शती ई०। [जैशिसं v. ६९-७०]

ईश्वरलाल— १. सोनागिर (दतिया, म० प्र०) के मंदिर न० १८ के १८६६ ई० के शि. ले. में भ. चारुचन्द्रभूषण के साथ, कोलारस निवासी मीतलगोत्री अग्रवाल दिग. जैन चौधरी रामकिशन और लाली-राम के भाई ईश्वरलाल के रूप में उल्लिखित। [जैशिसं. v, पृ. ११४]

२. कटक के मंजु चौधरी और भवानी चौधरी की सन्तति में, तुलसी दादू की दौहित्री सोनाबाई का दत्तकपुत्र, जो १९१२ ई० में विद्यमान था। [प्रमुख. ३४९]

ईश्वरसूरि— १. सांडेरगच्छी श्वे. आचार्य, यशोभद्रसूरि (ल० ९११-७२ ई०) के गुरु। [जैमोइ. iii. ५३०, ६८५]

२. शान्तिसूरि के शिष्य ईश्वरसूरि ने मांडू के सुलतान नासिरुद्दीन के जैन मन्त्री मलिक माफर के कृपापात्र और श्रीमाल जातीय सोनाराय जीवन के पुत्र, मन्त्री पुञ्ज के अनुरोध से, १५०४ ई० में, हिन्दी पद्य के ललितांगचरित्र की रचना की थी। [काहि. ६७-६८; प्रमुख. २४६]

३. आहडगच्छी ईश्वरसूरि ने १३६४ ई० में जैसलमेर में सुमतिनाथ बिम्ब प्रतिष्ठा की थी। [कैच. ६८]

४. संडेरकगच्छी ईश्वरसूरि ने १४५८ ई० में काश्यपगोत्री श्रावक चूडा के लिए नेमिनाथ बिम्ब प्रतिष्ठा की थी। [कैच. ९८]

ईश्वरसेन— हरिवंशपुराण (७८३ ई०) में प्रदत्त पुन्नाटसंघ की परम्परा में, नन्दिषेण द्वि. के शिष्य और नन्दिषेण तृ. के गुरु।

ईश्वरीप्रसाद— या ला० ईश्वरी प्रसाद दिल्ली के सरकारी खजांची सालिगराम के वंशज, और धर्मदास खजांची के पुत्र (या अनुज) थे, १८७७ ई० में पुरानी दिल्ली क्षेत्र के सरकारी खजांची बने, दिल्ली बैंक एवं लन्दन बैंक के भी खजांची थे, नगरपालिका के सदस्य एवं कोषाध्यक्ष, आन. मजिस्ट्रेट व वायसराय के दरबारी भी थे। उनके अनुज अयोध्याप्रसाद भी सरकारी खजांची थे, और सुपुत्र रायबहादुर पारसदास थे— अग्रवाल, दिग.। [प्रमुख. ३६०]

उ

उकेशोषधि— कल्याण मंदिर-स्तोत्र वृत्ति के कर्त्ता, संभवतया श्वे.। [दिल्ली धर्मपुरा दि. मंदिर की प्रति]

उचिकसेट्टि— और एकब्बे के पुत्र तथा नयकीर्ति व्रतीश के शिष्य नाभिसेट्टि ने ल० १२०० ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिसं. iv. ३७९]

उग्रसेन— १. मथुरा का यदुवंशी नरेश, वसुदेव की पत्नी और कृष्ण की जननी देवकी का तथा कंस का पिता।

२. जूनागढ़ का नरेश, ती. अरिष्टनेमि की वाग्दत्ता राजीमती (राजुल) का पिता।

३. सिकन्दर महान के समकालीन मगध नरेश महापद्मनन्द का अपरनाम। [प्रमुख. ३१, ३३]

४. सहारनपुर के जैन रईस ला० उग्रसेन (ल० १९०० ई०), जिनके दत्तक पुत्र ला० जम्बूप्रसाद रईस थे। [प्रमुख. ३६४]

उग्रसेनगुरु— मालनूर के पट्टिनीगुरु के शिष्य, जिन्होंने, ल० ७०० ई० में, एक मासतक सन्यास व्रत (सल्लेखना) का पालन करके श्रवण-बेलगोलस्थ चन्द्रगिरि पर प्राणोत्सर्ग किया था। संभवतया सेन संघ के आचार्य थे। [जैशिसं. i.८ एक. ii. २५; देसाई २३२]

उग्रादित्य आचार्य— आयुर्वेदशास्त्र के महत्त्वपूर्ण, मौलिक एवं सांगोपांग ग्रन्थ 'कल्याणकारक' के रचयिता, जो संस्कृत पद्य में निबद्ध, दो खंडों और २५ अधिकारों में विभाजित है, जिसके अतिरिक्त अन्त में दो परिशिष्ट हैं —प्रथम में अरिष्टविचार (मरणांतिक लक्षणों) का वर्णन है और दूसरे हिताहित-अध्याय में वैद्यकशास्त्र तथा आहार आदि में मांसनिराकरण का प्रमाण एवं युक्तिसिद्ध प्रतिपादन है। यह आचार्य मूलसंघ-कुन्दकुन्दान्वय में देशीगण-पुस्तकगच्छ-पनसोगवल्लि शाखा के आचार्य श्रीनंदि के शिष्य और ललितकीर्ति के सधर्मा थे। आचार्य श्रीनंदि रामगिरि (आन्ध्रदेशस्थ विशाखापटनम् जिले का रामतीर्थ या रामकोण्ड पर्वत) के विशाल जैन विद्यापीठ के अधिष्ठाता थे —वहीं उग्रादित्य ने विद्याध्ययन किया था। तदनन्तर गुरु के आदेश से वहीं उन्होंने वेंगि के पूर्वी चालुक्य नरेश विष्णुवर्धन चतुर्थ (७६२-९९ ई०) के शासनकाल में उक्त वैद्यक महाशास्त्र की रचना की थी। कालान्तर में मान्यखेट के राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष प्रथम (८१५-७७ ई०) की राजसभा में मांसाहार-निषेध पर जो व्याख्यान दिया था, उसे हिताहिताध्याय के रूप में परिशिष्ट में जोड़ दिया। इस ग्रन्थ में आयुर्वेद का मूल जिनोक्त द्वादशांगी के प्राणवायपूर्व को सूचित करते हुए अनेक पूर्ववर्ती जैन आयुर्वेदाचार्यों और उनके ग्रन्थों का भी संकेत

किया है। कल्याणकारक के कर्ता इन उग्रादित्याचार्य का समय लगभग ७९० से ८३० ई० के मध्य अनुमानित है। मुनीन्द्र, पण्डित, महागुरु आदि इनकी उपाधियाँ थीं। [जैसो. २०४-२०६; प्रमुख. ९४; मेजै. २६७]

उग्रादित्य मुनि— दिग., ल० १००० ई०, अमरसुन्दरी, भिषक्प्रकाश, कनक-दीपक, एवं रामविनोद नामक संस्कृत वैद्यक ग्रन्थों के रचयिता।

उच्चारणाचार्य— ने कसायपहुड आगम की यतिवृषभाचार्य (ल० १३०-१८० ई०) कृत चूर्णियों पर बारह सहस्र श्लोक परिमाण वृत्तिसूत्र रचे थे, ल० २५० ई० में। [पुजैवासू. २०]

उजागरमल डिप्टी— मेरठ (उ० प्र०) निवासी दिग० अग्रवाल, १९वीं शती ई० के उत्तरार्ध में डिप्टी कलेक्टर थे तथा अच्छे समाजसेवी थे— मेरठ शहर के बड़े दिग. जैन मंदिर के लिए भूमि आदि दिलाने तथा उसका निर्माण कराने में सहायक रहे थे, समाज के प्रमुखों में से थे। [प्रमुख. ३५७]

उज्जवल— ११७० ई० में बिजोलिया पार्श्व-जिनालय के प्रतिष्ठापक साहु-लोलाक का अनुज। [जैशिसं. iv. २६५; प्रमुख. २०६]

उज्ञतिका— ल० १७७ ई० में, किसी कुषण महाराजा-राजातिराज (संभवतया वासुदेव) के शासनकाल में, मथुरा के अर्हतायतन (जिनमंदिर) में ओखारिका की पुत्री उज्ञतिका ने श्राविका भगिनी (साध्वी) ओखा, शिरिक एवं शिवदिन्ना के सहयोग से भगवान महावीर की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी -नामों से उल्लिखित महिलाएँ शक या पह्लव जातीय विदेशी रही प्रतीत होती हैं। [जैशिसं. ii. ८८; जे. आर. ए. एस. १८९६ पृ. ५७८-५८१]

उडैयार मल्लिषेण— दिगम्बराचार्य, ल० ११०० ई० की कुलोत्तुंग चोल प्र० की प्रशस्ति में उल्लिखित। [जैशिसं. iv. १७३]

उडैयार राजेन्द्र चोलदेव— अपरनाम कोपरकेसरिवर्मन के राज्य के १२वें वर्ष, १०७३ ई० में, तिरुमलै (पवित्र पर्वत) पर स्थित कुन्दवै-जिना-लय के लिए दानादि दिये गये थे। [जैशिसं. ii. १७४; साइइ. i. ६७]

उत्तमचि अडिगल— तमिल देश के तिरुनेडुम्बुरई नामक स्थान में स्थित काट्टा-

म्बल्लि जैनमठ के आचार्य, ल० ९वीं शती ई०, ने कतिपय मूर्तियां बनवाकर स्थापित की थीं। [देसाई. ६९]

उत्तमचन्द— जगतसेठ के वंशज डालचन्द और उनकी विदुषी भार्या रतन कुंवारि के पुत्र, तथा राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (ल० १८५०-७० ई०) के पिता, वाराणसी निवासी। [प्रमुख. ३५५[

उत्तमचन्द भंडारी— जोधपुर निवासी, महाराज मानसिंह के समकालीन, ल० १८०० ई० में, अलंकार-आशय नामक ग्रन्थ की रचना की थी, इनके भाई उदयचन्द भी अच्छे लेखक थे। [कुशल, अप्रैल ८८, पृ ४०]

उत्तरदासक— आचार्य महारक्षित के शिष्य और वात्सीमाता के पुत्र श्रावक उत्तरदासक ने ईसापूर्व १५० के लगभग मथुरा मे जिनमंदिर का तोरण बनवाया था। [जैशिसं. ii. ४; एइ. ii १४]

उत्तरासंग भट्टारक— मूलसंघ-सूरस्थगण-चित्रकूटान्वय के कनकनन्दि भट्टारक के शिष्य, तथा भास्करनंदि, श्रीनंदि एवं अरुहनंदि के गुरु, और उन आर्यपण्डित के प्रगुरु जिन्हें चालुक्य सोमेश्वर द्वि. के महा-मंडलेश्वर लक्ष्मरस ने पोन्नुगुंड (हुनगुंड) की अरसर-बसदि नामक जिनालय के लिए १०७४ ई० मे प्रभूत दान दिया था। [देसाई. १०७-१०८]

उत्पलराज— दे. गुंज, मालवा का परमार नरेश, ल० ९७५ ई०।

उदय— १. सोन्दत्ति के रट्ट नरेश कार्त्तवीर्य चतुर्थ के धर्मात्मा जैनमन्त्री बीचण (१२०४ ई०) का पिता। [जैशिसं iv. ३१८, ३१९]

२. धोलका में ल० ११७५ ई० में वादिदेवसूरि से सीमधर स्वामि की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराने वाला धर्मात्मा श्रावक [कैच. २०६]

उदयकरण— १. कविवर बनारसीदास (ल० १५८३-१६४३ ई०) के साथी, अध्यात्मरसिक विद्वान, जो निश्चयैकान्त के प्रभाव मे पथभ्रष्ट हो गये थे —पांडे रूपचन्द ने इन लोगों का मिथ्याभिनिवेश दूर किया था। [दे. अर्धकथानक]

२. यति शीलविजय (१६९१ ई०) के उल्लेखानुसार गोलकुण्डा के ओसवाल धनकुबेर देवकरणशाह के धर्मात्मा भ्राता। [जैसाइ. २३१]

३. नेवटा निवासी गोयलगोत्री अग्रवाल संघपति उदयकरण, आमेर के भ. नरेन्द्रकीर्ति के भक्त, १६५२ ई० में ससंघ गिरनार की यात्रा की और वहां एक प्रतिष्ठा कराई। [प्रमुख. २९५; कैच. ८२]

उदयकीर्ति— १. प्राकृत निदुषसप्तमीकथा के रचयिता बालचन्द्र के गुरु। [दिल्ली पंचायती मंदिर की प्रति]

२. श्वे., १६२४ ई० में विमलकीर्तिकृत 'पदव्यवस्था' नामक व्याकरण की टीका लिखी थी।

३. दिग., सद्दन्नकीर्ति के शिष्य, ल० ११५० ई० में संस्कृत में पुष्पाञ्जलिकाव्य एवं निर्वाणपूजा रची थी।

उदयचन्द— १. दिल्ली निवासी, गर्गगोत्री अग्रवाल दिग. जैन धर्मात्मा सेठ दिउढासाहु (१४४३ ई०) का पौत्र और वीरदास का पुत्र उदयचन्द। [प्रमुख. २४३]

२. साह उदयचन्द गोहिलगोत्री पोरवाड ने भ. धर्मकीर्ति के उपदेश से १६१४ ई० में उदयगिरि पर नंदीश्वर चैत्यालय की प्रतिष्ठा कराई थी। [जैशिसं. iv-नागपुर का लेख न. ६२]

उदयचन्दभंडारी— उत्तमचन्द भंडारी के भाई, १८०७-१८४३ ई० के बीच लगभग ५० छोटी बड़ी हिंदी रचनाओं के कर्ता [कुशल. ४०]

उदयचन्द्र— १. वर्धमानमुनि (१५४२ ई०) द्वारा नन्दिसंघ-बलात्कारगण की परम्परा मे उल्लिखित वासुपूज्य मुनि के शिष्य, कुमुदचन्द्र (कुमुदेन्दु) के गुरु और माघनंदि के प्रगुरु– माघनंदि के शिष्य कुमुदचंद्र पंडित का समय १२०५ ई० है। [प्रस. १३३; जैशिसं. iv. ३४२. ३७६]

२. देशीगण-पुस्तकगच्छ के माघनंदि सिद्धांत के शिष्य और गुणचंद्र, मेघचंद्र तथा चंद्रकीर्ति के सधर्मा, नैयायिक, मीमांसक, बौद्धादि वादियों पर विजय पानेवाले पण्डितदेव उदयचंद्र— गुणचंद्र के शिष्य नयकीर्ति का स्वर्गवास ११७७ ई० में हुआ था। [जैशिस. i. ४२]

३. श्रवणबेलगोल के १३९८ ई० के शि. ले. मे देवचंद्र और रविचन्द्र के मध्य उल्लिखित उदयचंद्र। [जैशिसं. i. १०५]

४. महामण्डलाचार्य उदयचंद्रदेव, जिनके शिष्य मुनिचंद्रदेव ने

१२७८ ई० में, अन्य लोगों के सहयोग से श्रवणबेलगोल की भण्डारि-बसदि के देवर बल्लभदेव की पूजाभिषेक के लिए अर्थ-संग्रह कराया था। [जैशिसं. i. १३७]

५. श्वे., ल० १८वीं शती में संस्कृत में पाण्डित्यदर्पण नामक ग्रंथ लिखा था। [कैच. १५७]

६. खजुराहो के प्रसिद्ध जिनमंदिर निर्माता गृहपतिवंशी पाहिल्ल श्रेष्ठि का पौत्र, और साहु साल्हे (११५८ ई०) का एक पुत्र। [जैशिसं. iii. ३४१; प्रमुख. २२७]

७. श्वे., खरतरगच्छी साधु ने बीकानेर में, १६७१ ई० में, अनूप-रसाल तथा बीकानेर-गजल राजस्थानी हिन्दी में रची थीं।

८. शास्त्रसारसमुच्चय-टीका (१२६० ई०) के कर्त्ता माघनंदि के प्रगुरु —दे. उदयेन्दु।

९. मूलसंघ-बलात्कारगण के कुमुदचन्द्र के प्रशिष्य, वासुपूज्य के शिष्य और त्रिभुवनदेव के गुरु उदयचन्द्र, ल० ११७५ ई०। [देसाई. ११७]

१०. गुजरात के जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) से सम्मानित विद्वान श्वे. साधु, आचार्य हेमचन्द्र के शिष्य या सहयोगी। [प्रमुख. २३१]

११. गावरवाड के १०७०-७१ ई० के शि. ले. में उल्लिखित अण्णिगेरे की प्राचीन गंगपेर्म्मानडि बसदि के व्यवस्थापक सकलचन्द्र के गुरु मूलसंघी उदयचन्द्र। [जैशिसं. iv. १५४]

उदयण— विष्णुवर्द्धन होयसल के स्नेहपात्र बालवीर जैन दण्डाधिनाथ विष्णु का अग्रज, और राज्यमंत्री चिन्नराज एवं चंदले का पुत्र, एक वीर जैन सेनानी। [प्रमुख. १४८; मेजै. १३८]

उदयदेव पण्डित— देवगण के पूज्यपाद आचार्य अकलंकदेव के गृहीशिष्य और वातापी के चालुक्य नरेश विनयादित्य (६८०-६९८) के राजगुरु निरवद्य पंडित के शिष्य एवं उत्तराधिकारी थे, और चालुक्य विजयादित्य द्वि. (६९७-७३३ ई०) के राजगुरु थे। उक्त नरेश इन्हें ७०० ई० (या ७२९ ई० में) में लक्ष्मेश्वर के शङ्ख-जिनालय के लिए कर्दमग्राम दान दिया था। जयदेव, रामदेव,

विजयदेव आदि इन्हीं की परम्परा में हुए। [प्रमुख. ९१; देसाई. ३८९; मेजै. ४१-४२; जैशिसं. ii. ११३]

उदयदेव— पं० आशाधर के भक्त खंडेलवालश्रावक हरदेव के धर्मात्मा अनुज। [जैसाइ. १४१; प्रमुख. २१२]

उदयधर्म— १. श्वे., १४५० ई० में वाक्यप्रकाश नामक व्याकरण शास्त्र की रचना की थी।

२ उदयधर्मगणि, श्वे., ने १५४४ ई० में उपदेशमाला की ५१ वीं कथा पर शास्त्रार्थवृत्ति, तथा १५५३ ई० में शान्तिसूरिकृत जीवविचार की वृत्ति लिखी थीं।

उदयन— १. महावीर कालीन कौशाम्बी नरेश वत्सराज शतानीक का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, चेटक पुत्री सती मृगावती का नन्दन, प्रद्योतसुता वासवदत्ता का प्रेमी, गजविद्याविशारद, प्रसिद्ध वीणा वादक, कलारसिक, धीर वीर जिनभक्त नरेश जो अनेक प्राचीन लोककथाओं का नायक है। [प्रमुख. ११]

२. उदयन या उदायन, महावीर कालीन तथा महावीर भक्त नरेश जो राजधानी वीतभयपट्टन से सिन्धु-सौवीर देश पर राज्य करता था, जिसकी रानी चेटक दुहिता प्रभावती थी, पुत्र अभीचिकुमार था —राजा, रानी, राजकुमार तीनों ने अन्ततः जिनदीक्षा ले ली थी। [प्रमुख. १२-१३]

३. गुजरात के सोलंकी नरेशों, जयसिंह सिद्धराज (१०९४-११४३ ई०) तथा कुमारपाल (११४३-७३ ई०) का प्रसिद्ध जैन राज्यमन्त्री तथा वीर सेनानी। उसके चारों पुत्र, आहड, बाहड, अम्बड और सोल्ला भी राज्य के मन्त्री और प्रचंड सेनानायक थे। मन्त्रीराज उदयन ने ही सोरठ के राजा खेंगार को पराजित किया, जयसिंह को चौलुक्य-चक्रवर्ती विरुद दिलाया था और कर्णावती में भव्य जिनालय निर्माण कराके उसमें ७२ बहुमूल्य मूर्त्तियाँ प्रतिष्ठापित की थीं। वह चिरकाल खंभात का राज्यपाल भी रहा था। [प्रमुख. २३१; भाइ. २०७; गुच. २५८, २६०, २६४-२७६; कैच. २१३-२१४]

उदयनन्दि— देवगढ़ (जि० ललितपुर, उ० प्र०) के मंदिर न० २० के शि० ले० में उल्लिखित दिग० मुनि —साथ में त्रिभुवनचन्द्र, कनक-

नन्दि, आचार्य वीरचन्द्र और त्रिभुवनकीर्ति के नाम भी हैं। [जैशिसं. V. पृ. ११९]

उदयनन्दिसूरि— श्वे. तपागच्छी साधु, रत्नशेखर सूरि के शिष्य और इन्द्रनन्दि-सूरि के दीक्षागुरु, ल० १४७५ ई०। [जैसिभा. १८/१-२, पृ. १६]

उदयपाल— महासामंत ने देवगढ़ (ललितपुर, उ० प्र०) में, ११५४ ई० में जिनालय (वर्तमान न० ७) निर्माण कराया था। [जैशिसं. V. ९९]

उदयपुत्रहर्ष— पंचमी-व्रत-उद्यापन के कर्त्ता। [दिल्लीधर्मपुरा मंदिर की प्रति]

उदयप्रभसूरि— १. राजा भाण के गुरु, सोमप्रभसूरि के समकालीन, भिन्नमाल निवासी श्वे० साधु।

२. सुकृतकल्लोलिनी, धर्माभ्युदयकाव्य, नेमिनाथचरित्र, आरंभ-सिद्धि, षडशीति एवं कर्मस्तव के टिप्पण, और धर्मदासकृत उपदेशमाला की कर्णिका नाम्नी टीका (१२४२ ई०) के कर्त्ता श्वे० विद्वान, मन्त्रीश्वर वस्तुपाल के विद्वन्मंडल के सदस्य। [गुच. ३०९; कैच्व. २१८]

३. विजयसेन के शिष्य और स्याद्वादमंजरी (१२९२ ई०) के कर्त्ता मल्लिषेण के गुरु। संभवतया न० २ से अभिन्न हैं। वस्तुपाल-तेजपाल के गुरु। [कैच.१७९]

४. श्रीमाल के राजा विजयन्त तथा ६२ सेठों को जैनधर्म में दीक्षित करने वाले आचार्य। [कैच. १००]

उदयप्रभसूरि— श्वे०, बृहद्गच्छीय साधु, ल० ७१८ ई०।

उदयभाण— सिरोही के राजा अखैराज का जैनधर्म पोषक युवराज, १६४१ ई०। १६६१ ई० में उसने आदिनाथ बिम्बप्रतिष्ठा कराई थी। [प्रमुख २९४; कैच. ३७]

उदयभूषण— या उदयद्भूषण, गोविन्दभट्ट के पुत्र और नाट्यकार हस्तिमल्ल (१३वीं शती ई०) के भाई, विद्वान श्रावक। अय्यपार्य द्वारा जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय की प्रशस्ति में उल्लिखित। [प्रवी. i. ८९]

उदयमती— गिरनार के नरवाहन खेंगार की पुत्री और गुजरात के भीम प्र०

सोलंकी की पट्टरानी, कर्णसोलंकी की जननी –११वीं शती ई० । [गुच. २४१, २४८, ३३९]

उदयमार्तण्डवर्मन् वृत्तलवीर— ट्रावन्कोर नरेश, जिसने १५२१ ई० में, नागर-कोयिल के जिनमंदिर के लिए कमलवाहन पंडित और गुणवीर पंडित नामक दिग. जैन गुरुओं को भूमिदान दिया था। [देसाई. ७०]

उदयरत्न कवि— पञ्चषट्हरास का रचयिता। [कैच. १००]

उदयराज— लम्बकंचुकान्वयी के भाई अर्जुनसेन ने भ. राजेन्द्रभूषण के उपदेश से १८६८ ई० में सोनागिर में जिनालय निर्माण कराया था। [जैशिसं. V. ३०१]

उदयराज— दूबकुण्ड (ग्वालियर प्रदेश) के १०८८ ई० के शिलालेख (दान-शासन) का रचयिता। [जैशिसं. ii. २२८]

उदयराजजती— बीकानेर नरेश रायसिंह का आश्रित जैनकवि, जिसने १६०१ ई० में 'राजनीति के दोहे' नामक पुस्तक लिखी थी। [काहि. १३२] खरतरगच्छी, गच्छी उदयराज जो वैद्यविरहिणी प्रबन्ध (५०० दोहे) के कर्त्ता हैं, संभवतया यही हैं।

उदयविजयगणि— ने १५९७ ई० में सं० पार्श्वनाथ चरित्र की रचना की थी। [कास. १४९]

उदयविद्याधर— अपरनाम लोकविद्याधर या विद्याधर, राजा धोर का पुत्र और गंगनरेश रक्कसगंग का भानजा एवं पोष्यपुत्र, तथा वीरा-गना सावियब्बे का शूरवीर पति। वीरमार्त्तण्ड चामुण्डराय (ल० ९५०-९९० ई०) की ओर से एक युद्ध में लड़ते हुए इन दोनों पति-पत्नि ने वीरगति पाई थी। [प्रमुख. ८४-८५]

उदयश्री— चन्द्रवाड के प्रसिद्ध जैन राज्यमन्त्री वासाधर (१३९७ ई०) की अत्यन्त दानशीला धर्मात्मा भार्या। [प्रमुख. २४९]

उदयसागर— श्वे., ल० १५५० ई०, उत्तराध्ययनदीपिका के कर्त्ता।

उदयसिंग— श्रवणबेलगोल के एक यात्रा लेख में उल्लिखित उत्तरापथ का एक यात्री। [जैशिसं. i. ३४८]

उदयसिंह— १. नाडोल का जिनधर्मी चाहमान नरेश, समरसिंह का उत्तरा-धिकारी, ल० १२०० ई०। [कैच: २२]

२. डूंगरपुर-बांसवाड़ा का जिनधर्म पोषक नरेश, रावल गंगदास का उत्तराधिकारी, ल० १५१४ ई० । [कैच. ३४]
३. सिरोही का जैनधर्म पोषक नरेश, ल० १५६५ ई० । [कैच. ३७]

उदयसिंह, राणा— मेवाड़नरेश, राणा सांगा के पुत्र और राणा प्रताप के पिता —बाल्यावस्था में इसकी रक्षा कुम्भलमेर के जैन दुर्गपाल आशाशाह ने की थी । [प्रमुख. २५७; कैच. २२४, २२५]

उदयसिंह, सुराणा,— संघपति साहु पालहंस के पिता और संघपति माणिक सुराणा के पितामह, ल० १५३० ई० । [प्रमुख. २८६]

उदयसिंहसूरि— श्रीप्रभ के शिष्य और श्रीप्रभकृत धर्मविधि की टीका (११९६ ई०) के कर्त्ता । जिनवल्लभकृत पिण्डविशुद्धिदीपिका के कर्त्ता भी संभवतया यही श्वे० विद्वान हैं ।

उदयसेन— १. सेनगण से सम्बद्ध ग्याट-(लाट) बागड़ संघ के आचार्य सिद्धान्तसार के रचयिता नरेन्द्रसेन के गुरु गुणसेन तथा जयसेन के सधर्मा और वीरसेन के शिष्य उदयसेन, ल० ११०० ई० । [प्रवी. i. ८६]
२. उपरोक्त नरेन्द्रसेनाचार्य के शिष्य उदयसेन, ल. ११२५ ई० ।
३. पं० आशाधर (ल० ११९०-१२५० ई०) को 'नयविश्वचक्षु' एवं 'कलिकालिदास' उपाधियां प्रदान करने वाले, उनके गुणानुरागी वयज्येष्ठ मुनि । [जैसाइ. १३०, १३७; प्रमुख. २१२]
४. *मुनिसुव्रत पुराण* (१६२४ ई०) के रचयिता ब्रह्म कृष्णदास की गुरु परम्परा में काष्ठासंघी सोमकीर्ति के प्रशिष्य, यश कीर्ति के शिष्य, त्रिभुवनकीर्ति के गुरु और लेखक के गुरु रत्नभूषण के प्रगुरु उदयसेन, ल० १५५० ई० । [प्रवी. i. ४६]
—त्रिभुवनकीर्ति ने जीवंधररास की रचना १५५१ ई० में की थी ।

उदयादित्य— १. चालुक्य पेर्म्माडि भुवनैकवीर महाराज उदयादित्य पश्चिमी चालुक्य सम्राट भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर द्वि. (१०६८-७६ ई०) का जैन सामन्त और कोलालपुर का राजा था । उसकी प्रेरणा से सम्राट ने, १०७४ ई० में, बन्दनिके तीर्थ की प्रसिद्ध शान्तिनाथबसदि का जीर्णोद्धार कराया और एक दानशासन द्वारा उक्त मंदिर के संरक्षण एवं चतुर्विध दान व्यवस्था के लिए मूल-

संघ-काणूरगण के कुलचन्द्रदेव को मावर खंड में भूमि प्रदान की थी। [प्रमुख. १२१]

२. होयसल युवराज एरेयंग महाप्रभु और युवराज्ञी एचलदेवी का तृतीयपुत्र, बल्लाल प्र० तथा विष्णुवर्धन का अनुज, वीर एवं जिनभक्त राजकुमार, मृत्यु ११२३ ई०। [मेजै. ११५, ११८; प्रमुख. १३६; जैशिसं. iv. २१२, २७१, २८२]

३. उदयपुर (ग्वालियर) प्रशस्ति का प्रस्तोता मालवा का परमार नरेश, भोजपरमार का अनुज एवं उत्तराधिकारी (ल० १०५९-१०८७ ई०), लक्ष्मवर्म, नर वर्म तथा वीर जगदेव का पिता। कई अभिलेखों में उदयी नाम से उल्लिखित। शायद इसी का नाम जयसिंह प्रथम था। [देसाई. २१०, २४४-२४६; जैशिसं. iv. १७४; गुच. १२९]

४. कन्नड भाषा में अलंकार शास्त्र के रचयिता विद्वान, ल० ११०० ई०। सम्भवतया न० २ से अभिन्न हैं। [ककच.]

५. कल्याणी के चालुक्य सम्राटों का सामन्त राजा, सोमदेव और कञ्चलदेवी का पुत्र उदयादित्य जिसने ११९८ ई० में, ताडपत्री (आन्ध्रप्रदेश) की प्रसिद्ध चन्द्रनाथ-पार्श्वनाथ बसदि के लिए मूलसंघ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-इंगलेश्वर बलिके बाहुबलि के प्रशिष्य और भानुकीर्ति के शिष्य मेघचन्द्र को भूमिदान दिया था। [देसाई. २२; मेजै. २५३; प्रमुख. १९१; जैशिसं. iv. २८४]

६. होयसल नरेशों का प्रसिद्ध मन्त्री, शान्तियक्का का पति, चिन्नराज दण्डाधीश का पिता और उदयण एवं बालवीर सर्वाधिकारी विष्णु दण्डाधिपति का पितामह। [मेजै. १३८; प्रमुख. १४८]

७. होयसल नरसिंह प्र० के महाप्रधान देवराज (द्वि.) का पिता और कौशिकगोत्री जैन ब्राह्मण देवराज (प्र०) का पुत्र। [प्रमुख. १५०]

८. होयसल नरेश के सेवक पेग्गडे वासुदेव का जिनभक्त पुत्र उदयादित्य, जिसने सूरस्थगण के गुरु चन्द्रनन्दि के उपदेश से, १२वीं शती ई० में, वासुदेव जिनालय का निर्माण कराया था। [जैशिसं. iv. २८९]

९. बाणवंशी, वीर विश्वरस का वंशज और वीर गोंकरस के पुत्र राजा उदयादित्य ने कलचुरि नरेश रायमुरारि सोविदेव के शासनकाल में, ११७३ ई० में, कालगी के जिनालय के लिए दान दिया था। [देसाई. ३३४]

१०. मालवा का परमार नरेश उदयादित्य द्वि. जो भोज का अनुज और जयसिंह (११५५-६० ई०) का चचा एवं उत्तराधिकारी था और कर्ण सोलंकी का समकालीन था। [गुच. २४२]

उदयाम्बिका— चालुक्य सम्राट त्रैलोक्यमल्ल के सामन्त, बनवासि प्रान्त के शासक गोविन्दरस के पुत्र राजभक्त सोवरस (सोमनृप) की धर्मात्मा पत्नी सोमाम्बि से उत्पन्न राजकुमारी उदयाम्बिका और वीराम्बिका बड़ी धर्मात्मा एवं दानशीला थीं। इन्होंने, ११०० ई० के लगभग सण्ड नामक स्थान में अति उत्तुंग भव्य जिनालय निर्माण कराया था। उदयाम्बिका का विवाह जूजिन-नृप के पराक्रमी पुत्र कुमार गजकेसरी के साथ हुआ था। [प्रमुख. १९५; जैसिसं. ii.२४३; एक. vii. ३११]

उदयी— १. दे. अजउदयी व उदायी —अजातशत्रु का पुत्र एवं उत्तराधिकारी मगधनरेश। [प्रमुख. २०]

२. मालवा के परमार नरेश उदयादित्य (न० ३) का अपरनाम। [देसाई. २४५]

उदयेन्दु— दे. उदयचन्द (न० ८), शास्त्रसार समुच्चय टीका के कर्त्ता माघनन्दि (१२६० ई०) के प्रगुरु, कुमदचन्द्र के गुरु और वासुपूज्य त्रैविद्य के शिष्य, उदयेन्दु या उदयचन्द्र, मूलसंघी भट्टारक।

उदाई— के पौत्र नाथू ने १५४३ ई० में आगरा मे एक जिनप्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी। [जैशिसं. v. २३७]

उदायन— उद्रायन या उदयन (न० २), महावीर का एक आदर्श श्रावक, वीतभयपत्तन नरेश —दे. उदयन न० २। [प्रमुख. १२-१३]

उदायी— उदयी, उदयिन, उदयीभद्र या अजउदयी, मगधसम्राट अजातशत्रु कुणिक का पुत्र एवं उत्तराधिकारी, महान जैन नरेश, राजधानी पाटलिपुत्र का वास्तविक निर्माता, कुशल प्रशासक, पराक्रमी विजेता, युवराजकाल में अंगदेश (चम्पा) का प्रान्तीय शासक रह चुका था। अन्त में एक शत्रु द्वारा छल से हत्या कर दी

गई। इसकी जननी पट्टरानी पद्मावती थी, पुत्र एवं उत्तराधिकारी अनुरुद्ध था। समय ल० ५०३-४७५ ईसापूर्व। [प्रमुख. २०; भाइ. ६९]

उदितया या उदितादेवी— ग्वालियर के तोमर नरेश वीरमदेव (ल० १४०० ई०) के जैसवालवंशी जैन राज्यमन्त्री कुशराज की पितामही, साहु भुल्लण की भार्या और साहु जैनपाल की माता —कुशराज ने पद्मनाभ कायस्थ से यशोधर चरित्र की रचना कराई थी। [प्रवी. i. ३; प्रमुख. २५०]

उदितसिंह— बुन्देला नरेश महाराजकुमार छत्रसाल के भाई या पुत्र के शासनकाल में, १६९० ई० में, सोनागिर (दतिया, म० प्र०) पर उसके एक अधिकारी गोपालमणि ने भ० विश्वभूषण के उपदेश से एक जिनमंदिर निर्माण कराया था (तलहटी का वर्तमान मंदिर न० ९)। [जैशिसं. V. २७२]

उदितोदय— ती० महावीर कालीन मथुरा नरेश, जिसके राज्यश्रेष्ठि अर्हद्दास, उसकी आठ पत्नियों और सुवर्णखुर चोर का प्रसंग लेकर सम्यक्त्व कौमुदी कथा प्रचलित हुई कही जाती है। [प्रमुख. २१]

उदीचिदेव— तोंडेयमंडल (तमिलदेश) में आरनीग्राम (जिलाबेल्लोर) निवासी दिग. जिनभक्त कवि, तिरुक्कलम्बगम् नामक ललित तमिल भक्ति काव्य के रचयिता।

उद्धरण— ११३८ ई० में नडलाई के नेमि जिनालय के लिए दान देने वाले जैन राजा राजदेव के पिता, गुहिलवंशी रावत। [गुच. १७९]

उद्धरण— श्रावक, जिसके पुत्र जिसालिम्ब ने, ११६१ ई० में जालोर (राजस्थान) के पार्श्व-जिनालय में दो कलापूर्ण पाषाण-स्तंभ बनवाये थे। [जैशिसं. V. १०२]

उद्धरणभूप— या उद्धरणदेव, ग्वालियर के तोमर राज्य का संस्थापक ल० १४०० ई० में इसका पुत्र वीरमदेव राजा हुआ था —ग्वालियर के तोमर राजे जैनधर्म के प्रश्रयदाता रहे। [भाइ. ४५२; प्रमुख. २५०]

उद्धरसेन— काष्ठासंघ-माथुरगच्छ-पुष्करगण के भ. माधवसेन के पट्टधर 'सिद्धान्त-जल-समुद्र' मुनि उद्धरसेन, ल० १२५० ई०।

उद्योतकेसरी ललाटेन्दु— कलिंग (उड़ीसा) सोमवंशी प्रसिद्ध जैन नरेश, १०वीं-११वीं शती ई०, देशीगण के आचार्य कुलचन्द्र के शिष्य शल्ल शुभचन्द्र का भक्त एवं गृहस्थ शिष्य था। उसके राज्य के ५वें से १८वें वर्ष पर्यंत के कई शि. ले. मिले हैं, जिनसे विदित है कि उसने कुमारापर्वत के प्राचीन जिनग्रहामंदिरों का जीर्णोद्धार कराया था, नवीन गुफाओं यथा ललाटेन्दुगुफा अनेक तीर्थंकर प्रतिमाओं का भी निर्माण कराया था। [प्रमुख. २२१; भाइ. १९४; जैशिसं. iv. ९३-९५; गुच. ६३-६४]

उद्योतन— कुवलयमाला के कर्ता उद्योतनसूरि के पितामह, महाद्वार के चन्द्रवंशी जैन नरेश। [जैसो. १९२]

उद्योतनसूरि— अपरनाम दाक्षिण्यांक सूरि या दाक्षिण्य-चिन्ह ने गुर्जर प्रतिहार वत्सराज के राज्य में जाबालिपुर (जालोर, मारवाड़) के रवि-भद्र द्वारा निर्मापित ऋषभदेव-जिनालय में, ७७८ ई० में, रोचक प्राकृत कथा कुवलयमाला की रचना की थी। यह महाद्वार के चन्द्रवंशीराजा उद्योतन के पौत्र और सम्प्रति अपरनाम वेदसार के पुत्र थे। इनके दीक्षागुरु तत्त्वाचार्य थे, सिद्धान्तशास्त्र के गुरु वीरभद्र और न्यायशास्त्र के गुरु हरिभद्रसूरि थे। [जैसो. १९२-१९५; प्रमुख. २०३]

उपकल्कि— महावीर निर्वाण के ५०० वर्ष पश्चात होने वाला धर्मविध्वंसक अत्याचारी राजा —अत: उपकल्कि प्रथम ईस्वी सन् के प्रारंभ के लगभग हुआ, तदनन्तर द्वितीय उपकल्कि १०वीं-११वीं शती ई० में, तृतीय २०वीं शती ई० में। [जैसो. ३२-३३]

उपवासपर गुरु— स्तूपान्वय के वृषभनन्दि मुनि के अन्तेवासी (शिष्य) ने, ल० ७०० ई० में, कटवप्र पर्वत (श्रवणबेलगल) पर समाधिमरण किया था। [जैशिसं. i. १८९]

उपश्रेणिक— महावीर कालीन मगधनरेश श्रेणिक बिम्बसार का पिता, अपर-नाम प्रसेनजित एवं भट्टि। [प्रमुख. १४]

उपाध्ये, डा० ए० एन०— दे. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये।

उपेन्द्र— अपरनाम कृष्ण और मजराज ने ९वीं शती ई० के उत्तरार्ध में मालवदेश की धारानगरी में परमार वंश एवं राज्य की स्थापना

की— इसका उत्तराधिकारी सीयक उपनाम हर्ष था। [प्रमुख. २१०; भाई. १६६]

उप्पलदेव— श्रीमाल का एक राजपूत, ओसिया का राजा हुआ, वहां रत्नप्रभ सूरि द्वारा अपनी प्रजासहित जैनधर्म में दीक्षित हुआ— ये ही लोग व इनके वंशज ओसवाल कहलाये। [कैच. ९४]

उव्वलराक— नाडोल के जैन चाहमान नरेश अश्वराज (१११० ई०) का जैन महासाहणीय (घुड़सालाध्यक्ष) [कैच. २०]

उब्भट— या उद्रट, महाकवि स्वयंभू (ल० ८०० ई०) द्वारा उल्लिखित प्राकृत भाषा के पुरातन कवि।

उभयचक्रवर्ती— अपरनाम सारस्वत-पुराणाचार्य, कन्नड भाषा के पुराणचूडामणि (५६००) नामक ग्रन्थ के रचयिता, ल० १४०० ई०— प्राचीनतम प्राप्त प्रति १४६१ ई० की है।

उभयाचार्य— मूलसंघ-देशीगण-हनसोगेबलि के दिगम्बराचार्य जो कोगलि-बसदि के अध्यक्ष थे, और जिन्हें होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वि. (११७३-१२२० ई०) के शासनकाल में दान दिया गया था। वह होयसल नरेश रामनाथ द्वारा भी सम्मानित हुए थे। [देसाई. १५१; प्रमुख. १६४]

उमयक्के— या उमयक्के, विष्णुवर्धन होयसल के करणिक (एकाउन्टेन्ट) तथा अजितसेन भट्टारक के गृहस्थ शिष्य, और ११४५ ई० के लगभग श्रीकरण नामक भव्य जिनालय का निर्माण कराने वाले माडिराज अपरनाम माधव की धर्मात्मा भार्या। [जैशिसं. iii. ३१९; एक. iv. १००]

उमादेवी— राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष प्र० (८१५-७६ ई०) की पट्टमहिषी, जिनभक्त राजरानी। [प्रमुख. १०४]

उमास्वाति— १. तत्त्वार्थसूत्रकार आचार्य उमास्वामि का अपरनाम —दे. उमास्वामि।

२. उमास्वाति या स्वाति, श्वेताम्बराचार्य, जिनका जन्म ५६० ई० में हुआ बताया जाता है, और जो ३०वें युगप्रधानाचार्य जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण के स्वर्गस्थ होने पर ३१वें युगप्रधानाचार्य बने थे, ७वीं शती ई० के प्रारंभिक दशकों में। तत्त्वार्थसूत्र के

तथाकथित स्वोपज्ञ भाष्य तथा प्रशमरतिप्रकरण आदि ग्रन्थों के रचयिता यही प्रतीत हैं।

उमास्वामि— १. तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, अपरनाम मोक्षशास्त्र, दशाध्यायी, तत्त्वार्थमहाशास्त्र आदि, नामक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा दिगम्बर श्वेताम्बर आदि सभी जैन सम्प्रदायों में समानरूप से मान्य धर्मशास्त्र के प्रणेता। उमास्वाति, गृद्धपिच्छ आदि उपनाम और श्रुतकेवलिदेशीय, पूर्वविद्, वाचक जैसे विशेषणों से युक्त यह महानाचार्य जैन पुस्तक साहित्य के प्रारंभिक पुरस्कर्त्ताओं में से हैं। इनके तत्त्वार्थसूत्र पर उभय सम्प्रदाय के विद्वानों द्वारा लिखित विपुल टीका साहित्य है —शायद किसी अन्य एक ग्रन्थ पर इतनी टीकाएं नहीं लिखी गईं, जितनी मात्र ३५७ लघु-संस्कृत सूत्रों वाली इस रचना पर लिखी गई हैं। यह ग्रन्थ आगमिक कोटिका है। एक अनुश्रुति के अनुसार यह कुन्दकुन्दाचार्य के शिष्य थे। इन उमास्वामि का समय ईस्वी सन् की प्रथम शती के मध्य के लगभग (४४-८५ ई०) प्रायः निश्चित किया गया है। [जैसो. १३४-१३७]

२. उमास्वामि भट्टारक, उमास्वामिश्रावकाचार के कर्त्ता, ल० १४वीं शती ई०।

उमेदचन्द्र— श्वे., १८३७ ई० में 'प्रश्नोत्तरशतक' के रचयिता, वाचक रामचन्द्र के शिष्य। [कैच. १५८]

उर्व— प्राचीन संस्कृत कवि जिन्होंने, सोमदेवसूरि (९५९ ई०) के उल्लेखानुसार, जैन मुनियों का उल्लेख अपने ग्रन्थ में किया है। [जैसाइ. ७१, ७८]

उर्विलारानी— ल० २०० ईसापूर्व में, मथुरानरेश पूतिमुख की जैन रानी थी। उसकी सपत्नी बौद्ध थी, राजा भी उसी के प्रभाव में था। तभी मथुरा के प्राचीन देवनिर्मित स्तूप के अधिकारी को लेकर जैनों और बौद्धों के बीच विवाद हुआ। महारानी उर्विला ने दूर-दूर से जैन विद्वानों को बुलाकर शास्त्रार्थ कराया, यह सिद्ध करा दिया कि स्तूप जैनों का ही है, फलतः रानी ने जिनेन्द्र की रथयात्रा निकाली और धर्मोत्सव किया। [प्रमुख. ५९, ६५]

उल्लाससाहु— ग्वालियर के तोमर नरेश कीर्तिसिंह के कृपापात्र जैसवाल जैन धनकुबेर साहु पद्मसिंह का पिता। [प्रमुख. २५५]

उल्लिकलगुरु— या उल्लिकल के जैनगुरु, जिन्होंने श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि पर, ल० ७०० ई० में, सल्लेखनापूर्वक प्राणोत्सर्ग किया था। [जैशिसं. i- ११]

उशना— अपरनाम शुक्र, कौटिलीय अर्थशास्त्र में उल्लिखित पूर्ववर्ती राजनीति शास्त्र के आचार्य।

उषवदात— या ऋषभदत्त, सौराष्ट्र के शक क्षहरात नहपान (ल० २६-६६ ई०) का जामाता एवं उत्तराधिकारी, जिनधर्मी रहा प्रतीत होता है। [प्रमुख. ६३-६४; जैसो.]

उसेरीलाल— ला० उसेरीमल (या लाल) नवाबगंज (बाराबंकी, उ० प्र०) वाले, दिग. अग्रवाल, चैनसुख के पौत्र और कन्नौजीलाल के पुत्र, धर्मप्राण, उदार तथा शास्त्रदानी सज्जन थे, मंदिर के निर्माण विकास के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थों की प्रतियां लिखवाकर आसपास नगर-ग्रामों के मंदिरों में भिजवाई, ल. १७९०-१८३० ई०, दिल्ली के काष्ठासंघी भट्टारक ललितकीर्ति की आम्नाय के थे। [शोधांक-३७, पृ. ५६६]

ऊ

ऊदल— नाडालीपुर (मारवाड़) नरेश उदयसिंह के पुत्र महाराज चाचिग देव के प्रश्रय में, १२७७ ई० में, महन्नक धीना एवं ऊदल ने पार्श्वनाथ महोत्सव के लिए भूमिदान दिया था। [गुच. १६६; [जैलेसं. i, ९३५]

ऋ

ऋतुनन्दि— जिसकी पुत्री जितामित्रा ने, जो वृद्धि की पत्नी और नन्दिक की जननी थी, आर्यनन्दि के उपदेश से मथुरा में, ११० ई० में अर्हंत की सर्वतोभद्र प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. ii. ४१; प्रमुख. ६८]

ऋद्धिसागर— श्वे., ल० १८५० ई०, 'निर्णय-प्रभाकर' नामक दार्शनिक ग्रन्थ के रचयिता।

ऋषभ— ऋषभदेव-, ऋषभनाथ, वृषभनाथ, पुरुदेव, आदिदेव, आदिनाथ, इक्ष्वाकु, केशी, महादेव, प्रजापति, स्वयंभू आदि अनेक नामांतर, अन्तिम मनु, प्रथम तीर्थंकर, पिता १४वें कुलकर नाभिराय, जननी मरुदेवी, पत्नियाँ सुनन्दा एवं सुमंगला, पुत्र भरतचक्रवर्ती बाहुबलि, वृषभसेन आदि १००, पुत्रियाँ ब्राह्मी और सुन्दरी, प्रधानगणधर वृषभसेन, लांछन वृषभ, जन्मस्थान अयोध्या, केवल-ज्ञानस्थल प्रयाग का अक्षयवट, निर्वाणस्थल कैलासपर्वत, कर्म-भूमि एवं कर्मयुग के प्रस्तोता, धर्म और मोक्षमार्ग के, वर्तमान कल्पकाल में, आद्य प्रतिपादक एवं प्रवर्तक, छः-सात सहस्त्रवर्ष पूर्व की सिन्धुघाटी सभ्यता में पूजित, ऋग्वेदादि वेदों में तथा श्रीमद्भागवत आदि ब्राह्मणीय पुराणों में स्मृत एवं उल्लिखित, —आचार्य जिनसेनादिकृत जैन महापुराणों में इनका चरित्र विस्तार के साथ वर्णित है। [भाइ. २३-२८]

ऋषभदत्त— राजगृही का महावीर कालीन प्रसिद्ध जैनसेठ, अन्तिमकेवलि जम्बूकुमार का पिता। [प्रमुख. २६]

ऋषभदास— १. आगरा निवासी अकबरकालीन गर्गगोत्री अग्रवाल दिग. जैन धर्मात्मा टोडर साहु के ज्येष्ठ पुत्र साहु ऋषभदास। [प्रमुख. २८५]

२. खंभात निवासी संघवी सांगण के पुत्र, श्वे. कवि, गुजराती भाषा में १६१३ ई० में कुमारपालरास की और १६२८ ई० में हीरविजयसूरि रास की रचना की थी।

३. मुलतान नगर के वर्धमान नवलखा (१६५०-९० ई०) की मुमुक्षु गोष्ठी के एक प्रमुख सदस्य। [प्रमुख. २९६]

४. प० दौलतराम कासलीवाल के समकालीन आगरा के एक दि. जैन पंडित ल० १७३० ई०। [प्रमुख. ३१८]

५. आचार्य देवेन्द्र भूषण के शिष्य प० ऋषभदास १६६७ ई०। [कास. २०४]

६. पं० ऋषभदास निगोत्या, दिग., जयपुर निवासी खंडेलवाल ने १८३१ ई० में पं० मन्नालाल छाबड़ा के सहयोग से प्राकृतग्रन्थ

मूलाचार की भाषा वचनिका लिखी थी, एक रत्नत्रयपूजा की भी रचना की थी। जन्म १७८३ ई०, पिता जोधचंद निगोत्या, पुत्र पं० पारसदास निगोत्या। [काहि. २२०; कास. २४५, २५२; कैच. १५९]

७. पं० ऋषभदास, दिग. अग्रवाल, सुलतानपुर-चिलकाना (जिला सहारनपुर, उ० प्र०) निवासी, धर्मज्ञ तथा हिन्दी, संस्कृत, उर्दू एवं फारसी के ज्ञाता, कवि, लेखक एवं विद्वान, १८८६ ई० में हिन्दी पद्य में पंचबालयति पूजापाठ व शुभराग की हेयोपादेयता की और उर्दू में मिथ्यात्वकनाशक नाटक की रचना की। [अनेकान्त, ३०/२, पृ. ३४]

८. हूमड़जातीय लघुशाखा-खरजागोत्री संघई नाकर एवं नारंगदे के पुत्र संघइ ऋषभदास ने अपनी भार्या एवं पुत्र धर्मदास सहित स्वगुरु भ० पद्मनन्दि के उपदेश से कारंजा में पार्श्वप्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी। [प्रमुख. २९३]

ऋषभनन्दि— या ऋषभनन्द्याचार्य कर्मप्रकृति (प्रा०), कर्मस्तव (सं०) तथा कर्मस्वरूपवर्णन (कन्नड़) के रचयिता, समय ल० ९५०-७५ ई०।

ऋषभसेनगुरु— के शिष्य नागसेनगुरु ने, ल० ७०० ई० में, श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि पर समाधिमरण किया था। [जैशिसं. i. १४]

ऋषि— १०८८ ई० के दानशील जायसवाल श्रेष्ठि दाहड का अग्रज, जयदेव का पुत्र व आसूक का पौत्र —थंडोभनिवासी, नगरसेठ। प्रमुख. २१३; गुच. ७९]

ऋषिगुप्त— हरिवंशपुराण (७८३ ई०) मे प्रदत्त पुन्नाटसंघ की गुरु परम्परा में तीसरे गुरु, विनयधर के प्रशिष्य, श्रुतिगुप्त के शिष्य, और शिवगुप्त (अर्हद्बलि) के गुरु।

ऋषिदास— ती० महावीर के तीर्थ के प्रथम अनुत्तरोपपादक मुनिराज।

ऋषिदासवाचक— मथुरा के प्रथम शती ई० के एक जैन प्रतिमालेख में उल्लिखित जैनाचार्य वाचक आर्य ऋषिदास। [जैशिसं. iv. १९]

ऋषिपालित— श्वे०, इन्द्रदिन्न के प्रशिष्य शान्ति श्रेणिक के एक शिष्य —ल० प्रथम शती ई०।

ऋषिपुत्र— १. पुरातन जैन ज्योतिषाचार्य, गर्गाचार्य के साथ उल्लेखित, ल० ७०० ई०, किसी प्राकृत ग्रन्थ के कर्ता।

२. दिग., ज्योतिषाचार्य, संस्कृत में निमित्तशास्त्र (१८८) के कर्त्ता।

३. दिग., कल्याणमंदिर स्तोत्र-टिप्पण के कर्त्ता।

ऋषिराज— षटशास्त्र निर्वाहकारक विद्वान, जिनने जहानाबाद (दिल्ली) में, १७३५ ई० में आलापपद्धति की प्रति लिखवाई थी। [कुना. ११३]

ऋषिरायब्रह्मचारी— दिग., हिन्दी पद्य में सुदर्शन चरित्र के रचयिता, ल० १६०० ई०।

ऋषिवर्द्धन— श्वे०, जिनेन्द्रातिशय पंचाशिका (सं०) के रचयिता, ल० १५५० ई०।

ऋषिवर्द्धनसूरि— श्वे०, अंचलगच्छीय जयकीर्ति के शिष्य, १४५५ ई० में, चित्तौड़ में, नल-दमयन्ती रास की रचना राजस्थानी भाषा मे की थी। [कुशल. अप्रैल ८८, पृ. ३६]

ऋषि श्री— रणथम्भौर के प्रसिद्ध जैन वैद्यराज रेखा पण्डित की धर्मात्मा भार्या (ल० १५५० ई०) [प्रमुख. २४५]

ए

एकबट्टुवर भटार— कुन्दकुन्दान्वय के आचार्य, संभवतया मिट्टी का बना कमण्डलु रखते थे। इनके शिष्य आचार्य सर्वनन्दि थे जो महान विद्वान, सिद्धान्तज्ञ, कवि और प्रभावक आचार्य थे, और जिन्होंने ८८१ ई० में सन्यासमरण किया था। [देसाई. २२४, ३४०-३४१]

एकदेव योगि— देवगणाग्रणी गुणनिधि देवेन्द्र भट्टारक के शिष्य एकदेव योगि, जिनके शिष्य जयदेव पंडित को गंगनरेश मारसिंहदेव सत्यवाक्य कोंगुणि ने मकतीर्थ के स्वनिर्मापित मंगकन्दर्प-जिनालय के लिए ९६८ ई० में प्रभूत दान दिया था। [जैशिसं. ii-१४९; इंए. vii. ३८; देसाई. ३८९; प्रमुख. ८०, ८६]

एकवीरमुनि— सूरस्थगण के आचार्य अनन्तवार्य की शिष्य परम्परा में विनयनन्दि के शिष्य और पल्लपण्डित (पल्लकीर्ति या पाल्यकीर्ति) के ज्येष्ठ सधर्मा एवं गुरु— पल्लपण्डित का समय १११८ ई० है। [जैशिसं. ii-२६९; एक. iv. १९]

एकवीर्याचार्य— १२१५ ई० में गोआ के कदम्बनरेश जयकेशी तृ० से मानिक्य-पुर के प्रसिद्ध नागर-जिनालय (मूलनायक-पार्श्वनाथ) के लिए दान प्राप्त करने वाले यापनीय संघ के बाहुबलि सिद्धान्तिदेव के प्रगुरु। [देसाई. १४५]

एकव्वे— ल० १२०० ई० में समाधिमरण करने वाले नामिसेट्टि की जननी उक्किसेट्टि की धर्मात्मा पत्नी, नामिसेट्टि नयकीर्ति व्रतीश का शिष्य था। [जैशिसं. iv. ३७९]

एकसन्धि— १. द्रविड़संघ-नंदिगण-अरुङ्गलान्वय के पुरातन आचार्यों में, सिंहनंदि और अकलङ्कदेव के मध्य तथा सुमति भट्टारक के साथ संयुक्त रूप से, १०७७ ई० के तथा ११२५ ई० के व अन्य शिलालेखों मे उल्लिखित आचार्य, ल० ६०० ई०। [जैशिसं. iv. २४६; ii. २१३; i. ४९३; एक. viii. ३५]

—यह स्पष्ट नहीं है कि यह स्वतन्त्र व्यक्ति हैं, अथवा सुमति-भट्टारक का ही विशेषण 'एकसंधि' है।

२. अय्यपार्य के जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय (१३१९ ई०) में उल्लि-खित एक पूर्ववर्ती प्रतिष्ठापाठ के कर्त्ता —इनका उल्लेख हस्ति-मल्ल के पश्चात किया है। इनका ग्रन्थ प्रतिष्ठापाठ, जिन-संहिता या एकसंधिसंहिता भी कहलाता है। यह एकसंधि भट्टारक ल० १२०० ई० में हुए प्रतीत होते हैं। [प्रसं. ५८-६१; प्रवी. i. ८१]

३. उपलब्ध इन्द्रनंदिसंहिता (प्रा०) में उल्लिखित एक 'पूजा-विधि' के रचयिता मुनि एक सन्धिगणी —संभव है, न० २ से अभिन्न हों। [पुजैवासू. १०७]

एकान्त बासवेश्वर— एकान्त रामय्य की परम्परा में उत्पन्न लिंगायत या वीर शैव सम्प्रदाय का एक महान आचार्य एवं प्रचारक, अनेकान्त-मत (जैनधर्म) का प्रबल विरोधी, ल० १४०० ई०, विजयनगर के बुक्कराय का समकालीन। [मेजै. २९३]

एकान्त रामय्य— कुन्तलदेशस्थ आलन्द निवासी शैव ब्राह्मण पुरुषोत्तमभट्ट का पुत्र राम या रामय्य, लिंगायत या वीरशैव सम्प्रदाय का सर्व-प्रसिद्ध नेता एवं प्रचारक, अनेकान्तवादी जिनधर्म का कट्टर

विद्वेषी एवं विरोधी। इसके तथा इसके अनुयायियों के अत्याचारों एवं प्रचार ने दक्षिण भारत में जैनधर्म को भारी क्षति पहुँचाई। वह बिज्जलकलचुरि (११५६-६७ ई०)—, चालुक्य सोमेश्वर चतुर्थ (११८२-८९ ई०) और कदम्ब कामदेव (११८१-१२०३ ई०) का समकालीन था —इन राजाओं को प्रभावित किया ल० १२०० ई० के अब्लूर शि. ले. में उसके कार्यकलापों का विस्तृत वर्णन है। [मेजै. २८०-२८१; देसाई. ३९७, ४००, ४०२; जैशिसं. iii. ४३५; एइं. v. २५]

२. यह एकान्तर रामय्य कलचुरि नरेश बिज्जल द्वि. के साले और मन्त्री बसव या बासवेश्वर का प्रधान शिष्य था। मूलत बसव जैन था, किन्तु राजा का विरोधी हो गया और उसने जैन धर्म छोड़कर वीरशैव मत की स्थापना की थी। [प्रमुख १२८]

एक्कगौड— मागुडि में भव्य शान्तिनाथ-जिनालय बनवाने वाले और कदम्ब-नरेश बोप्पदेव के प्रधान जैन सामन्त शंकर के पिता बोप्पगावुंड का पितृव्य, नाडुवंशी जैन सामन्त, ल० ११०० ई०। [जैशिसं. iii. ४०८; प्रमुख. १३२]

एक्कल— १. प्रथम, एक्कलदेव या एक्कलरस, उद्धरे का गंगवंशी जैन महामंडलेश्वर, जिसके शासनकाल में उसके जैन दण्डनायक बोप्पण के पुत्र दण्डनायक सिंगण ने ११२९ ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिसं.ii २९१; एक.viii.१४९; प्रमुख.१६९]

२. एक्कलभूप या राजा एक्कल द्वि. भी परम जैन था, उसने उद्धरे में कनक-जिनालय निर्मापित करके अपने गुरु क्राणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छ के भानुकीर्ति सिद्धान्तदेव को उसके लिए ११३९ ई० में प्रभूत दान दिया था। वह गंगमारसिंह का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था और चालुक्य सम्राट जगदेकमल्ल द्वि. (११३८-५० ई०) का सामन्त था। [मेजै. १६४-१६५; एक. viii. २३३; जैशिसं. iii. ३१३; प्रमुख. १६९, १७०]

३. महामंडलेश्वर एक्कलरस तृतीय भी इसी वंश का जैन नरेश था, जिसके नाम पर उसके दण्डनायक महादेव ने राजधानी उद्धरे में, ११९७ ई० में एरग-जिनालय बनवाया था, और राजा

ने काणूरगण-तिन्त्रिणिगच्छ के कुलभूषण त्रैविद्य के शिष्य सकलचन्द्र भट्टारक को भूमि आदि दान दिये थे। [मेजै. १५१; जैशिसं. iii. ४३१; प्रमुख. १५८; एक. viii. १४०]

एग्रसेन— दे. उग्रसेन, मन्त्रनरेश। [प्रमुख. ३१]

एच— १. नामान्तर एचराज, एचिग, एचिसाङ्क, एचिराज, अपरनाम बुधमित्र, होयसल नरेश नृपकाम (१०४७-६० ई०) के सेनापति, कौण्डिन्यगोत्री नागवर्मा का पौत्र, मार एवं माकणब्बे का पुत्र, विष्णुवर्धन होयसल के प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री गंगराज तथा बम्मचमूप (सेनापति) का पिता, पोचिकब्बे का पति, होयसल नरेशों का परमजैन राज्याधिकारी, मुल्लूर के दिगम्बराचार्य कनकनंदि का गृहस्थ शिष्य —पति-पत्नि दोनों बड़े धर्मात्मा एवं दानशील थे। [प्रमुख. १४२; मेजै. ११६; जैशिसं. i. ४४, ४५, ५९, ९०, १४४; ii. ३०१]

२. एचण, एचिराज, येचि —होयसल विष्णुवर्धन का दण्डनायक एच, उपरोक्त एचराज का पौत्र, गंगराज का भतीजा, बम्मचमूप और बागणब्बे का पुत्र, शूरवीर सेनानायक —इसने श्रवणबेलगोल में 'त्रैलोक्यरंजन' अपरनाम बोप्पण-चैत्यालय निर्माण कराया था, और इसके समाधिमरण करने पर गंगराज के पुत्र बोप्पदेव ने इसकी निषद्या निर्माण कराई थी, ११३५ ई० में। इसकी पत्नि का नाम एचिकब्बे था। [प्रमुख. १३८, १४४, १४५; मेजै. ११४, १३७, १९७; जैशिसं. i. ६६, १४४]

३. नागलदेवी (लक्ष्मी) से उत्पन्न गंगराज का पुत्र एच या एचिराज (१११८ ई०) —शायद दण्डनायक बोप्प का भी अपरनाम रहा हो। [मेजै. ११६, १२६, १३०]

एचण— होयसल बल्लाल द्वि. का संधिविग्रहिक जैनमन्त्री, जिसने १२०५ ई० में एक अनुपम जिनालय निर्माण कराया था बेलगवत्तिनाड में। [मेजै. १५२, १७०] —उसकी पत्नी सोमलदेवी ने भी १२०७ ई० में एक बसति निर्माण कराकर उसके लिए दान दिया था।

एचण— दे. एच। [मेजै. १३०, १९७]

एचब्बे— दे. एचिकब्बे।

एचभूप— मिरिन्तेनाडु का जैनधर्मावलंबी हैह्यवंशी राजा एचभूप (प्रथम) वह चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२८ ई०) का सामंत था। [देसाई. २१५, २१७, २१९, ३०४, ३०६, ३०७]

एचरस— एचभूप का पौत्र, महामंडेश्वर एचरस जो कलचुरि नरेश राय-मुरारि सोविदेव (११७१ ई०) का जिनभक्त सामन्त था। [देसाई. २१७, ३१७, ३१८]

एचलदेवी— १. होयसल युवराज एरेयंग महाप्रभु (ल० १०७०-११०० ई०) की विदुषी एवं धर्मात्मा भार्या, युवराज्ञी एचलदेवी, बल्लाल प्र०, विष्णुवर्धन और उदयादित्य की जननी —कुमारी शान्तले को पुत्रवधु बनाने का चुनाव उसी का था। बड़ी तेजोमयी, दयालु एवं दानशीला, रूपवती रमणीरत्न थीं, आचार्य गोपनंदि उसके गुरु थे। [प्रमुख. १३६; जैशिसं. i. १२४, १३७, १३८, ४९०, ४९३, ४९४; ii· २१८, २६३, २९९, ३०१; iii. ३०८, ३४७, ३९४, ४११; iv २७१]

२. होयसल नरसिंह प्रथम (११४६-७३ ई०), उपरोक्त युव-राज्ञी के पौत्र की पट्टरानी और बल्लाल द्वि. की जननी, धार्मिक जैन नारी। [प्रमुख. १५६; जैशिसं. i. ९०, १२४, ४९१; iii. ३७९, ३९४, ४११, ४४८, ४९६; iv. २७१, २८२]

३. एचलदेवि, जिसके गुरु नन्दिसंघ-द्रविलगण-अरुंगलान्वय के गुणसेन पण्डित (ल० १०६० ई०) थे —सम्भवतया युवराज्ञी एचलदेवि (नं० १) से अभिप्राय हो, वह उसके प्रारंभिक काल के गुरु हों। १०५८-६० ई० के कई लेखों मे इन गुणसेन का उल्लेख है। [जैशिसं. ii-१९२; एक. v. ९८]

४. सौन्दत्ति के रट्टनरेश कार्त्तवीर्य चतुर्थ (१२०४ ई०) जो किसी चक्रवर्ती की पुत्री थी, कलाचतुर, विशाललोचना, सती और धर्मिष्ठ था। [जैशिस. iii. ४४०]

एचले— द्रविलसंघी आचार्य अजितसेन वादीभसिंह के गृहस्थ शिष्य और विष्णुवर्धन होयसल के कृपापात्र, धर्मात्मा चकिकसेट्टि की धर्मिष्ठ जननी। [जैशिसं. ii. २७४]

एचवदण्डनायकिति— होयसल नरेशों के कौण्डिन्यगोत्री, जैनधर्मावलम्बी दण्ड-नायक डाकरस (प्रथम) की धर्मात्मा पत्नी, नाकण और मरि-

याने दण्डनायकों की जननी, डाकरस द्वि. की पितामही, तथा प्रसिद्ध दण्डनायकों भरत एवं मरियाने तृ. की परदादी। इस महिला का अपरनाम येचियक्के या एचियक्के था। [जैशिसं. iii. ३०८, ४११]

एचिकब्बे— १. होयसल विष्णुवर्धन के महामन्त्री गंगराज के भतीजे एचिराज (द्वि०) दण्डनायक की धर्मात्मा पत्नी और शुभचन्द्र सिद्धान्त की गृहस्थ शिष्या। ल० ११३५ ई० के शि. ले. में इस महिला की उपमा पुराण प्रसिद्ध सीता और रुक्मिणी से दी है, अपने पति एचिराज द्वि. का समाधिलेख उसने ही अंकित कराया था। लेख में उसका अपरनाम एचब्बे दिया है। [जैशिसं. i १४४]

२. १०८१ ई० के लक्ष्मेश्वर के शि. ले. में उल्लिखित दिनकर के पुत्र दूडम की धर्मात्मा पत्नि। [जैशिस. iv. १६५]

एचिगांक— दे. एच प्र०। [मेजै. ११६]

एचियक्के— दे. एचब दण्डनायकिति।

एचिराज— दे. एच प्र. व द्वि.। [मेजै. १२६]

एचिसेट्टि— १. श्रवणबेलगोल की विन्ध्यगिरि पर गोम्मटदेव सुत्तालय मे मोसले के बहु व्यवहारी बसविसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति तीर्थंकरों की अष्टविध पूजार्चा के लिए मासिक व वार्षिक दान देने वाला, ११८५ ई० में, एक धर्मात्मा महाजन। [जैशिस. i. ८६, ३६१]

२. वीर बल्लाल-जिनालय (११७६ ई०) के निर्माता देविसेट्टि का संभवतया पितामह। [जैशिस. iv. २७१]

एक्कलदेवी— हुमच के त्यागि सान्तर की रानी और वीर सान्तर की धर्मात्मा जननी। [प्रमुख. १७२]

एडय्य— नल्लूर का एक श्रावक, जिसकी धर्मात्मा पत्नि जक्कियब्बे ने, जो कस्तूरी भट्टार की श्राविका थी और चन्दियब्बे वावुडि की मन्त्राणी थी, ल० १०५० ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिसं. ii. १८३]

एनादि कुत्तनन— तमिल देशस्थ तिरुमलइपर्वत के प्राचीन तमिल लेख में

उल्लिखित आर्यिका तिरुमलइकुरत्ति का एक शिष्य साधु। [देसाई. ६७]

ए. बी. लट्ठे— दे. लट्ठे।

एम्मेबर पृथिगौड— कोपण के १२वीं शती ई० के एक शि. ले. में उल्लिखित, उसी नगर के निवासी, और रायराजगुरु माघनंदि सिद्धान्त-चक्रवर्ती के गृहस्थ शिष्य तथा मादण दंडनायक द्वारा निर्मापित जिनालय में चौबीसी-प्रतिमा प्रतिष्ठापित करने वाले बोप्पण का पिता और मलुवे का पति धर्मात्मा राज्याधिकारी। [देसाई. ३८०]

एयण— अपभ्रंश महाकवि पुष्पदन्त के आश्रयदाता और राष्ट्रकूट कृष्ण तृ० के जैनमन्त्री भरत के पिता। [जैसाई. ३१६; प्रमुख. १०९]

एरक— पोसवूर में जिनालय बनवाने वाले मोरकवशी आयमगावुंड का पुत्र और पोलेग (१०२८ ई०) का पिता —ये लोग चालुक्य जगदेकमल्ल प्र० के जैन सामन्त थे। [जैशिसं. iv. १२५]

एरकब्ब— लोक्किगुण्डि के प्रभु (शासक) और देशीगण के शुभचन्द्रदेव के गृहस्थ शिष्य ने, १११२ ई० में बम्मिकेरे के पार्श्व जिनालय की पूजार्चा के लिए भूमि आदि का दान दिया था। [जैशिसं. २५३; एक. vii. ९७]

एरकाट्टि सेट्टि— होयसल वीर बल्लाल के राज्यकाल के एक दान-शासन में उल्लिखित धर्मात्मा श्रेष्ठि, जिसका अनुज माचिसेट्टि, भतीजा कालिसेट्टि था— कालिसेट्टि का पुत्र उदारदानी बम्मय था। [जैशिसं. ii. २१८; एक. xii. १०१]

एरकोटि— या एरिकोटि, अमोघवर्ष प्र० के ८६० ई० के कोन्नूर शि. ले. के अनुसार सम्राट के प्रधान सेनापति जैन वीर वेल्लकेतन बङ्कश या बाङ्कॅयरस का पितामह और कोलनूर के राजा घोर का पिता, तथा वीर मुकुल का पुत्र, राष्ट्रकूट ध्रुवधारा वर्ष का सचिव व सेनानायक। [जैशिसं. ii. १२७; एई. vi ४; भाइ. ३०३; प्रमुख. १०४]

एरिकोटिगौड— ल० १२०० ई० में नागरखंड के कण्णसेगि का धर्मात्मा दानी जैन सामन्त। [प्रमुख. १३२]

एरग— १. होयसल युवराज एरेयङ्ग, बल्लाल प्र० और विष्णुवर्धन के पिता का अपरनाम, एरमल्टप। [जैशिसं i. १४४]

२. सौन्दत्ति के रट्टवंश में उत्पन्न एक जैन राजा, कन्नकैर का पुत्र, बाचा का अनुज। [जैशिसं. ii. २३७]

३. दानशीला रानी चट्टियब्बरसि का ज्येष्ठ पुत्र, एक्कलरस का भानजा। [प्रमुख. १७०]

एरचंवि— उपनाम नरतोंग पल्लवरैयन, जिसने, ल० ११०० ई० में, तमिल देशस्थ तण्डपुरम् की जैनवसति के लिए दान दिया था। [जैशिसं. iv. २२५]

एरहगौड— बंदलिके के १२०३ ई० के शि. ले. में उल्लिखित नागरखंड का एक प्रमुख जैन, मलविल्ले का प्रशासक एरहगौड। [प्रमुख. १३२]

एरिणि— चेरवंशी जैन नरेश अतिगैमान का पूर्वज वञ्जि का राजा। [जैशिस. iii ४३४]

एरेकप— दे. एरेमय्य। [जैंशिसं. iv. १६५]

एरेग— दे. एरेमय्य, तथा दे. एरेयंग कदम्ब नरेश।

एरेगंक— होयसलों के धर्मात्मा नगरसेठ सोविसेट्टि (११७८ ई०) का धर्मात्मादानी प्रपितामह। [प्रमुख. १६२]

एरेगङ्ग— जिनधर्मी गंगवंशी नरेश राचमल्ल प्र० एरेगंग (७१३-७२६ ई०) जो शिवमार नवकाम का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। [प्रमुख. ७५]

एरेमय्य— दे. एरेयमय्य।

एरेय— गंगवंशी जैन नरेश, जिसके समय, ल० ९०० ई० में, एलाचार्य के समाधिमरण करने पर उनके शिष्य कल्नेलेदेव ने उनकी समाधि बनवाई थी। [जैंशिस iv. ७६]

एरेयप— या एरेयप्प गंगनरेश बूतुग द्वि. का पुत्र और राचमल्ल का पिता। अमोघवर्ष तृ० की पुत्री रेवक्का का पति, ल० ९६० ई०। दे. एरेय, तथा एरेयप्परस। [जैंशिस. iv. ९६; मेजै. १०५]

एरेयमय्य— एरेमय्य, एरेग या एरेकप, चालुक्य विक्रमादित्य षष्ठ के पुत्र एव चायसराय जयसिंह का महासामन्त एवं महाप्रचंड दण्डनायक, जिसके अनुज दानवीर दोण ने सेनगण के आचार्य नयसेन के

शिष्य नरेन्द्रसेन को, १०८१ ई० में, दानादि दिये थे। एरेयम्म उस समय पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर) का शासक भी था। [जैशिसं. iv. १६५]

एरेयंग (एरेयङ्ग)— १. गंगनरेश शिवमार सैगोत का भतीजा, विजयादित्य का पुत्र, राचमल्ल का पिता। [जैशिसं. ii २१२; iv. ९६]

२. एरेयङ्ग, एरेगङ्ग, एरेयप्प, एरेय, एरग, एलेरेगंग आदि नामरूपों से उल्लिखित गंगनरेश नीतिमार्ग प्र० कोंगुणिवर्मन, जो राचमल्ल प्र० सत्यवाक्य का पुत्र, गुणदुत्तरंग बूतुग का पिता। इस धर्मात्मा शूरवीर जैननरेश ने पल्लवों को पराजित किया था। अत: रणविक्रम भी कहलाता था। इसका समय ८५३-८७० ई० है। संभवतया कल्लेलेदेव द्वारा एलाचार्य की समाधि इसी के समय निर्मापित हुई थी। [प्रमुख. ७७-७८; भाइ. २६९; जैशिसं. ii. १४२, २१३, २६७, २७७, २९९; मेजै. १७३]

३. एरेयप्प एरेयंग (या ररेगंग) कोमरबेडंग नीतिमार्ग द्वि. उपरोक्त एरेगंग नीतिमार्ग प्र० का पौत्र, राचमल्ल सत्यवाक्य का भतीजा, पल्लवराज को लूटनेवाले गुणदुत्तरंग बूतुग का, अमोघवर्ष प्र० की कन्या राजकुमारी चन्द्रबेलब्बे (अब्बलब्बा) से उत्पन्न पुत्र, वीर बेडंग नरसिंह सत्यवाक्य का पिता, कच्चेय-गंगराचमल्ल और बूतुग द्वि. (९३८ ई०) का पिता। यह महेन्द्रान्तक भी कहलाता था, राज्यकाल ल० ९०७-९१७ ई०। [प्रमुख. ७८; भाइ. २६९; जैशिसं. ii. १४२, २१३, २६७, २७७, २९९]

४. होयसल विनयादित्य द्वि. (१०६०-११०१ ई०) का पुत्र, युवराज एरेयंग महाप्रभु गंगत्रिभुवनमल्ल, युवराज्ञी एचलदेवि का पति, बल्लाल प्र०, विष्णुवर्धन और उदयादित्य का पिता, बुद्धिमान कुशल राजनीतिज्ञ एवं प्रशासक, शूरवीर योद्धा, देशीयगण के गोपनंदिपण्डितदेव का गृहस्थ शिष्य। पिता के राज्य का वास्तविक संचालक —पिता के जीवनकाल में अथवा तुरन्त पश्चात मृत्यु हुई। उसने अन्य अनेक धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त, १०९३ ई० में श्रवणबेलगोलस्थ चन्द्रगिरि के जिना-

सदियों आदि के जीर्णोद्धार के लिए स्वयुक को ग्राम दान किये थे। [माइ. ३४२; प्रमुख. १३६; एक. ii. १४८; जैशिसं. i. ५३, ५६, १२४, १३०, १३७, १३८, १४४, ४९१, ४९२, ४९३-४९५; iv. २१२, २४६, २७१, २८२, ३७६; मेजै. ७६, ७७, १३८]

५. दान चिन्तामणि धर्मात्मा रानी चट्टियब्बरसि (चट्टुले) और राजा दसवर्मा का पुत्र, केशव का अग्रज, गंगनरेश मारसिंह का दौहित्र और एक्कलभूप का भानजा, जिनभक्त राजकुमार—११३९ ई० के लेख में उल्लिखित। [जैशिसं. iii. ३१२; एक. viii. २३३]

६. कदम्बवंशी राजा हुदुव का प्रपौत्र, बूत का पौत्र, चिण्ण का पुत्र एरेयंग प्रथम। [जैशिसं. iv. १६९-१७०]

७. उपरोक्त एरेयंग प्र० का पौत्र और चिण्ण द्वि. का पुत्र, जिसके राज्यकाल में, १०९६ ई० में देसीगण के आचार्य रविचन्द्र सैद्धान्त के उपदेश से माचवेगण्ति द्वारा जिनालय के लिए भूमिदान दिया गया था। [जैशिसं. iv. १६९-१७०]

एरेयंगमय्य— सर्वाधिकारी-सेनापति दंडनायक, जो होयसल नरसिंह प्र० के सेनापति ईश्वरचमूप (११६० ई०) का पिता था। [मेजै. १४६-१४७; प्रमुख. १५३]

एरेवबेड्ग— दे. एलेवबेडंग।

एरेय्य— वातापी के पश्चिमी चालुक्य वंश के रणपराक्रमाङ्क महाराज (संभवतया वंश संस्थापक जयसिंह प्रथम का पुत्र रणराग) का पुत्र और सत्याश्रय का पिता। भुजगेन्द्रान्वयी सेन्द्रवंशी राजा कुन्दशक्ति के पुत्र दुर्गशक्ति द्वारा लक्ष्मेश्वर के शंखजिनेन्द्र-चैत्यालय के दान शासन में उल्लिखित, ल० छठी शती ई०। ये सेन्द्र राजे चालुक्यों के सामन्त थे। [जैशिसं. ii. १०९; इंए. vii. ३८]

एरेयप्परस— पेर्म्मडि गंगनरेश ने, ल० ९०० ई० में पेर्म्मनडि-पाषाण-बसदि के लिए कोमारसेन भटार को विविध दानादि दिये थे। संभवतया एरेयंग (न० ३) से अभिन्न है, लेख उसके राज्यप्राप्ति से पूर्व कुमारकाल का प्रतीत होता है। [जैशिस. ii. १३८; एक. iii. १४७; मेजै. ९५]

एल— दे. एलमराय।

एलमराय— या एल, एक राजा, जिसका कुष्टरोग शिरपुर (जि० अकोला) के अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ जिनालय के कुंए के जल से स्नान करने से दूर हो गया था, ऐसा कहा जाता है। [जैसाइ. २२७; अकोला गजेटियर]

एलवार्मुंड— जिसने दोणगामुण्ड के साथ, वातापी के पश्चिमी चालुक्य नरेश कीर्त्तिवर्म (राज्यान्त ५६७ ई०) के सामन्त, पाण्डीपुर के राजा माधवत्ति की सहमति से राजमान्य जिनेन्द्रभवन की पूजार्चा के लिए परलूरगण के प्रभाचन्द्र गुरु को चावल आदि दान किये थे। [जैशिसं. ii. १०७; इंए. xi. १२०]

एलवाचार्य गुरु— कोण्डकुन्दान्वय के कुमारनन्दि भट्टारक के शिष्य और उन वर्धमान मुनि के गुरु जिन्हें, ८०७-८०८ ई० में, चामराजनगर ताम्रशासन द्वारा, राष्ट्रकूट गोविन्द तृ० जगत्तुंग के अनुज 'रणावलोक' कम्भराज ने, अपने पुत्र शंकरगण की प्रार्थना पर, गगराजधानी तालवननगर (तलकाड) की सुप्रसिद्ध श्री विजय-बसदि के लिए बदनगुप्पे नामक ग्राम दान किया था। [प्रमुख. ७७, १००;; भाइ. २९८; जैशिसं. iv. ५४] —दे. एला-चार्य।

एलाइरिय— दे. एलाचार्य। [प्रवी. i. १२३]

एलाचार्य— १. मूलसंघाग्रणी कुन्दकुन्दाचार्य (८ ई० पू०–४४ ई०) का अपरनाम, जो तमिल भाषा के प्राचीन संगम साहित्य में अति प्रसिद्ध है —इन्होंने तमिलवेद रूपी विश्वविख्यात नीतिशास्त्र कुरलकाव्य को अपने शिष्य तिरुवल्लवर द्वारा मदुरा के संगम में प्रस्तुत कराया था। [जैसो. १२१, १२६; प्रमुख. ६९; भाइ. २३७; जैशिसं iii. ५८५ मेजै. २४०-२४१]

२. धवल-जयधवलकार स्वामि वीरसेन (ल० ७१०-७९० ई०) के विद्यागुरु, जिनके सान्निध्य में, चित्रकूटपुर (चित्तौड़ दुर्ग) में स्वामी ने, ल० ७४०-७५० ई० में, सिद्धान्त शास्त्र का अध्ययन किया था। [जैसो. १८६, १८८; प्रवी. i. १२३]

३. एलाचार्य या हेलाचार्य, ज्वालमालिनी मन्त्रशास्त्र के मूल आविष्कर्ता, ल० ७०० ई०। यह आचार्य तमिलनाड के उत्तरी

अर्काट जिले के पोन्नूर ग्राम के निवासी थे —इसी का अपरनाम हेमग्राम था। [देसाई. ४७, ४८, १७२; प्रवी. i. ९१] यह द्रविडसंघ के आचार्य थे।

४. एलाचार्य, या एलवाचार्य, वर्धमानगुरु (८०८ ई०) के गुरु और कुमारनंदि के शिष्य। —दे. एलवाचार्य।

५. एलाचार्य, जिनके समाधिमरण के उपरान्त, ल० ९०० ई० में, उनके शिष्य कल्नेलेदेव ने, गंगनरेश एरेय (एरेयंग या एरेयप्प) के समय में उनकी निषद्या स्थापित की थी। [जैशिस. iv. ७६; मेजै. १७३]

६. सूरस्थगण के एलाचार्य, जिन्हें ९६२ ई० में गंगनरेश मारसिंह द्वि. ने अपनी जननी कल्लब्बे द्वारा निर्मापित जिनालय के लिए ग्राम दान किया था। इनके गुरु रविनंदि, प्रगुरु रविचन्द्र जो स्वयं कल्नेलेदेव के शिष्य और प्रभाचन्द्र योगीश के प्रशिष्य थे। [जैशिसं. iv. ८५; v. १७]

७. देशीगण-पुस्तकगच्छ के श्रीधरदेव के शिष्य एलाचार्य जिनके शिष्य दामनंदि और चन्द्रकीर्ति थे, प्रशिष्य दिवाकरनंदि थे —दिवाकरनंदि के शिष्य जयकीर्ति अपरनाम चान्द्रायणीदेव के, ल० ११०० ई० के शि. ले. में उल्लिखित। [जैशिसं. ii. २४१; एक. iv. २८; मेजै. २४०]

८. एलाचार्य मलधारिदेव, जो पूर्णचन्द्र के प्रशिष्य और दामनंदि के शिष्य श्रीधराचार्य के शिष्य थे, और जिनके शिष्य चन्द्रकीर्ति तथा प्रशिष्य वह दिवाकरनंदिसिद्धान्तदेव थे जिनकी शिष्या आर्यिका बेसब्बेगन्ति को १०९९ ई० में दान दिया गया था —न० ७ से अभिन्न प्रतीत होते हैं। इन्हीं के शिष्य शुभचन्द्र ने १०९३ ई० में समाधिमरण किया था। [जैशिस. ii. २३९, २३२]

९. १४वीं शती के एक शि. ले. में अमरकीर्ति से पूर्व उल्लिखित एलाचार्य। [जैशिसं. iv. ४०३]

१०. श्रीधराचार्य के शिष्य, जो संस्कृत में गणित संग्रह ग्रन्थ के कर्त्ता हैं, ल० १०५० ई०।

एलिनि— प्राचीन केरल का जिनधर्मी चेर नरेश, ल० १००० ई०। उसके वंश में कई पीढ़ियों तक जैन धर्म की प्रवृत्ति रही —यक्ष-यक्षियों की भक्ति विशेष रही। [देसाई. ४४, ४५, ७८]

एलेयबेडंग— या एरेयबेडंग, राष्ट्रकूट इन्द्र चतुर्थ (मृत्यु ९८२ ई०) की उपाधि। [जैशिसं. i. ५७; ii. १६४]

ऐ

ऐच— जैनधर्मावलम्बी हैहयवंशी राजा, लोक प्र० का पौत्र, आनेग प्र० का पुत्र, बिज्ज प्र० का पिता, ल० ११०० ई०। [देसाई. २१५, ३०६] —इस नाम के इस वंश में और राजा हुए प्रतीत होते हैं। दे. ऐचभूप एवं एचरस।

ऐचिसेट्टि— जिसके पुत्र रामिसेट्टि ने जो एरम्बर्गेवाड का सेट्टिगुत्त (प्रधान श्रेष्ठि) था और मूलसंघ-बलात्कारगण के कुमुदेन्दु (आचार्य कुमुदचन्द्र) का गृहस्थ शिष्य था, ल० १२०० ई० में समाधि-मरण किया था। [जैशिसं. iii. ४४४]

ऐलखारवेल— दे. खारवेल। [प्रमुख. ५३-५९]

ऐलचन्द्र— दिग., प्राकृत ग्रन्थ सम्यक्त्व प्रकाश के रचयिता, ल. ११०० ई०।

ऐमल्ल— पलाशपुर का महावीर भक्त राजकुमार —महावीरकालीन। [प्रमुख. २०-२१]

ओ

ओखा— श्रावक भगिनी (साध्वी), ओखारिका की पुत्री, संभवतया शक-पह्लव आदि विदेशी जातीय जैन महिला, प्राचीन मथुरा के ल० दूसरी शती के शि. ले. में उल्लिखित। [जैशिसं. ii. ८८]

ओखारिक— की पत्नी और दमित्र की पुत्री दत्ता ने १६२ ई० में मथुरा में वर्धमान प्रतिमा स्थापित की थी। [जैशिसं. iv. १५]

ओखारिका— की पुत्रियों ओखा और उग्रतिका ने मथुरा में, वर्ष २९९ या ९९ में महावीर प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिस. ii. ८८]

ओघ— आर्य ओघ, मथुरा के वर्ष २० (सन् ९८ ई०) के जैन शि. ले. में उल्लिखित कोट्टियगण-ब्रह्मदासियकुल-उच्चनागरीशाखा के वाचक जयमित्रगणी के शिष्य और आर्यदत्त के गुरु। [जैशिसं. ii. ३१]

ओघनन्दि— दे. ओहनन्दि।

ओजण श्रेष्ठि— जिनने, वर्धमान (१५४२ ई०) के उल्लेखानुसार गेरुसोप्पे-नगर के मध्य में विराजित भव्य नेमि-जिनालय पूर्वकाल में बनवाया था। [प्रसं. १३७] —एक शि. ले. में ओजण के प्रपौत्र और कल्लपश्रेष्ठि एवं मावाम्बा के पुत्र अजणश्रेष्ठि द्वारा देशीगण-पनशोकवलि के ललितकीर्ति के शिष्य देवचन्द्रसूरि के उपदेश नेमि जिनकी प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. iv. ५३८]

ओड्डय— कन्नडकवि, कब्बिगरकाव्य (११७० ई०) का प्रणेता।

ओडेय— होयसलनरसिंह प्र० एवं बल्लाल द्वि. द्वारा पराजित एक प्रमुख शत्रु राजा। [जैशिसं. i. ९०, १२४, १३०]

ओडेयदेव— अपरनाम श्रीविजयपंडितदेव जो द्रविड़गण-नन्दिसंघ-अरुंगलान्वय के आचार्य कनकसेन वादिराज के शिष्य थे, पुष्पसेन, दयापाल और वादिराज (१०२५ ई०) के ज्येष्ठ सधर्मा थे, और अजितसेन वादीभसिंह, श्रेयांसदेव, कुमारसेन तथा कमलभद्र के गुरु, और मल्लिषेण मलधारि (स्वर्ग. ११२८ ई०) के प्रगुरु थे। [जैशिसं. i. ५४; प्रमुख. १७५]

ओडेयसेट्टि— ने स्वगुरु अनन्तवीर्यदेव के उपदेश से जिनप्रतिमा कोगलि में प्रतिष्ठापित की थी। [जैशिसं. iv. ६१६]

ओड्डम-ओड्डुग-ओड्डमरस— हुम्मच का जैनधर्मी सान्तर नरेश, आचार्य अजितसेन वादीभसिंह का गृहस्थ शिष्य, वीरदेव सान्तर और कञ्चलदेवी का पुत्र, चट्टलदेवी का पोष्यपुत्र, तैल, गोग्गि एवं बर्म्म सान्तरों का भाई। इसका अपरनाम विक्रम सान्तर था, प्रतापी धर्मात्मा नरेश था, स० १०७७-८७ ई०। [जैशिसं. iii. २६६; प्रमुख. १७२, १७४]

ओड्डम-ओड्डमरस— दे. ओड्डम।

ओदेयमसेट्टि— अनन्तवीर्यदेव के शिष्य ने कोगलि में जिनप्रतिमा की स्थापना की थी। [जैशिसं. iv. ५६७]

ओरंकलवायणर— ने, गंगनरेश शिवमार नवकाम के राज्य में, ल० ६७० ई० में, एक जिनमंदिर के लिए क्षेत्र दान किये थे। मंदिर के अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे। [जैशिसं. iv. २४; प्रमुख. ७४-७५]

ओहनन्दि— या ओघनन्दि, प्राचीन मथुरा संघ के आचार्य, वारणगण-पेतिवामिककुल से सम्बद्ध, आचार्य सेन के गुरु—१२५ ई० के दो शि. ले. में उल्लिखित। [जैशिसं. ii. ४७, ४८]

औ

औरंगजेब— मुग़ल बादशाह (१६५८-१७०७ ई०) जैन साहित्योल्लेखों में बहुधा नौरंगसाहि या अवरंगसाहि रूप में उल्लिखित। दे. अवरंगसाहि। [भाइ. ५१६-५२९]

औलुक्य रोहगुप्त— दार्शनिक कणाद का अपरनाम, स्थानांगसूत्र में उल्लिखित। [भेजै. २२०]

औवैयार— एक महान आर्यिका और तमिल भाषा की प्रसिद्ध कवियत्री, कुरलकाव्य प्रणेता तिरुवल्लवर की बहिन थी, ल० प्रथम शती ई०। [टांक.]

औवे— माता औवे मूलत: एक जैन राजकुमारी थी, जो बालब्रह्मचारिणी रही और अपनी नि:स्वार्थ सेवा, सुमधुर वाणी, नीतिपूर्ण उपदेशों और कवित्व के लिए तमिल भाषियों के लिए स्मरणीय एवं पूजनीय बनी हुई हैं—इस आर्यिका माता का समय ल० प्रथम शती ई० है—शायद उपरोक्त औवैयार से अभिन्न है। [प्रमुख. ७०]

अं

अंक— सोन्दत्ति के रट्टनरेश कार्त्तवीर्य प्रथम का पौत्र महासामंत अंक, जिसने १०४८ ई० में, चालुक्य सोमेश्वर प्र० के समय में एक

जिनालय के लिए भूमिदान किया था। [देसाई. ११४; जैशिसं. iv. २०९]

अंगडिय मल्लिसेट्टि— नामक धर्मात्मा जैन सेठ ने चालुक्य सोमेश्वर तृ० के राज्यकाल में, कई अन्य जैन व्यापारियों के सहयोग से, ल० ११७५-७६ ई० में, गोलिहल्ली में विशाल जिनालय बनवाया था। और उसके लिए भूमि आदि का दान दिया था। शायद यह सेठ अंगडि का निवासी था। दान बलात्कारगण के नेमिचन्द्र भट्टारक के शिष्य वासुपूज्य भट्टारक को दिया गया था। [देसाई. ११७; जैशिसं iv. २१०]

अंगरिक-कालिसेट्टि— ११८५ ई० के श्रवणबेलगोल के शि. ले. में उल्लिखित बसुविसेट्टी द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति-तीर्थंकरों की पूजार्थ के लिए दान देने वाला एक दानी श्रावक सेठ —नामान्तर अङ्गरिक भी। [जैशिसं. i. ३६१]

अंगारगण— स्वयंभू छन्द (ल० ८०० ई०) में उल्लिखित प्राकृत भाषा का पूर्ववर्ती कवि। [जैसाइ. ३८४]

अंतिग— एक पल्लव नरेश, जिसे राष्ट्रकूट कृष्ण तृ. (९३९-९६७ ई०) ने पराजित किया था— देवली के शि. ले. में उल्लिखित। [जैसाइ. ३२३]



परिशिष्ट

अ

अकलंक प्रसाद, बी०ए०— दिगम्बर जैन मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) निवासी, स्वतंत्रता सेनानी, १९४२ ई० में जेलयात्रा की थी। [उ. प्र. जै. ८८]

अगरचन्द नाहटा— (१९११-१९८३ ई०), बीकानेर (राजस्थान) के सम्पन्न व्यवसायी शंकरराव नाहटा के सुपुत्र, प्रसिद्ध साहित्यान्वेषक, विद्वान, लेखक, सम्पादक, कलाकृतियों तथा पुरानी पांडुलिपियों के खोजी एवं संग्रहकर्त्ता, 'समाजरत्न', 'जैन इतिहासरत्न', 'विद्यावारिधि', 'सिद्धान्ताचार्य' जैसी मानद उपाधियां प्राप्त, बीकानेर की नाहटों की गुवाड़ में स्थित अपने भवन में 'अभय जैन पुस्तकालय' तथा 'श्री शंकरराव नाहटा कला भवन' के संस्थापक, जिनमें स्वयं के परिश्रम से विपुल उपयोगी सामग्री का संग्रह किया, साधिक ४० पुस्तकों के रचयिता-सम्पादक तथा साधिक ४००० प्रकाशित लेखों के लेखक, अनेक जैन एवं जैनेतर साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध, समाजचेता श्वेताम्बर सद्गृहस्थ एवं साहित्य साधक। जन्मतिथि १३ मार्च, १९११, स्वर्गवास १२ जनवरी, १९८३ ई०। अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित हुआ है (भाग-१ सन् १९७६ ई० में, भाग-२ सन् १९७८ में बीकानेर से)।

अचलसिंह सेठ— आगरा निवासी श्रीमत ओसवाल, गांधीवादी स्वतन्त्रता सेनानी, अनेक बार जेलयात्राएँ की, २५ वर्ष तक स्वतन्त्र भारत की लोकसभा के सदस्य रहे, राष्ट्रसेवा में अनेक उत्तरदायित्व-पूर्ण पदों पर कार्य किया, अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं एवं योजनाओं से सम्बद्ध, शिक्षा प्रेमी, उदार, दानी, लोकप्रिय राजनेता, नागरिक एवं सज्जन। जन्म ५ मई, १८९५ ई०, स्वर्गवास ८८ वर्ष की परिपक्व आयु में २२ दिसंबर १९८३ ई०। इन्होंने १९२८ में अचलग्राम सेवा संघ की स्थापना की थी, १९३५ में अचलट्रस्ट तथा पुस्तकालय की,

और दानशीला धर्मपत्नी भगवती देवी द्वारा प्रदत्त अढ़ाई लाख रु० के दान से भगवती देवी शिक्षा समिति की स्थापना की, जिसके द्वारा एक कालिज, एक हायर सेकेन्डरी विद्यालय, एक प्रायमरी शाला तथा एक बालमंदिर चलाये जा रहे हैं। १९७४ में भारत के राष्ट्रपति ने इन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था।

अजित कुमार, पंडित, शास्त्री— जन्म आगरा जिले के चावली ग्राम में १९०० ई०, स्वर्गवास २० मई १९६८ ई० शान्तिवीर नगर महावीर जी में, १९२४ से १९४७ तक मुल्तान में रहे, अध्यापकी, व्यापार और प्रेस में संलग्न रहे। देश के विभाजन के समय सहारनपुर आ गये, तदनंतर दिल्ली में रहे-अन्तिम दो वर्ष उदासीन श्रावक के रूप में शान्तिवीर नगर-महावीर जी में रहे। अच्छे विद्वान, ओजस्वी वक्ता, उद्भट् शास्त्रार्थी, जैनगजट, जैन दर्शन आदि कई पत्रों के वर्षों सफल सम्पादक रहे, सत्यार्थ-दर्पण (स्वा० दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का प्रत्युत्तर) तथा सत्पथदर्पण, अनेकान्त परिचय, दैनिक जीवनचर्या आदि लगभग एक दर्जन पुस्तकों के रचयिता। [विद्वत्. १८०-१८१]

अजित प्रसाद— (१८७४-१९५१ ई०), 'अजिताश्रम' (गणेशगंज, लखनऊ) के जिन्दलगोत्रीय अग्रवाल, दिग. जैन ला० देवीदास जैन के सुपुत्र, एम.ए., एल-एल.बी., वकील, लखनऊ में सरकारी वकील तथा बावरा-राज्य में जज भी रहे। बड़े समाजचेता, सज्जन थे, स्व० जज जगमंदरलाल जैनी, कुमार देवेन्द्रप्रसाद (आरा), ब्र० शीतलप्रसाद, बैरि. चम्पतराय, महात्मा भगवानदीन आदि के साथी एवं सहयोगी, ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर, सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, भा. दि. जैन परिषद आदि के संस्थापकों में से थे, लगभग दो दशक अंग्रेजी जैनगजट के सम्पादक एवं प्रकाशक रहे, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, अमितगतिकृत द्वात्रिंशिका, गोम्मटसार (कर्मकांड-भा० २) आदि के अंग्रेजी अनुवाद किये, देवेन्द्रचरित, ब्र. सीतल आदि कई पुस्तकें तथा स्वयं का आत्म-चरित 'अज्ञात जीवन' लिखी। अपने समय में दिग० जैन

समाज के प्रमुख प्रबुद्ध नेताओं में परिगणित। जन्म १० अप्रेल १८७४, स्वर्गवास १७ सितम्बर १९५१ ई०।

अजित प्रसाद जैन— (१९०२-७७ ई०), एम. ए., एल-एल. बी., वकील, सहारनपुर में वकालत की, स्वतन्त्रता सेनानी के नाते जेलयात्राएँ भी कीं, कुशल राजनेता, उत्तर प्रदेश तथा केन्द्र की राजनीति में उल्लेखनीय स्थान रहा, १९३६-४७ में विधानसभा के सदस्य, तदनन्तर संविधान निर्मात्री परिषद के एकमात्र जैन सदस्य, लोकसभा के सांसद, राज्यसभा के सदस्य, प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष, केन्द्रीयमन्त्रिमंडल के सदस्य, केरल के राज्यपाल, आदि अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। गूंगे-बहरे बच्चों के लिए एक स्कूल स्थापित किया। अनेक बार विदेश-यात्राएँ की।

अतरसेन जैन, बी.ए— सदर मेरठ निवासी स्व० बा० गिरवरसिंह रईस के पोष्यपुत्र थे, जो १९२० ई० के लगभग सपत्नीक जापान चले गये थे, और जापानी नागरिक बनकर वहीं बस जाने वाले शायद प्रथम जैन थे। क्रान्तिकारी रासुदा, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि से सम्पर्क रहे। जापानयात्रा करने वाले भारतीय जैन विद्वानों एवं संस्कृतिसेवियों का आतिथ्य उत्साह से करते थे।

अतरसेन 'देशभक्त'— मेरठ (उ०प्र०) निवासी ला० अतरसेन जैन 'देशभक्त' बड़े गरम गांधीवादी कांग्रेसी कार्यकर्ता थे, उर्दू में 'देशभक्त' नामक अखबार निकालते थे जो अंग्रेजी सरकार द्वारा कई बार जब्त हुआ, १९२१ और १९३० ई० के आन्दोलनों में उन्होंने जेल यात्राएँ भी कीं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के आसपास ही स्वतन्त्रता सेनानी का निधन हो गया था। [उ. प्र. जै. ८४]

अतिसुखराय— वि. जैन, ल० १८०० ई० में श्रीपाल चरित्र की रचना की थी। [उ.प्र. जै. ७८]

अनन्तकीर्ति मुनि— २०वीं शती के प्रारम्भ के लगभग दक्षिण भारत से उत्तर की ओर विहार करने वाले शायद प्रथम दिग. मुनिराज थे, बम्बई में इनके नाम से अनन्तकीर्ति दिग. जैन ग्रन्थमाला स्था-

पित हुई थी, जिससे अनेक प्राचीन ग्रन्थ प्रकाशित हुए, और जिसके मन्त्री सेठ राजमल बड़जात्या (विदिशा) थे।

अनन्त प्रसाद जैन 'लोकपाल', प्रो०— दिग. जैन, संस्कृति-साहित्य-समाज सेवी, पटना के इंजीनियरिंग कालेज के अध्यक्ष पद से अवकाश लेकर गोरखपुर (उ० प्र०) में आ बसे थे, जहाँ ८० वर्ष की आयु में, ३० मई १९८६ ई० को उनका निधन हुआ। जैन सिद्धान्तों की वैज्ञानिक व्याख्या करने में निपुण थे, हिन्दी और अंग्रेजी में अनेक लेख, ट्रैक्ट एवं पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की या कराईं। अनन्तबेला चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की, वैशाली एवं पावानगर (फाजिलनगर-सठियांव डीह, जिला देवरिया) तीर्थों का अपूर्व उत्साह से प्रचार किया। ब्र० शीतल प्रसाद के अनन्य भक्त, अ० वि० जैन मिशन के सहयोगी, और शी० म० स्मृति केन्द्र लखनऊ के प्रेमी थे। [शोधादर्श-२, २७]

अनन्तमाला जैन— मेरठ के ख्यातिप्राप्त अध्यापक तथा जैन बोर्डिंग हाउस मेरठ के मूल संस्थापक मा० उग्रसेन कंसल की पुत्री, बा० पारस दास जैन की पुत्रवधु, विद्यावारिधि डा० ज्योतिप्रसाद जैन की धर्मपत्नि और डा० शशिकान्त एवं रमाकान्त जैन की जननी श्रीमती अनन्तमाला जैन (जन्म अक्तूबर १९१२, स्वर्ग. ५ अप्रेल १९८६ ई०) धार्मिक प्रवृत्ति की स्वाध्यायशील विदुषी महिला थीं, और अनन्त-ज्योति विद्यापीठ लखनऊ की संस्थापिका थीं, जिसके अन्तर्गत अन्य सांस्कृतिक, शैक्षिक एव सामाजिक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त कान्त बाल केन्द्र नामक बाल-विद्यालय लखनऊ में १९७० ई० से सफलता पूर्वक चल रहा है।

अनन्तराज शास्त्री, पं०— मूलत: केकड़ी निवासी दिग. जैन, पण्डित, न्याय-तीर्थ, आयुर्वेदाचार्य, कुशल वैद्य, मालवभूमि के धार्मिक-सामाजिक क्षेत्र में लोकप्रिय, महावीर फार्मेसी उज्जैन के संस्थापक, आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना में प्रेरक, विक्रम विश्वविद्यालय के प्रमुख सदस्य। [विद्वत्. १९३]

अनूपमालादेवी, ब्र०— आरा (बिहार) के लब्धप्रतिष्ठ संस्कृति-साहित्य-समाज-सेवी रईस स्व० बा० देवकुमार जी की धर्मपत्नी स्व० ब्रह्म-

चारिणी अनूपमाला देवी, अपनी देवरानी ब्र. पंडिता चन्दाबाई जी की सहयोगिनी, दानशीला, संयमी, धर्मात्मा महिला थीं। उन्हीं के सुपुत्र स्व० बा० निर्मलकुमार एवं चक्रेश्वर कुमार थे। वैभव सम्पन्न एवं भरापूरा परिवार रहते भी उन्होंने अपना सुदीर्घ वैधव्य उदासीन प्रतिमाधारी श्राविका के रूप में बिताया।

अभयचन्द्र, पंडित— जैनदर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, जन्म १८९५ ई०, भानगढ़ (जिला सागर, म० प्र०) के परवार जातीय –वासल्लगोत्री नाथूराम मोदी के सुपुत्र। दिग० जैन धार्मिक विद्वान, उत्साही अध्यापक एवं कुशल वैद्य, संस्कृत प्रेमी। कलकत्ता, वाराणसी, तथा इंदौर, जबलपुर, मोरेना आदि म.प्र. के कई नगरों में रहकर अध्यापन एवं वैद्यकी की। [विद्वत्. १९०]

अभिनन्दन कुमार टड़ैया— ललितपुर के सेठ मथुरादास टड़ैया के भतीजे अभिनंदन कुमार टड़ैया ललितपुर-झांसी के प्रसिद्ध वकील रहे, सन् ४२ के भारत-छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय योग देकर १ वर्ष की जेलयात्रा और १०० रु० अर्थदण्ड भोगा। [उ.प्र. जै. ९४]

अमीरचन्द राक्यान— जन्म अमृतसर १९०० ई०, दिल्ली मे निवास १९२२-२३ से, सफल व्यापारी एवं अच्छे समाजसेवी श्वे. सद्गृहस्थ, प्यारेलाल राक्यान के पुत्र। [प्रोप्रे. ११०]

अमोलकचन्द जैन वकील— वाराणसी निवासी इस युवक वकील ने सन् ३० का द्वितीय स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ होते ही समस्त राजनैतिक मुकदमें मुफ्त लड़े, फलत: ब्रिटिश शासन की निगाहों मे जेल में हुए अत्याचारों के भण्डाफोड़ को लेकर इन पर मुकदमा चलाया गया और ५०० रु० जुर्माना किया गया। सन् ३७ में श्री गोविंदवल्लभ पंत की अध्यक्षता में हुए जिला राजनीतिक सम्मेलन के प्रधानमन्त्री बने, सन् ३८-३९ में संयुक्तप्रांत के शिक्षा-मंत्री बा० संपूर्णानद के निजी सचिव रहे, और सन् ४२ में व्यक्तिगत सत्याग्रह मे भाग लेकर ६ मास का कारावास तथा १०० रु० अर्थदण्ड भोगा। [उ. प्र. जै. ९६]

अमृतलाल 'चंचल'— गाडरवारा (म०प्र०) निवासी, तारणपंथी-समैया जैनी,

'कविभूषण', 'वाणीरत्न' पं० अमृतलाल 'चंचल' (१९१३-१९८७ ई०), सुकवि, सुलेखक, स्वतन्त्रता-सेनानी, असाम्प्रदायिक चिन्तक, प्रगतिशील सुधारक, कई नाटक, नृत्य-नाटिकाओं, कहानियों एवं कविता संग्रहों के लेखक, धार्मिक ग्रन्थ भी लिखे हैं, उनकी तारण-त्रिवेणी प्रसिद्ध कृति है। [तारण बन्धु, फर्वरी ८८, पृ. ११-१४]

अम्बादास चंवरे वकील— २०वीं शती के प्रारंभिक दशकों में महाराष्ट्र के अकोला आदि क्षेत्रों के प्रसिद्ध सुधारवादी प्रगतिशील जैन नेता थे।

अम्बादास शास्त्री, पं०— काशी के जैनेतर ब्राह्मण पंडितप्रवर और न्यायशास्त्र के शीर्षस्थ विद्वान असाम्प्रदायिक मनोवृत्ति के ऐसे उदारमना विद्वान थे कि जब, वर्तमान शती के प्रारम्भ में, स्व० गणेश प्रसाद वर्णी को जैन न्याय पढ़ाने से काशी के सभी पंडितों ने इंकार कर दिया था, तो उन सबका कोपभाजन बनने की परवाह न करके, उक्त शास्त्री जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। फलस्वरूप स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना हुई और शास्त्री जी जीवनपर्यंत उसके सफल न्यायाध्यापक बने रहे। उनके प्रसाद से उक्त विद्यालय ने अनेक जैन न्यायाचार्यों एवं न्यायशास्त्री जैन पंडितों को जन्म दिया। [विद्वत्. १७५]

अम्बालाल साराभाई— (१८९०-१९६७ ई०), अहमदा के सुप्रसिद्ध उद्योगी तथा समाजनेता श्वे० जैन सेठ, अनेक औद्योगिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध, अंग्रेज सरकार से कैसरेहिन्द-स्वर्णपदक प्राप्त, १९३० में महात्मा गांधी की गिरफतारी पर वह पदक सरकार को वापस कर दिया, स्वातंत्र्य आंदोलन में कांग्रेस को प्रभूत आर्थिक योग दिया। अंतराष्ट्रीय राजनीति के भी पंडित थे। [प्रोमे. २३-२४]

अयोध्याप्रसाद गोयलीय— प्रायः बाल्यावस्था से ही दिल्ली में रहे, स्वतंत्रता सेनानी, सुधारक समाजसेवी, लेखक, कवि एवं पत्रकार, भा० दि० जैन परिषद के कर्मठ कार्यकर्त्ता, भारतीय ज्ञानपीठ के साहित्य विभाग में सेवारत, ज्ञानोदय के सम्पादक, उर्दू शायरों

के कई कवितासंग्रह संकलित करके प्रकाशित कराये, मौर्य-साम्राज्य के जैनवीर, राजपुताने के जैनवीर, जैन जागरण के अग्रदूत आदि ऐतिहासिक पुस्तकों के लेखक, समाजसुधार आदि विषयों पर लगभग एक दर्जन अन्य छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखीं। लगभग ७० वर्ष की आयु में सहारनपुर (उ.प्र.) में २९ अक्तूबर १९७५ को स्वर्गवास हुआ।

अरहदास, पं०— पानीपत (हरयाणा) निवासी पं० आरहदास (जन्म.१८९६, स्वर्ग. २५ मार्च १९३३ ई०)

अर्जुनलाल, पं०— २०वीं शती ई० के प्रारम्भ के लगभग हुए, बहुधा कलकत्ता में रहे, गोम्मटसारादि करणानुयोग के ग्रंथों के गम्भीर अध्येता एवं निष्णात पंडित।

अर्जुनलाल सेठी, पंडित— जन्म जयपुर में ९ सितम्बर १८८० ई०, स्वर्गवास अजमेर में २२ दिसम्बर १९४१ ई०। दिल्ली निवासी भवानीदास सेठी के पौत्र, जवाहरलाल सेठी के पुत्र, जयपुर के मोहन लाल नाजिम के जामाता, विद्वान पंडित, कवि, लेखक, सुवक्ता, बहुभाषाविज्ञ, अध्यापक, पत्रकार समाजसेवी, और उग्र क्रांतिकारी देशभक्त, १९०५-१२ ई० के क्रांतिकारी आंदोलनों में सक्रिय रहे, अंग्रेज सरकार ने छह वर्ष बंदीगृह में बन्द रखा—उनकी मुक्ति के लिए सार्वजनिक आंदोलन चला, डा० एनी-बेसेन्ट ने भी वायसराय से सिफारिश की, बंदीगृह में देवदर्शन बिना अन्नगृहण न करने की प्रतिज्ञा के कारण ७० दिन उपवासे रहे, महात्मा भगवानदीन के प्रयत्न से जेल में जिनप्रतिमा पहुंचाई गई तब अनशन छोड़ा। बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, सुभाषचन्द्र बोस आदि प्रमुख भारतीय नेता सेठी जी से परामर्श करते थे, १९३४ ई० में वह राजपूताना एवं मध्य भारत कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी चुने गये। अपने समय की जैनसमाज के सुधारकदल के नेताओं में परिगणित थे। उन्होंने १९०७ ई० में वर्धमान जैन विद्यालय की ओर तदनन्तर एक शिक्षण समिति की स्थापना की, जिनके द्वारा युवापीढ़ी में देशभक्ति एवं क्रांतिकारी विचारों का पोषण किया जाता था।

सेठी जी जितने अच्छे जैन थे, उससे बढ़कर पूर्णतया समर्पित देशभक्त और समाजसेवी थे। इस स्वार्थत्यागी बलिदानी की जीवन-संध्या बड़े आर्थिक अभाव एवं कष्टों में बीती, किन्तु धैर्यपूर्वक सब सहन किया। स्वतंत्र भारत में जयपुर की एक नवीन बस्ती को 'अर्जुनलाल सेठी नगर' नाम दिया गया है। [प्रोग्रेसिव: २२-२३]

आ

आदर्श कुमारी— हिन्दी के वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार श्री यशपाल जैन की धर्मपत्नी, अलीगढ़ उ० प्र० के एक सभ्रांत परिवार में जन्म, दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम. ए. करने के बाद डेनिश सरकार द्वारा प्रदत्त फैलोशिप पर डेनमार्क गई और वहां आठ माह रही। लौटने पर दिल्ली के कालिन्दी कालेज में १८ वर्ष हिन्दी की प्राध्यापिका रही, तीनों विश्व हिन्दी सम्मेलनों में सम्मिलित हुई और अमेरिका, कनाडा, मारिशस, फ्रांस आदि अनेक विदेशों में हिन्दी के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जैनधर्म में गहरी अभिरुचि थी और जैन समारोहों में बड़ी लगन से भाग लेती थी। ६९ वर्ष की आयु में अप्रैल १९८८ मे देहावसान।

आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, डा०— जैन सिद्धांत के पारगामी, पुरातन जैन साहित्य के गम्भीर अनुसंधित्सु, प्राकृतभाषा एवं साहित्य के महापंडित, २०वीं शती ई० के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्राच्यविद एवं अग्रणी जैनविद्याविद, सिद्धांताचार्य डा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये का जन्म कर्णाटक राज्य के बेलगांव जिले के ग्राम सदलगा में, १९०६ ई० में हुआ था। उनके पिता नेमण्ण (नेमिनाथ) भोमण्ण उपाध्याय कुलपरम्परा से जिनधर्मी ब्राह्मण थे। उपाध्ये जी ने १९३० ई० में बम्बई विश्वविद्यालय की एम. ए. परीक्षा संस्कृत-प्राकृत में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण की और कोल्हापुर के राजाराम कालिज में अर्धमागधी के व्याख्याता, आचार्य एवं कलासंकायाध्यक्ष के रूप में ३२ वर्ष कार्यरत रहकर १९६२ ई० में वहां से अवकाश प्राप्त किया।

उन्होंने १९३९ में डी.लिट. किया, १९४०-४२ में स्प्रिंगर शोध-कर्त्ता रहे, कालिज से निवृत्त होकर कई वर्ष यू. जी. सी. की वृत्ति पर मानद आचार्य एवं शोध निदेशक रहे, और १९७१ से मैसूर विश्वविद्यालय में जैनविद्या एवं प्राकृत भाषाओं के प्राचार्य रहे– ८ अक्तूबर १९७५ ई० को वह महामनीषी स्वर्गस्थ हुआ। अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलन में वह कई बार 'प्राकृत एवं जैनधर्म' विभाग के अध्यक्ष रहे, १९४६ में उसके पालि-प्राकृत-जैनधर्म-बौद्धधर्म विभाग के अध्यक्ष रहे, और उसके १९६६ में अलीगढ़ में सम्पन्न २३वें अधिवेशन के प्रधानाध्यक्ष रहे, श्रवणबेलगोल के १९६७ के अखिल कन्नड साहित्य सम्मेलन के भी अध्यक्ष रहे। भारतीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने प्राच्यविदों की अन्तर्राष्ट्रिय कांग्रेस के कैनबरा (आस्ट्रेलिया) अधिवेशन में १९७१ में और पेरिस अधिवेशन मे १९७३ में भाग लिया, तथा ल्यूवेन (बेलजियम) के १९७४ के 'धर्म एवं शान्ति-विश्व सम्मेलन' में भाग लिया। फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड आदि कई देशों के विश्वविद्यालयों के आमंत्रण पर १९७३ में वहाँ जाकर व्याख्यान दिये। प्रवचनसार, तिलोय-पण्णति, कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा, धूर्ताख्यान, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, शाक-टायन व्याकरण, बृहत्कथाकोश, प्रभृति लगभग दो दर्जन महत्त्व-पूर्ण प्राचीन ग्रन्थों के सुसम्पादित संस्करण प्रस्तुत किये, जिनकी विस्तृत प्रस्तावनाओं ने शोध-खोज के नये-नये आयाम खोले। अनेक शोधपत्र भी प्रकाशित किये और पचासों शोधछात्रों का निदेशन किया। माणिकचन्द दिग. जैन ग्रंथमाला, भारतीय ज्ञानपीठ की मूर्तिदेवी ग्रंथमाला, और शोलापुर की जीवराज ग्रंथमाला के प्रधानसम्पादक तथा जैन सिद्धांत भास्कर-जैना एन्टीक्वेरी आदि शोध पत्रिकाओं के सम्पादक रहे। अपने मधुर सद्व्यवहार एवं उन्मुक्त सहयोग भाव के लिए वह अपने अग्रज, साथी, और कनिष्ट विद्वानों में लोकप्रिय रहे। वर्तमान युग में जैनविद्या (जैनालाजी) तथा उसकी शोध प्रवृत्ति को सम्यक् रूप एवं स्थान प्राप्त कराने में स्व० डा० उपाध्ये जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

आदीश्वर प्रसाद— दिल्ली निवासी दिग. अग्रवाल समाजसेवी (१९१९-१९८१ ई०), उमरावसिंह जैन के सुपुत्र, जैन मित्र मंडल, वर्द्धमान पुस्तकालय, सी. आर. जैन ट्रस्ट, जैनसभा, दि. जैन पंचायत, वीरसेवा मन्दिर, जैन विद्यामंदिर आदि दिल्ली की अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ सक्रियरूप में सम्बद्ध, साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार में विशेष उत्साह। [प्रोजै. १०६-१०७]

आदीश्वरलाल जैन, रा० सा०— (१८९९-१९५० ई०), दिल्ली के दिग० अग्रवाल प्रसिद्ध वकील एवं समाजसेवी रा० सा० प्यारेलाल के सुपुत्र, सांभर झील के सरकारी खजांची, सेन्ट्रल बैंक की कई शाखाओं के कोषाध्यक्ष, भारत बैंक के डायरेक्टर, नगर महापालिका के सदस्य, आन० मजिस्ट्रेट, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दु कालिज, इन्द्रप्रस्थ कन्या महाविद्यालय, अनाथरक्षक सोसाइटी, दिग० जैन पंचायत, जैनमित्रमंडल आदि अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध, राज्यमान्य समाजसेवी श्रीमंत। [प्रोजै. २५]

आनन्द कुमार जैन— जिला रामपुर (उत्तर प्रदेश) के एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता थे। वह एडवोकेट थे। भूतपूर्व रामपुर रियासत में वह वित्त मंत्री और वहां की शिक्षा समिति के अध्यक्ष रहे थे। वह जिला परिषद् रामपुर के भी अध्यक्ष रहे थे। [रुहेल. डाय, पृ ११६]

आनन्द प्रकाश जैन— जिला मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। वे क्रान्तिकारी दल के सदस्य थे। इन्होंने सन् १९४२ के आन्दोलन में जेल यात्रा की थी। [उ० प्र० जैन, पृ० ८८]

आसचन्द्र— राजस्थानी जैन यति। इन्होंने सन् १४६० ई० में 'कल्पसूत्र बालावबोध' की रचना की थी। [कुशल निर्देश, अप्रेल १९८८, पृ. ३७]

इ

इन्द्रचन्द्र शास्त्री, डा०— दाबवाली मण्डी, जिला हिसार (हरयाणा) में ३० जून, १९१२ को जन्म। आरम्भिक शिक्षा उर्दू में। तदनन्तर

सेठिया विद्यालय बीकानेर में संस्कृत और प्राकृत का अध्ययन । सन् १९२८ में बंगाल संस्कृत एसोसियेशन कलकत्ता से जैनधर्म पर 'न्यायतीर्थ' परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९३० में स्याद्वाद महाविद्यालय, वाराणसी और सन् १९३१ में बनारस विश्व-विद्यालय के ओरियन्टल कालेज में प्रवेश लेकर वेदांत, संस्कृत और भारतीय दर्शन का सम्यक अध्ययन किया और सन् १९३७ में 'वेदान्ताचार्य' की परीक्षा प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। सन् १९४०-४४ के दौरान सेठिया इन्स्टीट्यूट, बीकानेर में साहित्य एवं शोध के प्रधान के रूप में कार्य करते समय जैन आगम और आगमोत्तर साहित्य का सार प्रस्तुत करने वाले 'श्री जैन सिद्धांत बोल संग्रह' की आठ खण्डों में रचना की। सन् १९४३ में संस्कृत से प्रथम श्रेणी में एम. ए. किया। सन् १९४४-४८ में वैश्य कालेज, भिवानी में प्रवक्ता रहे। अक्तूबर १९४७ में पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी से शोध छात्रवृत्ति प्राप्त कर भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनों का निरपेक्ष भाव से तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला ७०० पृष्ठ का शोध प्रबन्ध लिखा जिस पर उन्हें डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई। उक्त विद्याश्रम में कार्य करते समय उन्होंने दार्श-निक जैन साहित्य का इतिहास भी लिखा और मासिक पत्र 'श्रमण' का शुभारम्भ किया। उनके निबन्ध 'भारतीय संस्कृति की दो धाराएं' ने बौद्धिक जगत में खलबली उत्पन्न की। सन् १९५३ में वह रामजस कालेज, दिल्ली में तथा सितम्बर १९५७ में दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभाग में प्रवक्ता नियुक्त हुए वहां जुलाई १९५९ में स्नातकोत्तर अध्ययन (सायं-कालीन) संस्थान बनने पर उसके विभागाध्यक्ष बने, किन्तु दृष्टि चले जाने के कारण उन्हें शीघ्र ही उसे छोड़ना पड़ा और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अवकाश प्राप्त प्रोफेसरों के लिये योजना के अन्तर्गत कार्य किया। प्रमुख भारतीय पत्र-पत्रिकाओं मे हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी में अनेक लेख और शोध-पत्र प्रकाशित करने के अतिरिक्त १२ ग्रन्थों के 'लेखक'। सन् १९५४-५८ में अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के

मंत्री; सन् १९३४ में आल इण्डिया ओरियण्टल कांफ्रेन्स के दिल्ली अधिवेशन के मंत्री तथा १९५५-५७ में 'भारतीय संस्कृति' पत्रिका के सम्पादक। १ नवम्बर, १९८६ को ७४ वर्ष की आयु में निधन। [प्रो· जैन, पृ. ७९; जै. स. १६-११-८६]

इन्द्रचन्द्र शास्त्री, पं०— भा० दि० जैन संघ, मथुरा के साथ उसके एक परम उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में प्रायः प्रारम्भ से ही सम्बद्ध रहे। 'जैन सन्देश' पत्र के सम्पादन-प्रकाशन आदि में प्रभूत योग दिया। धर्म का अच्छा ज्ञान रखने वाले विद्वान पण्डित और कुशल प्रचारक। सरल स्वभावी और स्नेही व्यक्तित्व वाले। २ अक्तूबर, १९७२ को निधन।

इन्द्रमणि वैद्य— जिला मथुरा (उ० प्र०) के नगला मंसाराम ग्राम में सन् १९०१ ई० में मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को जैसवाल जातीय दिगम्बर जैन तेरह पंथी डंडोरिया गोत्रीय धार्मिक एवं विद्वान परिवार में बिन्द्रावनदास और पांचीबाई के पुत्र रूप में जन्म। हिन्दी, उर्दू अंग्रेजी और संस्कृत में शिक्षा प्राप्त की; धर्म का गहन अध्ययन किया और आयुर्वेद के प्रकाण्ड पण्डित बने। वैद्य जी को आयुर्वेद की सेवाओं के लिये 'भिषग्वर' और 'आयुर्वेद वाचस्पति' की उपाधियां मिली। कविता और निबन्ध लिखे जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। 'माता' (गद्य), 'जैन विवाह पद्धति' (गद्य) और 'इन्द्रनिदान' (पद्य) इनकी प्रकाशित रचनाएं हैं। 'द्रव्य संग्रह' का हिन्दी छंद में अनुवाद भी किया। 'जैसवाल जैन' और 'जनपद आयुर्वेदीय सम्मेलन' पत्रिकाओं के सम्पादक भी रहे। अनेक शिक्षण एवं स्वास्थ्य संस्थाओं की संस्थापना की तथा अनेक संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों से जुड़े रह कर असंख्य रोगियों को निश्शुल्क औषधि प्रदान कर एवं असहाय-निर्धनों की सहायता कर समाज सेवा का अत्युत्तम कार्य किया। जैसवाल जैन महासभा ने इन्हें 'जातिरत्न' की उपाधि से विभूषित किया। जीवन में यथेष्ट विद्या, धन और कीर्ति अर्जित की और चार सुयोग्य पुत्रों के जनक बने। [विद्वत् अभि., पृ. १९७-१९८]

इन्द्रलाल शास्त्री, पं०— २१ दिसम्बर, १८९७ ई० को जयपुर (राजस्थान) में मन्नीलाल जी और हीरादेवी के पुत्र रूप में जन्म। 'शास्त्री' एवं 'साहित्याचार्य' परीक्षाएं उत्तीर्ण की। 'विद्यालंकार', 'धर्म दिवाकर' तथा 'धर्मवीर' उपाधियों से विभूषित हुए। आजीविका हेतु अनेक स्थानों पर शिक्षण कार्य एवं अन्य अनेक व्यवसाय किये। सुकवि, सुलेखक, सुवक्ता और धर्मोपदेशक के रूप में ख्याति प्राप्त। धर्म सोपान, अहिंसा तत्व विवेक मंजूषा, दि० जैन साधु की चर्या, जैनधर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है, जैन मन्दिर और हरिजन, श्रेयोमार्ग, वर्णविज्ञान, जैन धर्म और जाति, तत्वालोक, आत्म वैभव, महावीर देशना, पुण्य धर्म मीमांसा, भावलिङ्गि द्रव्यलिङ्गि मुनि का स्वरूप, साम्यवाद से मोर्चा, भारतीय संस्कृति का मूलरूप, पशुवध सबसे बड़ा देशद्रोह, मन्दिर प्रवेश मीमांसा, रात्रि भोजन, शान्ति पीयूषधारा, भक्ति कुसुम संचय आदि कृतियों की रचना और पंचस्तोत्र, आत्मानुशासन एवं स्वयंभूस्तोत्र का हिन्दी पद्यानुवाद किया। भंवरीलाल बाकलीवालस्मारिका तथा खण्डेलवाल जैन हितेच्छु, जैन गजट, समार्ग और अहिंसा पत्रों का सम्पादन किया। ७३ वर्ष की आयु में २२ नवम्बर, १९७० को देहावसान। [विद्वत् अभि., पृ. १९५-१९६]

उ

उग्रसेन जैन— मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) निवासी स्वतन्त्रता सेनानी थे। इन्होंने सन् १९१९ में कांग्रेस मे कार्य किया। गांधी जी के अनन्य भक्त रहे। इनके परिवार में खादी का ही प्रयोग होता रहा। सन् १९३० और १९३२ के आन्दोलनों में जेल यात्रा की और सन् १९४१-४२ में नजर बन्द रहे। [उ. प्र. जैन, पृ. ८८]

उग्रसेन जैन, [illegible]— मेरठ में ला० बनारसीदास जैन सूतवाले के द्वितीय सुपुत्र और मा० मित्तर सेन के अनुज। प्रबुद्ध, सुधारवादी विचारधारा के व्यक्ति। मिशनरी स्कूल में अंग्रेजी के अध्यापक।

बाद में अपना स्वयं का स्कूल चलाया। छात्रोपयोगी अनेक पुस्तकें लिखीं और निर्धन छात्रों को निःशुल्क शिक्षण दिया। महात्मा गांधी के आन्दोलन से प्रभावित रहे। सादा-सरल जीवन व्यतीत किया। जैन सभा मेरठ के सक्रिय सदस्य और जैन बोर्डिंग हाउस मेरठ के संस्थापकों में रहे। नवम्बर १९३५ ई० में स्वर्गवास। इनकी पुत्री अनन्तमाला का विवाह डा० ज्योति प्रसाद जैन से १२ फरवरी १९२९ को हुआ था।

उग्रसेन जैन, मास्टर (परिषद)— जन्म ६ फरवरी १८९४, स्वर्गवास १८ नवम्बर १९७२ ई०, जन्म स्थान सरधना, शिक्षा मेरठ में हुई, कार्यक्षेत्र बड़ौत, दिल्ली, काशीपुर, कानपुर आदि। समाज-सेवीव्रती, धुन के पक्के कार्यकर्त्ता, सुधारक एवं शिक्षाप्रचारक, भा० दिग० जैन परिषद के एक स्तंभ, उसके भा० दि० जैन परिषद परीक्षा बोर्ड के, उसकी १९३० में स्थापना से लेकर १९७० ई० पर्यन्त मन्त्री एवं संचालक रहे, उसकी सफलता एवं उपलब्धियों का मुख्य श्रेय उन्हें ही है, स्कूली व कालिजी छात्र-छात्राओं में धर्म शिक्षा के प्रचार हेतु अनेक योजनाएँ चलायीं। परिषद के समाजसुधार के कार्यक्रमों में सदा आगे रहे। अनेक विद्वानों को सतत् प्रेरणा देकर अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखवाई और प्रकाशित कराई, जिनमें डा० ज्योति प्रसाद जैन कृत 'भारतीय इतिहास : एक दृष्टि', रुहेलखंड-कुमायूं जैन डायरेक्टरी, आदि मुख्य हैं। पत्र व्यवहार में निरालसी थे। स्व० ब्र० शीतल प्रसाद जी के विशेष भक्त थे।

उग्रसेन जैन, वकील— रोहतक (हरयाणा) निवासी। धर्म ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान रखने वाले पण्डित। प्रबुद्ध विचारक, समाज सुधारक और सक्रिय कार्यकर्ता रहे। भा० दि० जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड के वर्षों मन्त्री रहे और अनेक छात्रोपयोगी धार्मिक पुस्तकें लिखी।

उग्रसेन जैन, सौदागर— मेरठ के दिग० जैन, अग्रवाल गर्गगोत्रीय एक कुशल व्यापारी। धर्मात्मा और सरल-सात्विक वृत्ति वाले। इन्होंने हस्तिनापुर के दिग० जैन मन्दिर में मानस्तम्भ के निर्माण में प्रभूत आर्थिक सहयोग दिया अन्य धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में भी बराबर योग देते रहे। इनके पुत्र शीतल प्रसाद से डा०

ज्योति प्रसाद की भगिनी मैनावती विवाही थी। इनके पौत्र, विशेषकर हुकमचंद जैन, आज भी जैन समाज मेरठ के धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

उत्तमचन्द वकील, बरार— जिला आगरा (उ० प्र०) के निवासी। सन् १९३६ से राष्ट्रीय क्षेत्र में अधिक प्रकाश में आये और जिला कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा मण्डल कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी रहे। किसानों का संगठन किया। सन् १९४० के आंदोलन में नजरबन्द किये गये और लगभग एक वर्ष जेल में रहे। पुन: सन् १९४२ के आंदोलन में ९ अगस्त, १९४२ को गिरफ्तार किये गये और मई १९४४ में छोड़े गये। [उ० प्र० जै०, पृ० ९२]

उदय जैन कानोड़— श्वेताम्बर जैन विद्वान पण्डित; ६४ वर्ष की आयु में २७ नवम्बर, १९७७ को निधन।

उदयलाल कासलीवाल, पं०— १९वीं शती के अन्तिम तथा २०वीं के प्रारंभिक दशकों में सक्रिय साहित्यसेवी, कवि एवं लेखक, दर्जनों संस्कृत की प्राचीन रचनाओं, विशेषकर कथाओं के हिन्दी गद्य में अनुवाद किये, साहित्य प्रचार का बड़ा उत्साह था, बहुधा बम्बई में रहते थे।

उमरावसिंह जैन— जन्म रोहतक (हरयाणा) में १८९१ ई० में, स्वर्गवास दिल्ली में ३० जनवरी १९५४ ई०, दिल्ली में बैंक में कार्यरत रहे, बड़े समाजसेवी थे, १९१५ ई० में जैन मित्रमंडल के प्रमुख संस्थापकों में से थे, चिरकाल उसके मंत्री रहे, उसके माध्यम से अनेक पुस्तकें, ट्रैक्ट आदि प्रकाशित कराये, बड़े पैमाने पर महावीर जयन्ति उत्सव मनाने का सफल अभियान चलाया —जैन अनाथाश्रम आदि अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। [प्रोग्रे. ६१–६२]

उमरावसिंह टांक— दिल्ली निवासी ओसवाल, बी. ए., एल-एल. बी. वकील समाजसेवी, इतिहास प्रेमी और लेखक थे, १९१४ और १९१८ ई० के बीच उनकी कई ऐतिहासिक पुस्तिकाएँ अंग्रेजी में प्रकाशित हुई, यथा 'जैना हिस्टोरीकलस्टडीज' (१९१४), 'डिस्टिंग्विश्ड ओसवाल्स एंड ओसवाल फैमिलीज', 'दी जैना क्रानो-

ग्रोजी', 'ए डिक्शनरी आफ जैन बायोग्रेफी (केवल अक्षर 'ए')' (१९१७), 'सबडिस्टिंक्शिन्ज जैन' (१९१८), संबोध सत्तरी का अनुवाद, आदि। —१९२० ई० के कुछ उपरान्त स्वर्गवास हो गया लगता है।

उमरावसिंह, पंडित— बीसवीं शती ई० के प्रारम्भिक दशकों में उदासीन वृत्ति के प्रगतिशील एवं सेवाभावी विद्वान थे, स्याद्वाद विद्यालय वाराणसी के साथ वर्षों सम्बद्ध रहे।

उल्फत राय— जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के निवासी। सदा शुद्ध खादी का प्रयोग किया। सन् १९३०, १९३२ व १९४२ के स्वतन्त्रता आंदोलनों में जेल यात्राएं की। [उ.प्र. जै., पृ. ८८]

उल्फत राय— जिला गुड़गांव (हरयाणा) में २८ जुलाई, १८९६ को जन्म। गणेशीलाल जैन के पुत्र। पार्लियामेन्ट पोस्ट आफिस में पोस्ट-मास्टर के पद पर कार्यरत रहे। धार्मिक और सामाजिक कार्य-कर्ता। नई दिल्ली में जैन ब्रदरहुड, जैनसभा, दिगम्बर जैन बिरादरी और जैन क्लब के संस्थापक सदस्य तथा जैन मित्र मण्डल के सक्रिय सदस्य। जैन क्लब तथा जैन कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड के अध्यक्ष निर्वाचित। दक्षिण दिल्ली में ग्रीन पार्क कालोनी का विकास किया और वहां की कल्याण समिति के मंत्री तथा वहां के जैन गर्ल्स स्कूल के उपाध्यक्ष रहे। सन् १९६२ में चीन के आक्रमण के उपरान्त सिविल डिफेन्स कार्य किया और पोस्ट वार्डन बने। सन् १९६५ के पाकिस्तान आक्रमण के दौरान अपने क्षेत्र में सेक्टर वार्डन का कार्य किया। ७२ वर्ष की आयु में १६ अगस्त, १९६८ को निधन हुआ। होम्योपैथिक डाक्टर के रूप मे रोगियों को निःशुल्क औषधि वितरित की। एक कुशल घुड़सवार और तैराक भी थे। गेहुएं रंग, सस्मित वदन, मृदुभाषी, उदारमना, सौम्य व्यवहार वाले उल्फतराय जी जैन ही नहीं जैनेतर मित्रमण्डली में भी लोकप्रिय रहे और वह सम्मान के साथ 'किबला साहेब' के नाम से पुकारे जाते थे। अपने पीछे सुशिक्षित एवं सुप्रतिष्ठित ४ पुत्र व २ पुत्रियां छोड़ी। [प्रो. जै., पृ. ३०७-३०८]

उल्फतराय इंजी०, रा० ब०— अपने समय के एक कुशल इंजीनियर। रुड़की की नहर को बनाने का श्रेय। राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित। सेवानिवृत्ति के उपरान्त मेरठ नगर में बसे। सरल स्वभावी, उदारमना, धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति।

उल्फतराय, रा० सा०— दिल्ली के प्रतिष्ठित व्यक्ति। रायसाहब की उपाधि से सम्मानित। धर्मात्मा और सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता। अयोध्या और हस्तिनापुर दिग. जैनतीर्थ क्षेत्रों के प्रबन्ध से तथा अन्य अनेक सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से वर्षों तक जुड़े रहे। ८७ वर्ष की आयु में ११-९-१९७९ को निधन।

ऋ

ऋषभ चरण जैन— १ जनवरी, १९११ ई० को ग्राम सराय सदर (वर्तमान नोएडा) जिला बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) के मध्यवर्गीय प्रतिष्ठित दिगम्बर जैन परिवार में जन्म हुआ। ग्यारह वर्ष की आयु में दिल्ली के प्रख्यात बैरिस्टर चम्पतराय द्वारा पौत्र रूप में दत्तक लिये गये। बहुमुखी प्रतिभा के धनी। सन् १९२५ में 'महारथी' में प्रकाशित 'मिट्टी के रुपये' पहली कहानी से साहित्य जगत में प्रवेश। पैंतीस वर्ष की आयु तक पैंतीस पुस्तकों की रचना की। अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ करने का क्रान्तिकारी कार्य किया। उनकी बहुचर्चित कृतियां– 'दिल्ली का कलंक', 'दुराचार के अड्डे', 'चम्पाकली', 'तीन इक्के', 'वेश्यापुत्र', 'बुर्केवाली', 'मयखाना', 'मन्दिरदीप', 'जनानी सवारियाँ' आदि हैं। मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त ड्यूमा और ताल्सताय के कई कथा ग्रन्थों का सफल अनुवाद किया जिनमें 'कैदी', 'कंठहार', 'बादशाह की बेटी', 'षडयन्त्रकारी', 'महापाप' और 'देवदूत' उल्लेखनीय हैं। 'चित्रपट' और 'सचित्र-दरबार' के सम्पादन द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में नये मानदण्ड स्थापित किये। सन् १९२८ में 'साहित्य मण्डल' नामक प्रकाशन संस्था स्थापित की और सन् १९४२ में फिल्म व्यवसाय में भी प्रवेश किया,

किन्तु उसमें असफल रहने से इन्हें गहरा मानसिक आघात पहुंचा। ७४ वर्ष की आयु में दिल्ली में ७ अगस्त, १९८६ को इन्होंने महाप्रयाण किया। [ऋषभ चरण की सब प्रकाशित पुस्तकें].

ऋषभदास मुख्तार— स्वाध्याय प्रेमी; सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सक्रिय रुचि रखने वाले, मूलतः सनौली के निवासी, जीवन का बहुभाग मेरठ नगर और सहारनपुर में व्यतीत करने वाले। मेरठ के डा० लालचन्द दास के भक्त। अगस्त १९८५ में ९२ वर्ष की आयु में निधन।

ऋषभदास रांका— एक प्रख्यात समाजसेवी; सुलेखक; पत्रकार एवं राजनैतिक कार्यकर्ता। खानदेश (महाराष्ट्र) के ग्राम फतेपुर में ३ सितम्बर, १९०३ को जन्म। फतेपुर, जामनेर, जलगांव, वर्धा, पूना और बम्बई इनकी कार्यस्थली रही। १४ वर्ष की आयु से पैतृक वस्त्र-व्यवसाय में हाथ बटाना आरम्भ किया। कृषि और डेरी कार्य भी किया और तदनन्तर इंश्योरेन्स कम्पनी में उच्च पदों पर कार्य किया। महात्मा गांधी के साथ साबरमती आश्रम में रहकर कार्य किया। आचार्य विनोबा भावे, सेठ जमनालाल बजाज और श्री केदारनाथ के साथ मिलकर कार्य किया। सन् १९३१-३२ के 'नमक आन्दोलन' तथा सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेने के कारण अनेक बार जेलयात्रा की। खादी और ग्रामोत्थान, हरिजन कल्याण, गो संरक्षण, कस्तूरबा स्मारक और गांधी स्मारक के लिये कार्य किया। सन् १९४६ से भारत जैन महामण्डल में सक्रिय हुए और सन् १९४८ से मृत्युपर्यन्त उसके मासिक पत्र 'जैन जगत' का सफल सम्पादन करते रहे। सन् १९६८-७१ में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष और उसके पाक्षिक 'अणुव्रत' के सम्पादक रहे। महावीर कल्याण केन्द्र की ओर से विभिन्न राज्यों में सूखे और बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का स्वयं दौरा कर प्रभावित व्यक्तियों को आवश्यक सामान तुरन्त पहुंचाने की व्यवस्था की। [प्रो. जै., पृ. ९५]

ऋषभदास, वकील— दिग०, गोयलगोत्रीय अग्रवाल, ला० सूरजभान के सुपुत्र, ला० मसूलाल जैन बैंकर के अग्रज, १८९६ में बी. ए. और १८९९ में वकालत पास की, अंग्रेजी में इनसाइट इन्टु जैनिज्म लिखी तथा परमात्म प्रकाश और पुरुषार्थसिद्ध्युपाय के अंग्रेजी अनुवाद किये, जैनधर्म में परमात्मा, अहिंसा, जैनधर्म का महत्व, वर्ण व्यवस्था, जैनकर्म फिलासफी आदि कई पुस्तकें हिन्दी और उर्दू में लिखीं, पं० टोडरमल कृत मोक्ष मार्ग प्रकाश का सरल भाषान्तरण हिन्दी और उर्दू में छपवाया, जैनगजट (अंग्रेजी), जैनगजट (हिन्दी), जैनप्रदीप (उर्दू), जैनमित्र, जैन जगत आदि पत्रों में तीनों भाषाओं के सैकड़ों लेख छपे, १९११ ई० में मेरठ जैन बोर्डिंग हाउस के संस्थापकों में से थे और जीवन पर्यन्त उसके मन्त्री रहे, ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनापुर, भारत जैन-महामंडल, अ० भा० दिग० जैन परिषद, दि० जैन महासभा आदि से सक्रिय रूप से सम्बद्ध रहे, समाजसेवी, सुधारक, शिक्षा प्रचारक, शान्त प्रकृति के सज्जन थे। जन्म मेरठ १८७१ ई०, स्वर्गवास मेरठ २४ मई १९३० ई०।

ए

ए० चक्रवर्ती नयनार, प्रो०— तमिल, प्राकृत, संस्कृत और अंग्रेजी के सुज्ञाता एवं विद्वान सुलेखक, पंचास्तिकायसार आदि जैन महाग्रन्थों के सफल अंग्रेजी अनुवादक और सम्पादक तथा तमिल जैन साहित्य के सुप्रसिद्ध अन्वेषक। राओ बहादुर की उपाधि से विभूषित मद्रास में प्रोफेसर, आई० ई० एस० के सदस्य। १२ फरवरी, १९६० को निधन।

ए० बी० लट्ठे, दीवान बहादुर— महाराष्ट्र प्रदेश के प्रबुद्ध जैन जन-नेता थे। अंग्रेजी शासन में उन्नति करके उन्होंने दीवान बहादुर की उपाधि पायी तो देश-सेवा एवं कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेकर बम्बई राज्य के प्रथम मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित हुए। जैनधर्म पर अंग्रेजी में कुछ पुस्तकें भी उन्होंने लिखीं। [प्रमुख ऐति., पृ. १६४]

ए० सुबय्या शास्त्री— कर्नाटक के दक्षिण कनारा जिले के केववबे ग्राम में मई १८९४ में जन्म हुआ, वाराणसी आदि में शिक्षा प्राप्त की, बंगलौर में रहे, बम्बई के ऐलक पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन और पूना के भंडारकर प्राच्यविद्या मंदिर में शोधकार्य किया, प्राकृत, संस्कृत, कन्नड और हिन्दी के विद्वान, अनेक मानद उपाधियां, स्वर्णपदक, पुरस्कार आदि प्राप्त किये, मन्त्र-शास्त्र जोणिपाहुड को प्रकाश में लाये, षटखंडागम का कन्नड अनुवाद किया, अन्य कई ग्रन्थ लिखे, समर्पित साहित्यसेवी विद्वान। [प्रोजै. ६८]

ओ

ओम प्रकाश जैन, कसेरे— मेरठ नगर के गोयल गोत्रीय अग्रवाल दिगम्बर जैन गणेशीलाल कसेरे के पौत्र तथा विशम्भर सहाय मुख्तार के ज्येष्ठ पुत्र। जैन सभा मेरठ शहर के सक्रिय कार्यकर्ता और नमि जैन औषधालय मेरठ के मंत्री रहकर नगर के धार्मिक-सामाजिक कार्यों में प्रभूत योग दिया। एक ओजस्वी व्यक्तित्व वाले स्वावलम्बी सफल गृहस्थ। जनवरी १९८३ ई० में स्वर्गवास।

ओम प्रभा जैन— वाराणसी के सुप्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार में ६-२-१९३१ को जन्म; शिक्षाविद् की पुत्री और १९५१ में डा० के० सी० जैन से विवाही; एम. ए. (अंग्रेजी साहित्य) और एल-एल. बी. तक शिक्षा प्राप्त; सन् १९५७ से १९७२ के दौरान चार बार पहले अविभाजित पंजाब राज्य और तदनन्तर हरयाणा राज्य में कैथल विधान सभा क्षेत्र से विधान सभा सदस्या निर्वाचित; पंजाब राज्य में १९६२-६३ में उपमंत्री तथा १९६५-६६ में मंत्री और हरयाणा राज्य में १९६६-६७ तथा १९६८-७२ तक मंत्री (वित्तविभाग) रही। अनेक राजनैतिक, औद्योगिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक संगठनों से सम्बद्ध रही। इंगलैण्ड, डेनमार्क, पश्चिम जर्मनी, फ्रांस, स्विटजरलैण्ड और रोम आदि विदेशों का भ्रमण किया। सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विषयों

पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में सुवक्ता और सुलेखिका। कला, साहित्य और संगीत में रुचि रखने वाली सौम्य स्वभावी, मृदुभाषी महिला। [प्रो. जै., पृ. २१६]

अं

अंगूरी देवी जैन— आगरा के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री महेन्द्र जी जैन की धर्मपत्नी। सन् १९३० के आन्दोलन में ६ मास की कड़ी सजा पाई। हर राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग दिया। सन् १९४०-१९४२ के आन्दोलनों में रिलीफ आदि कार्यों में भाग लिया। २० मई, १९६८ को देहावसान हुआ। [उ. प्र. जैन, पृ. ८९]

संकेत सूचियां

१. संदर्भ-ग्रन्थ संकेत-सूची—

अने.— 'अनेकान्त', वीर सेवा मंदिर सरसावा/दिल्ली की सावधिक शोध-पत्रिका।

अर्द्धकथानक.— पं० बनारसीदास (१६४१ ई०), आत्मचरित।

अल्तेकर.— डा० ए० एस० अल्तेकर कृत 'राष्ट्रकूटज एण्ड देअर टाइम्स', पूना, १९३४ ई०।

आदि पु.— जिनसेन स्वामि (८३७ ई०) कृत 'आदिपुराण', भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित संस्करण।

आराग्र./आराग्र. सू.— जैन सिद्धान्त भवन आरा में संग्रहीत ग्रन्थों की सूची।

इं. ए.— इंडियन एन्टीक्वेरी।

उ. पु.— गुणभद्राचार्य (ल० ८५० ई०) कृत 'उत्तरपुराण', भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण।

उ. प्र. जै.— 'उत्तर प्रदेश और जैनधर्म', डा० ज्योति प्रसाद जैन कृत, ज्ञानदीप प्रकाशन, लखनऊ, द्वारा १९७६ ई० में प्रकाशित।

एइं.— एपीग्रेफ़ी इंडिका।

ए. एस. आई.— 'आर्कियालाजीकल सर्वे आफ इंडिया-रिपोर्ट'।

एक.— 'एपीग्राफिया कर्णाटिका'।

ककच.— 'कर्णाटक कवि चरिते', रावो बहादुर आर. नरसिंहाचर कृत, बंगलौर।

कार्पस. इंस. इंडि.— कार्पस इन्सक्रिप्शनम् इंडिकेरम।

कास.— डा० कस्तूरचंद कासलीवाल कृत 'जैन ग्रन्थ भण्डाराज इन राजस्थान', जयपुर, १९६७ ई०।

काहि.— बा० कामता प्रसाद जैन कृत 'हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास', भारतीय ज्ञानपीठ, १९४७ ई०।

कुशल.— श्री भंवरलाल नाहटा कलकत्ता द्वारा सम्पादित-प्रकाशित मासिक 'कुशल-निर्देश'।

कैच.— डा० कैलाश चन्द्र जैन कृत 'जैनिज्म इन राजस्थान', जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर, १९६३ ई०।

कै. चं.— पण्डित कैलाश चन्द्र सिद्धान्ताचार्य, तथा उनका 'जैन साहित्य का इतिहास', पूर्वपीठिका, व भा० १ और २, वर्णीग्रन्थमाला वाराणसी, १९६२-७६।

गुच.— डा० गुलाबचन्द्र चौधरी कृत 'पालिटिकल हिस्टरी आफ नर्दर्न इंडिया फ्राम जैना सोर्सेज', सोहन लाल जैनधर्म प्रचारक समिति अमृतसर, १९६३ ई०।

गोम्मट. कर्म.— गोम्मटसार-कर्मकाण्ड, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली १९८०-८१।

गोयलीय — अयोध्या प्रसाद गोयलीय कृत 'जैनजागरण के अग्रदूत', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली, १९५२ ई०।

चटर्जी.— डा० ए०के० चटर्जी कृत 'ए कम्प्रीहेन्सिव हिस्टरी आफ जैनिज्म' २ भाग, कलकत्ता, १९७५ व १९८३ ई०।

जे आर. ए. एस.— जर्नल आफ दी रायल एशियाटिक सोसाइटी।

जै. ए.— जैना एण्टीक्वेरी, जैन सिद्धान्त भवन आरा की अंग्रेजी शोध पत्रिका।

जैना.— 'जैना आथर्स एंड देयर वर्क्स' (जैन ग्रन्थकर्ता और उनके ग्रन्थ), डा० ज्योति प्रसाद जैनकृत।

जैप्राइ.— 'जैनधर्म का प्राचीन इतिहास', २ भाग, पं० बलभद्र एवं पं० परमानन्द शास्त्री कृत, दिल्ली १९७४ ।

जैमौइ.— 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास', ४ भाग, आ० हस्तीमल के निर्देशन में निर्मित-प्रकाशित, जयपुर, १९७१-८७ ई० ।

जैशिसं.— 'जैन-शिलालेख संग्रह', ५ भाग —प्रथम तीन भाग पं० नाथूराम प्रेमी द्वारा श्री माणिकचन्द दि. जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई से क्रमश: १९२८, १९५२ व १९५७ ई० में प्रकाशित, शेष दो भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से १९६४ व १९७१ में; सम्पादक क्रमश: भा. I-प्रो० हीरालाल जैन, II-पं० विजयमूर्ति, III-वही, प्रस्तावना डा० गुलाबचन्द्र चौधरी की, IV-V-डा० विद्याधर जोहरापुरकर । पांचों भाग अब भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से प्राप्य हैं ।

जैसाइ.— 'जैन साहित्य और इतिहास', पं० नाथूराम प्रेमी कृत, द्वि. सं., बम्बई, १९५६ ई० ।

जैसिको.— 'जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश', ४ भाग, क्षु. जिनेन्द्र वर्णी कृत, तथा भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा १९७०-७३ ई० में प्रकाशित ।

जैसिभा.— 'जैन सिद्धान्त भास्कर', जैन सिद्धान्त भवन द्वारा प्रकाशित आवधिक शोध पत्रिका ।

जैसो.— 'दी जैना सोर्सेज आफ़ दी हिस्टरी आफ़ एन्शेन्ट इण्डिया', डा० ज्योति प्रसाद जैन कृत, तथा मे० मुन्शीराम मनोहरलाल नई दिल्ली द्वारा १९६४ ई० में प्रकाशित ।

टाड.— 'एनल्स एंड एन्टीक्विटीज आफ़ राजस्थान', कर्नल जेम्सटाड कृत ।

टंक./डाक.— यू. एस. टंक कृत 'ए डिक्शनरी आफ़ जैन बायोग्रेफ़ी', पार्ट I-ए., कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन, आरा, द्वारा १९१७ ई० में प्रकाशित ।

देसाई.— पी. बी. देसाई कृत 'जैनिज्म इन साउथ इंडिया एण्ड सम जैन एपीग्राफ़्स', जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर द्वारा १९५७ ई० में प्रकाशित ।

नेमिच.— डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत 'तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य

'परम्परा', ४ भाग, दि. जैन विद्वत्परिषद सागर द्वारा १९७४ ई० में प्रकाशित।

न्याय. कु. च.— न्यायकुमुदचन्द्र, भा० १ – सम्पादक : डा० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, प्रस्तावना लेखक : पं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री।

पद्मपु.— रविषेणाचार्य कृत 'पद्मपुराण' (६७६ ई०), भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण।

पाण्डवपु.— शुभचन्द्राचार्य कृत 'पाण्डव पुराण', जीवराजग्रन्थमाला शोलापुर संस्करण।

पार्श्व.— पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोधसंस्थान द्वारा प्रकाशित 'जैन साहित्य का बृहद् इतिहास', ७ भाग।

पुवा./पुजैवासू.— 'पुरातन जैन वाक्य सूची' की प्रस्तावना, पं० जुगलकिशोर मुख्तार कृत, वीरसेवा मंदिर सरसावा, १९५० ई०।

प्रका. जैसा.— 'प्रकाशित जैन साहित्य', डा० ज्योति प्रसाद जैन द्वारा सम्पादित, जैनमित्र मंडल दिल्ली द्वारा १९५८ ई० में प्रकाशित।

प्रज./प्रजै.— 'राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रन्थसूची व प्रशस्ति संग्रह', भा० १, डा० कस्तूरचंद कासलीवाल द्वारा सम्पादित, महावीर शोधसंस्थान, जयपुर, १९५० ई०।

प्रभावक.— 'वीर शासन के प्रभावक आचार्य', संपा० डा० वी० जोहरापुरकर एवं डा० कस्तूरचंद कासलीवाल, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, १९७६ ई०।

प्रमुख.— 'प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएँ', डा० ज्योतिप्रसाद जैन कृत, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, १९७५ ई०।

प्रशो.— 'जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह', २ भाग, पं० जुगल किशोर मुख्तार एवं पं० परमानन्द शास्त्री द्वारा सम्पादित, वीर सेवा मंदिर दिल्ली से क्रमशः १९५४ व १९६३ ई० में प्रकाशित।

प्रसं.— 'प्रशस्ति संग्रह', पं० के० भुजबलि शास्त्री द्वारा सम्पादित तथा जैन सिद्धान्त भवन आरा से १९४२ ई० में प्रकाशित।

प्रोजे.— 'प्रोग्रेसिव जैन्स आफ इंडिया', श्री सतीश कुमार जैन द्वारा सम्पादित-प्रकाशित दिल्ली, १९७५ ई०।

बीका. ले. सं.— 'बीकानेर जैन लेख संग्रह', अगरचंद नाहटा-भंवरलाल नाहटा द्वारा सम्पादित, बीकानेर, १९५५ ई० ।

ब्रभा.— 'ब्रजभारती', ब्रज साहित्य मंडल मथुरा की मुखपत्रिका के वर्ष १४ अंक ४ (फरवरी १९५६), पृ. ५-३७ पर प्रकाशित डा० ज्योति प्रसाद जैन का निबन्ध 'ब्रज के जैन साहित्यकार' ।

भट्टारक.— 'भट्टारक सम्प्रदाय', डा० विद्याधर जोहरापुरकर कृत, जीवराज ग्रन्थमाला शोलापुर, १९५८ ई० ।

भाइ.— 'भारतीय इतिहास : एक दृष्टि', डा० ज्योतिप्रसाद जैन कृत, द्वि. सं. १९६६ ई०, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली ।

महापु.— 'महापुराण', जिनसेन गुणभद्र कृत, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण; आदिपुराण + उत्तरपुराण; त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित ।

मेज.— 'मेडियावल जैनिज्म', डा० बी० ए० सालतोर कृत, कर्णाटक पब्लिशिंग हाउस बम्बई, १९३८ ई० ।

राइस.— 'मैसूर एण्ड कुर्ग फ्राम इन्सक्रिप्शन्स', प्रो० लुई राइस कृत ।

रुहेल.— 'रुहेलखंड-कुमायूं जैन डायरेक्टरी', डा० ज्योति प्रसाद जैन द्वारा सम्पादित, दिग. जैन परिषद, काशीपुर, १९७० ई० ।

विद्वत्.— 'विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ', दि. जै. शास्त्रि परिषद के लिए चांदमल सरावगी चैरिटेबिल ट्रस्ट गौहाटी द्वारा १९७६ ई० में प्रकाशित ।

शोधादर्श.— ती. महावीर स्मृति केन्द्र समिति उ० प्र०, लखनऊ की आवधिक शोधपत्रिका ।

शोधांक.— दि. जैन संघ चौरासी-मथुरा के मुख पत्र जैन सन्देश के शोध-विशेषांक ।

साइइ.— 'साउथ इंडियन इन्सक्रिप्शन्स' ।

साहनी. रि.— प्रो० दयाराम साहनी की देवगढ़ सर्वेक्षण रिपोर्ट ।

हरिपु.— 'हरिवंश पुराण', आ० जिनसेन पुन्नाट संघी (७८३ ई०), भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण ।

२. सामान्य संकेत सूची—

अ.— अध्याय, अनुच्छेद, अनुभाग
अनु.— अनुवाद, अनुवादक
अनुप.— अनुपलब्ध
अप.— अपभ्रंश
अं.— अंक, अंग्रेजी
आ.— आचार्य
आ.प्र.— आन्ध्रप्रदेश
ई.— सन् ईस्वी
ई. पू.— ईसापूर्व
क.— कन्नड
कोश.— प्रस्तुत ऐतिहासिक व्यक्ति-कोश
गा.— गाथा, गाथांक
गुज.— गुजराती, गुजरात
च.— चतुर्थ
जन्म.— जन्मतिथि-वर्ष
जैसिभ.— जैन सिद्धान्त भवन आरा
टी.— टीका, टीकाकार
डा.— डाक्टर
त.— तमिल
ता. शा.— ताम्रशासन
ती.— तीर्थंकर
तृ.— तृतीय
दा. प.— दानपत्र
दि./दिग.— दिगम्बर
दे.— देखिए
द्वि.— द्वितीय
न.— नम्बर
प.— पञ्चम
पट्टा.— पट्टावलि
पा. टि.— पाद टिप्पणी
पृ.— पृष्ठ, पृष्ठांक
प्र.— प्रथम
प्रका.— प्रकाशक
प्रश.— प्रशस्ति, प्रशस्ति नम्बर
प्रा.— प्राकृत
प्रो.— प्रोफेसर
पं.— पण्डित
फु. नो.— फुटनोट
ब्र.— ब्रह्म, ब्रह्मचारी
भ.— भगवान, भट्टारक
भाज्ञापी.— भारतीय ज्ञानपीठ
भू.— भूमिका
म.— मराठी
म. नि. सं.— महावीर निर्वाण संवत्
म. प्र.— मध्यप्रदेश
मा.— मास्टर
मे.— मेसर्स
राज.— राजस्थान, राजस्थानी
रि.— रिपोर्ट
ल.— लगभग
ले.— लेखक
वही.— तत्काल पूर्वोल्लिखित संदर्भ
वि. सं.— विक्रम संवत्
वीसेमं.— वीर सेवा मंदिर
शक.— शक संवत्
शा.— शास्त्री
शि. ले.— शिला लेख
श्लो.— श्लोक संख्या
श्वे.— श्वेताम्बर

सि. च.— सिद्धान्त चक्रवर्ती

सि. दे.— सिद्धान्तिदेव

सि. शा.— सिद्धान्त शास्त्री

सेजैप.— सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस

सेबुजै.— सेक्रेड बुक्स आफ् दी जैन्स
सीरीज़

स्थानक.— स्थानकवासी

स्व.— स्वर्गीय, दिवंगत

स्वर्ग.— स्वर्गवास वर्ष

सं.— संस्कृत

संपा.— सम्पादक

हि.— हिन्दी

हि ग.— हिन्दी गद्य

हि. प.— हिन्दी पद्य

नोट : १. भाग, खंड, जिल्द या वाल्यूम के सूचनांक I, II, III, IV आदि।
२. शि. ले. या प्रशस्ति के नम्बर के सूचक— १, २, ३, आदि।
३. पृष्ठांक भी १, २, ३ आदि।
